

सचिवालय | महिला पर्यवेक्षिका | सहायक
आचार्य परीक्षा में सामान्य रूप से उपयोगी

हिन्दी (पत्र -2)

स्नातक स्तरीय

आकर्षण का मुख्य बिंदु

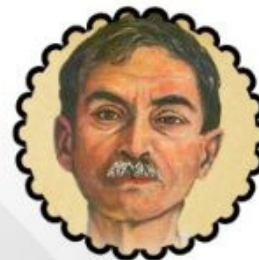
⊙ भाषा ⊙ साहित्य ⊙ नाटक
⊙ उपन्यास ⊙ व्याकरण ⊙ कहानी

हिन्दी साहित्य का इतिहास

डा. नगेंद्र • प.रामचंद्र शुक्ल



शान्ति भूषण सर (अनुभाग अधिकारी सचिवालय)



विवेक सर के मार्गदर्शन में

Click on the Image below to
Download Our App

हमारा Application डाउनलोड करने
के लिए दिये गए **चित्र पर क्लिक करें**



JSSC CGL 2023

TEST SERIES

विवेक सर के मार्गदर्शन में

हिन्दी पेपर-02 ASO सीरीज

PDF+ Video Solution के साथ



Teachers Express
Official

हमारा **Application** डाउनलोड करने के लिए दिये गए चित्र पर क्लिक करें

JSSC CGL 2024



TEST सीरीज

TEST सीरीज

FULL LENGTH PAPER-3

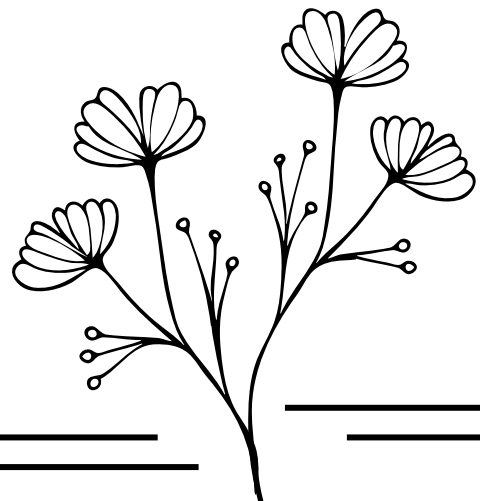
सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पे आधारित

FEATURES

- ★ TEST PDF ★ RANK
- ★ CORRECT ANSWER
- ★ INCORRECT ANSWER

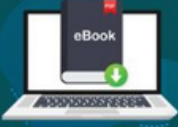


विवेक सर के मार्गदर्शन में





JSSC CGL 2024



हिन्दी-ई-बुक



सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK

रिवीजन



मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर

अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)

खुद **ASO अधिकारी**
एवं विवेक सर के
मार्गदर्शन में तैयार



विवेक सर

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय
(1)	भाषा
(क)	☛ भाषा
	▶ हिंदी की उत्पत्ति
	▶ पुरानी हिंदी की अवहट्ट
	▶ डिंगल
(ख)	☛ भाषा के विभिन्न रूप
	▶ रचनात्मक भाषा
	▶ राष्ट्रभाषा
	▶ राजभाषा
	▶ संपर्क भाषा
	▶ संचार भाषा
(ग)	☛ हिंदी का शब्द भंडार
	▶ तत्सम
	▶ तदभव
	▶ देशज
	▶ विदेशज
(घ)	☛ भाषा विज्ञान
	▶ भाषा की परिभाषा
	▶ उत्पत्ति
	▶ विकास ध्वनि परिवर्तन और अर्थ परिवर्तन
(ङ)	☛ साहित्य सिद्धान्त
	▶ काव्य-लक्षण
	▶ काव्य-हेतु
	▶ काव्य-प्रयोजन
	▶ शब्द-शक्ति



	► रस
	► छंद
	► अलंकार
(च)	☛ पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्त
	► प्लेटो
	► वर्ड्सवर्थ
	► मैथ्यू अर्नाल्ड
	► आई. ए. रिचर्ड्स
	► टी. एस. इलियट के सिद्धान्त
(छ)	☛ प्रयोजन मूलक हिन्दी
	► अवधारणा
	► प्रशासनिक हिन्दी
	► प्रशासनिक पत्राचार
	► संक्षेपण
	► टिप्पण
	► प्रारूपण
	► प्रतिवेदन
(2)	साहित्य
(ज)	☛ काव्य पुस्तक - काव्य कुंज
	► विद्यापति
	► कबीर दास
	► सूरदास
	► तुलसीदास
	► बिहारी लाल
	► रसखान
	► भूषण
(झ)	काव्य पुस्तक - काव्य विथी
	► भारतेन्दु हरिश्चंद्र
	► मैथिलिशरण गुप्त
	► सूर्यकांत त्रिपाठी



	▶ सुमित्रानंदन पंत
	▶ महादेवी वर्मा
	▶ जयशंकर प्रसाद
	▶ रामधारी सिंह दिनकर
	▶ अज्ञेय
	▶ नागार्जुन
	▶ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
	▶ धूमिल
(3)	उपन्यास
	▶ गोदान - मुंशी प्रेमचंद
	▶ मैला आंचल - फणीश्वर नाथ रेणु
	▶ रागदरबारी - श्रीलाल शुक्ल
(4)	कहानियाँ
	▶ मधुआ - जयशंकर प्रसाद
	▶ ठाकुर का कुआँ - मुंशी प्रेमचंद
	▶ नीलम देश की राजकन्या - जैनेन्द्र कुमार
	▶ परिदे - निर्मल वर्मा
	▶ दिल्ली में एक मौत - कमलेश्वर
	▶ वापसी - उषा प्रियवंदा
	▶ अभिशप्त - यशपाल
	▶ मिसपाल - मोहन राकेश
(5)	नाटक
	▶ भारत-दुर्दशा - भारतेन्दु हरिश्चंद्र
	▶ ध्रुव स्वामिनी - जयशंकर प्रसाद
	▶ आधे-अधूरे - मोहन राकेश
(6)	हिन्दी साहित्य का इतिहास
	▶ आचार्य रामचंद्र शुक्ल
	▶ डॉ. नागेन्द्र
(7)	व्याकरण

	► संज्ञा
	► सर्वनाम
	► क्रिया
	► विशेषण
	► कारक
	► समास
	► मुहावरे
परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण तथ्य	



JSSC CGL 2024



मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)

हिन्दी-ई-बुक

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

खुद ASO अधिकारी एवं
विवेक सर के मार्गदर्शन
में तैयार



विवेक सर

► हिन्दी भाषा की उत्पत्ति

1. **स्रोत (क)** – भारत के उत्तर-पश्चिम भाग- सिंह द्वारा जहाँ पर सिंधु नदी प्रवाह करती है वहाँ पर ईरानी भारत आते हैं और इस नदी पर ही रहते हैं और यह लोग **स को ह बोलते** हैं। इसलिए यह सिंधु को हिन्दु कहते हैं और यहाँ की भाषा को हिन्द कहते हैं और फिर बाद में पारसी भी यहाँ निवास करने आते हैं तो यह हिन्द में ई प्रत्यय लगाकर यहाँ की भाषा हिन्दी कहते हैं।
2. **स्रोत (ख)** – हिन्दी शब्द का उल्लेख पारसियों के पवित्र ग्रंथ जिंद-ए-अवेस्ता में मिलता हिन्दी शब्द से पहले हिन्दीक – हिन्दीग फिर हिन्दी आया।
3. **स्रोत (ग)** – आर्य जो यूराल पर्वत से आए जिनकी भाषा हिन्दी है।

संस्कृत भाषा से हिन्दी तक बनने का क्रम

संस्कृत (वैदिक एवं लौकिक संस्कृत) → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → अवहट्ट → प्रारम्भिक हिन्दी/प्राचीन हिन्दी

- भारत की पहली देश भाषा पालि है। महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म के उपदेश पालि भाषा में दिए।
- पहली जनभाषा लौकिक संस्कृत कहलायी तथा वेदों में जिस भाषा का उल्लेख है। उसे वैदिक संस्कृत कहते हैं।
- प्राकृत भाषा में जैन धर्म के उपदेश महावीर स्वामी द्वारा दिए गए।
- प्राकृत भाषा भारत के पाँच बड़े भू-भाग पर बोली जाती है।
- इसका काल खण्ड 900 ई० से 1100 ई० तक निर्धारित किया जाता है। वैसे साहित्य में इसका प्रयोग 900 ई० से 1100 ई० तक निर्धारित किया जाता है। अब्दुर रहमान, दामोदर पण्डित, जोतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति की भाषा अवहट्ट है।

प्राकृत के पाँच बड़े भू-भाग जहाँ प्राकृत भाषा बोली जाती है।

- | | |
|--------------------------|------------------------------|
| (क) शौरसेनी अपभ्रंश | [मथुरा का क्षेत्र] |
| (ख) अर्ध मागधी अपभ्रंश | [मगध से मथुरा तक का क्षेत्र] |
| (ग) पेशाची अपभ्रंश | [कश्मीर का क्षेत्र] |
| (घ) मगधी अपभ्रंश | [मगध का क्षेत्र] |
| (ङ) महाराष्ट्रीय अपभ्रंश | [महाराष्ट्र का क्षेत्र] |

- काल चक्र के अनुसार उत्तर भारत में अपभ्रंश के सात रूप विकसित हुए, जिससे आधुनिक भाषाओं का जन्म हुआ।

- | | |
|-------------|--------------------------------------|
| (क) शौरसेनी | [गुजराती, राजस्थानी, पश्चिमी हिन्दी] |
| (ख) मगधी | [बिहारी, बंगाली, उड़िया] |
| (ग) पेशाची | [पंजाबी, लहंदा] |

(घ) अर्द्धमागधी	[पूर्वी हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, अवधी, बघेली]
(ङ) महाराष्ट्री	[मराठी]
(च) ब्राचड़	[सिंधी]
(छ) खस	[कुमायनी, गढ़वाली, पहाड़ी]

हिन्दी की 5 उपभाषाएँ

(क) पश्चिमी हिन्दी की बोली एवं क्षेत्र

- (a) कन्नौजी भाषा - इटावा, हरदोई, पीलीभीत, शाहजहाँपुर
(b) ब्रज भाषा - मथुरा, आगरा, धौलपुर, ग्वालियर
(c) बांगरू भाषा/हरियाणा - हरियाणा
(d) बुन्देली भाषा - बुन्देलखण्ड भू-भाग एवं मध्य प्रदेश का कुछ क्षेत्र
(e) खड़ी बोली/कौरवी - मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, दिल्ली, गाज़ियाबाद, रामपुर, बिजनौर

नोट- हिन्दी की 5 उपभाषाएँ एवं 18 बोलियाँ होती हैं।

(ख) पूर्वी हिन्दी की बोली एवं क्षेत्र

- (a) अवधी - लखनऊ, अयोध्या, जौनपुर, इलाहाबाद, लखीमपुर, उन्नाव, सीतापुर
(b) बघेली - जबलपुर, मिर्जापुर
(c) छत्तीसगढ़ी - छत्तीसगढ़

(ग) बिहारी की बोली एवं क्षेत्र

- (a) मैथिली
(b) मगही
(c) भोजपुरी

(घ) राजस्थानी की बोली एवं क्षेत्र

- (a) ढूँढ़ाणी
(b) मालवी
(c) मेवाती
(d) मारवाड़ी
(e) हड़ौती

(ङ) पहाड़ी हिन्दी की बोली एवं क्षेत्र

- (a) कुँमायनी
(b) गढ़वाली

- हिन्दी विश्व की लगभग 4000 भाषाओं में से एक है।
- आकृति या रूप के आधार पर हिन्दी वियोगात्मक एवं विशिलिष्ट भाषा है।
- भाषा परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय भाषा परिवार की भाषा है।

► पुरानी हिन्दी अवहट्ट

- 'अवहट्ट' भाषा का समय 900 ई. से 1100 ई. तक निश्चित किया गया है।
- साहित्य में 14 वीं शती तक इसका प्रयोग होता रहा।
- साहित्यिक अपभ्रंश को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'पुरानी हिंदी' कहा था।
- अवहट्ट भाषा अपभ्रंश और पुरानी हिंदी के बीच की कड़ी मानी जाती है।"

- सुनीति कुमार चटर्जी

- 'अवहट्ट' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'वर्णरत्नाकर' (ज्योतिरीश्वर ठाकुर) में मिलता है।
- 'संदेशरासक' (अद्वहमाण) में अवहट्ट का उल्लेख मिलता है।
- 'प्राकृतपैंगलम्' के टीकाकार वंशीधर ने इसकी भाषा को अवहट्ट माना है।
- 'वर्णरत्नाकर', 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' में पूर्वी अवहट्ट का उपयोग किया गया है।
- भोलानाथ तिवारी ने अपभ्रंश और अवहट्ट को एक ही भाषा माना है -
- कुछ विद्वान इन्हें भी अवहट्ट का ग्रंथ मानते हैं-
 - ज्ञानेश्वरी (संत ज्ञानेश्वर)
 - राउलवेल (रोड कवि)
- अवहट्ट के तीन भेद माने गये हैं- 'पूर्वी', 'मध्यवर्ती' और 'पश्चिमी'।
- 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' में अवहट्ट के मध्यदेशीय रूप का उपयोग किया गया है।
- डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' की भाषा को 'प्राचीन कोसली' कहा।
- 'प्राकृतपैंगलम्' में पश्चिमी अवहट्ट का प्रयोग मिलता है।
- डॉ. तगारे ने कर्ता 'ए' की विभक्ति को अवहट्ट भाषा की विशेषता स्वीकार किया है।
- अपभ्रंश (अवहट्ट) में घनाक्षरी छंद का उपयोग नहीं मिलता।
- अपभ्रंश और अवहट्ट में 'चउपई' छंद में 15 मात्राएँ होती हैं।

पुरानी / प्रारंभिक हिंदी

- चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने परवर्ती अपभ्रंश को ही पुरानी हिंदी कहा है।
 - 8वीं, 9वीं शताब्दी में सिद्धों की भाषा में हमें अपभ्रंश से निकलती हिंदी स्पष्टतः दिखाई पड़ती है।
 - कुछ विद्वानों ने पुष्पदंत को हिंदी का कवि कहा है लेकिन वे निस्संदेह अपभ्रंश के कवि हैं। उनकी कृतियों में कहीं-कहीं विकासमान हिंदी के प्रयोग अवश्य मिलते हैं।
 - पउमचरित में भी उदीयमान हिंदी के छिटपुट उदाहरण मिलते हैं।
 - विद्यापति और ज्योतिरीश्वर ठाकुर के यहाँ भी पूर्वी हिंदी के बीज मिल जाते हैं।
 - नाथों और जोगियों की वाणी में आरंभिक हिंदी का निखरा रूप दिखाई पड़ता है।
 - शुद्ध खड़ी बोली के प्रारंभिक नमूने अमीर खुसरो की शायरी में मिलते हैं-
- "सजन सकारे जाएँगे, नैन मरेगे रोय।
बिधना ऐसी रैन कर, भोर कधौं न होय।"

• अवधी, खड़ी बोली और दक्खिनी, किसी का भी 'एक भाषी' ग्रंथ 1250 ई. से पहले का उपलब्ध नहीं है और यही तीन भाषाएँ ऐसी हैं जिनकी परंपरा आगे चली।

अपभ्रंश, अवहट्ट और पुरानी हिंदी का संबंध

तुलना का आधार	अपभ्रंश	अवहट्ट	पुरानी हिंदी
कालगत अंतर	7वीं से 9वीं शताब्दी (लगभग)	9वीं से 11वीं शताब्दी (लगभग)	12वीं से 14वीं शताब्दी (लगभग)
ध्वनियों का अंतर			
ऐ और औ का प्रयोग	ऐ और औ का अभाव	ऐ और औ मिलने लगते हैं, यथा-बैल, चौड़ा आदि।	ऐ और औ का अत्यधिक प्रयोग हुआ है, यथा-मौर, चखै आदि।
ऋ का प्रयोग	ऋ का अ, इ, उ, ए में परिवर्तन होता है, जैसे- कृष्ण > कण्ह, ऋण > रिण, गृह > गेह आदि।	इसी प्रवृत्ति का और अधिक विकास हुआ।	विकास की यही प्रक्रिया चलती रही।
द्वितीकरण व दीर्घीकरण की प्रवृत्ति	संयुक्त व्यंजनों के स्थान पर द्वितीकरण की प्रवृत्ति दिखती है, जैसे-चक्र > चक्क, कर्म > कम्म आदि।	क्षतिपूरक दीर्घीकरण का आरंभ होता है, जैसे- कम्म > काम, धम्म > धाम आदि।	क्षतिपूरक दीर्घीकरण का और अधिक विकास हुआ।
व्यंजनों का प्रयोग	इसमें निम्नलिखित पाँच व्यंजनों का अभाव है- ङ, ढ, न, श और ष।	ङ ढ का विकास हुआ परंतु शेष का नहीं।	श और ष का विकास नहीं हुआ, शेष व्यंजनों का विकास हुआ।
'ट' वर्ग की प्रधानता	अपभ्रंश एक 'ट' वर्ग प्रधान भाषा है।	अवहट्ट में 'ट' वर्ग की व्यापकता है किंतु सीमित मात्रा में।	पुरानी हिंदी में भी अवहट्ट जैसी स्थिति है।
'क्ष' में परिवर्तन	क्ष का ख्ख हो गया। उदाहरण - द्राक्ष > दाख्ख	यही प्रवृत्ति बनी रही।	क्ष दो रूपों में विकसित हुआ- ख (पश्चिमी रूप) तथा छ (पूर्वी रूप)। उदाहरण - लक्ष्मण > लखन (पश्चिमी), लछमन (पूर्वी)
'ण' तथा 'न' की उपलब्धता	1. अपभ्रंश में 'ण' मिलता है, 'न' नहीं मिलता।	यही प्रवृत्ति बनी रही।	पूर्वी पुरानी हिंदी में 'न' व पश्चिमी पुरानी हिंदी में 'ण'

	2. अपभ्रंश में 'म' व्यंजन ध्वनि मिलती है।		की व्यापकता दिखाई देती है।
--	---	--	----------------------------

► डिंगल

- **डिंगल, जिसे प्राचीन राजस्थानी** के नाम से भी जाना जाता है, नागरी लिपि में लिखी जाने वाली एक प्राचीन भारतीय भाषा है जिसमें गद्य के साथ-साथ काव्य में भी साहित्य है। यह **बहु उच्च स्वर की भाषा** है और इसके काव्य उच्चारण लिए विशिष्ट शैली की आवश्यकता होती है। डिंगल का उपयोग **राजस्थान, गुजरात, कच्छ, मालवा और सिंध** सहित आसपास के क्षेत्रों में किया जाता था। **अधिकांश डिंगल साहित्य की रचना चारणों द्वारा की गई है।** डिंगल का उपयोग राजपूत और चारण युद्ध नायकों के मार्शल कारनामों की प्रशंसा करके युद्धों में सैनिकों को प्रेरित करने के लिए भी किया जाता था।
- डिंगल एक **नई हिन्दी आर्य भाषा (एनआईए) भाषा** या काव्य शैली है। इस 'मरू - भाषा', मारवाड़ी और 'पुरानी राजस्थानी' जैसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। **डिंगल को ब्रज, अवधी, साधु भाषा और मैथिली के साथ सूचीबद्ध पाँच "पूर्व-आधुनिक हिंदी साहित्यिक बोलियों" में से एक के रूप में भी वर्णित किया गया है।** डिंगल को मारवाड़ी और गुजराती भाषाओं का पूर्वज भी कहा गया है।

→ डिंगल की उत्पत्ति और प्राचीनता

- 'डिंगल' का **सबसे प्राचीन उल्लेख 8वीं शताब्दी** के अद्योतन सूरी द्वारा रचित '**कुवलयामल**' में मिलता है। डिंगल विद्वान **शक्ति दान कवियों** के अनुसार, पश्चिमी राजस्थान के अपभ्रंश से व्युत्पन्न 9वीं शताब्दी तक डिंगल अस्तित्व में आई, और इस सम्पूर्ण क्षेत्र की साहित्यिक भाषा बन गई।
- 'डिंगल' शब्द का प्रयोग जैन कवि वाचक कुशलाभ द्वारा कृत '**उडिंगल नाम माला**' और संत-कवि सायाजी झूला द्वारा कृत '**नाग- दमन**' में भी मिलता है, जो **दोनों ग्रंथ 15वीं शताब्दी की** शुरुआत में लिखे गये थे।
- **झवेरचंद मेघाणी के अनुसार**, डिंगल, एक चारणी भाषा, अपभ्रंश और प्राकृत से विकसित हुई थी। मेघाणी ने डिंगल को एक भाषा और काव्य माध्यम दोनों के रूप में माना, जो "**राजस्थान और सौराष्ट्र के बीच स्वतंत्र रूप से बहती थी और सिंधी और कच्छी** जैसी अन्य ध्वन्यात्मक भाषाओं की रूपरेखा के अनुरूप ढल जाती थी।"
- आदिकाल '**रासो-साहित्य**' में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है, वह आधुनिक भारतीय आर्यभाषा हिन्दी से बहुत भिन्न है। अपभ्रंश और ब्रजभाषा के जिस मिले जुले रूप का प्रयोग चारण कवियों ने '**रासो ग्रंथों**' में किया है, उसे **डिंगल नाम** दिया गया है। इसी प्रकार तत्कालीन अपभ्रंश और ब्रजभाषा के मेल से बनी भाषा में विद्यमान है।

- ▶ वीर रस के भावों को व्यक्त करने की अद्भूत क्षमता डिंगल भाषा में विद्यमान है।
- ▶ संस्कृत की तत्सम शब्दावली के साथ-साथ तद्भव शब्दों का प्रयोग भी इन काव्य-ग्रंथों में प्रचुरता से किया गया है।
- ▶ उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा का जैसा हृदयग्राही चित्रण इन काव्य-ग्रंथों में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। सौन्दर्य-चित्रण में उत्प्रेक्षाओं से काम लिया गया है। यद्यपि **अनुप्रास, वक्रोक्ति, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति** जैसे अलंकारों की प्रधानता रही है।
- ▶ डिंगल शैली का प्रयोग वीर रस की कविताओं/ रचनाओं में होता था। पिंगल शैली का प्रयोग कोमल भावों की अभिव्यंजना के लिए होता था।

→ व्याकरण व शब्दावली

- ▶ डिंगल भाषा की एक दिलचस्प विशेषता यह है कि इसमें प्रारंभिक मध्ययुगीन काल के पुरातन शब्दों को संरक्षित करके रखा गया है जो कहीं और नहीं मिलते हैं। डिंगल, अन्य उत्तरी हिन्द-आर्य भाषाओं से अलग है, क्योंकि वह कई पुराने भाषा रूप व नव-व्याकरणिक और शाब्दिक निर्माणों को सम्मिलित करती है। पश्चिमी राजस्थान में डिंगल की भौगोलिक उत्पत्ति के कारण, डिंगल शब्दावली अनेकों **सिंधी, फारसी, पंजाबी और संस्कृत** के शब्दों को भी साझा करती है।

→ डिंगल और मरू-भाषा

- ▶ ऐतिहासिक रूप से **पश्चिमी राजस्थान की भाषा डिंगल के नाम से जानी जाती थी। डिंगल को मरू-भाषा** (अन्यथा मारवाड़ी भाषा, मरूभौम भाषा, आदि) के समान माना जाता था। डिंगल लेखकों के ग्रंथों में कई ऐतिहासिक उदाहरण मिलते हैं जो इस दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं कि इस क्षेत्र की बोली जाने वाली भाषा को डिंगल भी कहा जाता है। पदम भगत द्वारा **15वीं शताब्दी के अंत** में रचित अख्यान काव्य पाठ 'रूकमणी मंगल' या 'हाराजी रो व्यावालों' बोली जाने वाली भाषा में लिखित है।

▶ डिंगल साहित्य के रचनाकार

- ▶ यद्यपि यह सत्य है कि अधिकांश डिंगल साहित्य की रचना चारणों द्वारा की गई थी, अन्य जातियों ने भी इसे अपनाया और महान योगदान दिया। **चारण के अलावा, राजपूत, पंचोली (कायस्थ), मोतीसर, ब्राह्मण, रावल, जैन, मुहता** (ओसवाल) और भाट समुदायों के कई कवियों द्वारा डिंगल साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

→ डिंगल के शब्दकोश

- ▶ डिंगल भाषा के कई ऐतिहासिक शब्दकोश हैं -
- ▶ हमीर नाम-माला (हमीर दान रतनू कृत)
- ▶ हमीर नाम-माला 1774 ईस्वी में हमीर दान रतनू द्वारा लिखा गया है।
- ▶ मूल रूप से मारवाड़ के घड़ोई गाँव के रहने वाले हमीर दान ने अपना अधिकांश जीवन कच्छ के भुज शहर में व्यतीत किया।

- ▶ वह अपने समय के एक महान विद्वान थे और उन्होंने 'लखपत पिंगल' और 'भागवत दर्पण' सहित कई अन्य ग्रंथ लिखे थे। हमीर नाम-माला डिंगल के सबसे प्रसिद्ध शब्दकोशों में से एक है।

→ डिंगल कोष (कविराजा मुरारीदान मिश्रण कृत)

- ▶ महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के पुत्र और बूंदी राज्य के कविराजा मुरारीदान मिश्रण ने डिंगल शब्दावली के एक शब्दकोश को संकलित किया, जिसे 'डिंगल कोष' कहा जाता है। यह डिंगल कोष के शब्दकोशों में सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण है।

→ डिंगल नाम-माला (जैन वाचक कुशलाभ कृत)

- ▶ डिंगल नाम-माला, या उडिंगल नाम-माला भाषा का सबसे पुराना उपलब्ध शब्दकोश है। इसे जैसलमेर के एक दरबारी कवि कुशलाभ जैन ने 1618 में लिखा था।
- ▶ नागराज डिंगल कोष (नागराज पिंगल कृत)
- ▶ नागराज पिंगल द्वारा नागराज डिंगल कोष 1821 में लिखा गया था।

→ अन्य कोष :

- ▶ अवधान-माला : उदयराम बारहठ कृत
- ▶ अनेकार्थी कोष : उदयराम बारहठ का एक और ग्रंथ है जो डिंगल शब्दों के प्रयायवाची शब्दों का संग्रह है।

परिक्षापयोगी महत्वपूर्ण तथ्य :

- ▶ 'हिंदवी' शब्द की व्युत्पत्ति भारत के उत्तर-पश्चिम में प्रवाहमान 'सिंधु' नदी से सम्बन्धित है।
- ▶ 'हिंदी' शब्द मूलतः फारसी भाषा का है। हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तानी-ये फारसी भाषा के शब्द हैं।
- ▶ 13वीं सदी के प्रारम्भ में भारत के फारसी कवि औफी ने सर्व प्रथम 'हिन्दवी' शब्द का प्रयोग किया गया था।
- ▶ 16वीं सदी में मलिक मुहम्मद जायसी ने भी इस 'हिन्दवी' शब्द का प्रयोग किया और 17वीं सदी तक मुसलमान कवियों द्वारा 'हिंदवी' और हिन्दी' दोनों ही शब्दों का प्रयोग किया गया।
- ▶ 18वीं सदी में अंग्रेजों ने हिन्दी भाषा को 'हिन्दुस्तानी' संज्ञा दी किन्तु जन-मानस ने 'हिन्दी' शब्द ही स्वीकार किया।
- ▶ भारतीय आर्यभाषाओं के 3500 वर्षों के विकास क्रम को तीन चरणों में विभाजित करते हैं-

चरण	भाषा
प्राचीन आर्यभाषाएँ (2000-500 ई.पू.)	वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत (2000-1000 ई.पू., 1000-500 ई.पू.)
मध्यकालीन आर्यभाषाएँ (500-1000 ई.)	पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा अवहट्ट (500-1ई.पू., 1- 500 ई., 500-1000ई.)



आधुनिक आर्यभाषाएँ

हिंदी, बांग्ला, उड़िया मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी आदि
(1000 ई. से अब तक)

- ▶ भारत में भाषा का प्राचीनतम रूप **संस्कृत** है।
- ▶ भाषिक विशेषता के आधार पर इसे दो भागों में विभाजित किया गया है - **वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत**।
- ▶ भाषाविदों ने हिन्दी भाषा का **उद्भव-स्रोत शौरसेनी अपभ्रंश** से माना है।
- ▶ अपभ्रंश और हिन्दी की बीच की कड़ी के रूप में **अवहट्ट भाषा** का रूप प्राप्त होता है।
- ▶ **विद्यापति की कृतिकला** में अवहट्ट नाम का स्पष्ट रूप से उल्लेख मिलता है।
- ▶ भारत की प्रथम देश भाषा **पालि भाषा** है।
- ▶ प्राचीन **प्राकृत भाषा** पालि भाषा कहलाती है।
- ▶ **अर्द्धमागधी अपभ्रंश** से अवधी भाषा का विकास हुआ है।
- ▶ खड़ी बोली की **पूर्वी कौरवी, पश्चिमी कौरवी, पहाड़ ताली, बिजनौरी आदि** उप बोलियाँ हैं।
- ▶ **शौरसेनी अपभ्रंश से बुंदेली** बोली का विकास हुआ है।
- ▶ **अमीर खुसरों** हिन्दी भाषा को हिन्दवी कहा था ।
- ▶ शौरसेनी अपभ्रंश से **पश्चिमी हिन्दी और राजस्थानी हिन्दी** का विकास हुआ है।
- ▶ **ब्राह्मण अपभ्रंश** हिन्दी भाषा का विकास हुआ।
- ▶ 'अपभ्रंश' तत्सम शब्द है। इसी तरह, 'अपभ्रष्ट' शब्द भी तत्सम है।
- ▶ अपभ्रंश में 10 स्वर हैं, जो दो भागों - '**ह्रस्व**' और '**दीर्घ**' में विभाजित हैं। **ह्रस्व स्वर** हैं - अ, इ, उ, ए, ओ। **दीर्घ स्वर** हैं- आ, ई, ऊ, ऐ, औ ।
- ▶ अपभ्रंश भाषा के प्राचीनतम उदाहरण **भरतमुनि के नाट्यशास्त्र** में मिलते हैं।
- ▶ अपभ्रंश साहित्य का पहला संपादक **डॉ. रिचर्ड पिशेल** को माना जाता है।
- ▶ अपभ्रंश का सबसे बड़ा **वैयाकरण हेमचन्द्र** को कहा जाता है।
- ▶ 'अवहट्ट' भाषा का समय **900 ई. से 1100 ई.** तक निश्चित किया गया है।
- ▶ साहित्य में **14वीं** शती तक इसका प्रयोग होता रहा।
- ▶ साहित्यिक अपभ्रंश को **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** ने '**पुरानी हिंदी**' कहा था।
- ▶ 'अवहट्ट' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग '**वर्णरत्नाकर**' (**ज्योतिरीश्वर ठाकुर**) में मिलता है।
- ▶ हिन्दुस्तानी भाषा पुरानी हिन्दी, **उर्दू और अंग्रेजी** के मिश्रण से उत्पन्न नई जबान है।
- ▶ **चंद्रधर शर्मा गुलेरी** ने **परवर्ती अपभ्रंश** को ही पुरानी हिंदी कहा है।
- ▶ पुरानी मारवाड़ी को ही '**डिंगल**' कहा जाता है।
- ▶ आदिकालीन चारण कवियों द्वारा **वीरगाथा काव्य** इसी शैली में लिखे गए।



- डिंगल में श्रृंगार, वीर, भक्ति तथा नीतिपरक साहित्य का भंडार है।



भाषा के विभिन्न रूप

रचनात्मक भाषा

वह भाषा जिसमें साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाएं रची जाती हैं रचनात्मक भाषा कहलाती है। यही भाषा परिनिष्कृत या मानक भाषा के रूप में जानी जाती है। आमतौर पर जिस भाषा में साहित्य की रचना की जाती है या उसके लिए अपनायी जाती है वह मानक रूप होता है रचनात्मक भाषा को लोग "साहित्य भाषा" भी कहते हैं।

विलक्षण रचनात्मक भाषा की विशेषताएँ निम्नवत् हैं:-

1. रचनात्मक भाषाएँ व्याकरण के नियमों से बंधे हुए होते हैं। हिन्दी भी एक रचनात्मक भाषा है जो व्याकरण के नियमों से बंधी रह कर अनुशासनात्मक परिचय दे रही है।
2. यह भाषा का परिनिष्ठत या मानक रूप स्वीकार किया गया है जिससे वह संतुलित एवं संतुष्ट रखने की क्षमता रखती है।
3. इस रूप में अलंकरण का भी समावेश या आक्षदन होता है जिससे उसकी गंभीरता परिलक्षित होती है।
4. रचनात्मक भाषा का क्षेत्र सीमित हुआ करती है, पर जैसे-जैसे उसके समर्थकों की संख्या बढ़ती है उसका क्षेत्र विस्तृत होता जाता है यही कारण है कि हिन्दी आज विश्व मंच पर अपनी पहचान के लिए मुहजात नहीं है। यह विश्व की त्रिस्तरीय भाषा बन चुकी है।
5. रचनात्मक भाषा का रूप बनावट एवं उसका स्थायीत्व का गुण वर्षों तक स्थिर रहता है जब तक उसके समर्पित समर्थक उसे स्वीकारते रहते हैं।
6. रचनात्मक भाषा में परिवर्तन की गुंजाइश जल्दी-जल्दी संभव नहीं है क्योंकि उसकी क्षमता, दक्षता, निपुणता, एवं विशिष्टता उसके विलक्षण शक्ति को स्थिर किये हुए रहती है।
7. रचनात्मक भाषा का रूप आम बोल-चाल की भाषा से थोड़ी भिन्न होती है। क्योंकि उसमें साज-सज्जा के भी गुण आ जाते हैं, उसमें आकर्षण के भी यू आने लगते हैं। उपर्युक्त बातों के अध्ययन मनन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि समय और परिस्थिति के अनुसार उसके रूप में भी ये गुण साफ-साफ झलकते नजर आते हैं।

राष्ट्रभाषा

"राष्ट्रभाषा" शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है- पूरा या समस्त राष्ट्र के प्रयुक्त भाषा अर्थात् आम जन की भाषा। जो भाषा समस्त राष्ट्र में जन-जन के विचार विनिमय का साधन या माध्यम हो, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्र भाषा की आवश्यकता होती है। भारत के संदर्भ में इस आवश्यकता की पूर्ति हिन्दी ने की है। यही कारण है कि हिन्दी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान (1900 ई० - 1947 ई०) राष्ट्रभाषा बनी। यह एक संवैधानिक शब्द नहीं है बल्कि यह प्रयोगात्मक, व्यवहारिक एवं जन मान्यता प्राप्त शब्द है। यह सामाजिक सांस्कृतिक मान्यताओं के द्वारा सामाजिक - सांस्कृतिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है अर्थात् राष्ट्रभाषा की प्राथमिक शर्त देश में विभिन्न समुदायों के बीच भावात्मक एकता स्थापित करना है। इसका विस्तृत क्षेत्र देशव्यापी होता है। यह सारे देश की सम्पर्क भाषा होती है। इसका व्यापक जनाधार होता है। इसका स्वभाव लचीला होता है। इसे जनता के अनुरूप किसी भी रूप में ढाला जा सकता है।

संविधान में भाषाओं के सवाल पर जो महत्वपूर्ण तथ्य को प्रस्तुत किया गया है उसी से हम भाषा के बारे में चिंतन का अनुमान लगा सकते हैं। भारत के **संविधान में 17 भाग** हैं, जिनमें से **1 (एक) भाग पूरा भाषा के लिए** दिया गया है। **कुल 395 अनुच्छेद** हैं इसमें से **11 भाषाओं के लिए** है, जो लगभग 30 प्रतिशत बनता है। **9 अनुसूचियों** में से एक (अष्टम अनुसूची) भाषा के सवाल के लिए है। भाषा के संदर्भ में जो चिंतन दिखायी पड़ता है, वह जनतांत्रिक है तथा राष्ट्रीय दृष्टि से संघीय प्रकृति का है।

भाषा के आलोक में राष्ट्रीय स्तर पर तीन बातें सामने आती हैं- राष्ट्रभाषा, राजभाषा और सम्पर्क भाषा।

अंग्रेजों का मंतव्य

राष्ट्रभाषा के साथ जनता का भावात्मक लगाव होता है क्योंकि उसके साथ जनसाधारण की सांस्कृतिक परम्पराएँ जुड़ी रहती है। यह कोई स्वदेशी भाषा ही होती है। यह भाषा सारे देश की सम्पर्क भाषा होती है। हिन्दी दीर्घकाल से सारे देश में जन-जन के पारस्परिक सम्पर्क की भाषा रही है। यह केवल उत्तर भारत की भाषा नहीं, बल्कि दक्षिण भारत के **आचार्यो वल्लभाचार्य, रामानुज** आदि ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार किया था। कम्पनी सरकार ने भी **विलियम कॉलेज** में हिन्दुस्तानी विभाग खोलकर अधिकारियों को हिन्दी सिखाने की व्यवस्था दी थी। यहाँ से हिन्दी में पढ़े हुए अधिकारियों ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उसका प्रत्यक्ष लाभ देखकर मुक्तकंठ से हिन्दी को सराहा था। **विलियम केरी ने 1816 ई. में लिखा-** "हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में बोली जानेवाली भाषा है।" **एच.टी. कोलब्रुक ने लिखा है :** जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोल चाल की भाषा है जिसको प्रत्येक गाँव में थोड़े-बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं, उसी का यथार्थ नाम "हिन्दी" है।

धर्म/समाज सुधारकों का मंतव्य

धर्म/समाज सुधारकों की लगभग सभी संस्थओं ने हिन्दी के महत्व को भाँपा और हिन्दी की हिमायत की।

1-राजा राममोहन राय ने कहा- "इस समग्र देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है।

2-ब्रह्म समाजी केशव चन्द्र ने भी कहा था- "भारतीय एक कैसे हो, जिसमें उन्होंने लिखा- उपाय है सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार। अभी जितनी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं, उसमें हिन्दी भाषा लगभग सभी जगह प्रचलित हैं। यह हिन्दी अगर भारत वर्ष की एकमात्र भाषा बनायी जाये, तो यह काम सहज ही और शीघ्र सम्पन्न हो सकता है।

3-आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती ने भी " अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए तथा देश की एकता को मजबूत करने के लिए अपना सारा धार्मिक साहित्य हिन्दी में लिखा। उनका कहना था कि "हिन्दी के द्वारा सारे देश को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

4-अरविंद घोष ने भी सलाह दी लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी को ग्रहण करें।

कांग्रेस के नेताओं का योगदान हिन्दी के संदर्भ में

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कहा- " यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिन्दी ही भारत की राज भाषा हो सकती है। तिलक ने भारतवासियों से आग्रह किया कि हिन्दी सीखें।

महात्मा गाँधी राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा को नितांत आवश्यक मानते थे। उनका कहना था- "**राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।**" गाँधीजी हिन्दी के प्रश्न को स्वराज का प्रश्न मानते थे हिन्दी का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में सामने रखकर **भाषा-समस्या पर गंभीरता** से विचार किया। उनके अनुसार राष्ट्रभाषा के लिए एक लक्ष्य या शर्तें होनी चाहिए :-

1. अमलादारों (राजकीय अधिकारियों) के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
2. यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत लोग उस भाषा को बोलते हो।

3. उस भाषा के द्वारा **भारतवर्ष का अपनी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार** हो सकना चाहिए।

4. राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।

5. उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक अल्पस्थायी स्थिति पर जोर नहीं होना चाहिए।"

वर्ष 1918 ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इंदौर अभिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए गाँधीजी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी का समर्थन किया। मेरा मत है कि हिन्दी ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए।"

वर्ष 1927 ई. में **सी. राजा गोपालाचारी** ने दक्षिणवालों को हिन्दी सीखने की सलाह दी और कहा हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।"

वर्ष 1928 ई० में प्रस्तुत **नेहरू रिपोर्ट** में भाषा संबंधी सिफारिश में कहा गया था। **"देवनागरी अथवा फारसी** में लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी भारत की राजभाषा होगी, परन्तु कुछ समय के लिए अंग्रेजी का उपयोग जारी रहेगा। सिवाय 'देवनागरी या फारसी की जगह देवनागरी तथा हिन्दुस्तानी की जगह 'हिन्दी' रख देने के अंततः स्वतंत्र भारत के संविधान में इसी मत को अपना लिया गया।

1929 ई० में सुभाष चन्द्र बोस ने कहा प्रांतीय ईर्ष्या द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। "अपनी प्रांतीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए उसमें कोई बाधा न डालना चाहिए और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं। पर सारे प्रांतों की सार्वजनिक भाषा का पद हिन्दी / हिन्दुस्तानी को मिलना है।"

► राजभाषा

राजभाषा का शाब्दिक अर्थ **राज-काज की भाषा**। जो भाषा देश के राजकीय कार्यों के लिए प्रयुक्त होती है वह राजभाषा कहलाती है। यह भाषा सरकारी काम-काज चलाने के लिए आवश्यक मानी जाती है। स्वशासन आने के पश्चात् राजभाषा की आवश्यकता होती है। प्रायः राष्ट्रभाषा ही स्वशासन आने के पश्चात् राजभाषा बन जाती है। भारत में भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है।

राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है '**हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 ई०** को संवैधानिक रूप से राजभाषा घोषित किया गया। इसीलिए प्रत्येक वर्ष **14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस'** के रूप में मनाया जाता है। यह भाषा देश को अपने प्रशासनिक लक्ष्यों के द्वारा राजनीतिक-आर्थिक इकाई में जोड़ने का काम करती है। यही भाषा प्राथमिक शर्त राजनीतिक प्रशासनिक एकता कायम करता है। राजभाषा का प्रयोग क्षेत्र सीमित होता है, वर्तमान समय में भारत सरकार के कार्यालयों एवं कुछ राज्यों हिन्दी क्षेत्र के राज्यों में राज-काज हिन्दी में होता है। अन्य राज्य सरकारें अपनी-अपनी भाषा में कार्य करती है, **हिन्दी में नहीं, महाराष्ट्र मराठी में, पंजाब पंजाबी में, गुजरात गुजराती में** आदि।

भाषा सम्बन्धित अनुच्छेद

343 संघ की राजभाषा

1. संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।

2. इस संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की अवधि तक उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जायेगा जिनके लिए पहले प्रयोग किया जा रहा था।

"परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा और भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकूँगा।"

3. संसद उक्त 15 वर्ष की अवधि के पश्चात विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का; या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी ऐसी विधि से विनिर्दिष्ट किये जाएँ ।

अनु. - 344 : राजभाषा के संबंध में आयोग (5 वर्ष के उपरांत राष्ट्रपति द्वारा) और संसद की समिति (10 वर्ष के उपरांत)

अनु. - 345 : राज्य की राजभाषा या राजभाषाएँ (प्रादेशिक भाषा) भाषाएँ या हिन्दी, ऐसी व्यवस्था होने तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी)

अनु. - 346 : एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादिकी राजभाषा

आजादी मिलने के बाद देश की शासन व्यवस्था का समस्त कार्य देश की भाषा में ही करना अनुभव किया गया। फलस्वरूप संविधान में राजभाषा संबंधी व्यवस्था करके देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा को अंग्रेजी के स्थान पर राजभाषा के रूप में अपनाया गया।

संविधान में संघ शासन के संदर्भ में केवल राजभाषा हिन्दी की बात की गयी, किन्तु देश की बहुभाषिकता की स्थिति और देश में विद्यमान अन्य भाषाओं के महत्व को स्वीकार करते हुए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी सहित 22 प्रमुख भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्रदान की है जिसकी सूची इस प्रकार है।

1. असमिया, 2 उड़िया, 3 उर्दू, 4. कन्नड़, 5. कश्मीरी, 6. गुजराती 7 तमिल, 8. तेलुगु, 9. पंजाबी, 10. बंगाली, 11. मराठी, 12. मलयालम, 13 संस्कृत, 14, सिंधी, 15. मणिपुरी, 16. नेपाली 17. कोंकण, 18. हिन्दी 19. संथाली 20. डोगरी, 21. पोड़ो 22. मैथिली

► सम्पर्क भाषा

संपर्क भाषा शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के लिंगा फ्रेंका के प्रतिशब्द के रूप में किया जाता है। 'लिंगा फ्रेंका' से तात्पर्य है, लोक बोली अथवा सामान्य बोली जिस भाषा के माध्यम से एक क्षेत्र के लोग देश के अन्य क्षेत्रों के निवासियों से अथवा एक भाषा के बोलने वाले लोग अन्य भाषा भाषियों से अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, उसे लिंगा फ्रेंका अथवा संपर्क भाषा कहा जाता है। भारत विभिन्नताओं का देश है। यहाँ भाषाओं की संख्या सैकड़ों में है बाइस भाषाएँ तो संविधान की अष्टम सूची में ही उल्लिखित है इस दृष्टि में यहाँ संपर्क भाषा का विशेष महत्व है। भारत के इतिहास के अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि यहाँ युगों से 'मध्य देश' की भाषा सारे देश की माध्यम भाषा अथवा संपर्क भाषा रही है। **संस्कृत, पालि अथवा प्राकृत** किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं थी। **तमिल भाषी प्रदेशों में 200ई.** से ही संस्कृत राजभाषा के रूप में स्वीकार कर ली गई थी। शिक्षा, दीक्षा, प्रशासकीय और सांस्कृतिक कार्यों में ही नहीं वरन शिष्ट काव्य और शास्त्रों के प्रणयन में भी संस्कृत भाषा का प्रयोग होने लगा था। स्पष्ट है कि तमिल प्रदेशों ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया था। मध्यकाल हिन्दी के विकास और अन्य क्षेत्रों से संपर्क का काल रहा है। इस काल में "**दक्षिण के आचार्यों वल्लभाचार्य, रामानुज, निंबार्क, रामानंद** आदि ने संपर्क भाषा के महत्व को समझा और भरसक इसे संप्रेषण का माध्यम बनाया। हिन्दी को संपर्क भाषा बनाने में बॉलीवुड का बहुत बड़ा हाथ रहा है। हिन्दी फिल्मों का सबसे अधिक निर्माण महाराष्ट्र की मुम्बई नगरी में होता है मुम्बई व्यापार का भी गढ़ है रेडियो और टी.वी. के माध्यम से भी हिन्दी का प्रसार हुआ है और सारे भारत के लोग हिन्दी को थोड़ा बहुत जानते-समझते हैं दिल्ली में ही लगभग पूरे भारत के लोग एक साथ रहते हैं और हिन्दी के माध्यम से अपने सारे कार्य निपटाते हैं।

किसी भी भाषा का प्रारंभिक रूप बोली होती है **सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक** आदि कारणों से कोई बोली विकसित होकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। उसका प्रयोग क्षेत्र विस्तृत हो जाता है। भिन्न-भिन्न बोलियों के

प्रयोक्ता समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उस भाषा का प्रयोग करने लगते हैं। विद्वानों के प्रयासों से भाषा के रूप को स्थायित्व मिलता है और इसका एक आदर्श तथा मानक रूप बन जाता है। शिष्ट जन उस मानक रूप का प्रयोग करने लगते हैं तथा सामान्य जन यत्किंचित क्षेत्रीय प्रभाव के साथ उस भाषा का प्रयोग करने लगते हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरूप से तात्पर्य है, सर्वसाधारण से लेकर शिक्षित वर्ग तक सबके द्वारा प्रयुक्त की जानेवाली भाषा का सर्वमान्य रूप। इसका प्रयोग भारत के अधिकांश भू-भाग में किया जाता है। **पश्चिम में राजस्थान, हरियाणा** से लेकर उत्तर में हिमाचल प्रदेश और पूर्व में बिहार, झारखण्ड तथा छत्तीसगढ़ तक प्रायः सभी इसका प्रयोग करते हैं। हिन्दी को राष्ट्रभाषा की ओर अग्रसर करने में उस समय अन्य अनेक लोगों ने अपनी भूमिका निभाई। ब्रह्मसमाज के केशवचन्द्र सेन के विचारों का उल्लेख पहले हो चुकी है। इन्हीं की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द ने हिन्दू भाषण देना प्रारम्भ किया और हिन्दी में 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय मानते थे कि ही अखिल भारतीय भाषा बन सकती है। आर्यसमाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती मूलतः गुजराती थे परन्तु अपने **भाषणों, ग्रंथों, लेखों में** उन्होंने हिन्दी की वरीयता दी।

► संचार भाषा

जनसंचार शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है। जिसका प्रथम जन तथा दूसरा शब्द है संचार जन का शाब्दिक अर्थ होता है, लोग मानव तथा संचार का शब्दिक अर्थ होता है दो या दो से अधिक व्यक्ति के बीच सूचनाओं, विचारों एवं भावनाओं को आदान-प्रदान करना। इस प्रकार कहा जा सकता है **"लोगों तक सूचनाओं विचारों एवं भावनाओं को आदान-प्रदान करना जन संचार है।"**

संचार शब्द की उत्पत्ति घर से हुई है जिसका अर्थ होता है या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना संचार के सम्बन्ध में विल्वर ने कहा है **"संचार अनुभवों की साझेदारी है"** इसका श्री गणेश होता है जब स्त्रोत या संचारक एक उद्देश्य के साथ अपने किसी विचार या संदेश या भावना को किसी और तक पहुँचाना चाहता है तब संचार की शुरुआत होती है। जब संचार की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर होती है तब वह **जनसंचार कहलाती है**। इसके सम्बन्ध में कहा जा सकता है हम किसी भाव या विचार या जानकारी या तथ्यों को दूसरों तक पहुँचा हैं और प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है तब यह प्रक्रिया जन से चार कहलाने लगते हैं। जनसंचार का मुख्य उद्देश्य जानकारी या भाव या विचार या तथ्यों को समाज के उनलोग तक पहुँचाना जहाँ तक तमाम लोग उससे सम्बन्ध रखते हैं।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है इस देश के लोग तक समाचार पहुँचाना साधारण काम नहीं है, उसमें भी घर-घर इस कठिन काम को करने का संकल्प लेना यह बहुत बड़ी बात है फिर भी इसके संकल्पित लोग, विश्वास, निष्पक्षता, निष्ठा एवं त्यागी लोग अपने काम में व्यस्त है। यह कल्याणकारी कार्य है, जिसको बखूबी निर्वहन जनसंचार कर रहा है। **जनसंचार के प्रमुख माध्यम तीन है, जिन्हें मुद्रित माध्यम, श्रव्य माध्यम एवं दृश्य माध्यम के नाम से जानते हैं।**

मुद्रित माध्यम

वैसे जनसंचार माध्यम जिसके सम्पादन का कार्य मुद्रण से प्रकाशित होता है, वे मुद्रित माध्यम कहलाते हैं, जिसके अन्तर्गत **समाचार-पत्र, इंटरनेट, पत्र-पत्रिकाएँ** आते हैं। जिसके छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है। जिसके समाचार को धीरे-धीरे आराम से पढ़ा जा सकता है। इसको बार-बार पढ़ने की सुविधा प्राप्त होती है। इसका सबसे बड़ा लाभ है कि इन्हें लम्बे समय तक सुरक्षित रखकर संदर्भ की तरह इनका उपयोग किया जाता है। इसका सम्बन्धभाषा से होता है। इससे भाषा का विस्तार होता है। **यह चिंतन, मनन, विचार एवं विश्लेषण का भी माध्यम है।**

श्रव्य माध्यम

इस माध्यम से प्राप्त समाचार के लिए नियत समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इसके खबर को पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं होती है फिर भी इस माध्यम की खूबियाँ या खामियाँ या कमियों से इनकार नहीं किया जा सकता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है वह है इससे साक्षर एवं निरक्षर दोनों तरह के लोग प्रभावित होते हैं रेडियो मूलतः एकरेखीय जनसंचार का माध्यम है। इसमें शब्दों एवं ध्वनियों का विशेष महत्व होता है। इसकी खामियाँ भी कम नहीं हैं; जिसको से इनकार करना संभव नहीं है सबसे बड़ी खामी इसकी यह है कि इसके खबरों के पीछे की तरफ लौटकर सुनने की

सुविधा नहीं होती है। इतना ही नहीं, इसको समाचार के लिए नियत समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। रेडियों में संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग करते समय विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम टेलिविजन (दृश्य मध्यम)

रेडियो की ही तरह टेलीविजन भी एकरेखीय जनसंचार माध्यम है। इस माध्यम में शब्दों एवं ध्वनियों की अपेक्षा दृश्यों तसवीरों का महत्व सबसे ज्यादा होता है। इसमें शब्दों का चयन दृश्य के अनुसार किया जाता है। इसके लिए दृश्य और शब्दों को सहयोगी के रूप में काम करना पड़ता है।

टेलीविजन में प्रसारित होने वाले समाचार में भाषा और शैली स्तर पर काफी सावधानी की जरूरत होती है। इसके



JSSC CGL 2024







हिन्दी-ई-बुक





सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

खुद ASO अधिकारी एवं
विवेक सर के मार्गदर्शन
में तैयार

मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर

अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)

विवेक सर

समाचार को लिखते समय वाइट पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ये वाइट ही वॉयस ओवर अथवा दृश्यों का अंतराल भरने के लिए सेतु का काम करते हैं। इसके अन्तर्गत फिल्म टेलिविजन, रंगमंच या अन्य डीजिटल माध्यम आते हैं। जनसंचार का सबसे सुलभ, लोकप्रिय एवं सशक्त कोई माध्यम बना है तो वह है टेलीविजन (दूरदर्शन)।

हिंदी का शब्द भंडार

तत्सम-तद्भव

तत्सम-तद्भव

- **तत्सम** :- तत्सम शब्द वे शब्द होते हैं जो संस्कृत भाषा से हिन्दी में बिना रूपान्तरण के प्रयोग में लाए जाते हैं। तत्सम कहलाते हैं।

उदाहरण- काष्ठ, स्कन्ध, द्विवर आदि।

- **तद्भव** :- तद्भव शब्द वे शब्द होते हैं जो संस्कृत भाषा से हिन्दी में रूपान्तरित करके प्रयोग में लाए जाते हैं।

उदाहरण- आग, पत्ता, कन्धा आदि।

तत्सम एवं तद्भव को पहचानने की धाँसू ट्रिकों का संगम

	तत्सम	तद्भव		तत्सम	तद्भव
Rule. 1	त्र	त	Rule. 2	क्ष	ख/छ
	छत्र	छत		क्षीर	खीर
	यंत्र	जंतर		क्षेत्र	खेत
	रात्रि	रात		नक्षत्र	नखत
	धारित्री	धरती		दक्षिण	दखिन
	मित्र	मित		अक्षत	अखत
	पौत्र	पोता		परीक्षा	परख
	पुत्र	पूत		ऋक्ष	रीछ
	राजपुत्र	राजपूत	Rule. 4	ण	न
	पुत्रवधू	पतोहू		अर्पण	अरपन
Rule. 3	व	ब		अगणित	अनगिनत
	वक	बगुला		ऊर्ण	ऊन
	वणिक	बनिया		अवगुण	अवगुन
	विवाह	ब्याह		चूर्ण	चूरन
	वर	बर		कर्ण	कान
	वधू	बहू		तृण	तिनका
	वरयात्रा	बरात		स्वर्ण	सोना
	वन	बन		निर्गुण	निरगुन
	वर्षा	बरसात		पाषाण	पाहन
Rule. 5	श/ष	स	Rule. 6	ट	ड़
	श्यामल	साँवला		कर्पट	कपड़
	शुक	सुआ		कर्कट	केकड़ा
	शुण्ड	सूड़		कटु	कड़ुआ
	श्वसुर	ससुर	Rule. 7	अनुस्वर (ं)	चंद्र बिंदु (ँ)

	दर्शन	दरसन		चंद्र	चाँद
	आशीष	आसीस		ताम्र	चाँबा
	शब्द	सबद		मुख	मुँह
	राशि	रास		दंत	दाँत
	दिपशलाका	दियासलाई		पंच	पाँच
	पौष	पूस		गोधूम	गेहूँ
	कृषक	किसान	Rule. 8	ज्ञ	ज
	श्वश्रु	सास		यज्ञोपवीत	जनेऊ
	मातृश्वसा	मौसी		ज्ञान	जान
	स्पर्श	परस	Rule. 9	ऋ	ि/ी/ा
	श्यामल	साँवला		शृंगार	सिंगार
Rule. 10	साधारण र तद्धव में और सभी र के प्रकार तत्सम में होते हैं। [अर्द्ध (र)/ सीधी रेखा (र) प्र, गोल वर्ण (र) ट्र]			घृत	घी
				भातृभाया	भार्या
				मृत्तिका	मिट्टी
				घृणा	घिन
	आम्र	आम		दृष्टि	दीठी
	आश्चर्य	अचरज			
	गृह	घर			
	ग्राम	गाँव			

Rule. 11 : विसर्ग तत्सम में होती है। (ः)

प्रातःकाल

Rule. 12 : हलन्त तत्सम में होती है।

विद्या

Rule. 13 : सभी संयुक्त वर्ण तत्सम में आते हैं।

(क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)

लक्ष्य, पत्र, ज्ञान, श्रवण

Rule. 14 : दैनिक जीवन में अधिकाधिक प्रयोग होने वाले शब्द तद्धव शब्द के अंतर्गत आते हैं और कठिन शब्द लेखन उच्चारण वाले तत्सम के अंतर्गत आते हैं।

Rule. 15 : सभी संधि मूल रूप से संस्कृत से आयी इसलिए सभी संधि तत्सम है।

Rule. 16 : द्वित्व व्यंजन – मक्का, दिल्ली – तद्धव होते हैं।

तत्सम शब्द

'तत्सम' अर्थात् तत् (**उसके**) + सम (**समान**) । यहाँ 'उस' का तात्पर्य संस्कृत है। तत्सम शब्द वे शब्द हैं जिन्हें संस्कृत से उसी रूप में लिये गए हैं जैसे वे संस्कृत में मिलते थे।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं **माता, जल, तप, दान, अन्न, अंग, अधकार, उदार, सत्य, हानि** आदि ।

तद्धव शब्द

तद्धव दो शब्दों के मेल से निर्मित है- तत् (**उससे**) + भव (**निर्मित**) । जो शब्द संस्कृत के समान नहीं हैं, लेकिन कुछ परिवर्तन के साथ हिंदी में लिये गए हैं।



कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- अंधकार से अँधेरा, अग्नि से आग, अष्ट से आठ आदि।

परीक्षा उपयोगी महत्वपूर्ण तत्सम एवं तद्भव:-

तत्सम	तद्भव
आखेट	अहेर
अक्षि	आँख
आर्चि	आँच
आँत्र	आँ
आमलक	आँवला
अग्नि	आग
आश्चर्य	अचरज

तत्सम	तद्भव
अन्नाद्य	अनाज
अम्लिका	इमली
अंगुलि	उँगली
कर्ण	कान
कृष्ण	कान्ह
कर्म	काम

तत्सम	तद्भव
इक्षु	ईख
कुंभकार	कुम्हार
कमल	कँवल
कच्छप	कछुआ
खर्जूर	खजूर
क्षेत्र	खेत
तड़ाग	तालाब
तैल	तेल
स्तन	थन
पल्लव	पल्ला
धूम्र	धुआँ
नग्न	नंगा
नृत्य	नाच
महिष	भैंसा
बुभुक्षा	भूख
भ्रमर	भौरा
वृद्ध	बूढ़ा
मस्तक	माथा
मौक्तिक	मोती

तत्सम	तद्भव
शाक	साक
राज्ञी	रानी
सप्त	सात
रिक्त	रीता
रजनी	रैन
अगरक्षक	अँगरखा
अग्निष्ठिका	अँगीठी
अंगुष्ठ	अँगूठा
अंधकार	अँधेरा
अश्रु	आँसू
अष्ट	आठ
अर्धपूरक	अधूरा
आम्रचूर्ण	अमचूर
इंधन	ईंधन
काष्ठ	काठ
उज्ज्वल	उजला
उत्तिष्ठ	उठना
उच्च	ऊँचा
कप	कआँ



तत्सम	तद्भव
काक	कौआ
कंटफल	कटहल
कर्पास	कपास
छत्रक	छाता
तृण	तिनका
प्रस्तर	पत्थर
परीक्षा	परख
दधि	दही
पृच्छ	पूछना
पुच्छ	पूँछ
पाशिका	फाँसी
वक्र	बाँका
व्याघ्र	बाघ
श्मशान	मसान
भाडागार	भंडार
मुख	मुँह
मयूर	मोर
श्वास	साँस
रात्रि	रात
राशि	रास

तत्सम	तद्भव
श्याल	साला
श्रावण	सावन
साधु	साहू
क्षेत्र	खेत
गर्दभ	गधा
गृद्ध	गिद्ध
घट	घड़ा
घृणा	घिन
घोटक	घोड़ा
चंद्र	चाँद
ताम्र	ताँबा
रजनी	रैन
श्रृंगार	सिंगार
लज्जा	लाज
सत्य	सच
सौभाग्य	सुहाग
शुष्क	सूखा
हस्त	हाथ, हथौडा
साधु	साहू
शृगाल	सियार

तत्सम	तद्भव
शूकर	सूअर
शुक	सुआ
संध्या	साँझ
सूर्य	सूरज
शय्या	सेज
छत्रक	छाता

तत्सम	तद्भव
छेद	छिद्र
गोधूम	गेहूँ
जिह्वा	जीभ
घृत	घी
चर्मकार	चमार
चुंबन	चूमना
हस्ती	हाथी

द्रविड़ भाषाओं से

उड़द, ओसारा, कच्चा, कन्जल, कोश, काका, केड, कुटी, कुप्पी, केतको चक्का, चिकना, चूड़ो झंझा, झूठ टंटा, टोपी, ठेस, डंका, नीर, पापड़, पिंड पेट भंगी माला. मीन, मुकुट, लाठी, लोटा, सूजी, इडली, डोसा. साभर, पिल्ला आदि ।

अपने गठन से

अनुकरणात्मक या ध्वन्यात्मक शब्द अंडबंड, ऊटपटाँग, कड़क, किलकारी, खटपट, खर्राटा, गड़गड़, चटक चटपटा, चिड़चिड़ा, चुटकी, छिछला, झंकार, टंकार, ठठेरा, भभक, भोंपू, कटकटाना, खटखटाना, खुरचना, घुड़की, सनसनाहट हिनहिनाना आदि ।

► देशज शब्द / विदेशज शब्द

देशज शब्द

देशज शब्द वे शब्द हैं जिनका जन्म देश में ही हुआ है।

देशज शब्द की एक विशेषता यह भी है कि उसमें लोक या अंचल की संस्कृति की महक महसूस की जा सकती है। भारत में दूसरी भाषा से लिये गए शब्द भी देशज कहलाएंगे अगर उस भाषा का जन्म भारत में हुआ हो।

विदेशज शब्द

विदेशज शब्द वे शब्द हैं जो हमारे देश में नहीं उपजे बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया में हिंदी भाषा में स्वीकार किये गए हैं।

हालांकि विदेशज और देशज दोनों ही प्रकार के शब्द दूसरी भाषाओं से संबद्ध होते हैं, किंतु देशज शब्दों का संबंध इसी देश की भाषाओं और विदेशज का विदेशी भाषाओं से होता है।

प्रमुख विवेशज शब्द

तुर्की शब्द -

उर्दू काबू, कैची, कुली कुर्की, चाकू, चिक, चम्मच, चकमक, चेचक, तमगा, तलाश, तुर्की, तोप, तोशक, नौकर, बारूद, बहादुर, बेगम, मुगल, लफंगा, लाश, सराय, सुराग।

अरबी शब्द -

अजब, अजीब, अदालत, अक्ल, अल्लाह, असर, आखिर, आदमी, आफत, इनाम, इजलास, इज्जत, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान, औरत, औसत, कब्र, कमाल, कर्ज, किस्मत, कालीन, कीमत, किताब, कुरसी, खत, खत्म, खिदमत, ख्याल, जिस्म, जुलूस, जलसा, जवाब, जहाज, जलेबी, जिक्र तमाम तकदीर, तारीख, तकिया, तरक्की, दवा, दावा, दिमाग, दुनिया, नतीजा, नहर, नकल, फकीर, फिक्र, फैसला, बहस, बाकी, मुहावरा, मदद, मजबूर, मुकदमा, मौसम, मौलवी, मुसाफिर, यतीम, राय, लिफाफा, वारिस, शराब, हक, हजम, हाजिर, हिम्मत, हुक्म, हैजा, हौसला, हकीम, हलवाई।

पारसी शब्द -

आबरू, आतिशबाज़ी, आराम, आमदमी, आवारा, आवाज़, उम्मीद, उस्ताद, कारीगर, किशमिश, कुरता, कुश्ती, कूचा, खाक, खुद, जूलूस, खुदा, खामोश, खुराक, गरम, गज, गवाह, गिरफ्तार, गिर्द, गुलाब, चादर, चापलूस, चालाक, चश्मा, चेहरा, ज़हर, जलसा, ज़ोर जिंदगी, जागीर, जादू, जुरमाना, जोश, तबाह, तमाशा, तनखाह, ताजा, तेज, दंगल, दफ्तर, दरबार, दारोगा, दाग, दवा, दिल, दीवार, दूकान, नापसंद, नापाक पाजामा, परदा, पैदा, पुल, पेश, बारिश, बीमार, बुखार, बर्फ़ी मज़ा, मलाई, मकान, मजदूर, मुश्किल, मोरचा याद, यार, रंग, राह, लगाम, लेकिन, वापिस, शादी, सितार, सरदार, समोसा, साल, सरकार, हफ्ता, हज़ार। अंग्रेजी शब्द अपील, कोर्ट, मजिस्ट्रेट, जज, पुलिस, टैक्स, कलक्टर, डिप्टी, ऑफिसर, वोट, पेंशन, कॉपी, पेंसिल, पेन, पिन, पेपर, लाइब्रेरी, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, डॉक्टर, कंपाउंडर, नर्स, ऑपरेशन, वार्ड, प्लेग, मलेरिया, कालरा, हार्निया, डिपथीरिया, कैंसर, कोट, कॉलर, पैंट, हैट, बुशर्ट, स्वेटर, हैट, बूट, जंपर, ब्लाउज़, कप, प्लेट, जग, लैंप, सूटकेस, गैस, माचिस, केक, टॉफ़ी, बिस्कुट, टोस्ट, चॉकलेट, जैम, जेली, ट्रेन, बस, कार, मोटर, लॉरी, स्कूटर, साइकिल, बैटरी, ब्रेक, इंजन, यूनिन, रेल, टिकट, पार्सल, पोस्ट कार्ड, मनी ऑर्डर, स्टेशन, ऑफिस, क्लर्क, गार्ड, एजेंट।

अन्य भाषाओं के शब्द -

- चीनी शब्द - चाय, लीची।
- जापानी शब्द - झम्पान, रिक्शा।
- पुर्तगाली शब्द - अनन्नास, आलपीन, गमला, गिरजा, चाबी, नीलाम, पपीता, पाव (रोटी), पादरी, बंबा, बाल्टी, फीता, आलमारी। फ्रेंच शब्द - अंग्रेज़, कारतूस, कूपन, फ्रांसीसी, रेस्तरां, रिपोर्टाज।
- डच शब्द - तुरूप, बम (ताँगे का एक पुरजा)।
- रूसी शब्द - रूबल, वोडका, स्पुतनिक।

भाषा विज्ञान

भाषा की परिभाषा

भाषा शब्द संस्कृत को 'भाष' धातु से बना है। 'भाष' का अर्थ है **करना, बोलना, व्यक्त करना, वाक, वाणी**। जब व्यक्ति वर्ग, अक्षर, शब्द, वाक्य द्वारा अपने मनोभावों और विचारों को अभिव्यक्त करता है, तो उसकी वाणी ही भाषा है। भाषा सामाजिक मनुष्यों के बीच भागों और विचारों के **पारस्परिक आदान-प्रदान** का एक सार्थक माध्यम है। विशिष्ट विद्वानों एवं भाषा याज्ञिकों द्वारा प्रदत्त परिभाषाओं से भाषा का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। परिभाषायें निम्नवत् हैं-

- 1. क्रोचे :-** भाषा सीमित और व्यक्त ध्वनियों का नाम है जिन्हें हम 'अभिव्यक्ति के लिए संगठित करते हैं'।
- 2. श्यामसुन्दर दास :-** मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।
- 3. बाबू राम सक्सेना :-** जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उसको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।
- 4. डॉ. भोलानाथ तिवारी :-** भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित प्रायः यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।
- 5. कामता प्रसाद गुरु :-** भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है।
- 6. सीताराम चतुर्वेदी :-** भाषा के आविर्भाव से सारा मानव संसार गुँगों की विरान बस्ती बनने से बच गया।
- 7. सुमित्रानन्दन पंत :-** भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृदय-तंत्री की झंकार है जिनके स्वर में अनुभूति अभिव्यक्ति पाती है।
- 8. प्लेटो :-** भाषा आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर जब यह ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है, तो उसे भाष की संज्ञा दी जाती है।
- 9. भर्तृहरि :-** भाषा दो व्यक्तियों के मध्य विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है।

भाषा की उत्पत्ति

भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त :-

विद्वानों और भाषाविज्ञानियों ने भाषा की उत्पत्ति से सम्बन्धित निम्नांकित मुख्य सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं:-

- | | | | |
|--------------------|---------------------------|---------------------|--------------------|
| 1. दैवीय सिद्धान्त | 2. सांकेतिक उत्पत्तिवाद | 3. डिङ्गडाङ्गवाद | 4. अनुकरणमूलकतावाद |
| 5. प्रतीकवाद | 6. सम्पर्क सिद्धान्त | 7. समन्वय सिद्धान्त | 8. यो - हो - वाद |
| 9. टाटा-वाद | 10. मनोभाव अभिव्यंजकतावाद | | |

भाषा का स्वरूप :-

सामान्य लोक-जीवन में भाषा सभ्य असभ्य, स्थानीय क्षेत्रीय, प्रान्तीय राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय जातिगत समाजगत, स्वाभाविक कृत्रिम आदि में प्रयुक्त व्यापक स्वरूपों में ग्रहण की जाती है।

विश्व भर में लगभग **3000 (तीन हजार) भाषायें** बोली जाती हैं। भारतीय भाषाओं में सबसे प्राचीन रूप 'ऋग्वेद संहिता' में प्राप्त है। भारत की प्रथम 'देशभाषा' पालि है जो लौकिक संस्कृत से पैदा होकर पुरानी प्राकृत कहलाती है।

भारतीय भाषाओं का प्रथम सर्वेक्षण जॉर्ज ग्रियर्सन ने सन् 1894 ई. में किया था।

उनकी सर्वेक्षण पुस्तक का नाम 'ए लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' है। डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार **179 भाषाएँ** हैं तथा 544 बोलियाँ हैं।

भाषा के प्रकार:-

भाषा के दो प्रकार (रूप) हैं -

1. **मौखिक भाषा :-** मौखिक भाषा की आधारभूत इकाई 'ध्वनि'
2. **लिखित भाषा :-** लिखित भाषा की आधारभूत इकाई 'वर्ण' है।

भाषा के अंग या अवयव :

भाषा के तीन अंग होते हैं।

1. ध्वनि
2. वाक्य
3. अर्थ

भाषा के आधार :-

भाषा के दो आधार हैं:-

1. **मानसिक आधार :-** अपने भाव या विचार को अभिव्यक्त करने के लिए वक्ता द्वारा भाषा का प्रयोग मानसिक आधार है। मानसिक आधार अभिव्यक्ति का माध्यम है।
2. **भौतिक आधार :-** वक्ता के भाव, विचार का श्रोता द्वारा ग्रहण किया जाना भाषा का भौतिक आधार है। यह अभिव्यक्ति का साधन है।

उपर्युक्त दोनों आधारों से भाषा का गठन होता है मानसिक आधार को आन्तरिक भाषा और भौतिक आधार को बाह्य भाषा कहा जाता है।

भाषा की प्रकृति:

- भाषा के अपने आन्तरिक गुण या स्वभाव को भाषा की प्रकृति कहते हैं। विद्वानों ने भाषा की प्रकृति को दो समूहों में निर्धारित किया है-

- (1) **रचना समूह:-** रचना समूह में ध्वनि प्रतीकों अर्थात् वर्ण और अक्षरों का उच्चारित होना, उनका निश्चित प्रतीकात्मक ऐच्छिक माय सम्बन्ध, क्रमबद्धता, रूप सुव्यवस्थित होना आदि का समावेश है।
- (2) **स्वभावगत समूह :-** स्वभावगत समूह में भाषा का अर्जित और अनुकूल होना, सामाजिकता, परिवर्तनशीलता, सारल्य प्रियता, विकासोन्मुखता विविधरूपता एवं रचना स्वातंत्र्य आदि को समाहित किया जा सकता है।

भाषा की विशेषताएँ :-

भाषा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

- (1) भाषा प्रतीकात्मक होती है।
- (2) भाषा ध्वनिमय होती है।
- (3) भाषा का सम्बन्ध मनुष्य से होता है।
- (4) भाषा परिवर्तनशील है।
- (5) भाषा की क्षेत्रीय सीमा होती है।
- (6) भाषा सरलता एवं प्रौढ़ता की दिशा में सतत गतिशील होती है।



(7) समाज के सांस्कृतिक विकास एवं पतन के साथ भाषा के विकास एवं पतन भी सीधे जुड़े होते हैं।

भाषा के रूप :

भाषा के मुख्यतः निम्नलिखित तीन रूप हैं :-

- (1) बोलियाँ
- (2) परिनिष्ठित भाषा
- (3) राष्ट्रभाषा

भारत में बोलियों की कुल संख्या 650 है।

► ध्वनि परिवर्तन/ अर्थ परिवर्तन

ध्वनि की परिभाषा महाभाष्य में पतंजलि का कथन है कि भाषा की लघुतम ध्वनि इकाइयाँ, वर्ण हैं। ये वर्ण स्वयं में सार्थक नहीं होते, परन्तु मिलकर अर्थवान् शब्दों का निर्माण करते हैं। उदाहरणतः कू का उच्चारण निरर्थक है, परन्तु इसके साथ औ और आ ध्वनियों के मिल जाने से 'कौआ' सार्थक शब्द बन जाता है क्, औ, आ ध्वनियाँ अपने आप में पृथक्-पृथक् अर्थ व्यक्त नहीं करती। ध्वनियाँ भाषा का स्थूल आधार हैं और इनमें मानव के चिंतन की अभिव्यक्ति का उपाय निहित है। मनुष्य मूलतः ध्वनियों में नहीं, सार्थक पदों में सोचता है। मनुष्य के मस्तिष्क में विचार सार्थक पदों के रूप में विद्यमान रहते हैं वहाँ शब्द और अर्थ में पार्थक्य नहीं रहता। जब विचारों और भावों की अभिव्यंजना की इच्छा होती है तो ये पद मुख से निःसृत होते हैं। पदों का ठोस रूप नहीं होता और न ही इनका उच्चारण पूर्ण पदों के रूप में करना सम्भव है, अतः मनुष्य के स्वरयंत्र से, पदों में अंगभूत ध्वनियों का उच्चारण, उनकी व्यवस्था क्रम में किया जाता है, उदाहरणतः फल शब्द के उच्चारण में पूर्ण शब्द का उच्चारण, **इकट्ठा नहीं होता, अपितु आदि ध्वनियाँ** अपने क्रम में सुनाई पड़ती है। इसका कारण स्वरयंत्र की कार्यप्रणाली की व्यवस्था है। भर्तृहरि 'वाक्यपदीयम्' में स्पष्ट करते हैं कि शब्द और अर्थ परस्पर इस प्रकार आवद्ध हैं कि चिन्तन में इनका पूर्वापर क्रम नहीं रहता। वे शब्द और अर्थ के संघात को स्फोट में निहित ध्वनियों का व्यवस्था के क्रम में ही उच्चारण संभव है। यदि ध्वनियों की व्यवस्था का क्रम उलट-पलट हो जाए तो उनसे बने पद, विचारों और भावों के अर्थ का संप्रेषण करने में असमर्थ होंगे। 'घट' स्फोट के उच्चारण में ध्वनियों का क्रम बदल जाने पर 'घ' शब्द और उसका अर्थ, पृथक् स्थितियाँ न रख कर स्फोट रूप में अर्थमय शब्द का द्योतक है।

इस प्रकार निष्कर्षतः

1. भाषा विज्ञान में, भाषा से संबंध मानवीय वाणी ही ध्वनि है।
2. ध्वनि इकाइयाँ शब्दों का निर्माण करती हैं।
3. ध्वनि इकाइयाँ (वर्ण) अपने आप में सार्थक नहीं होती, परन्तु सार्थक शब्दों की निर्मिति में सहायक हैं।
4. मनुष्य ध्वनि इकाइयों में नहीं सोचता। उसके चिंतन का आधार सार्थक शब्द होते हैं।
5. शब्दों में ध्वनि इकाइयों की व्यवस्था रहती है।
6. शब्दों की अभिव्यक्ति के लिए स्वरयंत्र, उनमें व्यवस्थित ध्वनि इकाइयों का क्रमशः उच्चारण करता है।
7. शब्दों में ध्वनियों का जो क्रम निश्चित है, उसे बदलने पर उन शब्दों की सार्थकता को व्यापात पहुँचता है, भले ही ध्वनियाँ स्वयं निरर्थक हो।

अतः अर्थमय शब्दों को स्थूल अभिव्यक्ति देने वाली मानवीय वाणी ध्वनि है अर्थात् मनुष्य, स्फोट की अभिव्यक्ति नाद में करता है, यह नाद ही ध्वनि है। ध्यातव्य है कि किसी व्यक्ति के स्वरयंत्र में विकास आने पर, ध्वनियों का उच्चारण प्रभावित

हो सकता है मानसिक दबाव और विकारग्रस्त मन की प्रक्रिया, ध्वनि के स्वस्थ उच्चारण में बाधक हैं। इनसे उच्चारण का सुर बदल जाता है।

❖ ध्वनि के वैज्ञानिक आधार

➤ **ध्वनि परिवर्तन के विभिन्न रूप :** डॉ. भोलानाथ तिवारी ने स्वरूप के आधार पर ध्वनि परिवर्तन को निम्नलिखित वर्गों में रखा है-

- 1. लोप** - 'अभ्यंतर' शब्द का 'भीतर' शब्द में परिवर्तन 'अ' स्वर ध्वनि के लोप के कारण हुआ है जबकि 'सप्त' से 'सात' शब्द का निर्माण व्यंजन के लोप के कारण हुआ है।
- 2. आगम** - 'सूर्य' शब्द से 'सूरज' या 'पूर्व' से बने 'पूरब' में 'र' के बाद 'अ' ध्वनि का आगम हुआ है। इस प्रकार नई ध्वनि के आगम के द्वारा नए शब्द का निर्माण हुआ है।
- 3. ध्वनियों का स्थान-परिवर्तन** - जय किसी शब्द में दो ध्वनियां एक-दूसरे के स्थान पर चली जाती हैं तो इस परिवर्तन के द्वारा एक नए शब्द का निर्माण होता है जैसे 'वाराणसी' मूल शब्द से बने 'बनारस' शब्द में 'ण' ध्वनि 'न' में परिवर्तित होकर 'र' के स्थान पर तथा 'र' ध्वनि 'ण' के स्थान पर चली गई, जिससे इस नए शब्द का निर्माण हुआ।
- 4. अनुनासिकता के कारण परिवर्तन** - जब किसी तत्सम शब्द का नासिक्य व्यंजन अनुनासिकता में बदल जाता है तो इस ध्वनि परिवर्तन द्वारा नया तद्भव शब्द बनता है जैसे 'कम्पन' शब्द के 'म' के अनुनासिकता में बदलने कारण 'काँपना' शब्द का निर्माण हुआ।
- 5. शब्दों की ध्वनियों के दीर्घीकरण तथा महाप्राणीकरण के रूप में भी ध्वनि परिवर्तन के अनेक उदाहरण मिलते हैं** जैसे- 'सप्त' शब्द के ह्रस्व स्वर की दीर्घ स्वर में परिवर्तन हुआ और इससे 'सात' शब्द निर्मित हुआ। इसी प्रकार 'शुष्क' शब्द के 'क' अल्पप्राण व्यंजन के महाप्राण 'ख' में परिवर्तन द्वारा 'सूखा' शब्द बना। इस प्रकार भाषाओं में ध्वनियों के स्वरूप में परिवर्तन अनेक प्रकार का हो सकता है।

❖ ध्वनि परिवर्तन के कारण

ध्वनि परिवर्तन ऐतिहासिक और भौगोलिक दोनों कारणों से होता है। 'अग्नि' से 'आग' शब्द का बनना ध्वनि परिवर्तन कहा जाएगा। तत्सम शब्दों में **धीरे-धीरे ध्वनि परिवर्तन** से ही तद्भव शब्दों का निर्माण हुआ इसी प्रकार अन्य भाषाओं से संपर्क से भी भाषा में ध्वनि परिवर्तन होता है किसी भाषा का जब भौगोलिक विस्तार होता है तो वह अपने मूल बोली के स्वरूप को छोड़ने लगती है वह ऐतिहासिक क्रम से कालांतर में इतनी बदल जाती है कि उसका स्वरूप उसके मूल भौगोलिक या स्थानीय रूप से बिल्कुल भिन्न हो जाता है। उदाहरण के लिए हिन्दी का भौगोलिक विस्तार होने पर वह अपने मूल स्थानीय खड़ी बोली रूप से बाहर निकल कर **राजस्थानी, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, मथिला** तक संबंध होकर भाषा के रूप में परिवर्तित हो गई। ध्वनि परिवर्तन के अनेक कारणों में से एक **उच्चारण में सुविधा या प्रयत्न- लापय** को प्रमुख माना जाता है। प्रायः बहुत से शब्दों के उच्चारण के समय आने वाली कठिन ध्वनियों को सुविधा के लिए आसान ध्वनि में बदल कर उच्चारित करने की प्रवृत्ति मिलती है। जैसे संयुक्त व्यंजन के उच्चारण में कठिनाई होने पर आसानी से शब्द का उच्चारण करने के लिए उसके एक व्यंजन का लोप कर दिया जाता है, उदाहरण के लिए, 'दयि' का 'दो' या 'स्नेह' का 'नेह' उच्चारण। इसके अतिरिक्त आसान ध्वनियों के प्रयोग या ध्वनियों के क्रम में परिवर्तन के द्वारा भी उच्चारण को सुविधाजनक बनाया जाता है जैसे 'ब्राह्मण' का 'म्रहण' उच्चारण।

इसी प्रकार, किसी दूसरे शब्द से समानता के कारण कुछ शब्दों की ध्वनियाँ उन्हीं के समान बोले जाने के कारण परिवर्तित हो जाती है। जैसे- **संस्कृत का 'एकदश' शब्द 'द्वादश'** के सादृश्य पर 'एकादश' के रूप में बोला जाने लगा। इन ऐतिहासिक परिवर्तनों के अतिरिक्त भाषाओं के आपसी संपर्क के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होते हैं। एक भाषा के कुछ शब्द जब दूसरी भाषा में अपनाए जाते हैं तो उनमें ध्वनि परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए 'मुंबई' मराठी का

तत्सम रूप हैं जिसका हिन्दी में परिवर्तित तद्भव रूप 'बम्बई' और अंग्रेजी में 'बांबे' है यह ध्वनि परिवर्तन भाषा भेद या भौगोलिक परिवर्तन के कारण हुआ है।

भौगोलिक विस्तार के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होता है। क्षेत्र बदलने से भाषा 'बदलाव आता है। जिस भाषा का भौगोलिक विस्तार होता है उसकी ध्वनियों के उच्चारण में देश-भेद से भी अनेक परिवर्तन होते हैं।

ध्वनि परिवर्तन के इन परिवर्तनों को एक ही ध्वनि रूप से वैकल्पिक रूप कहा जा सकता है।

ऐतिहासिक ध्वनि विज्ञान के किसी भाषा की विभिन्न ध्वनियों के विकास का विभिन्न कालों में अध्ययन किया जाता है। उदाहरणार्थ हिंदी के संबंध में देखेंगे कि वह हिंदी में किन-किन स्रोतों (संस्कृत, प्राकृति अपभ्रंश, फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि) से आया है, साथ ही यह भी देखेंगे कि हिन्दी में विभिन्न कालों में इसका विकास किन-किन रूपों में हुआ है। अक्षर, सुर, बलाघात आदि का इतिहास भी इसी प्रकार देखा जाता है। ऐतिहासिक ध्वनि विज्ञान ध्वनियों के विकास का अध्ययन है। यहाँ ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं उसकी दिशाओं का अध्ययन प्रस्तुत है।

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के समान ही भाषा की ध्वनियों में भी सतत परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तन के कारण ही भाषा का जीवंत रूप सामने आता है ध्वनि परिवर्तन या विकास जीवंत भाषा का प्रमुख लक्षण है। ध्वनि परिवर्तन के कारण को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं -

(क) बाह्य कारण

(ख) आभ्यंतर कारण।

बाह्य कारण :- ये कारण बाहर से ध्वनि को प्रभावित करते हैं। ध्वनि परिवर्तन के बाह्य कारण मुख्यतः हैं-

- **व्यक्तिगत भिन्नता :-** प्रत्येक व्यक्ति की वागिंद्रिय तथा श्रवणेंद्रि अन्य व्यक्ति से भिन्न होती हैं। एक व्यक्ति किसी ध्वनि को जिस प्रकार बोलता है, दूसरा व्यक्ति पूर्ण प्रयत्न करने पर भी वैसा नहीं बोल सकता है। वाग्यंत्र की भिन्नता के ही कारण किन्हीं दो व्यक्तियों के उच्चारण में पूर्ण समानता नहीं हो सकती है। यह भिन्नता कभी सामान्य होती है, तो कभी रेखांकन योग्य होती है यथा-अंग्रेजी 'तुम' को टुम कहता है। हम बच्चे के मुख से रोटी का 'लोटी' और हाथी को आती 'सुनते ही हैं। इस प्रकार वादिय भिन्नता और श्रवण की अपूर्णता से अनेक ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है।
- **भौगोलिक कारण :-** ध्वनि उच्चारण पर भौगोलिक परिस्थिति का विशेष प्रभाव पड़ता है। एक भाषा की विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण भिन्न भौगोलिक वातावरण के दूसरे भाषा भाषियों के द्वारा संभव नहीं है। शीत प्रधान वातावरण के व्यक्ति प्रायः बातचीत में मुख सीमित खोलते हैं। इस कारण ऐसे वातावरण के व्यक्ति दंत्य ध्वनियों का स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पाते हैं। वे प्रायः त, थ, द को क्रमशः ट ठ ड बोलते हैं आवागमन के साधन से रहित या ऐसे शिथिल साधन वाले भौगोलिक भाग की भाषाओं में ध्वनि परिवर्तन अत्यंत मंद होता है। जबकि उर्वर, समतल, आवागमन से मुक्त भू-भाग की भाषाओं की ध्वनियों में सतत तीव्र गति से परिवर्तन होता रहता है।
- **सामाजिक परिस्थिति :-** सामाजिक उन्नति तथा अवनति का भाषा पर विशेष प्रभाव पड़ता है, सामाजिक उन्नति पर भाषा का शुद्ध रूप प्रयुक्त होता है, तो अवनति पर उसके परिवर्तित रूप का ही अधिक प्रयोग होना स्वाभाविक है। इस प्रकार सामाजिक स्थिति के कारण शब्दों में ध्वनि परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है। यजमान जजमान, फरोहित उपरेहित, वियरिंग- बैरंग, वाराणसी-बनारस।
- **अन्य भाषाओं का प्रभाव :-** एक भाषा क्षेत्र में जब किसी अन्य भाषा का प्रयोग होने लगता है, तो उनकी ध्वनियाँ वहाँ की भाषा को प्रभावित करती हैं। मुसलमानों के भारत आगमन के पश्चात अरबी तथा फारसी भाषा का यहाँ प्रयोग होने लगा है। अरबी-फारसी के प्रभाव से हिन्दी में क, ख, ग, ज, फ आदि ध्वनियाँ बोली तथा लिखी लगी है। अंग्रेजी के प्रभाव से हिन्दी में ओ ध्वनि का प्रयोग होने लग गया है यथा डॉक्टर, बॉल आदि।

अर्थ परिवर्तन

भाषा मानव व्यवहार का प्रमुख साधन है। मनुष्य स्वयं परिवर्तनशील है इसलिए उनका प्रमुख व्यवहार भाषा भी परिवर्तनशील है। भाषा में परिवर्तन की यह प्रक्रिया उसके अंगों को भी प्रभावित करती है। अर्थ भी उससे अप्रभावित नहीं रहता। अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाओं का यहाँ संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत है।



अर्थ में सदा परिवर्तन होता रहता है। ध्वनि या पद के परिवर्तन की प्रक्रिया के समान अर्थ भी स्थायी और अपरिवर्तनीय वस्तु नहीं है। उसमें भी परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण के लिए संस्कृत का शब्द आकाशवाणी ले। संस्कृत में इसका अर्थ 'देववाणी' है तुलसी के समय भी यही अर्थ था। अतः रामचरितमानस में कहा गया है 'मै अकासवानी तेहि काला'। अब आकाशवाणी का अर्थ परिवर्तन होकर (हिन्दी में ऑल इण्डिया रेडियो हो गया है अतः अर्थ में परिवर्तन हो जाना ही अर्थ परिवर्तन है।

अर्थ परिवर्तन की दिशा :- अर्थविज्ञान के प्रमुख चिंतक बील के अनुसार अर्थ का विकास अथवा परिवर्तन की मुख्यतः तीन दिशाओं में होता है-

1. अर्थ विस्तार :- वे शब्द जो पहले सीमित अर्थ में प्रयोग होते हो, लेकिन बाद में उनके अर्थ में विस्तार देखने को मिलता है और उनका अर्थ व्यापक हो जाता है। इसे ही अर्थ विस्तार कहते हैं। प्रवीण का अर्थ पहले केवल वीणा बजानेवाले के लिए प्रयुक्त होता था किन्तु धीरे-धीरे इस शब्द का अर्थ विस्तार हुआ और बाद में चल कर किसी भी काम में निपुण व्यक्ति को प्रवीण कहा जाने लगा। इसी प्रकार कुशल शब्द का अर्थ था 'कुश लाने वाला' लेकिन बाद में यह 'चतुर' का पर्याय बन गया।

2. अर्थ संकोच :- जिस प्रकार अर्थ का विस्तार होता है, उसी प्रकार कई बार व्यापक अर्थ वाले शब्दों के अर्थों में संकोच भी होता है। जैसे जलज अर्थ होता है। 'जल से उत्पन्न' पर जल से उत्पन्न होने वाली सभी चीजों को जलज नहीं कहेंगे, ये शब्द कमल के अर्थ के लिए रूढ़ हो गए हैं।

3. अर्थदिश :- अर्थ विस्तार और अर्थ संकोच के अलावा कई बार शब्द के अर्थ बिल्कुल बदल भी जाते हैं जैसे असुर शब्द देवता का वाचक था पर आज वह दैत्यों का वाचक हो गया है। इसी तरह आकाशवाणी का अर्थ देववाणी था पर अब वह भारतीय रेडियो के लिए इस्तेमाल होता है।

इसके साथ अर्थोत्कर्ष और अर्थपकर्ष भी अर्थ परिवर्तन की दिशा निर्धारित करते हैं। अर्थोत्कर्ष में निकृष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द उत्कृष्ट अर्थ का बोधक हो जाता है। जैसे- साहस, मुग्ध आदि पहले साहसी उसे कहा जाता था जो जोर-डकैत और जघन्य अपराध में लिप्त हो, लेकिन आगे चलकर वही धीरता और वीरता का परिचायक बन गया। वैसे ही मुग्ध पहले मूर्ख का बोधक था बाद में वही मोहित होने के अर्थ में परिवर्तित हो गया।

➤ अर्थ परिवर्तन के कारण :-

1. भौगोलिक परिवेश की भिन्नता : भौगोलिक परिवेश की भिन्नता के कारण एक ही शब्द में हमें अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं क्योंकि एक ही शब्द का हर जगह एक ही अर्थ हो यह जरूरी नहीं। जैसे- कॉर्न का अर्थ ब्रिटेन में गेहूँ है तो अमेरिका में मक्का।

2. सामाजिक परिवेश का परिवर्तन : समाज के विभिन्न जगहों पर एक ही शब्द के भिन्न अर्थ देखने को मिलते हैं। जैसे घर पर और चर्च में Father का एक ही अर्थ नहीं होता।

3. धार्मिक परिवेश में परिवर्तन : धर्म का प्रभाव भी शब्दों के अर्थ में पड़ता है। धर्म को केन्द्र में रखकर जो लड़ते हैं ये अवसर अपने नकारात्मक शब्दों को अपने विरोधी धर्म से जोड़ने का प्रयास करते हैं। एक उदाहरण है 'काफिर' (श्रद्धा न रखने वाला) जिसे कभी-कभी इस्लाम को मानने वाले हिन्दुओं से जोड़ते हैं। उसी तरह आज हिन्दुओं के यहाँ 'जेहाद' (पवित्र उद्देश्य के साथ संघर्ष करना) शब्द का अर्थ आतंकवाद से जोड़ा जाने लगा है।

4. राजनीतिक स्थिति का प्रभाव : राजनीति भी हमारे शब्दों के अर्थों को प्रभावित करते हैं। जैसे आज 'जय हिन्द' और 'जय श्री राम' का अर्थ राजनीति प्रभाव में आकर अपने मूल अर्थ से हटता जा रहा है।

5. नए भौतिक साधन : भौतिक साधनों में परिवर्तन के साथ शब्दों के अर्थ भी बदलते हैं। उदाहरण- विज्ञान ने शीशे के दर्पण बना दिए और हमने शीशा धातु के आधार पर दर्पण का नामकरण शीशा कर दिया।

6. शब्द-प्रयोग की अधिकता : किसी-किसी शब्द के बहुत अधिक प्रयोग कर देने से भी उसका विशिष्ट अर्थ खो जाता है। जैसे- आचार्य श्रीमान, नेता; महाजन, शहीद आदि।



7. लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग : लक्षणा और व्यंजना भी अर्थ परिवर्तन के प्रमुख कारणों में गिने जा सकते हैं हम जानते हैं कि लक्षणा से राब्यर्थ में प्रभाव पैदा हो जाता है तथा व्यंजना से अर्थ विशिष्ट और नवीन बन जाता है। जैसे कोई कहे कि वह अपने गाँव का शेर है, तो इसमें शेर का अर्थ पशु विशेष न होकर वीर और प्रभावशाली माना जाएगा। वास्तव में व्यंजना के कारण ही कहावतें, लोकोक्तियाँ व आलंकारिक प्रयोग आदि विलक्षण अर्थबोध कराने में सफल हो गते हैं।

8. शब्दों के तद्भव रूप : कई बार शब्दों के तद्भव रूप भी मूल अर्थ में परिवर्तन उपस्थित कर देते हैं। जैसे- 'श्रेष्ठ' (महान, अधेय) का तद्भव रूप 'सेट' आगे चलकर व्यापारी के अर्थ में परिवर्तित हो गया 'भद्र' (सुसंस्कृत) का तद्भव रूप 'भद्दा' (असभ्य, अश्लील, बेडौल) विपरीतार्थक हो गया। इसी प्रकार 'स्तन' (स्त्री के संबंध में) का तद्भव रूप 'थन' अब केवल पशुओं के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है।

9. शब्दकोशीय पर्याय : शब्दकोश में प्रायः एक शब्द का बोध कराने के लिए अनेक पर्याय दे दिए जाते हैं। कभी-कभी इन पर्यायों से भी अर्थ में पर्याप्त अंतर आ जाता है जैसे चेक और ड्राफ्ट शब्द के ऐसे पर्याय दिये जाते हैं कि उसके मूल अर्थ में ही परिवर्तन हो जाता है। जैसे चेक के लिए देवक, धनादेश, हुंडी आदि यहीं ड्राफ्ट के लिए भी धनादेश, हुंडी का प्रयोग करना। अब यहाँ हुंडी का प्रयोग केवल ड्राफ्ट के अर्थ में होना चाहिए। शब्दकोशीय पर्याय के कारण ही लोग हुंडी से चेक का अर्थ लगा लेते हैं।

10. सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग : अनेक शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग पहले पदार्थ विशेष के ही अर्थ में किया जाता है लेकिन बाद में सामान्य पदार्थों के लिए भी किया जाने लगा। जैसे-सब्जी, स्याही आदि सब्ज का अर्थ होता है हरा इसलिए सब्जी से हरी तरकारी का अर्थबोध होता था, लेकिन अब आलू, प्याज आदि के लिए भी सब्जी का प्रयोग किया जाता है वैसे ही स्याही का अर्थ होता है काला। पहले कालेरंग की रोशनाई के लिए ही स्याही का प्रयोग होता है लेकिन अब किसी भी रंग की रोशनाई के लिए स्याही का प्रयोग किया जाने लगा है।

11. अन्य भाषाओं का अधूरा ज्ञान : अन्य भाषाओं के अधूरे ज्ञान से भी अर्थ परिवर्तन हो जाता है। उर्दू में खुलासा का अर्थ संक्षिप्त करना है किन्तु हिन्दी में इसे व्याख्या या विस्तार से बताने के अर्थ में प्रयोग किया जाने लगा है वैसे ही विरोध का बोधक सही शब्द मुखालफत है लेकिन हिन्दी में अक्सर खिलाफत का प्रयोग कर दिया जाता है जो कि खलीफा से संबंधित है। कई बार तो अनर्थकारी अर्थ तक प्रचलित हो जाते हैं। जैसे जनक- सुता पिता की पुत्री। हालाँकि व्यक्तिवाचक संज्ञा 'जनक' की पुत्री थी 'सीता' बौद्ध जातक में तथा उसके आधार पर पालि-चीनी कोश में 'जनक' (व्यक्तिवाचक संज्ञा) का अर्थ हो गया 'पिता' तथा 'जनकसुता' का अर्थ हो गया 'पिता की पुत्री' अर्थात् बहन। यहाँ जो अर्थ परिवर्तन हुआ उसके आधार पर 'राम ने जनकसुता से विवाह - किया' का अर्थ होगा 'राम ने अपनी बहन से विवाह किया जो कि बेहद मुखतापूर्ण होगा।

12. अन्य कारण : उपर्युक्त कारणों के साथ-साथ कई अन्य कारण भी हैं जिनसे अर्थ- परिवर्तन घटित होता है। सुश्राव्यता के कारण भी अर्थ-परिवर्तन होता है, क्योंकि मनुष्य कई बार लज्जा, घृणा या अमंगल की आशंका में भी कुछ शब्दों का प्रयोग करने में झिझकता है। कई बार कवियों की निरंकुशता तथा अभिनव प्रयोग से भी अर्थ परिवर्तन घटित हुए (पंत का गांधी सी के लिए 'अछूत' का प्रयोग छुआछूत से दूर के अर्थ में, निराला का अमावस्या के लिए 'अमानिशा' का प्रयोग आदि)। भावुकता या भावात्मक बल के कारण भी अर्थ - परिवर्तन संभव है। जैसे- दुष्ट, शैतान, गधा आदि का प्रयोग प्रेम और क्रोध दोनों स्थितियों में होना। ठीक इसी प्रकार भाषण, भयंकर, प्रचंड या दुदांत का प्रयोग अच्छे अर्थों में अतिशय भाव प्रदर्शन के लिए भी किया जाता है कई बार अंधविश्वास (चेचक को माता कहना) भी अर्थ परिवर्तन का कारण बन सकता है। साहचर्य संबंध (सूरत के साहचर्य के कारण तंबाकू का 'सूरती' कहना) तथा विनम्रता का प्रदर्शन (भिखारी को राजा, प्रधानमंत्री को प्रधानसेवक, झोपड़ी को महल या हवेली को कुटिया कहना) आदि अनेक कारण हैं, जिनसे अर्थ परिवर्तन होता है।



साहित्य सिद्धांत



काव्य लक्षण

काव्य लक्षण: काव्य की परिभाषा

भारत में काव्य का इतिहास बहुत पुराना है। इसका प्रारम्भ भरत मुनि से माना जाता है। संस्कृत काव्य शास्त्र का प्रथम ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है जिसके प्रणेता 'भरतमुनि' हैं जिन्होंने अपने ग्रंथ में काव्य, काव्य के स्वरूप, काव्य के विभिन्न अंग इत्यादि का वर्णन किया है। साथ ही कविता के लक्षण व उसकी उपादेयता पर भी प्रकाश डाला है।

काव्य-लक्षण

- काव्य की परिभाषा ही काव्य-लक्षण है।
- आचार्यों ने तीन आधारों पर काव्य-लक्षण को विभाजित किया- शब्द और अर्थ द्वारा, केवल शब्द द्वारा, रस और ध्वनि द्वारा।

संस्कृत के काव्य-लक्षण

काव्य-लक्षण	आचार्य
शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् गद्यं पद्यं च तद्विधा ।	भामह
शरीरं तावदिष्टार्थं व्यवच्छिन्ना पदावली ।	दण्डी
काव्यं शब्दोऽयंगुणालंकार संस्कृतयोः शब्दार्थयोः वर्तते ।	वामन
ननु शब्दार्थौ काव्यम् ।	रुद्रट
शब्दार्थं शरीरं तावत्काव्यम् ।	आनंदवर्धन
सहृदयहृदयादिशब्दार्थमयत्वमेव काव्य लक्षणम् ।	
गुणवदलंकृतञ्च वाक्यमेव काव्यम् ।	राजशेखर
शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेन विद्या साहित्यविद्या ।	
शब्दार्थौ सहितौ वक्र कवि व्यापार शालिनी । बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी ।।	कुंतक
निर्दोष गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम् । रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति ।	भोजराज
तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः कापि ।	मम्मट
काव्यविशिष्टशब्दार्थ साहित्यसदलंकृति ।	क्षेमेंद्र
साधु शब्दार्थ संदर्भ गुणालंकार भूषितम् । स्फुटरीतिरसोपेतं काव्यं कुर्वीत कीर्तये ।।	वाग्भट्ट

अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौ काव्यम्।	हेमचंद्र
निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषणा । सालंकार रसानेक वृत्तिर्वाक्काव्य नामवाक् ।।	जयदेव
इह विशिष्टौ शब्दार्थौ काव्यम्।	समुद्रबन्ध
वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।	विश्वनाथ
शब्दार्थौ वपुरस्य शब्दार्थवपुस्ताक् काव्यम्।	विद्याधर
रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।	जगन्नाथ

► काव्य-हेतु

काव्य-हेतु

- 'हेतु' का तात्पर्य 'कारण' से है।
- 'काव्य-हेतु' का अभिप्राय काव्य की रचना के लिये आवश्यक कारणों से है अर्थात् **काव्य के सृजन** के लिये किन तत्त्वों का होना ज़रूरी है।
- काव्य-हेतु को काव्य की उत्पत्ति के कारण के रूप में समझा जा सकता है।
- बाबू गुलाबराय के अनुसार, "हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है जो कवि की काव्य रचना में सहायक होते हैं।
- संस्कृत काव्यशास्त्र में मुख्यतः तीन काव्य-हेतुओं को माना गया- प्रतिभा (शक्ति), व्युत्पत्ति और अभ्यास।

प्रस्तोता आचार्य	काव्य-हेतु
भामह	प्रतिभा
दण्डी	प्रतिभा, शास्त्रज्ञान, अभ्यास
रुद्रट, कुंतक	शक्ति, व्युत्पत्ति, अभ्यास
वामन	लोक (लोक व्यवहार), विद्या, प्रकीर्ण
जयदेव	मूल प्रतिभा (व्युत्पत्ति, अभ्यास सहायक)
मम्मट	शक्ति, निपुणता, अभ्यास
हेमचंद्र	केवल प्रतिभा
जगन्नाथ	केवल प्रतिभा

- **भामह** - " काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः।" (अर्थात् किसी-किसी प्रतिभाशाली में ही काव्य कभी-कभी स्फुरित होता है।)
- **दण्डी**- "नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रतुंचबहुनिर्मलम् अमन्दाश्चाभि योगोऽस्याः कारणं काव्य संपदः।"
- **वामन ने 'काव्य-हेतु'** के लिये काव्यांग शब्द का प्रयोग करते हुए कहा 'लोको विद्याप्रकीर्णस्य काव्यांगनि'
- **वामन ने 'प्रकीर्ण'** के अंतर्गत छह तत्त्वों को सम्मिलित किया था- लक्ष्यज्ञता (काव्य-परिचय), अभियोग (काव्य-रचना का अभ्यास), वृद्ध-सेवा (गुरु- महत्त्व), अवेक्षण (उचित शब्द प्रयोग), प्रतिमन (प्रतिभा) और अवधान (चित्त की एकाग्रता) ।
- **रुद्रट** - " त्रितयमिदं व्याप्रियते शक्तिर्व्युत्पत्तिरभ्यासः।"
- **रुद्रट के अनुसार**, "प्रतिभा से कवि शब्दार्थ-सामर्थ्य प्राप्त करता है और व्युत्पत्ति से काव्य को दोषमुक्त और अलंकारादि काव्य-तत्त्वों से उसे समृद्ध करता है। "

- **जयदेव के अनुसार**, "श्रुत (व्युत्पत्ति) और अभ्यास सहित प्रतिभा ही काव्य-हेतु है, जैसे मिट्टी-पानी के संयोग से बीज बढ़कर लता के रूप में व्यक्त होता है।
- **जगन्नाथ** - "तस्य च कारणं कविगता केवलां प्रतिभा।" (कवि में रहने वाली प्रतिभा ही केवल काव्य का कारण है।)
- " **शक्तिर्निपुणता लोक-शास्त्र-काव्याधवेक्षणात् ।**
काव्यज्ञ-शिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।" ('काव्यप्रकाश'-मम्मट) (शक्ति; लोक, शास्त्र और काव्य आदि के अवेक्षण द्वारा अर्जित निपुणता अर्थात् व्युत्पत्ति; और काव्यज्ञों से प्राप्त शिक्षा के द्वारा अभ्यास ही काव्य-हेतु हैं।)
- **'प्रसन्न पद'-नव्यार्थ युक्त्युद्बोध विधायिनी। स्फुरन्ती सत्कवेर्बुद्धिः प्रतिभा सर्वतोमुखी ।।'**

- वाग्भट

■ प्रतिभा

- प्रतिभा अथवा शक्ति को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया। इसके संदर्भ में आचार्यों के मत निम्नलिखित हैं-
 - कवित्वस्य बीजम् प्रतिभान् कवित्व बीजम् । (प्रतिभा बीज रूप है कविता का)
- वामन
- " जो शब्दों के समूह को, अर्थों के समुदाय को, अलंकारों एवं उक्तियों को तथा अनन्य साधारण रूप में काव्य सामग्री को हृदय के भीतर पहुँचाती है, उसे 'प्रतिभा' कहते हैं।"
- राजशेखर
- "प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता।।" - भट्टतीर्थ
- (अर्थ या वर्ण्य विषय को नए-नए रूप में प्रकट करने वाली प्रज्ञा, प्रतिभा है।)
- "प्रतिभा अपूर्ववस्तु निर्माणक्षमा प्रज्ञा।।" - अभिनवगुप्त
- (अपूर्व वस्तु के निर्माण में सक्षम प्रज्ञा, प्रतिभा है।)
- प्राक्तनाद्यतन-संस्कार-परिपाक-प्रौढा प्रतिभा काचिदेव कविशक्तिः।।" - कुंतक
- (पूर्व एवं वर्तमान जन्म के संस्कारों से मिली कवित्व शक्ति प्रतिभा है।)
- "शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः।।" - मम्मट
- (शक्ति अर्थात् प्रतिभा कवित्व का बीज रूप विशिष्ट संस्कार है अर्थात् कवित्व के लिये बीज की तरह मूल रूप से उत्तरदायी शक्ति ही है।)
- "सा (प्रतिभा) काव्यघटनानुकूल शब्दोपस्थितिः ।" -जगन्नाथ [काव्य रचना के अनुकूल शब्दार्थों की उपस्थिति (सृजन-क्षमता) ही प्रतिभा है।]
- **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** ने प्रतिभा को 'अंतःकरण की उद्भाविता क्रिया' के रूप में व्याख्यायित किया है।

• विभिन्न आचार्यों ने प्रतिभा के भेद इस प्रकार से किये हैं -

- **रुद्रट** - (1) सहजा (2) उत्पाद्या।

सहजा पूर्व-जन्म के संस्कारों से प्राप्त प्रतिभा है तथा उत्पाद्या से तात्पर्य इस जन्म में अर्जित प्रतिभा से है।

- **राजशेखर** - (1) कारयित्री (2) भावयित्री

कारयित्री का संबंध कवि से तथा भावयित्री का संबंध सहृदय (पाठक) से है। राजशेखर ने सहजा, 'आहार्या' एवं 'औपदेशिकी' प्रतिभा की दृष्टि से कवियों को तीन प्रकार दिये हैं-'सारस्वत', 'आभ्यासिक' और 'औपदेशिक'। इन्होंने बुद्धि के तीन भेद माने 'स्मृति', 'मति' एवं 'प्रज्ञा'।

- **हेमचंद्र** - (1) सहजा (2) औषधिकी।

यह रुद्रट द्वारा किये गए भेद का ही रूप है। सहजा जन्म से संबंधित है तो औषधिकी का संबंध श्रम आदि से है।

➤ व्युत्पत्ति

- विभिन्न काव्यों, शास्त्रों और लोक-व्यवहार से प्राप्त किये गए ज्ञान को व्युत्पत्ति कहते हैं। इसी से इसका अर्थ 'बहुज्ञता' भी लिया जाता
- राजशेखर के अनुसार, "उचितानुचित विवेको व्युत्पत्तिः।" (उचित-अनुचित का विवेक ही व्युत्पत्ति है।)

➤ अभ्यास

- राजशेखर ने इसे स्पष्टतः परिभाषित किया है कि निरंतर प्रयास करते रहना ही अभ्यास है।
- आचार्य मंगल ने इसे काव्य का मूल हेतु माना है।

► काव्य-प्रयोजन

- प्रयोजन का अर्थ "उद्देश्य" होता है।
- काव्य-रचना के उद्देश्य अर्थात् उससे प्राप्त होने वाले लाभ को काव्य-प्रयोजन कहा जाता है।

संस्कृत आचार्यों के अनुसार काव्य-प्रयोजन	
आचार्य	काव्य-प्रयोजन
• भरतमुनि	• धर्म, यश, आयु-साधक, हितकर, बुद्धि-वर्धक और लोक उपदेश। [एक स्थान पर इन्होंने पीड़ित मनुष्य को विश्रांति करना भी काव्य का एक प्रयोजन माना है।]
• भामह	• पुरुषार्थ-चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष), कीर्ति, प्रीति और समस्त कलाओं का ज्ञान।
• दण्डी	• काव्य का प्रयोजन अज्ञानांधकार को नष्ट करके ज्ञानज्योति का प्रसार करना है। (लोक व्युत्पत्ति)
• वामन	• कीर्ति और प्रीति। ['कीर्तिप्रीतिहेतुत्वात्']
• रुद्रट	• पुरुषार्थ-चतुष्टय, कीर्ति, अनर्थ का शमन, विपत्ति-निवारण, रोग-मुक्ति और अभिमत वर की प्राप्ति।
• आनन्दवर्धन	• विनेयन्मुखीकरण, प्रीति
• अभिनव गुप्त	• पुरुषार्थ-चतुष्टय, जायासम्मति उपदेश, आनन्द प्राप्ति और यश
• कुंतक	• पुरुषार्थ-चतुष्टय, व्यवहार ज्ञान व परमाह्लाद (अंतश्चमत्कार)।
• महिम भट्ट	• रसमय सदुपदेश, परमाह्लाद
• भोजराज	• कीर्ति और प्रीति।
• मम्मट	• "काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये । सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥" [यश-प्राप्ति, अर्थ-प्राप्ति, व्यवहार-ज्ञान, शिवेतर (रोग)-नाश, परमानन्द की प्राप्ति (रसास्वाद) और कान्ता-सम्मित (स्त्री की तरह कोमल) उपदेश ।]

**हिंदी के कवियों-विद्वानों के अनुसार काव्य-प्रयोजन**

कवि-विद्वान	काव्य-प्रयोजन
• कबीरदास	• "तुम जिन जानौ गीत है यह निज ब्रह्म विचार । "
• जायसी	• "ओ मन जानि कवित्त अस कीन्हा। मक यह रहै जगत् महँ चीन्हा।। धनि सोई जस कीरति जासू। फूल परै पै मरै न बासू।। "
• तुलसीदास	• कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सबकर हित होइ।।" (स्वांतःसुखाय भी माना था किंतु सबका हित करने वाला) (नेट, दिसंबर 2011)
• कुलपति मिश्र	• " जस संपत्ति आनंद अति दुरितन डारे खोइ। होत कवित तैं चतुरई जगत राम बस होइ।। "
• देव	• "रहत घर न वर धाम धन, तरुवर सरवर कूप। जस सरीर जग में अमर, भव्य काव्य रस रूप।।"
• सोमनाथ	• कीरति वित्त विनोद अरु अति मंगल को देति। करै भलो उपदेश नित वह कवित्त चित्त चेति "एक लहैं तप-पुंजह के फल ज्यों तुलसी अरु सूर गोसाई ।"
• भिखारीदास	• एक लहैं बहु संपत्ति केशव, भूषन ज्यों बरवीर बड़ाई ।। एकन्ह को जसही सों प्रयोजन है रसखानि रहीम की नाई । दास कवित्तन्ह की चरचा बुधिबत्तन को सुख दै सब ठाई ।। "
• भारतेन्दु हरिश्चंद्र	• 'आनंद की अनुभूति' और 'लोक हित की भावना'
• महावीरप्रसाद द्विवेदी	• 'ज्ञान का विस्तार' और 'आनंद की अनुभूति।'
• हरिऔध	• 'आनंदानुभूति'
• मैथिलीशरण गुप्त	• "केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये। उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये।।" • " है जिस कविता का काम लोकहित करना सद्भावों से मन मनुज मात्र का भरना पहले तो कांतासदृश हृदय का हरना फिर प्रकटित करना विमल ज्ञान का झरना " • " अर्पित हो मेरा मनुजकाय। बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय। "
• रामचंद्र शुक्ल	• " काव्य का अंतिम लक्ष्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य प्रतिस्थापन है। " • " कविता का संबंध ब्रह्म की व्यक्त सत्ता से है, चारों ओर फैले हुए गोचर जगत से है। जगत अव्यक्त की अभिव्यक्ति है और काव्य इस अभिव्यक्ति की अभिव्यक्ति है।"
• जयशंकर प्रसाद	'मनोरंजन और शिक्षा'
• सुमित्रानन्दन पंत	'स्वानतः सुखाय और लोकहिताय'
• महादेवी वर्मा	'मानव हृदय में समाज के प्रति विश्वास उत्पन्न करना'
• हजारीप्रसाद द्विवेदी	'मानव-कल्याण'
• नंददुलारे वाजपेयी	'आत्मानुभूति'
• डॉ. नगेंद्र	'आत्माभिव्यक्ति'
• बाबू गुलाब	'आत्मविस्तार'

- महावीर प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि 'साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम्ब के गोलों में भी नहीं पायी जाती। योरप में हानिकारिणी धार्मिक रूढ़ियों का उद्घाटन साहित्य ने ही किया है, जातीय स्वातंत्र्य के बीज उसी ने बोए हैं।'
- द्विवेदी जी आगे लिखते हैं कि "पोप की प्रभुता को किसने कम किया है? फ्रांस में प्रजा की सत्ता का उत्पादन और उन्नयन किसने किया है? पदाक्रान्त इटली का मस्तक किसने ऊँचा उठाया है? साहित्य ने, साहित्य ने, साहित्य ने।"
- मैथिलीशरण गुप्त ने रीतिवाद-विरोधी अभियान में हिस्सा लिया और जगन्नाथ प्रसाद भानु की पुस्तक 'काव्य-प्रभाकर' के मई, 1912 अंक में आलोचना की। "

► शब्द-शक्ति

- शब्द का अर्थ-बोध कराने वाली शक्ति को 'शब्द शक्ति' कहते हैं।
- शब्द या शब्द समूह में जो अर्थ छिपा होता है, उसे प्रकाशित करने वाली शक्ति का नाम शब्द शक्ति है।
- विश्वनाथ शब्द शक्ति को 'वृत्ति' कहते हैं।
- मम्मट शब्द शक्ति के लिए व्यापार का प्रयोग करते थे।
- साहित्य में तीन प्रकार के शब्द होते हैं- वाचक, लक्षक और व्यंजक। वाचक शब्दों में वाच्यार्थ, लक्षक शब्द से लक्ष्यार्थ और व्यंजक शब्द से व्यंग्यार्थ प्रकट होता है। शब्दों के अनुसार ही अभिधा, लक्षणा और व्यंजक शब्द से व्यंग्यार्थ प्रकट होता है।
- शब्दों के अनुसार ही अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नामक तीन शब्द शक्तियाँ हैं। कुमारिल भट्ट 'तात्पर्या' नामक एक चौथी शब्द शक्ति भी मानते हैं।

■ अभिधा शब्द शक्ति

- जहाँ स्मृति, बुद्धि, अनुभूति और शब्दकोषादि के आधार पर कहे हुए शब्द के सुनते ही, सबसे प्रथम जिस अर्थ का बोध होता है; उसे वाच्यार्थ कहते हैं।
- वाच्यार्थ को कहने वाला शब्द वाचक कहलाता है और जिस शक्ति द्वारा यह अर्थ मालूम होता है उसे 'अभिधा' कहते हैं।
- इस शक्ति के द्वारा अनेकार्थी शब्दों के एक अर्थ का बोध होता है।
- अलंकार शास्त्र के अंदर अभिधा के लिये 'साक्षात्- सांकेतिक' (अर्थ सांकेतिक) शब्द प्रयोग हुआ है।
- भट्टनायक का मानना था कि रसानुभूति प्राप्ति में अभिधा-शक्ति का प्रधान स्थान होता है।
- रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ शब्दों के अर्थबोध को अभिधा 'शब्द-शक्ति' द्वारा करती है।
- अभिधा 'शब्द-शक्ति' अर्थबोध कराने के संदर्भ में लक्षणा और व्यंजना दोनों पर निर्भर होती है।
- आचार्य शुक्ल द्वारा 'अभिधा' एवं 'वाच्यार्थ' को ही अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया।

■ अभिधा के भेद

- 'अभिधा' शक्ति द्वारा तीन प्रकार के शब्दों के अर्थ-बोध होते हैं रूढ़ शब्द ये शब्द जातिवाचक होते हैं, जैसे-घोड़ा, मनुष्य आदि ।
- **यौगिक शब्द** इन शब्दों का अर्थ-बोध अवयवों (प्रकृति और प्रत्ययों) की शक्ति से होता है; जैसे- दिवाकर, सुधांशु आदि ।
- **योगरूढ़ शब्द** इनका अर्थ-बोध समुदाय और अवयवों की शक्ति से होता है। ये शब्द यौगिक होते हुए भी रूढ़ होते हैं; जैसे- जलज, वारिज आदि। इनका यौगिक अर्थ जल में उत्पन्न वस्तु है, परन्तु योगरूढ़ अर्थ केवल कमल है।

■ लक्षणा शब्द शक्ति

- जब मुख्यार्थ या वाच्यार्थ ग्रहण करने में बाधा उपस्थित हो, तब अन्यार्थ ग्रहण करने में सहायक शब्द शक्ति को लक्षणा शक्ति कहते हैं।
- आचार्य मम्मट के मतानुसार, जब मुख्यार्थ में बाधा आ जाती है, तब रूढ़ि या प्रयोजन के आधार पर मुख्यार्थ से सम्बन्ध रखने वाले किसी अन्यार्थ का आरोपण किया जाता है।
- लक्षणा शब्द शक्ति द्वारा भिन्नार्थ का ज्ञान कराने वाले शब्द 'लक्षक' या 'भिन्नार्थ', 'लक्ष्यार्थ' या 'लक्षणार्थ' कहलाते हैं। जैसे - 'मेरा भाई शेर है' भाई शेर नहीं हो सकता।
- अतः यहाँ मुख्यार्थ ग्रहण में बाधा आ गई। भाई की प्रशंसा करने के लिए यहाँ भाई पर शेर होने का आरोप है। यहाँ 'शेर' होने का तात्पर्य शेर जैसा वीर व साहसी होना है।
- इस आरोपित लक्ष्यार्थ का सम्बन्ध मुख्यार्थ से भी जुड़ा है। लक्षणा शब्द शक्ति के अर्थग्रहण के व्यापार में तीन विशेषताएँ होती हैं-
 1. मुख्यार्थ या वाच्यार्थ में बाधा ।
 2. मुख्यार्थ से कुछ-न-कुछ सम्बन्ध ।
 3. रूढ़ि या प्रयोजन द्वारा अन्य अर्थ का बोध ।

➤ लक्षणा शब्द शक्ति के भेद

लक्षणा शब्द शक्ति के निम्नलिखित भेद होते हैं-

■ रूढ़ि लक्षणा

जहाँ किसी शब्द के नियत सांकेतिक अर्थ को त्यागकर उसमें भिन्न अन्य अर्थ या लक्ष्यार्थ लिया जाता है जो काफी समय से रूढ़ या परम्परा से नियत हो गया हो, तो वहाँ रूढ़ि लक्षणा होती है। उदाहरण-
डिगल पानि डिगुलात, गिरि लखि सब ब्रज बेहाल। कंभि किशोरी दरसि कै, खरै लजाने लाल। दग उरझत टूटत कुटुम्ब,
जुरत चतुर चित प्रीति । परत गाँठ दुर्जन हिए, दर्ई नई यह रीति ।

■ प्रयोजनवर्ती लक्षणा

जहाँ किसी शब्द का नियत अर्थ न लेकर उसमें भिन्न अन्य अर्थ या लक्ष्य अर्थ किसी विशेष प्रयोजन (उद्देश्य) से लिया जाए, तो वहाँ प्रयोजनवर्ती लक्षणा होती है। उदाहरण- उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।

विकसे सन्त सरोज तब, हरषे लोचन भृंग।

तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुरान हे चिर नवीन। (पन्त लोकायतन)

प्रयोजनवती लक्षणा के दो मुख्य भेद होते हैं- गौणी एवं शुद्ध लक्षणा।

■ गौणी लक्षणा

जहाँ सादृश्य सम्बन्ध अर्थात् समान गुण या धर्म के कारण लक्ष्यार्थ की प्रतीति होती है, वहाँ गौणी लक्षणा होती है: जैसे - मुखचन्द्र। यहाँ मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। गौणी लक्षणा के दो भेद होते हैं।-

गौणी सारोपा

गौणी साध्यवासना

■ शुद्ध लक्षणा

जहाँ सादृश्येत्तर सम्बन्ध (सादृश्य सम्बन्ध के अतिरिक्त किसी अन्य सम्बन्ध) से लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो, वहाँ शुद्ध लक्षणा होती है; जैसे- 'आँचल में है दूध और आँखों में पानी' यहाँ आँचल का मुख्यार्थ बाधित है और आँचल का लक्ष्यार्थ स्तन है। शुद्ध लक्षणा के दो भेद होते हैं।

(i) उपादान लक्षणा

(ii) लक्षण लक्षणा

■ व्यंजना शब्द शक्ति

अभिधा और लक्षणा अपने अर्थ का बोध कराकर जब अलग हो जाती है तब जिस शब्द शक्ति द्वारा व्यंग्यार्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शक्ति कहते हैं।

व्यंग्यार्थ के लिए 'ध्वन्यार्थ', 'सूच्यार्थ', 'आक्षेपार्थ', प्रतीयमानार्थ जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। इसके दो भेद हैं।

- **शाब्दी व्यंजना** - शाब्दी व्यंजना के व्यंजक शब्द और आर्थी में व्यंग्य अर्थ की प्रधानता रहती है, यद्यपि दोनों अवस्थाओं में शब्द और अर्थ के दो भेद किए गए हैं-

(1) अभिधामूला

(2) लक्षणामूला

- **आर्थी व्यंजना** - वाचक, लक्षण और व्यंजक शब्दों के अर्थ वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य कहलाते हैं, आर्थी व्यंजना उनके ऊपर आश्रित होती है।
- मम्मट के अनुसार, "वक्ता, बोधत्व, काकु, वाक्य, वाच्य, अन्य सन्निधि, प्रस्ताव, देश, काल एवं चेष्टादि के वैशिष्ट्य से सहृदयों को अन्यार्थ की प्रतीति कराने वाला अर्थ का जो व्यापार होता है, वह आर्थी व्यंजना कहलाता है, जैसे- "यह गाँव गंगा में ही बसा है।

► रस

- पाठक और श्रोता को जो असाधारण और अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है, वही रस है, रस से पूर्ण वाक्य ही काव्य है।
- साहित्यिक आनन्द को रस कहा जाता है।
- साहित्य एवं काव्य की आत्मा ही रस है।
- साहित्य दर्पण में काव्य की व्याख्या करते हुए आचार्य विश्वनाथ लिखते हैं - "वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्" को काव्य की आत्मा कहते हैं।
- रस साहित्य के भाव से उत्पन्न आनन्द है इसलिए यह भावात्मक है।

- रस का सर्वप्रथम प्रयोग "तैत्थ्योरीयोपनिषद्" में किया गया।
- रस की विवेचना सर्वप्रथम "आचार्य भरत मुनि" अपने नाट्यशास्त्र (इसको पंचम वेद कहते हैं) **"विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगारस निष्पत्ति"**
- अभिनव गुप्त ने सबसे पहले स्थायी भाव विवेचना की।

रस की निष्पत्ति के निम्नलिखित तत्व हैं –

- | | | | |
|---------------|----------|-----------|-------------------|
| 1. स्थायी भाव | 2. विभाव | 3. अनुभाव | 4. व्याभिचारी भाव |
|---------------|----------|-----------|-------------------|

➤ **स्थायी भाव**

मानव हृदय में कुछ भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं। इन्हें स्थायी भाव कहते हैं। स्थायी भाव की परिपक्व अवस्था ही रस है। ये 9 हैं अतः रस की संख्या 09 मानी गयी है।

स्थायी भाव	रस
1. रति	भृंगार
2. हास	हास्य
3. शोक	करुण
4. उत्साह	वीर
5. क्रोध	रौद्र
6. भय	भयानक
7. जुगुप्सा (घृणा)	वीभत्स
8. विस्मय	अद्भुत
9. निर्वेद (वैराग्य)	शान्त
10. वात्सल्यता	वात्सल्य
11. भगवत विषयक	भक्ति

➤ **विभाव**

रसों को उदति और उद्दीप्त (तीव्र) करने वाली सामग्री विभाव कहलाती है। विभाव के तीन भेद –

1. **आलम्बन**

जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है उसे आलम्बन विभाव कहते हैं। जैसे— नायक-नायिका, प्रकृति आदि।

2. **उद्दीपन**

स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाला कारण उद्दीप्त विभाव कहलाते हैं। जैसे— नायिका का रूप सौंदर्य आदि।

आश्रय

जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है, उसे आश्रय कहते हैं।

3. **अनुभाव**

मनोगत भाव को व्यक्त करने वाली शारीरिक और मानसिक चेष्टाएँ अनुभाव हैं।

अनु + भाव (भावों का अनुसरण करने वाला)

अनुभाव मुख्यतः दो प्रकार के हैं – कायिक और सात्विक

(क) कायिक अनुभाव— कायिक अनुभाव शरीर की चेष्टाओं को कहते हैं।

जैसे— हाथ से इशारे करना, निश्वास, उच्छवास आदि।

(ख) **सात्विक अनुभाव**– जो शारीरिक चेष्टाएँ स्वाभाविक रूप से स्वतः उत्पन्न हो जाती हैं, उन्हें सात्विक भाव कहते हैं। में आठ हैं।

1. रोमांच 2. 3. स्वेद 4. स्वरभंग
5. अश्रु 6. वैवर्ण्य (चेहरे का रंग उड़ जाना) 7. स्तम्भ (शरीर की चेष्टा का रुक जाना)
8. प्रलय (चेतना शून्य हो जाना)

4. संचारी भाव

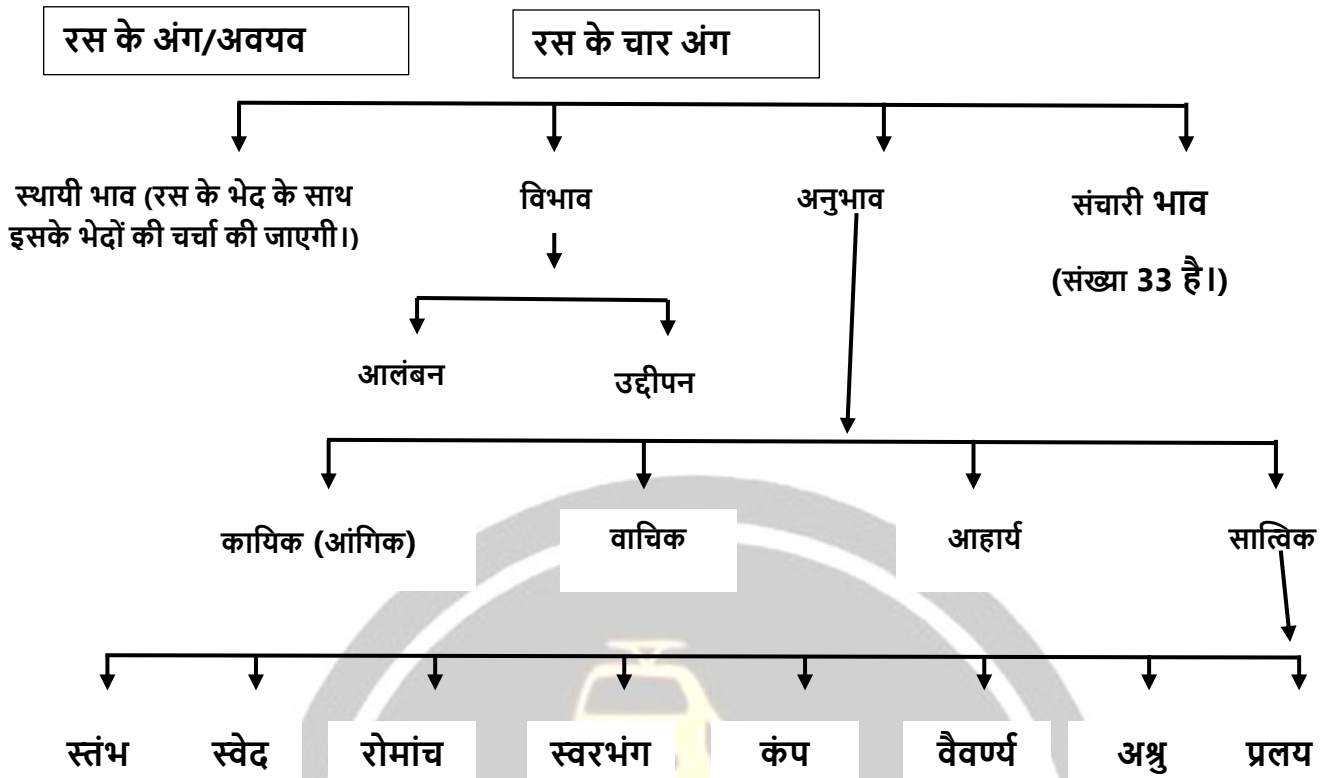
जो भाव मन में केवल अल्प काल तक संचरण करके चले जाते हैं। वे संचारी भाव कहलाते हैं। इन्हीं का दूसरा नाम व्याभिचारी भाव है। इनकी संख्या 33 है।

- | | | | | |
|---|--------------------|------------|------------|--------------|
| 1. निर्वेद | 2. मद | 3. शंका | 4. व्याधि | 5. गर्व |
| 6. आवेग | 7. जड़ता | 8. चिंता | 9. आलस्य | 10. असूया |
| 11. देन्य | 12. उग्रता | 13. ग्लानि | 14. अमर्ष | 15. धृति |
| 16. श्रम | 17. मोह | 18. विषाद | 19. हर्ष | 20. मति |
| 21. चापल्य | 22. ब्रीडा (लज्जा) | | | |
| 23. अवहि... (हर्ष, भय, आदि भावों को छिपाना) | | 24. निद्रा | 25. स्वप्न | |
| 26. विरोध | 27. उन्माद | 28. अप.... | 29. स्मृति | 30. औत्सुक्य |
| 31. प्रास | 32. वितर्क | 33. मरण | | |

➤ रसों के उदाहरण

1. श्रीकृष्ण के सुन बचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब-शोक अपना भूल कर करतल-युगल मलने लगे।।
संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए वह घोषणा वे हो गए उठकर खड़े।।
उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।
माने हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।।

रस	-	रौद्र
आश्रय	-	अर्जुन
उद्दीपन	-	अभिमन्यु का वध
अनुभाव	-	हाथ मलना, घोषणा करना, मुख लाल होना, तन काँपना।
संचारी भाव	-	उग्रता
स्थायी भाव	-	क्रोध
आलम्बन	-	कौरव



❖ रस के भेद

• रसों की संख्या मूलतः आठ मानी गई थी, जिसमें समय-समय पर आचार्य वृद्धि करने का मत प्रस्तावित करते रहें।

विभिन्न आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठित रस

प्रस्तोता आचार्य	रस	स्थायी भाव
आचार्य भरतमुनि	शृंगार रस	रति
आचार्य भरतमुनि	हास्य रस	हास
आचार्य भरतमुनि	रौद्र रस	क्रोध
आचार्य भरतमुनि	करुण रस	शोक
आचार्य भरतमुनि	वीर रस	उत्साह
आचार्य भरतमुनि	अद्भुत रस	विस्मय
आचार्य भरतमुनि	वीभत्स रस	जुगुप्सा
आचार्य भरतमुनि	भयानक रस	भय

आचार्य उद्भट	शांत रस	निर्वेद
आचार्य रुद्रट	प्रेयान रस	स्नेह
आचार्य विश्वनाथ	वात्सल्य रस	वत्सलता
आचार्य रूपगोस्वामी	भक्ति रस	ईश्वर विषयक रति

► छंद

छंद का शाब्दिक अर्थ – अच्छादित करना/ ढँकना छंद संस्कृत की छद् धातु से मिलकर बना है।

“सर्वप्रथम छन्द की चर्चा ऋग्वेद में की गयी छंद को पिंगलशास्त्र भी कहा जाता है। क्योंकि सर्वप्रथम छंद के प्राणियता आचार्य पिंगल थे। इनकी एक रचना छन्दः सूत्रम में उसे सर्वप्रथम प्रयोग किया जाता है।”

“जिन रचनाओं के वर्ण, मात्रा, यति, गति, तुक आदि नियमों से बद्ध कर दिया जाता है, उसे छन्द कहते हैं।”

■ छंद के अंग :-

- वर्ण
 - यदि
 - गति
 - तुक
 - पाद/चरण
 - गुरु
 - गण
 - मात्रा
 - पाद/चरण
- वर्ण**
“वर्णों के दो प्रकार होते हैं, (a) ह्रस्व वर्ण (अ, इ, उ) (b) दीर्घ वर्ण (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)”
 - यति**
छन्द को पढ़ते समय प्रत्येक चरण के अन्त में ठहराना पड़ता है। इस ठहरने को यति कहते हैं।
 - गति**
कविता के कर्णमधुर प्रवाह को गति कहते हैं। प्रत्येक छन्द की अपनी एक लय होती है।
 - तुक**
चरण के अन्त में आने वाले समान वर्णों को तुक कहते हैं। जैसे – तास्-जास्। ताके-जाके।।
 - पाद/चरण**
प्रत्येक छन्द में प्रायः चार चरण होते हैं। चरण को पद या पाद भी कहते हैं।
 - मात्रा**
लघु [।] (एक मात्रा) गुरु [५] (दो मात्रा)

लघु [।] (एक मात्रा)			गुरु [५] (दो मात्रा)							
1. अ	इ	उ	ऋ	आ	ई	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
क	कि	कु	कृ	का	की	कू	के	कै	को	कौ
।	।	।	।	५	५	५	५	५	५	५

- चन्द्र बिन्दु (ँ) की मात्रा की गणना नहीं होती है।

3. अनुस्वार और विसर्ग सदैव दीर्घ में आते हैं।
4. यदि हलन्त आती है किसी शब्द में तो हलन्त से पहले वाला वर्ण दीर्घ हो जाता है।
5. संयुक्त वर्ण से पहले वाला वर्ण = दीर्घ होता है।

उदाहरण - वक्त प्रकृति अग्र क्षमा स्वर प्रसाद कर्म वात्सल्य
S I S I I S I I S I S I S S I

स्मारक वाक्य मिश्रण त्रिशूल रम्य पक्ष ज्ञानी यज्ञ
S I I S I S I I S I S I S I S I

पवित्र विज्ञान ग्लानि
I S I S S I S I

7. गण

तीन-तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। गणों की संख्या 8 होती है।

“यमाताराजभानसलगा”

यगण	यमाता I S S	यशोदा
मगण	मातारा S S S	माताजी
तगण	ताराज S S I	तालाब
रमण	राजभा S I S	रामजी
जगण	जभान I S I	जवान
भगण	भानस S I I	भारत
नगण	नसल I I I	नमन
सगण	सलगा I I S	सलगा

➤ छंद के प्रकार :-

छंद के मुख्यतः तीन प्रकार होते हैं।

1. मात्रिक छंद
2. वार्षिक छंद
3. मुक्तक छंद

1. मात्रिक छंद

जिन छन्दों की पहचान केवल मात्राओं के आधार पर की जाती है मात्रिक छन्द होते हैं।

मात्रिक छंदों के प्रकार

मात्रिक छंद तीन प्रकार होते हैं –

(a) सम मात्रिक- जिसमें वर्णों की संख्या चारों चरणों में समान हो। प्रायः सभी सम मात्रिक छन्द में चार चरण होते हैं।

उदाहरण - चौपाई: प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती है।

1	2	3	4
16	16	16	16

रोला: प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती हैं। इसमें प्रत्येक चरण में यति 11 और 13 मात्रा पर होती है।

1	2	3	4
24	24	24	24

गीतिका: प्रत्येक चरण में 26-26 मात्राएँ होती है। इसमें प्रत्येक चरण में यति 14+12 मात्रा पर होती है।

1	2	3	4
26	26	26	26

हरिगीतिका: प्रत्येक चरण में 28-28 मात्राएँ होती है। इसमें प्रत्येक चरण में 16+12 मात्राएँ होती है।

1	2	3	4
28	28	28	28

(b) **अर्द्ध सम मात्रिक छन्द-** जहाँ प्रथम एवं तृतीय तथा दूसरे एवं चौथे चरण में मात्राओं की समानता को अर्द्ध सम मात्रिक छन्द कहते हैं। इसमें प्रायः चार चरण होते हैं।

उदाहरण - दोहा: पहले एवं तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ होती है। दूसरे एवं चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती है।

सोरठा : पहले एवं तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ तथा दूसरे एवं चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ।
दोहा का उल्टा सोरठा होता है।

बरवै : पहले एवं तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे एवं चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ।

उल्लासा : पहले एवं तीसरे चरण में 15-15 मात्राएँ तथा दूसरे एवं चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ।

(c) **विषम मात्रिक छन्द -** जहाँ चारों चरणों में वर्णों की संख्या अथवा मात्राओं में असमानता हो।

कुंडलिया: दोहा + रोला | 6 पंक्ति, 8 चरण |

छप्पय: रोला + उल्लाला |

2. वार्षिक छन्द

वर्णों की संख्या के आधार पर जब किसी छंद को आच्छादित किया जाता है उसे वार्षिक छंद कहते हैं।

(a) इन्द्रवज्रा (त त ज ग ग)

2 1 2

- 2 तगण + 1 जगण + 2 गुरु होते हैं।
- प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या 11 होती है।

उदाहरण - तगण तगण जगण गुरु

S	S	IS	SI	ISS	
मैं	जो	नया	ग्रन्थ	विलोकता	हूँ
1	2	3 4	5 6	7 8 9 10	11 - 11 वर्ण

(b) उपेन्द्रवज्रा (ज त ज ग ग)

- 1 जगण + 1 तगण + 1 जगण + 2 गुरु
- प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं।

उदाहरण - जगण तगण

IS	SS	II	SI	SS	
बड़ा	छोटा	कुछ	काम	कीजै	
1 2	3 4	5 6	7 8	9 10 11	- 11 वर्ण
परन्तु पूर्वोपर सोच लीजै					

(c) द्रुतविलम्बित (न भ भ र)

- 1 नगण + 1 भगण + 1 भगण + 1 रगण
- प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं।

उदाहरण - तगण भगण भगण रगण

III	S	IIIS	IIIS	S	
दिवस	का	अवसान	समीप	था	
1 2 3	4	5 6 7 8 9	10 11	12	- 12 वर्ण

(d) मन्दक्रान्ता (म भ न त त ग ग)

- 1 मगण + 1 भगण + 1 नगण + 1 तगण + 1 तगण + 2 गुरु।
- प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं।

उदाहरण - मगण भगण नगण तगण तगण गुरु

SS	SS	III	II	I	SIS	S	IS	S
प्यारे	तेरा	गमन	सुन	के	दूसरे	रो	रहे	हैं
1 2	3 4	5 6 7	8 9	10	11 12 13	14	15 16 17	- 17 वर्ण

(e) सवैया: 22 से 26 वर्णों तक चार चरणों वाले छन्द सवैया कहलाते हैं। इसके 48 भेद होते हैं। उनमें मतगपन्द, टुर्मिल, मदिरा आदि प्रमुख हैं।

(f) कवित्त (मनहरण)

- प्रत्येक चरण 16-... यति पर 31 वर्ण होते हैं।
- प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु वर्ण होते हैं।

उदाहरण - वृष कौ तरनि तेज सहसौ किरन करि, ज्वालन के जाल विकराल वरखत है। — 31 वर्ण

4. मुक्तक छंद

ना मात्रा की क्रमबद्धता हो और ना ही वर्णों की क्रमबद्धता हो जिसमें नाद और ताल के आधार पर उन्हें गतिशीलता करने का आग्रह हो उसे मुक्तक छंद कहते हैं।

उदाहरण - वह तोड़ती पत्थर; देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर वह तोड़ती पत्थर।

▶ अलंकार

अलंकार (सजावट, शृंगार, आभूषण)

अलम् + कार

सजावट करने वाल

❁ अलंकार के सम्बन्ध में प्रथम काव्य शास्त्रीय की परिभाषा आचार्य दण्डी की है।

“काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकार”

“काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं।” किसी काव्य की शोभा उसके वर्णों, शब्दों से बढ़ायी जाती है।

शब्दालंकार

जब शब्दों के माध्यम से किसी कविता में सुंदरता प्रदान की जाए।

शब्दालंकार के भेद —

मुख्यतः शब्दालंकार के सात भेद होते हैं —

यमक, श्लेष, अनुप्रास और वक्रोक्ति अलंकार इसमें प्रमुख हैं।

अनुप्रास अलंकार

जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति एक या एक से अधिक बार हो।

नोट - जहाँ व्यंजनों की समानता मिले, चाहे उनके स्वर मिले या न मिले।

उदाहरण - 1. रघुपति, राघव, राजाराम।

2. तरनी तनुजा तट तमाल तरुवर बहुछाये।

3. मुदित महिपति मन्दिर आए।

4. सेवक सचिव सुमंत बुलाये।

अनुप्रास अलंकार के प्रकार —

वृत्यानुप्रास : एक ही वर्ण दो से अधिक बार आए।

जहाँ एक या अनेक व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति हो।

❁ लैला तुझे लूट लेगी तू लिख के ले ले।

❁ सत्य स्नेह, सील सुख सागर।

❁ तरनी तनुजा तट तमाल तरुवर बहुछाए।

❁ चन्दू के चाचा ने, चंदू की चाची को चाँदनी चौक पर चटनी चटाई।

❁ कालिंद कूल कदंव की डारन।

❁ नभ पर चम-चम चपला चमकी।

छेकानुप्रास : जहाँ एक वर्ण या अनेक वर्ण की आवृत्ति एक बार हो या केवल दो बार हो।

- ❁ राधा के वर-बैन सुनि चीजी चकित सुभाय, दाखदुखी मिसरी मुरी सुधा रही सकुचाय।
- ❁ मै जग-जीवन की का भार लिए फिरता हूँ।
- ❁ नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए, बाकी जो बचा था काले चोर ले गए।

अन्त्यानुप्रास : अन्याक्षर तुकान्त हो छन्द के प्रत्येक पंक्ति के अंत में स्वयं की आवृत्ति हो।

- ❁ चौदहवीं का चाँद हो या आफताब हो, जो भी हो खुदा की कसम लाजवाब हो।
- ❁ रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाहि पर वचन न जाहि।

श्रुत्यानुप्रास : एक ही उच्चारण स्थान से उच्चारित होने वाले वर्णों की आवृत्ति।

- ❁ तुलसीदास सीदन निसदिन देखि तुम्हारी निठुराई।
- ❁ दीदी तेरा देवर दीवाना।

लाटानुप्रास : शब्द तथा अर्थ की आवृत्ति।

- ❁ पूत सपूत तो का धन संचय, पूत कपूत तो का धन संचय।
- ❁ बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ, आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।

यमक अलंकार

जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आवे और प्रत्येक स्थान पर भिन्न-भिन्न अर्थ दे, वहाँ यमक अलंकार होता है।

- उदाहरण -**
1. जेते तुम तारे, तेते नभ में तारे हैं।
 2. कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाइ, वा खाये बौराइ नर, या पाये बौराय।।
 3. काली घटा (बादल) का घमण्ट घटा (कम)।
 4. जे तीन बेर (फल) खाती थी, ते तीन बेर (समय) खाती है।

श्लेष अलंकार

जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

- उदाहरण -**
1. चरण धरत् चिन्ता करत, चितवत चारहुँ ओर, सुवरन को ढूँढत फिरत, कवि कामी और चोर।
सुवरन — अच्छे वर्ण, अच्छे रूप रंग, स्वर्ण (सोना)
 2. मंगन को देखि, पट देत बार-बार है।
पट — दरवाजा/ किवाड़, वस्त्र/कपड़ा, मुद्रा
 3. रहिमान पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।।
पानी — इज्जत/ प्रतिष्ठा/ जल/ यमक

वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ बात किसी एक आशय से कही जाय और सुनने वाला उससे भिन्न दूसरा अर्थ लगा दे, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

❁ वक्रोक्ति दो प्रकार की होती है –

- (a) **श्लेष वक्रोक्ति।**
- (b) **काकु वक्रोक्ति।**

(a) **श्लेष वक्रोक्ति :** जहाँ उक्ति की वक्रता का आधार श्लेष हो, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति होती है। इसमें श्लेष के दो अर्थों में से वक्ता एक अर्थ ग्रहण करता है, श्रोता दूसरा।

उदाहरण - को तुम हो? इत आए कहाँ?
'घनश्याम' हैं, तो कितहूँ बरसो।

(b) काकु वक्रोक्ति : जहाँ कहे हुए वाक्य का कंठ की ध्वनि के कारण दूसरा अर्थ निकले, वहाँ काकु वक्रोक्ति होती है।

उदाहरण - आये हूँ मधुमास के प्रियतम ऐहैं नाहिं।
आये हूँ मधुमास के प्रियतम ऐहैं नाहि?

अर्थालंकार

जब अर्थों के माध्यम से किसी कविता में शोभा या सुंदरता आती है। अर्थालंकार कहा जाता है।

1. उपमा अलंकार

जहाँ एक वस्तु की समानता दूसरी वस्तु से की जाय, वहाँ उपमा अलंकार होता है। 'उप' का अर्थ होता है। समीप, 'मा' का मापना या तोलना। अतः उपमा का अर्थ है दो वस्तुओं को एक-दूसरे के समीप रखकर तोलना।

जैसे- राधा रति के समान सुन्दर है।

❁ वस्तुओं की समता तीन कारणों से की जाती है -

1. आकार, 2. रंग और, 3. गुण

❁ उपमा के चार अंग होते हैं -

1. जिसकी तुलना की जाती है, उसे 'उपमेय' कहते हैं।

जैसे— यहाँ राधा।

2. जिससे तुलना की जाती है, उससे उपमान कहते कहते हैं।

जैसे— यहाँ रति

3. जिस विशेषता की समानता के कारण तुलना की जाती है। उसे 'साधारण धर्म' कहते हैं।

जैसे— ऊपर के उदाहरण में सुन्दरता

4. जिस शब्द के कारण यह तुलना प्रकट होती है उसे वाचक कहते हैं।

उदाहरण - सा, सी, से, समान, सदृश, सम, सरिस, गर्म, जिमि, ज्यो।

5. उपमा के चारों अंग उपस्थित रहते हैं तब 'पूर्णोपमा' होती है। जब इनमे से किसी एक की कमी रहती है तब लुप्तोपमा कहलाता है।

6. साधारणतः किसी की तुलना एक ही उपमान से की जाती है; लेकिन जहाँ किसी उपमेय के लिए बहुत से उपमान लाए जाएँ और वहाँ उनकी एक माला सी तैयार हो जाए, वहाँ मलोपमा होती है।

उदाहरण - पत्रग-समूह में गरुड़ सदृश

तृण में विकराल कृशानु सदृश

राणा भी रण में कूद पड़ा,

घन अन्धकार भानु सदृश।

यहाँ राणा प्रताप एक उपमेय के लिए गरुड़, कृशानु, भानु उपमान की माला सी है।

पूर्णोपमा अलंकार

उदाहरण - "मोम सा तन घुल चुका

अब दीप सा मन जल चुका।"

उपमेय - तन, मन

उपमान - मोम, दीप

वाचक - सा, सा

साधारण धर्म - घुल चुका, जल चुका।

लुप्तोपमा अलंकार

उदाहरण - कमल के समान सुन्दर

“यहाँ उपमेय को छोड़कर उपमान के तीनों गुण विद्यमान है।”

2. उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

ट्रिक: मानो, मानहुँ, मनहुँ, मन, मानो, जानों, जानहुँ, जन, निश्चय, मेरे जान, इव आदि उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द है।

उदाहरण - सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।

मनौ नीलमनि सैल पर, आतप परयौ प्रभात।।

3. व्यतिरेक अलंकार

जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाए और उसका कारण भी दिया जाए, वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है।

उदाहरण - का सरबति तेहि देउँ मयंकू, चाँद कलंकी वह निकलंबू

“नायिका के मुख की समता चन्द्रमा से नहीं दी जा सकती, क्योंकि चन्द्रमा में तो कलंक है जबकि वह मुख तो निष्कलंक”

4. प्रतीप अलंकार

जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाए।

उदाहरण - चन्द्रमा उसके मुख के समान

5. रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाए।

उदाहरण - 1. पायोजी मैंने रामरतन धन पायो।

2. मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।

3. चरण कमल बन्दौ हरिराई।

6. उल्लेख अलंकार

जब किसी वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाए तब उल्लेख अलंकार होता है।

उल्लेख अलंकार दो प्रकार के होते हैं –

(क) प्रथम उल्लेख	(ख) द्वितीय उल्लेख
“जहाँ पर एक ही व्यक्ति के द्वारा किसी विषय का अनेक रूपों में वर्णन किया जाए”	“जहाँ एक विषय या व्यक्ति के बारे में अनेक व्यक्ति, अनेक प्रकार से वर्णन करें।”
उदाहरण – “तू रूप है किरन में, सौन्दर्य है सुमन में, तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।	उदाहरण – जाकी रही भावना जैसी। प्रभू मूरति देखि तिन तैसी।। देखहिं भूप महा नर धीरा। मनहुँ वीर रस धरे शरीरा।। डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी। मनहुँ भयानक मूरति भारी।। पूरवासिन देखे दीउ भाई। नरभूषण लोचन सुखदाई।।

राम-लक्ष्मण का अनेक व्यक्तियों के द्वारा, अनेक प्रकार से उल्लेख किया गया।

7. असंगति अलंकार

जहाँ कारण कहीं हो और उसका कार्य कहीं, वहाँ असंगति अलंकार होता है।

हग उरझत, टुटत कुटुम, जुरत चतुर चिर प्रीति।

परति गाँठ दुरजन हिए, दर्ई नी यह रीति॥

8. विभावना अलंकार

जहाँ बिना कारण के ही कार्य हो जाए वहाँ विभावना अलंकार होता है।

“बिनु पद चले सुने बिनु काना।

कर बिनु करम करे विधि नाना”॥

9. संदेह अलंकार

जहाँ किसी वस्तु को देखकर संशय बना रहे, निश्चय न हो वहाँ संदेह अलंकार होता है।

- उदाहरण - 1. “सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है?”
2. यह मुख है कि चन्द्र है।

10. भ्रांतिमान अलंकार

जहाँ सादृश्यता अथवा समता के कारण किसी वस्तु में अन्य वस्तु का भ्रम हो/भ्रांतिमान अलंकार।

- उदाहरण - 1. नाक का मोती अधर की कांति से,
बीच दाढ़िम का समझकर भ्रांति से,
देख उसको ही हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है।
2. मुन्ना तब मम्मी के सर पर, देख-देख दो चोटि।
भाग उठा भय मान कर, सर पर साँपिन लोटि॥

11. अतिशयोक्ति अलंकार

जहाँ किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाए अथवा सीमा से बाहर की बात की जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

- उदाहरण - 1. हनुमान की पूँछ में, लगन पाई आग।
लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग॥
2. आगे नदिया बड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
जब तक राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक उस पार॥

परिक्षापयोगी महत्वपूर्ण तथ्य :

- भारतीय काव्यशास्त्र से अभिप्राय मूलतः संस्कृत काव्यशास्त्र से है।
- आधुनिक काल में 'काव्य' के स्थान पर 'साहित्य' शब्द प्रचलित हो गया। ऐसे में 'काव्यशास्त्र' को 'साहित्यशास्त्र' कहा जाने लगा।
- काव्य की परिभाषा की काव्य-लक्षण है।
- आचार्यों ने तीन आधारों पर काव्य-लक्षण को विभाजित किया- शब्द और अर्थ द्वारा, केवल शब्द द्वारा, रस और ध्वनि द्वारा।
- 'हेतु' का तात्पर्य 'कारण' से है।
- काव्य-हेतु को काव्य की उत्पत्ति के कारण के रूप में समझा जा सकता है।
- प्रयोजन का अर्थ 'उद्देश्य' होता है।
- काव्य रचना के उद्देश्य अर्थात् उससे प्राप्त होने वाले लाभ को काव्य-प्रयोजन कहा जाता है।
- शब्द-शक्ति के तीन प्रकार होते हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।
- संस्कृत काव्य-शास्त्र का सर्वाधिक प्राचीन सम्प्रदाय 'रस सम्प्रदाय' है।
- रस के चार अंग होते हैं- स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव।
- रस की सर्वप्रथम व्याख्या भरतमुनि कृत 'नाट्यशास्त्र' में मिलती है।
- शृंगार रस को 'रसराज/रसपति' कहा जाता है।
- शृंगार रस के दिव्य और उदात्त स्वरूप को 'उज्ज्वल रस' कहा जाता है।
- सामान्यतः रस के नौ प्रकार हैं-
- नाटक में 8 ही रस माने जाते हैं क्योंकि वहाँ शांत को रस में नहीं गिना जाता। भरत मुनि ने रसों की संख्या 8 मानी है।
- छंद शब्द 'छंद' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'खुश करना'।
- छंद का दूसरा नाम पिंगल भी है। छंद के शास्त्र के प्रणेता आचार्य पिंगल को माना जाता है।
- छंद का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है।
- अलंकार शब्द 'अलम्' (आभूषण) और 'कार' (कर्ता, करनेवाला) के मेल से बना है।



पाश्चात्य साहित्य



पाश्चात्य काव्यशास्त्र

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आरंभिक केंद्र ग्रीस या यूनान रहा और उसके विकास के संकेत 5वीं शती ईसा पूर्व के पहले से हमें दिखाई पड़ने लगते हैं।
- **हेसिओड, सोलन, पिंडार** आदि की रचनाओं में काव्य संबंधी मान्यताओं का उल्लेख मिलने लगता है किंतु व्यवस्थित रूप से सर्वप्रथम काव्यशास्त्रीय चिंतन का श्रेय 'प्लेटो' को प्राप्त है।
- प्लेटो से पहले मुख्य रूप से तीन सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है- **प्रेरणा का सिद्धांत, अनुकरण का सिद्धांत और विरेचन का सिद्धांत।**
- प्लेटो से पहले पश्चिम में यह मान्यता थी कि काव्य रचना की प्रेरणा दैवी होती है तथा यह प्रेरणा उसी को प्राप्त होगी जिसकी आत्मा पवित्र तथा निर्दोष है अर्थात् कवि की कला निपुणता से लेकर उसके शब्द चयन की क्षमता दैवी शक्ति से संचालित होती है। इसके पीछे का कारण काव्य-कृतियों में औदात्य का होना माना जाता है।
- **पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत की प्रमुख दृष्टियाँ -**
 - आत्मवादी (सब्जेक्टिव) या प्रत्ययवादी (आइडियलिस्ट)
 - वस्तुवादी (ऑब्जेक्टिव) या अनुभववादी (एम्पिरिकल)



पाश्चात्य काव्यशास्त्र के चिंतक और उनकी रचनाएँ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के चिंतक और उनकी रचनाएँ

रचनाकार	समय (ई. में)	रचनाएँ (ई. में)	जन्म स्थान
प्लेटो	427-347 ई.पू.	<ul style="list-style-type: none"> • रिपब्लिक • इयोन • फीडो • सोफिस्ट • फिलेबुस • एपोलॉजी • क्रिटियस • गोरगिआस • फीडस • सिम्पोजियम • पारमेनीड्स • स्टेट्समैन • टाइमियस • क्रीटो • लॉज • क्लाइसिस 	एथेंस
विलियम वर्ड्सवर्थ	1770-1850	<ul style="list-style-type: none"> • लिरिकल बैलड्स (1798) • द प्रिल्यूड (1799) (अंतिम संग्रह) 	इंग्लैंड
मैथ्यू आर्नल्ड	1822-1888	<ul style="list-style-type: none"> • एसेज इन क्रिटिसिज्म (1865) • ऑन द स्टडी ऑफ सेल्टिक लिटरेचर (1867) • कल्चर एंड अनार्की (1869) • लिटरेचर एंड ड्रामा (1873) • द फंक्शन ऑफ क्रिटिसिज्म एट द प्रेजेन्ट टाइम (1877) • एसेज ऑन चर्च एण्ड स्टेट 	
एस. इलियट	1888-1965	<ul style="list-style-type: none"> • द सैक्रेड वुड (1920) • द वेस्टलैंड (1922) • होमेज टू जॉन ड्राइडन (1924) • एलिज़ाबेथेन एसेज (1932) • द यूज़ ऑफ पोएट्री एंड द यूज़ ऑफ क्रिटिसिज्म (1933) • सेलेक्टेड एसेज़ (1934) • एसेज एंशेट एंड मॉडर्न (1936) • पोएट्री एंड ड्रामा (1951) • ऑन पोएट्री एंड पोयट्स (1957) • नॉलेज एंड एक्सपीरिएन्स 	अमेरिका

आई. ए. रिचर्ड्स	1893-1979 ई.	<ul style="list-style-type: none"> • द फाउंडेशन ऑफ एस्थेटिक्स (1922) • द मीनिंग ऑफ मीनिंग (1923) • प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म (1924) • साइंस एंड पोइट्री (1926) • प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म (1929) • द फिलॉसफी ऑफ रिटोरिक (1936) • कॉलरिज ऑन इमेजिनेशन 	यूनाइटेड किंगडम
-----------------	--------------	--	-----------------

प्रमुख सिद्धांत एवं सिद्धांतकार	
सिद्धांत	सिद्धांतकार
• अनुकरण सिद्धांत	प्लेटो
• स्वच्छन्दतावाद	वर्ड्सवर्थ
<ul style="list-style-type: none"> • निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत • वस्तुनिष्ठ समीकरण • परंपरा सिद्धांत • उपन्यास का अंत 	टी.एस. इलियट
<ul style="list-style-type: none"> • संप्रेषण सिद्धांत • मूल्य सिद्धांत • अर्थ मीमांसा सिद्धांत 	आई.ए. रिचर्ड्स

► प्लेटो

- प्लेटो प्रत्ययवादी या आत्मवादी दार्शनिक थे। इनके गुरु सुकरात थे, जो अपनी तर्कशीलता के लिये प्रसिद्ध थे।
- इनका काव्यशास्त्र संबंधी कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है। 'इयोन' 'सिम्पोजियम' और 'रिपब्लिक' में ही इनकी काव्य संबंधी मान्यताएँ ज्ञात होती हैं। 'आक्सफोर्ड बुक ऑफ ग्रीक वर्स' में प्लेटो की कविताएँ संकलित हैं।
- प्लेटो द्वारा रचित फिलेबस ग्रंथ आलोचनात्मक सामग्री के रूप में अधिक उपादेय नहीं है।
- काव्य और कला के विषय में प्लेटो की मुख्य चिंता आदर्श राज्य में उनकी उपयोगिता है।

• कला के मूल्य को लेकर प्लेटो का मानना था कि यह नैतिकतावादी अथवा उपयोगितावादी होती हैं। कला विषय को लेकर मानकीय (Normative) दृष्टिकोण स्वीकार करते हैं।

• उन्होंने 'एकेडमिया' नामक शिक्षण संस्था की स्थापना की, जिसे यूरोप का प्रथम विश्वविद्यालय कहलाने का गौरव प्राप्त है। आगे चलकर इसे ही 'एकेडमी ऑफ प्लेटो' कहा जाने लगा।

❖ प्लेटो के काव्य-सिद्धांत

• प्लेटो के दर्शन में प्रमुखतः पाँच विषयों का उल्लेख मिलता है-

- ▶ आदर्श राज्य की अवधारणा
- ▶ आत्मा की अमरत्व-सिद्धि
- ▶ प्रत्यय सिद्धांत
- ▶ ज्ञान-मीमांसा
- ▶ सृष्टि-शास्त्र

• प्लेटो प्रत्ययवादी (आदर्शवादी) दार्शनिक थे।

• इस दर्शन के अनुसार विचार (प्रत्यय) ही परम सत्य है और यह संसार प्रत्यय का अनुकरण है।

• कलाकार अनुकरण का (इस संसार का) अनुकरण करता है इसलिये उसकी कलाकृति सत्य से तीन गुनी दूरी पर है।

• प्लेटो के प्रत्ययवादी दर्शन में प्रत्यय (परम सत्य), प्रत्यय का आभास या प्रतिबंध (वस्तु जगत्) और वस्तु जगत् के प्रतिबिंब (कला जगत्) क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर हैं अर्थात् किसी कलाकार की कलाकृति इस दृश्यमान जगत् का अनुकरण होती है।

• प्लेटो ने कला को ग्रहण योग्य वस्तु न मानने के पीछे दो आधार माने हैं-

1. दर्शन,
2. प्रयोजन।

• प्लेटो का मानना है कि परम सत्य से तीन गुना दूर होने के कारण कला मिथ्या या झूठ है।

• प्लेटो के शब्दों में कहा जाए तो कला सत्य से 'त्रिधा अपेत' (Thrice Removed) है।

• प्लेटो आवयविक एकता (Organic Unity) के सिद्धांत को सभी कलाओं के लिये आवश्यक मानते हैं।

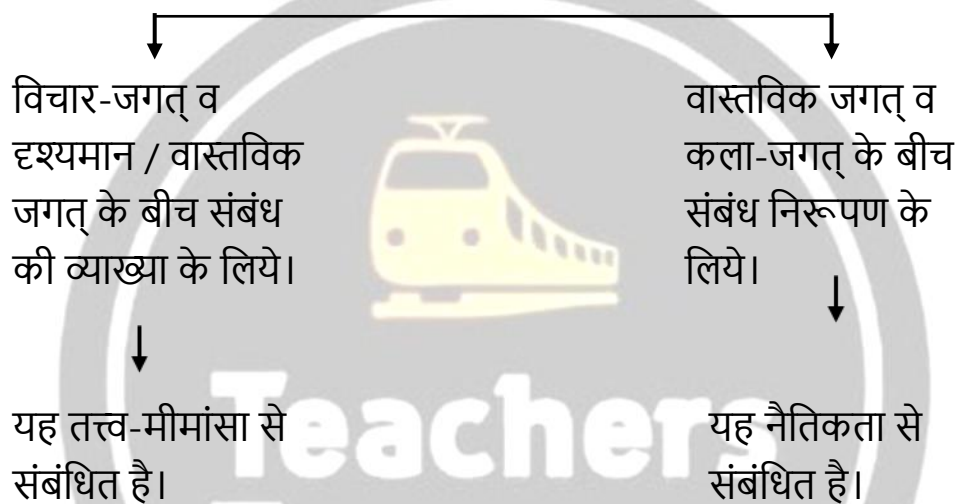
• काव्य का विरोध चार रूपों में प्लेटो करते हैं-

- ▶ बौद्धिक
- ▶ नैतिक
- ▶ भावात्मक

► शुद्ध उपयोगितावादी

- प्लेटो सद्भूल्यों को महत्त्व देते हैं। उनका मानना है, "विवेकहीन अपरिपक्व मन पर दुष्प्रभाव डालने वाले साहित्य का पूर्णतः निषेध होना चाहिये, चाहे वह सत्य ही क्यों न हो।"
- प्लेटो कविता को इस रूप में स्वीकारते हैं कि वह जीवन के शुभ का अनुकरण करे।
- प्लेटो ने काव्य का निषेध अनुकरण के साथ-साथ अनैतिक होने के कारण भी किया है।

प्लेटो द्वारा प्रयुक्त 'अनुकरण' शब्द का अर्थ



- प्लेटो ने काव्य रचना से लेकर विधा के चयन तक में ईश्वरीय शक्ति का प्रभाव माना है। प्लेटो का मानना है कि कवि या रचनाकार एक माध्यममात्र है, काव्य का वास्तविक रचयिता ईश्वर होता है।
- 'इयोन' नामक संवाद में प्लेटो काव्य-हेतु को ईश्वरीय उन्माद स्वीकार करते हैं।
- प्लेटो काव्य-सृजन की प्रेरणा दैवी शक्तियों को मानते हैं और इस दैवी को वह म्यूजेज कहते हैं।

प्लेटो के महत्त्वपूर्ण कथन

- "चूँकि कला नकल की नकल है, छाया की छाया है, अतः मिथ्या है। अयथार्थ, अवास्तविक या मिथ्या होने के कारण कोई कलाकृति न तो व्यक्ति का कल्याण कर सकती है और न ही राज्य का।
- "कविता रचना के नियमों का नहीं बल्कि ईश्वरीय प्रेरणा का अनुवर्तन करती है।"

- "श्रेष्ठ काव्य वह नहीं है, जो हल्का मनोरंजन करके थोड़े समय का सुख प्रदान करता है। श्रेष्ठ काव्य वह है जो पाठकों में उदात्त भावनाओं को जाग्रत करके उनके चरित्र का निर्माण करता है।"

- "कोई भी कवि जब तक बोध शक्ति को धारण नहीं करता है तब तक काव्य के देववाणी तुल्य उपहार का अधिकारी नहीं होता है।"
- काव्य समाज के लिये हानिकारक है। जिसका आधार ही मिथ्या है, वह उपयोगी कैसे हो सकता है?"
- "आदर्श गणराज्य में कवियों का कोई स्थान नहीं है।"
- "कविता भावों और संवेगों को उद्दीप्त करती है और तर्क एवं विचार शून्यता को प्रोत्साहन देती है।"
- "गुलामी मृत्यु से भी भयावह है।" (रिपब्लिक)

प्लेटो द्वारा किये गए काव्य के भेद



- इनमें माधुर्य और लय, शब्द पर आश्रित रहते हैं।
- प्लेटो पूर्व 'होमर' और 'अरिसतोफानेस' ने अपनी रचना क्रमशः 'हिम टू अपोलो' और 'वीमेन सेलीब्रेटिंग दि थेस्मोफोरिया' में अनुकरणमूलक कला की जानकारी दी है। होमर अनुकरण के लिये 'माइमेसिस' शब्द प्रयोग करते हैं।
- प्लेटो द्वारा काव्य का विरोध बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक एवं उपयोगितावाद की दृष्टि से हुआ।

▶ वर्ड्सवर्थ

- विलियम वर्ड्सवर्थ का मूल मिज़ाज कवि का था। वर्ड्सवर्थ को पोथटलारिएट की उपाधि प्राप्त थी।
- प्रकृति उनके विचारों का मूल थी।
- वर्ड्सवर्थ ने बीस वर्ष में ही फ्राँस, इटली और आल्प्स पर्वत की यात्रा कर ली थी।
- आल्प्स पर्वत ने उनके सौंदर्य विषयक मान्यता को प्रभावित किया और फ्राँस की क्रांति (1789) ने उनके विचार को ।
- सन् 1793 ई. में वर्ड्सवर्थ का प्रथम संग्रह 'एन इवनिंग वॉक एंड डिस्क्रिप्टिव स्केचैज' प्रकाशित हुआ।
- 1795 ई. में वर्ड्सवर्थ की मुलाकात कॉलरिज से होती है, जो बाद में आत्मीय मित्रता में परिणत होती है।
- इनकी रचना 'लिरिकल बैलड्स' के प्रकाशन से तत्कालीन काव्य संबंधी मान्यताओं को चुनौती मिली। इस संग्रह पर नव-अभिजात्यवादियों ने जमकर आक्रमण किया।

❖ वर्ड्सवर्थ का काव्य-भाषा सिद्धांत

- विलियम वर्ड्सवर्थ और कॉलरिज ने मिलकर काव्य संबंधी चिंतन किया। 'लिरिकल बैलड्स' के नाम से दोनों का पहला कविता संग्रह 1798 ई. में प्रकाशित हुआ।
- इस प्रथम संस्करण की भूमिका वर्ड्सवर्थ ने 'एडवरटीज़मेंट' नामक शीर्षक से लिखी तथा बाकी तीन संस्करण की भूमिका 'प्रिफेस' नामक शीर्षक से लिखी।
- सन् 1800 ई. में जब 'लिरिकल बैलड्स' का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। उसमें वर्ड्सवर्थ ने एक लंबी भूमिका लिखी। जिसमें उनके संग्रह पर लगाए गए आरोपों के उत्तर दिये गए थे।
- यह भूमिका कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। एक तो इसमें काव्य और काव्य-भाषा पर वर्ड्सवर्थ जैसे उत्कृष्ट कवि की व्यक्तिगत मान्यताओं का प्रतिपादन है। वहीं दूसरी ओर इसे स्वच्छंदतावादी आंदोलन का घोषणा पत्र भी माना जाता है।
- इस भूमिका का महत्व इसलिये भी है क्योंकि इसने 17वीं-18वीं शताब्दी की काव्य संबंधी नव-अभिजात्यवादी मान्यताओं को प्रभावित किया।
- 1800 ई. वाली यह भूमिका ही अंग्रेज़ी के आलोचना-साहित्य में 'प्रिफेस टु लिरिकल बैलड्स' के नाम से प्रसिद्ध है।
- 'लिरिकल बैलड्स' के चार संस्करण प्रकाशित हुए 1798 ई., 1800 ई., 1802 ई. और 1815 ई. में।

- वर्ड्सवर्थ ने अपने से पूर्ववर्ती काव्य भाषा को दूषित (Vicious), विकृत (Distorted), चमकीली (Glossy), भावहीन (Unfeeling) आदि कहा है।
- काव्य-भाषा के संबंध में वर्ड्सवर्थ की तीन मान्यताएँ इस प्रकार हैं-
- ग्रामीणों की बोलचाल की भाषा का प्रयोग होना चाहिये।
- गद्य और काव्य की भाषा में कोई तात्त्विक भेद नहीं है।
- प्राचीन कवियों की भाषा उनके भावोद्बोध सदृश सहज व सरल थी। बाद के कवियों ने भाषा को कृत्रिम व आंडबरपूर्ण बनाया।
- वर्ड्सवर्थ के अनुसार चूँकि ग्रामीण मनुष्य प्रत्येक समय प्रकृति की सर्वोत्तम वस्तुओं के निकट रहते हैं इसलिये उन्होंने 'लिरिकल बैलेड्स' में ग्रामीणों की भाषा के प्रयोग पर बल दिया। इसमें वर्ड्सवर्थ का प्रकृति के प्रति अतिरिक्त आग्रह था।

- काव्य भाषा के संबंध में प्रायः दो तरह के विचार मिलते हैं। एक में बोलचाल की भाषा का आग्रह और दूसरे में विशिष्ट या असाधारण भाषा का।
- इतावली कवि दांते ने काव्य में ग्राम्य भाषा के प्रयोग को हेय माना।
- जॉन डॉन, जॉन ड्राइडन, इलियट, एजरा पाउंड- इन्होंने कविता में बोलचाल की भाषा का समर्थन किया है।

- नव-अभिजात्यवादियों के साथ वर्ड्सवर्थ की इन मान्यताओं का खंडन उनके अनन्य मित्र और सहयोगी कॉलरिज ने भी किया।
- 'कवि किसे कहते हैं' संबंधी प्रश्न पर विचार करते हुए वर्ड्सवर्थ घोषित करते हैं कि कवि की संवेदनशीलता साधारण मनुष्य की अपेक्षा अधिक होती है।
- वर्ड्सवर्थ ने कविता को सहज भावों का उच्छलन कहकर जहाँ विधि रूप में कवि की दृष्टि से रचना-प्रक्रिया की आरंभिक स्थिति को प्रकट किया, वहाँ निषेधरूप में नव-अभिजात्यवादी सिद्धांत का खंडन भी किया।
- नव-अभिजात्यवाद के अनुसार काव्य-रचना के लिये तर्क और नियम का अनुसरण आवश्यक है।



JSSC CGL 2024





मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)

हिन्दी-ई-बुक

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

खुद ASO अधिकारी एवं विवेक सर के मार्गदर्शन में तैयार



विवेक सर



काव्य भाषा, रचना-प्रक्रिया तथा कविता के संदर्भ में वर्ड्सवर्थ के विचार

- "गद्य और छंदोबद्ध रचना के बीच न तो कोई तात्त्विक अंतर है और न हो सकता है। "
- "अपनी प्रथम अभिव्यंजना को मैं प्रायः घृणास्पद मानता हूँ; अधिकतर यही सत्य है कि द्वितीय विचारों के समान द्वितीय शब्द ही उत्तम होते हैं। "
- "कविता सभी प्रकार के ज्ञानों का प्रथम एवं अंतिम ज्ञान है। "
- कविता का ज्ञान कवि की व्यक्तिगत साधना की उपलब्धि है। "
- "कविता ज्ञान का प्राण है, उसकी शुद्ध चैतन्य आत्मा है, वह रागदीप्त अभिव्यक्ति है, जो समस्त विज्ञान का आश्रय है। "
- "प्रत्येक कवि शिक्षक होता है, मैं चाहता हूँ कि या तो मैं शिक्षक समझा जाऊँ या कुछ नहीं।"
- "कविता प्रबल भावों का सहज उच्छलन है।"

► मैथ्यू आर्नल्ड

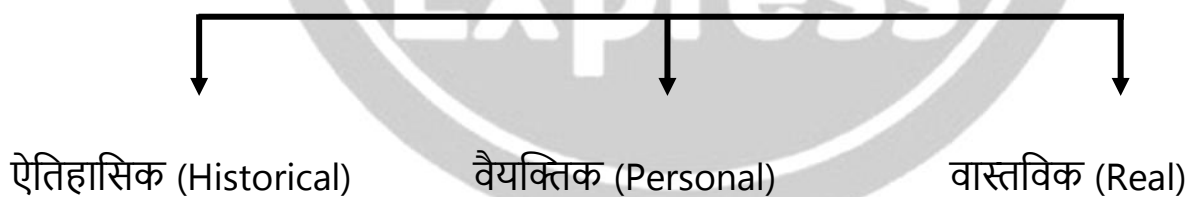
- ये आधुनिक अंग्रेजी के महान आलोचक हैं।
- आर्नल्ड का कोई ग्रंथ नहीं है- उन्होंने भाषणों व लेखों में अपने विचार व्यक्त किये हैं।
- आर्नल्ड ने प्रत्येक क्षेत्र में विचारों की पूर्णता पर बल दिया है। उनके अनुसार संस्कृति पूर्णता का ही दूसरा नाम है और काव्य संस्कृति का अन्यतम साधन है। इस विषय को उन्होंने अपने निबंध ग्रंथ 'कल्चर एंड अनार्की' में स्पष्ट किया है।
- उन्होंने कहा कि काव्य की विषय-वस्तु महत्त्वपूर्ण होनी चाहिये जिसमें गहन व तीव्र भावों की सम्भावनाएँ हों।
- मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार कवि को संरचनात्मक अन्विति अनुपात, सुसंगति का ध्यान रखना चाहिये। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि कवि जिस विषय का वर्णन करें, उसके वर्णन में भव्य शैली का प्रयोग हो और कविता में प्रयोजन को महत्त्व देते हुए आनन्द साथ नैतिक उन्नयन की भी बात हो।
- कार्य व्यापारों की गुरुता, चरित्रों की उददत्ता, स्थिति की तीव्रता को आर्नल्ड ने प्राचीन यूनानी काव्यों की सफलता का कारण माना और काव्य में विचारों के निरूपण के स्थान पर कार्य - व्यापारियों के निरूपण पर बल दिया।

- काव्य रचना के संदर्भ में आर्नल्ड ने चार बातों पर महत्त्व दिया-
 - ▶ विषय वस्तु की महत्ता एवं उसमें गहन व तीव्र भावों की सम्भावना।
 - ▶ रचना प्रक्रिया में कवि का संरचनात्मक एकता, अनुपात और सामंजस्य पर विशेष ध्यान।
 - ▶ वर्णन में भव्य शैली के प्रयोग पर बल। यह भव्य शैली लॉजाइनस की उदात्त शैली की तरह ही हो।
 - ▶ काव्य में आनन्द के साथ-साथ नैतिक उन्नयन पर बल दिया।

आर्नल्ड द्वारा प्रस्तुत लेखक के भेद

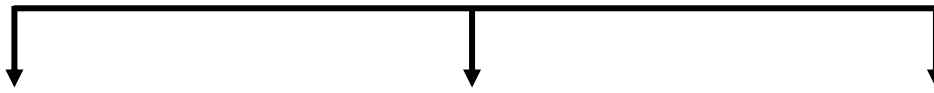


आर्नल्ड द्वारा प्रस्तुत आलोचना के भेद



- आर्नल्ड काव्य आलोचना में दार्शनिकता का विरोध करते हैं तथा आलोचना को मानव जीवन को स्वस्थ, सार्थक और उपयोगी बनाने वाला तत्त्व मानते हैं। इसलिये उन्होंने वास्तविक आलोचना को उचित आलोचना माना है।
- आलोचना के संदर्भ में आर्नल्ड की दृष्टि व्यावहारिक थी।

आर्नल्ड द्वारा प्रस्तुत अभिजात साहित्य के भेद



संदिग्ध (Dubious)

मिथ्या (False)

वास्तविक (Real)

- आर्नल्ड आलोचना की स्वतंत्रता-स्वायत्तता के पक्षधर थे और उसे काव्य के गुण-दोष-परीक्षण तथा पाठक वर्ग के रुचि-परिष्कार में विनियोजित करना चाहते थे।
- आर्नल्ड ने अपने पूर्व के (19वीं शताब्दी के प्रथम चरण के) रोमांटिक सिद्धांतों का प्रत्याख्यान कर युग के अनुरूप नवीन मान्यताओं के निर्माण एवं स्थापना के लिये प्राचीन यूनानी अभिजात्यवादी (क्लासिकल) सिद्धांतों को आदर्श बनाया। होमर, अरस्तू आदि इनके आदर्श थे।
- इस तरह से वह पुराने और नए को जोड़ते हुए नज़र आते हैं। इनके जैसी आलोचना की झलक आगे इलियट में दिखाई देती है।
- इनका मानना था, "आलोचना संसार में जो भी उत्तम ज्ञान तथा चिन्तन है, उसके अधिगम एवं प्रचार का और इस प्रकार ताज़े और सच्चे विचारों के प्रभाव के संस्थापन का निस्संग प्रयास है।"

► आई. ए. रिचर्ड्स

- अंग्रेजी साहित्य में सौंदर्यशास्त्र को व्यापक और व्यवस्थित रूप से प्रथम बार निर्मित करने का श्रेय रिचर्ड्स को दिया जाता है।
 - रिचर्ड्स सौंदर्य को वस्तुनिष्ठ मानते हुए पाठक अथवा दर्शक के भीतर उत्पन्न प्रभाव के रूप में देखते हैं।
- 'नयी समीक्षा' (The New Criticism) को सैद्धांतिक आधार प्रदान कराने वाले आलोचकों में अग्रणी।
- आलोचना के दो भेद रिचर्ड्स द्वारा माने जाते हैं -
 - आलोचनात्मक अनुभूति मूल्य का वर्णन
 - प्राविधिक: अनुभूति साधनों का वर्णन
- मनोविज्ञान की सहायता से कविता की सार्थकता तथा महत्ता के संबंध में नवीन तर्क प्रस्तुत किये।
- रिचर्ड्स का यह मत था कि कलाएं जीवन के संचित मूल्यों का समूह होती हैं, जिनमें असाधारण पुरुषों के जीवन का पहलू उद्धृत होता है।
- रिचर्ड्स ने आलोचना के क्षेत्र में कुछ मौलिक विषयों पर विचार किया। जैसे - काव्य अनुभूति का क्या मूल्य, अनुभूतियों की श्रेष्ठता, कला के क्षेत्र में विचारों का अंतर्द्वंद्व, मूल्य इत्यादि।

- अपने दो सहयोगी लेखक - सी.के. ऑगडेन और जेम्स वुड के साथ मिलकर रिचर्ड्स 'दि फाउंडेशन ऑफ एस्थेटिक्स' नामक ग्रंथ का प्रकाशन (सन् 1922) कर आलोचना क्षेत्र से जुड़ गए।
- सी.के. ऑगडेन के साथ मिलकर रिचर्ड्स ने 'दि मिनींग ऑफ मिनींग' नामक एक अन्य ग्रंथ की रचना भी की जिसका प्रकाशन 1923 ई. में हुआ।
- रिचर्ड्स ने लगभग 12 ग्रंथ लिखे। उनका अंतिम ग्रंथ 'बियोंड' 1974 ई. में प्रकाशित हुआ।
- रिचर्ड्स की ख्याति का मूल आधार 'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' (1929 ई.) है।
- 'कॉलरिज ऑन इमैजिनेशन' (1934 ई.) नामक उनकी पुस्तक विद्वानों के बीच काफी सराही गई।

❖ आई ए रिचर्ड्स के सिद्धांत

► मूल्य सिद्धांत

- रिचर्ड्स काव्य का मूल्य उसके प्रभाव की क्षमता से आँकते हैं।
- जो काव्य पाठक को जितना अधिक प्रभावित करेगी उसकी संप्रेषणीयता उतनी अधिक होगी और वह उतनी उत्कृष्ट होगी।
- पूर्व के आलोचकों में क्लाइव बेल और कांट का विरोध करते हुए कहते हैं कि ये लोग कला को एक निश्चित विशिष्ट और असाधारण कलात्मक अनुभव मानते हैं। परंतु मनोविज्ञान में इस प्रकार के किसी अनुभव की जगह नहीं है। रिचर्ड्स कला की अलौकिकता का खंडन करते हैं।
- रिचर्ड्स ने काव्यानुभवों को अन्य अनुभवों की तुलना में अधिक मूल्यवान माना है, क्योंकि इसमें मनोभावों का संतुलन और सामंजस्य होता है।

रिचर्ड्स द्वारा प्रस्तुत मनोवृत्तियों के प्रकार

एषणा (इसमें वस्तुओं के लिये मन में आकुलता होती है।)

प्रतिकूल एषणा (इसमें वस्तुओं के लिये मन में विमुखता होती है।)

- मन की सर्वाधिक मूल्यवान स्थिति वह है जिसमें मानवीय क्रियाओं की सर्वाधिक और सर्वोत्कृष्ट संगति स्थापित होती है तथा एषणाओं का अल्पतम संघर्ष काँट-छाँट, दमन और नियमन होता है, जिसमें एषणाएँ कम-से-कम प्रतिस्पर्धी एषणाओं को दमित किये बिना नियोजित हो जाती हैं। यहाँ पर रिचर्ड्स के विचार क्रोचे से मिलते-जुलते हैं।
- काव्य-प्रभाव और काव्य-प्रयोजन पर आधारित रिचर्ड्स के मनोवैज्ञानिक मूल्य-सिद्धांत का सार-संक्षेप इस प्रकार है-

- कला तथा कलानुभूति जीवन के मानव-व्यापारों से संबद्ध है, उससे भिन्न अथवा पृथक नहीं। काव्यानुभूति या कलानुभूति जीवनानुभूति का पर्याय है।
- मानव-क्रियाओं में कला सर्वाधिक मूल्यवान क्रिया है।
- किसी भी मानव-क्रिया का मूल्य इस बात से निर्धारित होता कि उसमें मनोवेगों में संतुलन और व्यवस्था उत्पन्न करने का सामर्थ्य कहाँ तक है।
- आलोचना के दो आधार हैं मूल्य व्यवस्था और संप्रेषण । यहाँ कहना चाहिये कि रिचर्ड्स की मूल चिंता कविता या कला के संप्रेषण की रही है। शुक्ल जी पर रिचर्ड्स के समीक्षा सिद्धांत का गहरा प्रभाव था।

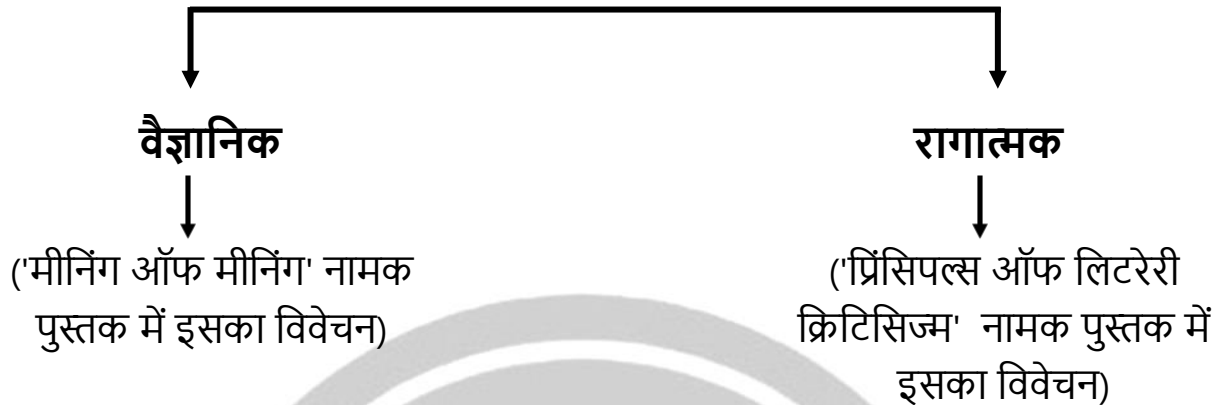
► संप्रेषण सिद्धांत

- संप्रेषण की दो बातें महत्त्वपूर्ण हैं- रचना करते समय रचनाकार सजग और सतर्क प्रयत्नशील संप्रेषण नहीं करता।
- रचना और रचनाकार की अनुभूति का सामंजस्य जितना ही अधिक होगा, संप्रेषण की क्षमता उतनी ही अधिक होगी।
- संप्रेषण के लिये मन की अनुभूतियों का परस्पर प्रभावित होना जरूरी है।
- संप्रेषण की दोनों अनुभूतियों के स्वरूप समान होने अनिवार्य हैं।
- संप्रेषण के दौरान दूसरी अनुभूति पहली अनुभूति के माध्यम से उत्पन्न होनी चाहिये।
- दोनों अनुभूतियों में समानता जितनी अधिक होगी संप्रेषण उतना सुलभ होगा।
- कविता बिना संप्रेषित हुए अपनी अर्थवत्ता को हासिल नहीं कर सकती।
- जितनी संप्रेषणीयता कविता में अधिक होगी, श्रोता को उतना ही अधिक प्रभावित करेगी।
- रिचर्ड्स संप्रेषण को ही आलोचना के उच्च लक्ष्य के रूप में देखते हैं।

► काव्य-भाषा सिद्धांत

- भाषा ही संप्रेषण का मूल आधार है।

रिचर्ड्स द्वारा प्रस्तुत भाषा के रूप



रिचर्ड्स द्वारा प्रस्तुत भाषा के रूप

वैज्ञानिक (तथ्यात्मक)	रागात्मक
• इसमें निरूपण, संसूचन या निर्देशन होता है।	• इसमें भाव का उद्बोधन होता है। भावों, बिंबों, प्रतीकों और छद्म कथन को विशेष महत्त्व दिया गया है।
• यह तथ्य को यथावत प्रस्तुत करती है।	• इसमें तथ्य का नहीं भाव का उद्बोधन होता है।
• 'मीनिंग ऑफ मीनिंग' नामक पुस्तक में इसका विवेचन।	• 'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' नामक पुस्तक में इसका विवेचन।

- भाषा को, विशेषतः काव्य में प्रयुक्त भाषा को, एक नहीं बल्कि अनेक कार्य करने पड़ते हैं। भाषा में अर्थ के चार प्रकार्य हैं-

- मुख्यार्थ (Sense)
- भावना (Feelings)
- वचन-भंगी (Tone)
- उद्देश्य (Intention)

काव्य के संदर्भ में रिचर्ड्स के कथन

- "काव्य की अनुभूति व जीवन की अनुभूति में कोई विशेष अंतर नहीं होता। "
- "विशेष परिस्थितियों में विभिन्न व्यक्तियों की अनुभूतियों में समानता ही सम्प्रेषण है। "
- "संप्रेषण का अर्थ न तो अनुभूतियों का यथावत (हूबहू) अंतरण (Strict transference) है और न दो व्यक्तियों के बीच अनुभूति का तादात्म्य (Identical experience) बल्कि कुछ अवस्थाओं में विभिन्न मनो की अनुभूतियों की अत्यंत समानता ही संप्रेषण है।"
- "कलाकार का मनोविज्ञान अध्ययन का निष्फल क्षेत्र है।"
- "मन आवेगों का तंत्र है"
- "नैतिकता सिर्फ दुनियादारी है और आचार संहिता इष्ट-सिद्धि की सामान्यतम व्यवस्था की अभिव्यक्ति है। "
- "कविता अनुभूतियों का एक वर्ग है, जो मानक अनुभूति की प्रत्येक विशेषता से भिन्न होती हुई भी किसी विशेषता से एक खास मात्रा से अधिक भिन्न नहीं होती।"

► टी.एस. इलियट

- इलियट का संबंध 'नयी समीक्षा आंदोलन' से है तथा उनके विचार नव्य-शास्त्रवाद (Neo-Classicism) में शामिल किये जाते हैं।
- इनके गुरु आयरविंग वैबिट और जार्ज सांतायना माने जाते थे।
- इलियट की मूल भावना का स्वरूप उनके लेख 'ट्रेडिशन एंड दि इंडिविजुअल टैलेंट' में समाहित है, जो 'दि सेक्रेडवुड' में संकलित है
- इलियट ने 'निजी काव्य-कर्मशाला का उपजात' अथवा 'काव्य-निर्माण में अपने चिंतन के विस्तार' को ही आलोचना माना।
- इलियट ने कारयित्री और भावयित्री को एक दूसरे का पूरक माना है तथा उनका मानना था कि आलोचक और कवि एक ही व्यक्ति होते हैं।
- निर्वैयक्तिकता सिद्धांत, परंपरा सिद्धांत तथा वस्तुनिष्ठ समीकरण इलियट के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं।
- 'क्राइटेरियन' (The Criterion) नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू कर इन्होंने सन् 1922 से 1939 तक इसका संपादन भी किया। इसी के कारण इलियट की ख्याति साहित्यिक जगत में स्वीकार की गई।
- इनकी 'दि वेस्टलैंड' नामक प्रसिद्ध काव्य रचना पहले पहल 1922 ई. में इसी 'क्राइटेरियन' पत्रिका में प्रकाशित हुई।

- इन्हें 1948 ई. में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

❖ टी.एस. इलियट के सिद्धांत

- 'द फक्शन ऑफ क्रिटिसिज्म' लेख में जहाँ 1923 ई. में इलियट के दो उद्देश्य 'विशदन' और 'रुचि-परिष्कार' प्रस्तुत किये, वहीं 1956 ई. में 'द फक्शन ऑफ क्रिटिसिज्म' लेख में उपर्युक्त उद्देश्यों से भिन्न दो उद्देश्य 'बोध' और 'आस्वाद' दिये।
- इलियट विच्छिन्नता की अपेक्षा कविता के सौंदर्य को उसकी समस्त पूर्णता में देखते हैं।
- इलियट का मत था कि रिचर्ड्स और एम्पसन की शाब्दिक आलोचना एक प्रकार से 'नींबू निचोड़ आलोचना' पद्धति है।
- इलियट आलोचना के अन्यतम प्रयोजन रूप में रुचि-परिष्कार को मानते हैं।
- इलियट द्वारा दो आवश्यक सिद्धांत माने गए-
- मूर्त विधान: भाव को कला के रूप में अभिव्यक्ति एक ही विधि द्वारा दी जा सकती है- किसी वस्तु समुदाय, घटना-श्रृंखला या परिस्थिति जैसी सह-संबंधी वस्तु की खोज की जाए जो उस भाव विशेष का सूत्र हो। सूत्र ऐसा होना चाहिये कि जब उन वस्तुओं की प्रस्तुति की जाए तो ऐंद्रिय अनुभूति में उनका अवसन हो जिससे भाव सद्यः उद्बुद्ध हो जाए।
- इलियट के मूर्त विधान की तुलना भारतीय रस-सिद्धांत में विभावन व्यापार से की गयी है।
- **संवेदनशीलता का असाहचर्य** : भाव और विचार में दरार पड़ जाने की स्थिति में जब काव्य के भीतर अपक्षय और हास हो जाता है, उस स्थिति को 'संवेदनशीलता का असाहचर्य' कहते हैं।
- संवेदनशीलता के असाहचर्य (dissociation of sensibility) के सिद्धांत हेतु इलियट 'रेमी द गुर्मों' (Remy de Gourmont: 1858-1915) को श्रेय देते हैं।
- इलियट द्वारा लिखे गए निबंध 'थ्री वायसेज ऑफ पोएट्री' में तीन नाट्य स्वरों की चर्चा की गई है-
- **प्रथम स्वर** - कवि का स्वयं को संबोधित करना।
- **द्वितीय स्वर** - श्रोता/पाठक के छोटे-बड़े समुदाय को संबोधित करना।
- **तृतीय स्वर** - काल्पनिक पात्रों को स्वर बनाकर ऐसी बात कहना जो स्वयं की सीमा में रहकर न कही जा सके।

► निर्व्यक्तिकता का सिद्धांत

- इलियट के अनुसार कला व्यक्तित्व की अभिव्यंजना नहीं बल्कि उससे पलायन है। उन्होंने स्पष्ट किया कि लेखक और कवि का व्यक्तित्व एक उत्प्रेरक की तरह होता है, जो रचना को प्रभावित तो करता हो पर उसमें दिखाई नहीं देता।
- इलियट ने कला को दूर से देखी जाने वाली वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया।

- निर्वैयक्तिकता सिद्धांत स्वच्छंदतावादियों के काव्य-सिद्धांत के विपरीत है।
- इलियट ने दावा किया कि स्वच्छंदतावादियों की रचना-प्रक्रिया भावों को अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उनका दमन करती है।
- **वस्तुतः** अच्छी कविता वह होती है, जिसमें कवि अपने भावातिरेक का प्रदर्शन नहीं करता, बल्कि अपनी भावनाओं से तटस्थ रहते हुए रचनाशील रहता है।
- इलियट ने कहा कि अच्छा रचनाकार कविता में अत्यंत संयमित आत्म-अभिव्यक्ति करता है। वह अपनी भावनाओं और वैयक्तिकता से अधिकतम दूरी बनाए रखते हुए काव्य रचना करता है। कवि काव्य का माध्यम भर है।

► परंपरा सिद्धांत

- यह इलियट का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।
- इसके अनुसार किसी भी रचना का मूल्यांकन रचनाशीलता की संपूर्ण परंपरा की सापेक्षता में होना चाहिये।
- इसका अर्थ है कि किसी रचना का महत्व उतना ही होता है, जितना समंजन (Adjustment) वह संपूर्ण परंपरा में करती है।
- इलियट परंपरा को वर्तमान से अलग नहीं बल्कि उसका ही एक हिस्सा मानते हैं।
- नए कवियों के लिये इलियट अतीत के ज्ञान को ज़रूरी मानते हैं।
- उनके 'ट्रेडिशन एंड इंडिविजुअल टैलेंट' (Tradition and Individual Talent) नामक लेख का उद्देश्य रोमांटिक संप्रदाय की व्यक्तिवादिता के बदले परंपरा का महत्व स्थापित करना और परंपरा के अंतर्गत ही वैयक्तिक प्रज्ञा (Individual Talent) की सार्थकता प्रदर्शित करना।

काव्य तथा आलोचना के संदर्भ में इलियट के कथन

- " भोगने वाले मन और रचना करने वाले मन में अनिवार्यतः एक अंतराल बना रहता है और जितना ज़्यादा यह अंतराल होता है, रचना उतनी ही महान होती है।"
- "अच्छा रचनाकार कविता में अत्यंत संयमित आत्म-अभिव्यक्ति करता है। वह अपनी भावनाओं तथा वैयक्तिकता से अधिकतम दूरी बनाए रखते हुए काव्य रचना करता है।"
- "कविता मात्र कवि के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व से पलायन है।"
- " आलोचना साँस की तरह अनिवार्य एवं नैसर्गिक क्रिया है।"
- " अतीत ही वर्तमान को प्रभावित नहीं करता बल्कि वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।"
- "सच्ची आलोचना तथा सूक्ष्म प्रशंसा का लक्ष्य कवि नहीं बल्कि काव्य है।"



● प्रयोजन मूलक हिन्दी

► अवधारणा

प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्भ में प्रयोजन शब्द के साथ मूलक उपसर्ग लगाने से प्रयोजनमूलक पद बना है। प्रयोजन से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्ति। मूलक से तात्पर्य है आधारित अतः प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा इस तरह प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य हिन्दी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप या शैली है जो विषयगत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त की जाती है। विकास के प्रारम्भिक चरण में भाषा सामाजिक सम्पर्क का कार्य करती है। भाषा के इस रूप को संपर्क भाषा कहते हैं। संपर्क भाषा बहते नीर के समान है। प्रौढा की अवस्था में भाषा के वैचारिक संदर्भ परिपुष्ट होते हैं और भावात्मक अभिव्यक्ति कलात्मक हो जाती है। भाषा के इन रूपों को दो नामों से अभिहित किया जाता है। प्रयोजनमूलक और आनन्दमूलक। आनन्द विधायक भाषा साहित्यिक भाषा है। साहित्येतर मानक भाषा को ही प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं, जो विशेष भाषा समुदाय के समस्त जीवन संदर्भों को निश्चित शब्दों और वाक्य संरचना के द्वारा अभिव्यक्त करने में सक्षम हो। भाषिक उपादेयता एवं विशिष्टता का प्रतिपादन प्रयोजनमूलक भाषा से होता है।

► प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप :-

हिन्दी भारत की राजभाषा है। इसके बोलने व समझने वालों की संख्या के अनुसार विश्व में यह तीसरे क्रम की भाषा है। यानी कि हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। अतः स्वाभाविक ही है कि विश्व की चुनिंदा भाषाओं में से एक महत्वपूर्ण भाषा और भारत की अभिज्ञात राष्ट्रभाषा होने के कारण, देश प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो, राष्ट्रीयता की दृष्टि से आधार उपकारक ही है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के भाषिक अध्ययन का ही एक और नाम है, एक और रूप है एक समय था जबकि सरकारी अर्द्धसरकारी या सामान्यतः कार्यालयीन पत्राचार के लिए अंग्रेजी एक मात्र सक्षम भाषा समझी जाती थी। अंग्रेजी की उक्त महानता आज, सत्य से टूटी चेतना की तरह बेकार सिद्ध हो रही है चूंकि हिन्दी में अत्यन्त बढ़िया, स्तरीय तथा प्रभाव कम पत्राचार संभव हुआ है। अतः जो लोग हिन्दी को अविकसित भाषा कहते थे, कभी खिचड़ी तो कभी क्लिष्ट भाषा कहते थे या अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी को नीचा दिखाने की मूर्खता करते थे उन्हें तक लगने लगा है कि हिन्दी वाकई संसार की एक महान भाषा है, हरेक दृष्टि से परिपूर्ण एक सम्पन्न भाषा है। राजभाषा के अतिरिक्त अन्य नये-नये व्यवहार क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार होता है, जैसे रेलवे प्लेटफार्म, मंदिर, धार्मिक संस्थानों आदि में जीवन के कई प्रतिष्ठित क्षेत्रों में भी



अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। विज्ञान और तकनीकी शिक्षा, कानून और न्यायालय, उच्चस्तरीय वाणिज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है। व्यापारियों और व्यावसायियों के लिए भी हिन्दी का प्रयोग सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है। भारतीय व्यापारी आज हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते, उनके कर्मचारी, ग्राहक सभी हिन्दी बोलते हैं। व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रयोजनों से हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। बैंक में हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है तो सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है। हिन्दी के इस स्वरूप को ही प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं।

➤ प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएँ :-

प्रयोजनमूलक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- 1. वैज्ञानिकता :** प्रयोजनमूलक शब्द पारिभाषिक होते हैं। किसी वस्तु के कार्य-कारण संबंध के आधार पर उनका नामकरण होता है, जो शब्द से ही प्रतिध्वनित होता है। ये शब्द वैज्ञानिक तत्वों की भांति सार्वभौमिक होते हैं। हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- 2. अनुप्रयुक्तता :** उपसर्गों, प्रत्ययों और सामासिक शब्दों की बहुलता के कारण हिन्दी की प्रयोजनमूलक शब्दावली स्वतः अर्थ स्पष्ट करने में समर्थ है। इसलिए हिन्दी की शब्दावली का अनुप्रयोग सहज है।
- 3. वाच्यार्थ प्रधानता :** हिन्दी के पर्याय शब्दों की संख्या अधिक है। अतः ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में उसके अर्थ को स्पष्ट करने वाले भिन्न पर्याय चुनकर नए शब्दों का निर्माण संभव है। इससे वाचिक शब्द ठीक वही अर्थ प्रस्तुत कर देता है। अतः हिन्दी का वाच्यार्थ भ्रंति नहीं उत्पन्न करता।
- 4-सरलता और स्पष्टता :** हिन्दी की प्रयोजनमूलक शब्दावली सरल और एकार्थक है, जो प्रयोजनमूलक भाषा का मुख्य गुण है। प्रयोजनमूलक भाषा में अनेकार्थकता दोष है। हिन्दी शब्दावली इस दोष से मुक्त है।

इस तरह प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी एक समर्थ भाषा है। स्वतंत्रता के पश्चात प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में स्वीकृत होने के बाद हिन्दी में न केवल तकनीकी शब्दावली का विकास हुआ है, वरन् विभिन्न भाषाओं के शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुरूप ढाल लिया है। आज प्रयोजनमूलक क्षेत्र में नवीनतम उपलब्धि इंटरनेट तकनीकी शब्दावली हिन्दी में उपलब्ध है, और निरंतर नए प्रयोग हो रहे हैं।



► प्रशासनिक हिन्दी

- प्रशासनिक हिन्दी में जो परिभाषिक शब्द प्रयोग होते हैं, उसका अधिकांश संस्कृतनिष्ठ है और मानक को ध्यान में रखकर गढ़े गए हैं।
- ऐसे शब्द आम जन-जीवन की बोली-वाणी में व्यवहार नहीं होते। फलस्वरूप प्रशासनिक हिन्दी सामान्य हिंदी से भिन्न है। प्रशासनिक हिन्दी में हमेशा अभिधा शब्द-शक्ति का ही प्रयोग होता है। इसमें लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग नितांत वर्जनीय है।
- प्रशासनिक भाषा में यदि अभिधा के स्थान पर लक्षणा या व्यंजन का प्रयोग किया जाएगा तो अर्थ की स्पष्टता खत्म हो जाएगी और उसमें अस्पष्टता का समावेश हो जाएगा।
- मुख्यार्थ को बाधित नहीं करने के कारण ही प्रशासनिक हिन्दी में लक्षणा और व्यंजन का प्रयोग नहीं होता जबकि साहित्यिक या काव्य भाषा में लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग अक्सर होता है।
- **प्रशासनिक हिन्दी का उदाहरण** : वेतन आयोग ने आज वित्त मंत्री जी को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी। रिपोर्ट में अन्य बातों के अतिरिक्त सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की भी सिफारिश की गई है। रिपोर्ट पर अध्ययन करने के लिए सरकार ने तीन सदस्यों का एक अध्ययन दल बनाया है।
- प्रशासनिक हिन्दी में आवश्यक तथ्यों का विवरण दिया जाता है।
- इसमें प्रत्येक मामले का संक्षिप्त विवरण देते हुए मूल तथ्य का परिचय दिया जाता है इसमें मूल्यांकन की गुंजाइश कम रहती है।
- प्रशासनिक भाषा में ऐसे शब्दावली आते हैं जिसका सीधा संबंध प्रशासन, सरकारी काम-काज अथवा कार्यालयों में प्रचलित कार्य-पद्धति एवं कार्य-प्रणाली से होता है।
- सामान्य बोल-चाल की भाषा से प्रशासन की भाषा कुछ अलग होती है। वहाँ कभी नियमों की बात होती है तो कभी फार्मों, प्रपत्तों, संहिताओं, विधि अथवा अधिनियमों आदि की, और कभी सांविधानिक रूप भी सामने आती है। फाइलों पर लिखे जाने टिप्पणीयों की भाषा होती है, प्रारूपों की भाषा होती है, ज्ञापनों, परिपत्रों, अधिसूचनाओं तथा विज्ञप्तियों की भाषा होती है। इन सभी के लिए कुछ विशेष शब्द रूढ़ हो जाते हैं जो निरंतर उसी क्षेत्र के प्रयोग में आते हैं।
- भाषा की इस स्वरूप के लिए विभिन्न संकल्पनाओं की सही और सटीक अभिव्यक्ति की दिशा में ही हमें विशिष्ट शब्दावली की आवश्यकता पड़ती है।

- प्रशासनिक शब्द जैसे - आयोग, अधिकारी, कर्मचारी, ग्रेच्युटी, तदर्थ, पदस्थ, पेंशन, निलंबन, प्रपत्र, मंजूरी, सरकार, सहकारी आदि ।
- प्रशासनिक हिन्दी की शब्दावलियों में विभिन्न स्वरूपों के शब्द मिलते हैं।

► प्रशासनिक पत्राचार

सरकारी पत्राचार या प्रशासनिक या कार्यालय पत्राचार से तात्पर्य ऐसे पत्रों से है जो किसी मंत्रालय, कार्यालय, संस्था तथा कार्यरत कर्मचारी के बीच प्रशासनिक या कार्यालय प्रयोजनों के लिए किया जाता है। कभी | किसी संस्था से सूचना मँगानी होती है, तो कभी किसी संस्था को सूचना | भेजनी होती है, कभी किसी व्यक्ति अथवा संस्था के पत्र की पावती भेजनी ! होती है तो कभी निर्णय होने में देर लगने के कारण पत्र भेजने वाले पक्ष ! को अंतरिम उत्तर देना होता है। ऐसी स्थितियों में सरकारी पत्राचार के एक प्रकार 'पत्रा' का प्रयोग किया जाता है।

संवैधानिक प्रावधान होने के बावजूद हिन्दी संघ की राजभाषा का पूर्ण रूप नहीं प्राप्त कर सकी है फिर भी संघ की राजभाषा होने की ओर वह पूर्ण वेग से गतिशील है। इसके फलस्वरूप संघ और राज्य की प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी ने सहकारी विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों में अपनी जगह बनानी शुरू कर दी है। फलतः प्रशासनिक क्षेत्र में प्रशासनिक कार्यों के विविध रूपों के लिए उसने अपने रूप गढ़ने प्रारंभ कर दिए हैं। पत्राचार, टिप्पण प्रारूपण, आदेश, अनुदेश, ज्ञापन, परिपत्र, पत्र, आवेदन, अभ्यावेदन, संकल्प, संलेख, विज्ञप्ति, अधिसूचना, पृष्ठांकन, स्मार, अर्द्धसरकारी, पत्र- आदि प्रशासनिक व्यवहारों के विभिन्न रूप प्रचलित एवं प्रयुक्त हो रहे हैं। इन प्रयोजनों के लिए अनेक नए पारिभाषिक पद, वाक्यांश निर्मित एवं विकसित हो चुके हैं जिनके प्रयोग से प्रशासनिक हिन्दी के विविध रूपों के विकास हो रहे हैं जैसे- 'अनुमोदनार्थ', " 'निदेशानुसार', 'यथा-प्रस्तावित', 'यथानिर्देशित', 'सहानुभूतिपूर्वक विचार के लिए', 'के अनुसरण में', 'निविदा', 'प्राक्कथन', 'प्राधिकार', 'निकाय', 'प्रोन्नति', 'साक्षांकन', समाहर्ता आदि असंख्य परिभाषित शब्द प्रशासनिक स्तर पर प्रचलित हो चुके हैं। ऐसे वाक्यों, पदों, शब्दों से विकसित हिन्दी का प्रयोग प्रशासनिक क्षेत्रों में जिस रूप में हो रहा है उससे आशा की जा सकती है कि विश्व की अन्य विकसित भाषाओं की भाँति हिन्दी भी विभिन्न प्रयोजनों के लिए अपने को तैयार करने की दिशा में अग्रसर है।

- **प्रशासनिक (सरकारी) पत्राचार के स्वरूप :** केन्द्रीय या प्रांतीय सरकारें कार्य संचालन की सुविधा के लिए अनेक कार्यालयों की व्यवस्था करती हैं। ये कार्यालय देश के एक कोने से दूसरे कोने तक फैले रहते हैं। उनका सम्बन्ध पत्रों द्वारा स्थापित होता है। सरकारी कार्यालयों में सबसे अधिक प्रयोग पत्राचार से ही होता है। पत्र सरकारी कार्यालयों में उनकी कार्य-पद्धति एवं सम्प्रेषण की रीढ़ की हड्डी होती है। 'जब एक सरकार दूसरी राज्य सरकार को अर्थात् भारत

सरकार राज्य सरकार को, एक राज्य सरकार दूसरी राज्य सरकार को, अपने से से सम्बन्ध या अपने । अधीनस्थ कार्यालयों एवं विभागों, सरकारी संगठनों, संस्थाओं, बैंकों, कर्मचारी संघों, तथा सामान्य जनता विभिन्न विषयों पर पत्र लिखती अथवा उत्तर देती हैं तब उन्हें सरकारी या प्रशासकीय पत्र कहते हैं। सरकार द्वारा स्वदेश स्थित कार्यालयों तथा विदेशी सरकारों, उनके राजदूतावासों अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को लिखे गये पत्र भी इसी वर्ग में आते हैं। पत्र के कच्चे रूप को आलेखन या मसौदा तैयार करना कहा जाता है। जिसे कार्यालयीन सहायक एवं वरिष्ठ लिपिक तैयार करते हैं। प्रारूप को फिर से पढ़कर अपने उच्च अधिकारी के पास अनुमोदन के लिए भेजा जाता है। अधिकारी संशोधित कर टंकित या साइक्लोस्टाइल कर कार्यालय को प्रेषित करते हैं।

तदनुसार पत्राचार के अलग-अलग रूप निश्चित किए गये हैं। कार्यालयों में कभी साधारण पत्र, तत्काल, अर्द्धसरकारी, तार देना होता है। यही नहीं कार्यालय ज्ञापन द्वारा सूचना देने, अनौपचारिक टिप्पणी मंत्रालयों में छुट्टी के घोषणा, प्रेस नोट प्रसारित अतः कार्य, महत्व और अवसर की आवश्यकतानुसार विभिन्न रूपों के पत्रों का प्रयोग किया जाता है।

- **पत्राचार से आप क्या समझते हैं :** पत्राचार मनुष्य की समाजशीलता का प्रमाण माना जाता है। इच्छाओं, आवश्यकताओं के साथ भावों और विचारों के परस्पर आदान-प्रदान के माध्यम से सामाजिक रिश्तों के निर्माण और निर्वहन में पत्राचार में महत्वपूर्ण योगदान होता है। निजी व्यवहार और व्यावसायिक तथा प्रशासकीय कार्यों के लिए पत्राचार आवश्यक ही नहीं, एक अनिवार्य माध्यम रहा है। केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में प्रयुक्त पत्रों की रचना-प्रक्रिया, शैली तथा भाषा की अपनी विशिष्ट परम्परा व पद्धति होती है। सामान्यतः सरकारी पत्र विशिष्ट ढर्रे पर चलते हैं, उनमें न तो स्वतंत्र विचारों, भावों का स्थान होता है, न ही स्वतन्त्र विचारों, भावों का स्थान होता है, न ही स्वतंत्र शैली का परन्तु युग परिवर्तन के साथ जिस प्रकार शासन प्रणाली बदलती है, उसी प्रकार उसकी कार्य-पद्धति में भी बदलाव आना जरूरी है। अतः प्रशासकीय पत्र लिखने के कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं-

1. सरलता :- आदर्श पत्र - लेखन की एक प्रमुख विशेषता उसकी सरलता होती है। दुर्बोध पत्र प्रेषक के समझ में उलझने पैदा करता है अतः पत्र द्वारा कही जाने वाली बातों एवं तथ्यों को सीधे ढंग से और स्पष्ट शब्दों में कहा जाना चाहिए उनमें पांडित्य प्रदर्शन करना मूर्खता हो सकता है।

2. स्पष्टता :- पत्र - लेखन का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत है, उसकी स्पष्टता पत्र में स्पष्टता लाने के लिए लेखन का विशेष शैली अपनानी जानी चाहिए। पत्र में लम्बे वाक्य विन्यास तथा अत्यन्त कठिन शब्दों का कभी भी उपयोग नहीं करना चाहिए, वरना पत्र पढ़ते समय पाठक को शब्दावली या शब्दकोश सामने रखना पड़ सकता है, जो अमान्य, हास्यास्पद होगा। विद्वता प्रदर्शन के लिए जीवन एवं साहित्य

में अनेक क्षेत्र खुले पड़े हैं। अतः पत्र में प्रचलित शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों को संज्योंना चाहिए।

3. संक्षिप्तता :- कोई भी कार्यालयीन पत्र संक्षिप्त होना बहुत जरूरी है। संक्षिप्तता पत्र की प्रभावोत्पादकता करती है। किसी भी पत्र में निबन्ध का स्वरूप नहीं होना चाहिए वरना मूल अभीष्ट बातों का सम्प्रेषण छूटकर अन्य बातों का ही प्रक्षेपण अधिक मात्रा में हो जायेगा संक्षिप्तता से प्रेषक तथा प्रेषिती दोनों को ही सुविधा होती है, तथा संक्षिप्त पत्र में गलतियाँ अपेक्षाकृत कम होकर कथन के प्रभाव महत्ता में वृद्धि करती है।

4. शिष्टता :- कार्यालयीन पत्र ही नहीं, अपितु सभी प्रकार के पत्र - लेखन की भाषा शिष्ट तथा विनम्र होनी चाहिए। पत्र अगर नकारसूचक भी है, अर्थात् पत्र द्वारा किसी बात को नकारात्मक भी कहना हो, तो उसे विनम्रतापूर्वक ही कहा जाना चाहिए ताकि पत्र पाने वाले के मन को चोट न लगने पाये। जनता तथा कर्मचारियों की माँगों एवं शिकायतों आदि का तुरंत और उचित ध्यान देकर शीघ्र निर्णय की सूचना तत्काल पत्र सम्बन्धियों को दी जानी चाहिए। इन बातों से जनता के मन में संतोष एवं सम्मान की भावना जाग्रत होगी।

5. प्रभावोत्पादकता :- शासकीय पत्र में भाषा, पद-विन्यास, वाक्य- विन्यास, विचार तथा भावों की ऐसी सुगठित अन्विती होनी चाहिए जिससे पत्र का प्रभाव प्रेषिती के मन पर पड़ सके। पत्र - लेखन में प्रभावोत्पादकता लाने के लिए पत्र लेखक की शासकीय कार्यप्रणाली, सरकारी नीति तथा सम्बन्धित विषय की गहरी समझ होनी चाहिए। जहाँ पर्यायवाची शब्द नहीं मिलते, वहाँ उटपटाँग हिन्दी शब्दों के बदले अंग्रेजी के ही प्रचलित शब्दों को ! देवनागरी लिपि में लिख देना उचित होगा।

6. वैशिष्ट्यपूर्ण भाषा-शैली :- पत्राचार की भाषा और साहित्यिक भाषा में पर्याप्त अंतर होता है। सरकारी पत्रों में साहित्य से सम्बन्धित मुहावरों, कहावतों, तथा शैरो शायरी आदि कादापि उपयोग नहीं किया जाता। सरकारी पत्रों की भाषा प्रायः निश्चित शब्दावली, वाक्य - विन्यास तथा विषय के अनुरूप शब्दों, वाक्यांशों प्रयोग किया जाता है। पत्र की भाषा में अप्रचलित और दुर्बोध शब्दों का कभी प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। वरना पत्र की भाषा उबारू तथा अरूचिपूर्ण हो जायेगी। इस प्रकार सरकारी पत्र की भाषा में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है।

➤ पत्राचार के प्रकार

सरकारी कार्यालयों से भेजे जाने वाले विविध पत्र निम्नलिखित | प्रकारों में से किसी एक प्रकार के हो सकते हैं-

पत्र या सरकारी पत्र (इंसी के अंतर्गत पावती अंतरिम उत्तर तथा स्मरण पत्र भी आ जायेंगे)

- अर्धसरकारी पत्र
- कार्यालय ज्ञापन
- कार्यालय आदेश
- पंजीकरण

- अधिसूचना
- संकल्प
- प्रेस विज्ञप्ति तथा प्रेस नोट
- तार सेविभ्राम
- अंतर विभागीय टिप्पणी

इन सभी पत्र प्रकारों की भाषा, रात्रावली प्रारूप तथा प्रयोगगत विशेषताएँ होती हैं इसीलिए जिस संदर्भ स्थिति में "कार्यालय आदेश" का प्रयोग होगा उसमें कार्यालय ज्ञापन का प्रयोग नहीं किया जा सकता। प्रत्येक प्रशासनिक पत्र की दो भागों में बाँटा जाता है।

प्रारूप भाग तथा कलेवर भाग। प्रारूप भाग में पत्र की संस्था भेजने वाले कार्यालय का नाम, स्थान एवं तारीख, प्रेषक प्रेषित विषय, संबोधन, अधोलेख आदि होते हैं।

► संक्षेपण

संक्षेपण या क्षार लेखन किसी वितारित लेख को छोटा करने की प्रक्रिया है अर्थात् विस्तृत लेख को संक्षेप में लिखने की प्रक्रिया का नाम संक्षेपण है।

दिये गये अवतरण को एक तिहाई अर्थात् ($1/3$) में प्रयुक्त करना संक्षेपण कहलाता है। दिये गये अवतरण को $1/2$ में प्रस्तुत करना सारांश तथा $1/5$ में प्रस्तुत करना टिप्पणी कहलाता है।

संक्षेपण का उद्देश्य है कि मुख्य विचारों की ओर ध्यान आकर्षित करना अर्थात् प्रमुख बातें ही कहना तथा समय की बचत अनावश्यक बातें न करना न लिखना।

संक्षेप का महत्व प्रशासकीय कार्यालयों में प्रारूप लेखन में सबसे अधिक होता है।

► संक्षेपण करने की विधि:-

1. दिये गये अवतरण को जब तक पढ़िए तब तक कि उसका केन्द्रीय भाव स्पष्ट न हो जाए।
2. केन्द्रीय भाव स्पष्ट होते ही उससे सम्बन्धित प्रमुख विचारों को रेखांकित कर लीजिए।
3. इन रेखांकित वाक्यों को उत्तरपुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर रफ कार्य के लिए उत्तर लीजिए यह ध्यान रहे कि न कोई वाक्य छूटे और न कोई कम
4. दो वाक्यों को एक वाक्य या मिश्र वाक्य बनाकर अनेक शब्दों को एक शब्द बनाकर पुनः लिखिए।
5. पुनः लिखते समय अनावश्यक शब्द, उदाहरण दृष्टान्त मुहावरे व कहावत हटा देना चाहिए।
6. संक्षेपण अन्य पुरुष में होना चाहिए। भाषा स्वयं की हो लेकिन विचार लेख के ही होने चाहिए।

7. शब्द गणना कीजिए आवश्यकतानुसार कम ज्यादा कीजिए उचित शीर्षक कीजिए शीर्षक छोटे से छोटा होना चाहिए।
8. शब्द संख्या गिनिए और शीर्षक के पास या अन्त में कोष्ठक में शब्द संख्या लिखिए।

➤ संक्षेपण की विशेषताएँ :-

1. संक्षेपण सम्पूर्ण अनुच्छेद का एक तिहाई होना चाहिए।
 2. संक्षेपण करते समय अनुच्छेद का सार संक्षेपण में निहित रहना चाहिए।
 3. संक्षेपण की भाषा सरल तथा व्याकरण के जटिल नियमों से मुक्त रहनी चाहिए अर्थात् संक्षेपण स्पष्ट होना चाहिए।
 4. संक्षेपण करते समय भाषा की शुद्धता और प्रवाह बना रहना चाहिए।
 5. संक्षेपण समास शैली में किया जाना चाहिए। संक्षेपण में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द प्रयोग किये जाने चाहिए।
 6. संक्षेपण में मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
 7. जहां तक सम्भव प्रत्यक्ष कथन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
 8. अनुच्छेद में आये उदाहरण, उद्धाहरण आदि छोड़ देना चाहिए।
 9. संक्षेपण करने के पश्चात् उसका एक उपर्युक्त शीर्षक देना चाहिए। जो अनुच्छेद के केन्द्रीय भाव को व्यक्त कर सके।
 10. शीर्षक दो या तीन शब्दों से बड़ा नहीं होना चाहिए।
- अनेक वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द रखने से भी शब्दों की संख्या कम की जा सकती है।

उदाहरण :-

अनेक शब्द	एक शब्द	कितने शब्द की बचत
राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास	अन्तःपुर	5
मन में आपसे आपे होने वाली प्रेरणा	अन्तःप्रेरणा	5
किसी देश के अंदर होनेवाला या उससे संबंध रखनेवाला	अंतर्देशीय	8
तर्क के बिना मान लिया गया विश्वास	अंधविश्वास	6
जिसमें काँटे या विघ्न बाधा न हो	निष्कंटक	6

जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो	अक्षम	6
जिनके अंदर या पास न पहुंचा जा सके	अगम्य	7
वह जो करने या होने वाली बात को पहले से ही सोच ले	अग्रसोची	12
कोई बात जो बढ़ा-चढ़ाकर सही गई हो	अतिशयोक्ति	7
जिसका कोई कहीं अंत न होता है	अनंत	6
जिसका या जिसके संबंध में कोई निर्णय न हुआ हो	अनिर्णीत	9
जिसका मन किसी दूसरी जगह लगा हो	अन्यमनस्क	6
चंद्रमास के किसी पक्ष की आठवीं तिथि	अष्टमी	6
किसी वस्तु को आधुनिक रूप देने की क्रिया	आधुनिकीकरण	7
वह कवि जो तत्काल कविता कर डालता है	आशुकवि	7
नित्य दीन-दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था	सदाव्रत	7
जो एक ही माता के उदर (पेट) से उत्पन्न हुए हों	सहोदर	9
एक वस्तु लेकर उसके बदले में	विनिमय	8
दूसरी वस्तु देना	—	—
समाज में उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच का वर्ग	मध्यवर्ग	8

❖ पारिभाषिक शब्दावली

- वे शब्द जो एक निश्चित अर्थ का बोध कराते हैं।
- पारिभाषिक शब्द मानक होते हैं।
- पारिभाषिक शब्द परिमार्जित, परिनिष्ठित होते हैं।
- पारिभाषिक शब्द स्थान विशेष पर ही अपना निश्चित अर्थ का बोध कराते हैं। अर्थात् मानक शब्द कुछ ऐसे होते हैं जो एक क्षेत्र विशेष में ही मानक होते हैं वहाँ से हटने पर वे अमानक हो जाते हैं ऐसे मानक शब्द पारिभाषिक शब्द के रूप में अपनाए जाते हैं तो वे केवल उस क्षेत्र तक ही सीमित रहते हैं।
- अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए ताकि अर्थ का अर्थ न हो।
- पारिभाषिक शब्द का निर्माण उपसर्ग व प्रत्यय लगाकर सामान्यतः किया जाता है उपसर्ग / प्रत्यय मूल शब्द में लगाते हैं।
- पारिभाषिक शब्द के अनेक रूप हैं, प्रशासनिक वैज्ञानिक तकनीकी मानविकी व व्यवसायिक।

❖ प्रशासनिक कार्यलियी शब्दावली

1. तदर्थ	-	Adhoc
2. प्रशासन	-	Administration
3. प्रतिकूल	-	Adverse
4. सम्बद्धता	-	Affiliation
5. कार्य सूची	-	Agenda
6. भत्ते	-	Allowance
7. कार्यवाही	-	Action
8. अधिनियम	-	Act
9. प्रकट करना	-	Acknowledgement
10. अकादमी	-	Academy
11. अनुमान	-	Estimate
12. नस्ती, मिसिल	-	File
13. सम्मानीय	-	Honorarium
14. टकसाल	-	Mint
15. अंतरिम	-	Interim
16. आद्यक्षर	-	Initials
17. अनुक्रमणि	-	Index
18. प्रभारी	-	In charge
19. निदेशालय	-	Directorate

20. प्रेषण, भेजना	-	Dispatch
21. कटौती	-	Deduction
22. संहिता	-	Code
23. लाभांश	-	Bonus
24. परिशिष्ट	-	Appendix
25. लेखा परीक्षा, अंकेक्षण	-	Audit
26. बकाया	-	Arrears
27. सवर्ग, सेवा स्तर	-	Cadre
28. कक्ष / प्रकोष्ठ	-	Cell
29. राजपत्र	-	Gazette
30. राजस्व	-	Revenue
31. सचिव	-	Secretary
32. आरक्षण	-	Reservation
33. प्राधिकारी	-	Authority
34. अभिलेख	-	Record
35. वरिष्ठता	-	Seniority
36. चयन	-	Selection
37. निर्वाचन अधिकारी	-	Returning officer
38. कार्यवृत्त	-	Minutes



39. औचित्य	-	Justification	71. सत्य प्रतिलिपि	-	True copy
40. पूछताछ	-	Enquiry	72. सत्यापन	-	Verification
41. अवधि	-	Duration	73. संक्षेप	-	Abbreviation
42. दक्षतारोक	-	Efficiency bar	74. अवशोषण करना	-	Absorb
43. प्रतिय	-	Bann	75. शैक्षणिक	-	Academic year
44. घूस, रिश्वत	-	Bribe	76. आवंटन	-	Allot
45. उपविधि	-	Bye low	77. शीर्ष	-	Apex
46. उचित माध्यम से	-	Through proper channel	78. शीर्ष निकाय	-	Apex Body
47. दैनिक भत्ता	-	Daily allowance	79. अधिवासी	-	Domicile
48. प्रतिलिपि संलग्न	-	Copy enclosed	80. वाचन	-	De-code
49. प्राधिकारी	-	Authority	81. अनावासी छात्र	-	Day scholar
50. प्रारूप	-	Draft	82. मन्त्रि मण्डल	-	Cabinet
51. नियत तिथि	-	Due date	83. विषय सार	-	Brief
52. समाप्ति से पूर्व	-	Before the expiry	84. सामान्य पद्धति	-	General Practice
53. चापसी डाक से	-	By- Return by post	85. भविष्य निधि	-	General Provident Fund
54. वेतन वृद्धि	-	Increment	86. राजभवन	-	Government Lounge
55. स्वीकृती	-	Granted	87. शासकीय प्रतिभूतियों	-	Government Securities
56. न्याय संगत सिद्ध करना	-	Justify your	88. कर्मचारी /सहायक	-	Employee
57. निर्णय के लिए रोका गया	-	Keep pending	89. अपाय / अपठनीय	-	Illegible
58. अर्जित अवकाश	-	Earned leave	90. कुंजीपटल	-	Keyboard
59. आकस्मिक अवकाश	-	Casual leave	91. न्यायपालिका	-	Judiciary
60. उपस्थित नामावली	-	Muster role	92. श्रम	-	Labour
61. निर्दिष्ट	-	Specified	93. सम्पर्क अधिकारी	-	Wiason officer
62. कार्यालय ज्ञापन	-	Office memorandum	94. खाता	-	Account
63. अनापत्ति प्रमाण पत्र	-	No Certificate	95. ज्ञापन	-	Memo
64. वार्षिक विवरणी	-	Yearly reluarr	96. मध्यस्थ	-	Mediator
65. भवदीय	-	Your's faithfully	97. अल्पसंख्यक	-	Minority
66. मण्डलीय	-	Zonal office	98. मत	-	Vote
67. मण्डल	-	Zone	99. मुद्दा / विषयविद	-	Point
68. प्रतिरक्षा सूची	-	Waiting list	100. कोटा	-	Quota
69. रिक्त पद	-	Vacancy	101. गणपूर्ति	-	Quorum
70. सत्यापित प्रति	-	Verified copy	102. प्रश्नचिन्ह	-	Query



103. बजट / आय-व्यय -	Budget	126 प्रशि -	Apprentice
104 अनियमित -	Random	127 आवक जावक लिपिक -	Inward despatch clerk
105. कार्य प्रारंभ करना -	Resume	128. स्थगन -	Adjournment
106. विधि मान्य -	Valid	129 सम्मति -	Consent
107. दरसूची -	Traffic	130. दहशत / अभिरक्षा -	Custody
108. अधिवेशन की सत्र -	Session	131. दोषारोपण फलक अभियोग फलक -	Charge sheet
109. सेवा/ नौकरी -	Service	132. निलम्बन -	Suspension
110. आलेख -	Write up	133. आहरण -	Drawing
111. बट्टे खाते में डालना -	Write off	134. कटौती -	Deduction
112. समापन -	Wind up	135. दस्तावेज -	Document
113. प्रवेश पत्र / वीक्षा -	Visa	136. चीजक -	Invoice
114. आवश्यकता -	Wanted	137. गारण्टी -	Guarantee
115. शून्याल -	Zero Hour		
116. कार्य चालन -	Working		
117. पेशन निवृत्तिका -	Pension		
118. अर्धवेतन अवकास -	Half day leave		
119. प्रतिपूरक अवकाश -	Compensatory leave		
120. रूपान्तरित अवकाश -	Commuted leave		
121. प्राथमिकता -	Priority		
122. गणतन्त्र -	Republic		
123. कर -	Tax		
124. ऋण -	Loan		
125. पारिभाषिक शब्द -	Technical term		

▶ टिप्पण

प्रशासनिक पत्राचार में टिप्पण तथा आलेखन का विशेष महत्व होता है। कार्यालय में आएँ पत्र पर अथवा कार्यालय की स्वतंत्र आवश्यकताओं की संपूर्ति के लिए टिप्पणी तैयार की जाती है। टिप्पणी का अर्थ है- पत्र अथवा पत्र - संदर्भ के बारे में आवश्यक जानकारी तथा टिप्पणीकार का कार्यालय के विधिविधान के अन्तर्गत उस पर अपना सुझाव देना। इन्हीं सुझावों के आधार पर आलेखनकार पत्रोत्तर का प्रारूप तैयार करता है। अर्थात् सरकारी कार्यप्रणाली में विचाराधीन कागज या मामले के बारे में उनके निपटान हेतु सुझाव या निर्णय देने के परिणामस्वरूप जो अभ्युक्तिया फाइल पर लिखी जाती है, उन्हें टिप्पण या टिप्पणी कहते हैं। टिप्पणी में संदर्भ के रूप में इससे पहले पत्रों का सार, निर्णय आदि हेतु प्रश्न तथा विवरणादि सब कुछ अंकित किया जाता है। वास्तव में सभी प्रकार की टिप्पणियाँ सम्बन्धित कर्मचारी-अधिकारियों द्वारा विचाराधीन मामले के कागज पर लिखी जाती हैं कार्यालयीन आवश्यकता के अनुसार अत्यधिक महत्व प्राप्त मामलों में अनुभाग अधिकारी आदि के स्तर से टिप्पणी आरम्भ होती है अन्यथा मामले के स्वरूप के अनुसार परम्परागत रूप से टिप्पणी लिपिक अथवा सहायक के स्तर में शुरू की जाती है। मंत्री अथवा राष्ट्रपति आदि के द्वारा लिखी गई विशेष कही जाती है। टिप्पण को बनाते समय कुछ उद्देश्य को पड़ता है जैसे सभी तथ्यों को स्पष्ट रूप में तथा अधि समक्ष प्रस्तुत करना और अगर किसी मामले में दुष्टांत अथवा निर्णय उपलब्ध हो तो उनकी ओर संकेत करना दूसरा अथवा पत्र-व्यवहार पर अपने विचारों को स्पष्ट करना। तीसरा यह स्पष्ट करना कि 'आवती' के अंतिम निर्वाण के लिए क्या कार्यवाही की जा चाहिए। इससे अधिकारी को निर्णय करने में सहायता मिल जाती है।

➤ **टिप्पणी के प्रकार :-** कार्यालय में टिप्पणी का उपयोग अनेक स्तरों पर किया जाता है। मामलों का स्वरूप अधिकार की तथा कार्यालय की आवश्यकतानुसार अनेक प्रकार की टिप्पण लिखी जाती है, जिनमें प्रमुख है - नेमी टिप्पण, सामान्य टिप्पण अनुभागीय टिप्पण, सम्पूर्ण टिप्पण तथा अनौपचारिक टिप्पण

1. प्रशासनिक (नेमी) :- टिप्पण कार्यालयीन कामकाज के एक भाग के रूप में नेमी टिप्पण लिखे जाते हैं। ये टिप्पण रोजमर्रा के कार्य का एक अंग होने के कारण संक्षिप्त रूप में छोटी-छोटी बातों के लिए लिखे जाते हैं। इनका महत्व केवल कार्यालयीन अभिलेख और औपचारिकता के निर्वाह तक ही सीमित होता है।

2. सामान्य टिप्पण:- सरकारी कार्यालयों में जो पत्र/मामले पहली बार प्राप्त होते हैं, उन्हें प्रस्तुत करने की एक प्रक्रिया के रूप में जो टिप्पण लिखे जाते हैं, उन्हें सामान्य टिप्पण कहते हैं। ऐसे टिप्पणी में पत्र का पूर्ववर्ती सन्दर्भ अथवा प्रसंग का उल्लेख नहीं होगा।

3. अनुभागीय टिप्पण :- इसे विभागीय टिप्पण भी कहा जाता है। कुछ मामलों पर सरकारी आवश्यकता के अनुसार विभिन्न विभागों अथवा अनुभावों से अनुदेश प्राप्त करना जरूरी होता है। ऐसी स्थिति में मामलों के स्वरूप के अनुसार टिप्पण कर्ताओं को प्रत्येक मामले पर स्वतंत्र टिप्पण लिखना आवश्यक होता है और वे ऐसे स्वतंत्र टिप्पण पर अलग से अनुदेश प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के टिप्पणों को विभागीय अथवा अनुभागीय टिप्पण कहते हैं।

4. सम्पूर्ण टिप्पण :- विस्तृत टिप्पणों को सम्पूर्ण टिप्पण कहा जाता है। कार्यालयों में बहुत बार मामलों की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए उनके पूरे इतिवृत्त, तर्कवितर्क प्रसंग आदि को समग्र रूप से फाइल में रखना होता है ताकि उसके आधार पर उच्चाधिकारी उचित निर्णय लेकर आदेश जारी कर सके। इस प्रक्रिया में टिप्पण में सम्पूर्ण इतिवृत्ति के साथ-साथ पूर्व संदर्भ पूर्ववर्ती फाइलों के संदर्भ, पुराने फैसले आदि भी देना होते हैं। इस प्रकार मामले के बारे में पूरे अध्ययन के साथ विश्लेषणात्मक पद्धति से जो टिप्पण लिखा जाता है उसे सम्पूर्ण टिप्पण कहते हैं।

5. सूक्ष्म टिप्पण :- सूक्ष्म टिप्पण अत्यंत संक्षिप्त रूप में लिखे जाते हैं कुछ पत्रों पर अनुभाग अधिकारी अथवा सम्बन्धित अधिकारी पत्र के हाशिये पर बाईं ओर निर्देश देता है जो सामान्यतया संक्षिप्त व के रूप में होता है उसे ही सूक्ष्म टिप्पण कहा जाता है। सूक्ष्म टिप्पण में सामान्यतः सम्मति हेतु स्वीकृति के लिए, अवलाकनार्थ आदि वाक्य लिखे जाते हैं। बाद में सम्बन्धित फाइल वरिष्ठ अधिकारी के पास आवश्यक कार्यवाही हेतु भेज देने पर वह अधिकारी भी सूक्ष्म टिप्पण के रूप में 'स्वीकृत', अनुमोदित देख लिया ठीक है, मैं सहमत हूँ आदि वाक्य लिखता है।

किसी भी कार्यालय या संस्था में कोई भी पत्र उपयुक्त सोपानों को पार करता हुआ निर्णायक दशा में पहुँचता है तब किसी अधिकारी सहायक या कर्मचारी से सम्बन्धित आवश्यक "टिप्पणी पत्र के सार ! को प्रस्तुत करते हुए उस पर लिये जानेवाले निर्णय हेतु सुझाव देता ! है।" यदि कोई ऐसा पत्र प्राप्त हुआ हो, जिसके सम्बन्ध में पूर्व में ! भी पत्राचार हो चुका है तो आदेश देनेवाले पदाधिकारी ऐसी टिप्पणी लिखने की चाहत मांगते हैं, जिसमें पूर्व के पत्रों का भी प्रसंगोल्लेख हो। इस प्रकार की टिप्पणी को प्राप्त पूर्ण टिप्पण कहा जाता है।

आकार एवं संरचना की दृष्टि से टिप्पणी के तीन प्रकार होते हैं; जिसे उक्त नामों से जाने जाते हैं:

- (i) प्रशासनिक टिप्पणी
- (ii) स्वतः पूर्ण टिप्पणी
- (iii) आवती पर आधारित टिप्पणी ।

1. प्रशासनिक टिप्पणी :- सामान्यतः प्रशासनिक टिप्पणियाँ पूर्णतः संक्षिप्त आदेशात्मक एवं व्याख्यात्मक होते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ प्रायः अधिकारी किया करते हैं। वे पत्र पर ही अपनी टिप्पणी सामान्यतः लिख जाते हैं जैसे अवलोकित, संचिका के माध्यम से उपस्थापित करें, संचिकास्त करें, कर्मचारियों के बीच परिचारित । करें, वार्तालाप करे, सम्प्रति इसे तत्काल स्थगित रखें या बाद में उपस्थापित करें इत्यादि ।

2. स्वतः पूर्ण टिप्पणी :- ऐसी टिप्पणी जिसका सम्बन्ध प्रसंगों या ! पत्र-व्यवहारों से न होकर प्रसंगोल्लेख से मुक्त होती है उस टिप्पणी को स्वतः पूर्ण टिप्पणी कहते हैं। ऐसी टिप्पणियों में परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं की अपेक्षाओं के अनुरूप लिखी जाती है। इस प्रकार के टिप्पणी लेखन का प्रारम्भ सहायक स्तर से लेकर अधिकारी वर्ग तक के लोग कर सकते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ में पद-सृजन एवं किसी आपदा से उत्पन्न संकटों के विचारणार्थ प्रस्ताव सम्बन्धित टिप्पणी है।

3. आवती पर आधारित टिप्पणी :- ऐसी टिप्पणियाँ का प्रारम्भ सहायक स्तर से होती है। कोई भी पत्र जब प्राप्त होता है तब उसमें निहित तथ्यों, विवरणों, आँकड़ों एवं पत्र प्रेषण अधिकारी द्वारा । माँगी गयी सूचनाओं के द्वारा आदेश देने का आग्रह या व्यय आदि । की स्वीकृति, कार्य विशेष के लिए राशि की स्वीकृति या आवंटन । इत्यादि से सम्बन्धित विवरण टिप्पणी में लिखे जाते हैं। इसके साथ । ही नियमाधीन उसपर प्रस्ताव प्रस्तुत किये जाते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ । पूर्व प्रस्ताव के उल्लेख के क्रम संख्या के साथ किया जाता है। टिप्पणी लिखने के निम्नवत् नियम ध्यान देने योग्य है :-

- i. विचाराधीन पत्र में उल्लिखित सभी प्रमुख विषयों पर प्रकाश डाला जाय।
- ii. टिप्पणी लिखते समय समालोचक की दृष्टि को अपनायी जाय जिसमें सम्बन्धित विषय के पक्ष एवं विपक्ष दोनों के तर्क को विधि संगत प्रस्ताव एवं विचार को उद्धृत किया जाय। इस तरह की टिप्पणी से किसी प्रकार के निर्णय को सम्बन्धित पदाधिकारी से विचार लेने में सरलता होती है जिससे विवेकपूर्ण विचार सामने आते हैं जो सकारात्मक होते हैं।
- iii. टिप्पणी में पूर्व के सभी तथ्य क्रमवार सामने आये इसके लिए टिप्पणीकार को ऐसे प्रसंगों निर्णयों और आदेशों का जिक्र कर देना चाहिए ताकि कोई बिन्दु अछूता न रह जाय। जो भविष्य में परेशानी का कारण बन जाय ।

- iv. सभी सरकारी विभाग या संस्था निहित नियमों, परिनियमों, कानूनों, प्रावधानों, संहिताओं और संविधियों के अधीन कार्य निष्पादित करते हैं। ऐसी स्थिति में टिप्पणीकार के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि ये सर्तकता के साथ सभी समय-समय पर जो भी नियमादि का जिक्र किया गया है उसका वर्णन अवश्य करें।
- v. टिप्पणी लिखते समय टिप्पणीकार को इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिए कि उसके परिणाम एवं होनेवाले हानि की बातें होनी चाहिए, जो समुचित हो।
- vi. किसी भी स्थिति में टिप्पणी आदर्शोन्मुख हो। इस बात पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। विभिन्न प्रश्नों के समाधान के भी सुझाव दिये जाय ताकि सम्बद्ध पदाधिकारी को प्रस्तुत विचारों एवं प्रस्ताव पर टीका-टिप्पणी करने में कठिनाई न हो।
- vii. टिप्पणी अन्य पुरुष में लिखा जाय।
- viii. टिप्पणी तटस्थ होकर लिखी जाय जिसमें पूर्वाग्रह हीन भाव न हो।
- ix. टिप्पणी-पत्र पर प्रर्याप्त उपांत (हशिया) हो, ताकि पदाधि कारी को लिखने में वह अपना स्पष्ट मंतव्य दे सके। टिप्पणी साफ-साफ लिखा जाये।
- x. टिप्पणी लिखते समय पूर्व बांयी ओर शीर्षपर संक्षेप में सम्बन्धि त पदाधिकारी का नाम निदर्शित किया जाय।

टिप्पण

पत्र क्रमांक 4/3 वि. 2024

दिनांक 28-1-20220

निदेशक

संलग्न अनुमानक, जो रू. 50,00,000 मात्र का है, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान राँची से चालू वित्तीय वर्ष, में चार भवनों की मरम्मत हेतु प्राप्त हुआ है, जो इस टिप्पणी के साथ प्रस्तुत है।

1. अनुमानक निर्धारित मानदण्ड के अनुसार बनाया गया है।
2. रा. औ. प्रशि. संस्थान, राँची ने पिछले वर्ष भवनों की मरम्मत के लिए जो पैसा खर्च किया है, वर्तमान अनुमानक भी उन्हीं दरों के अनुरूप है।
3. प्रधानाचार्य ने तुरन्त मरम्मत न होने पर भवनों के गिर जाने की अशंका व्यक्त की है।
4. चालू वित्तीय वर्ष में उपर्युक्त कार्य हेतु बजट का आवण्टन उपलब्ध है।

आदेशार्थ प्रस्तुत।

हस्ताक्षर

सहायक

दिनांक

► प्रारूपण

कार्यालयों में पत्र के माध्यम से ही कार्रवाई की जाती है। प्रारूपण का तात्पर्य है किसी भी पत्र के उत्तर का एक कच्चा रूप तैयार करना अर्थात् यदि किसी कार्यालय में कोई पत्र प्राप्त होता है तो उत्तर देने के लिए पत्र का एक मसौदा अर्थात् कच्चा रूप तैयार किया जाता है। दूसरे शब्दों में जब किसी भी कार्यालय में कोई पत्र सहायक अथवा अधिकारी द्वारा प्रस्तुत किया जाता है तब उस पर उच्चाधिकारी का अनुमोदन लिया जाता है। अनुमोदन के पूर्व तैयार पत्र को प्रारूप या मसौदा कहा जाता है और अनुमोदन के बाद वह पत्र बन जाता है।

► प्रारूपण की विशेषताएँ :-

- प्रारूप तैयार करते समय पत्राचार के विभिन्न रूपों की जानकारी आवश्यक है।
- प्रारूप अपने में पूर्ण तथा पूर्णतः विषय पर आधारित हो।
- प्रारूप तैयार करते समय क्रमबद्ध ढंग से विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाए। संदर्भ रहित बातों से बचा जाए।
- यदि पत्र का उत्तर दिया जा रहा हो तो वह समुचित तथा सटीक होना आवश्यक है। शुद्धता तथा तथ्यात्मकता सरकारी कामकाज में अनिवार्य है। एक छोटी सी भूल भी बड़ी महंगी पड़ सकती है।
- प्रारूप की भाषा पक्षपात से मुक्त शिष्ट स्पष्ट सरल और सहज हो।

यह लिखित आदेश, जिसमें किसी कर्मि पदाधिकारी, व्यक्ति या व्यक्ति समूह के द्वारा कुछ ऐसा गलत या सही कार्य निष्पादित हो जाता है, जिससे सम्बन्धि जुड़ा कार्यालय संस्था या सरकार से हो तथा उसका प्रभाव किसी पर बुरा पड़ रहा हो तो वैसी स्थिति में कार्यालय द्वारा आलेख तैयार कर संबंध व्यक्ति या व्यक्ति समूह या संस्था से जानने की लिखित इच्छा प्रारूपण कहलाता है। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है "किसी सरकारी कार्यालय संस्था या संगठन के द्वारा पत्र लेखन के पूर्व उसका जो ढांचा तैयार करने का प्रारूप तैयार कर सम्बन्धित पदाधिकारी से अनुमोदन लिया जाता है प्रारूपण कहलाता है। जिस तरह से चित्रकार चित्र बनाने के पूर्व पहले उसका रूप मनः प्रदेश में तैयार करता है उसके बाद उसे कागज पर अपनी कूची के सहयोग से रूप-रंग देकर व्यवहारिक रूप देता है, ठीक उसी प्रकार किसी भी तथ्य को व्यक्त करने के लिए जो प्रारूप तैयार किया जाता है प्रारूपण है। इससे संबंधित कर्मि पहले तैयार करता है, उसे अपने पदाधिकारी के पास से जाता है उसको सुझाव के अनुसार जो तैयार किया जाता है वहीं प्रारूप है। यह पत्र का प्रारूप नहीं है, यह तैयार हो जाने के बाद उसे टंकित या सुलेख के द्वारा साफ-सुथरे अक्षरों में प्रस्तुत किया जाता है उसे सम्बन्धित पदाधिकारी से अंत में हस्ताक्षर करवाकर प्रेषित किया जाता है।

वह लिखित आदेश, जिसमें किसी कर्मि, पदाधिकारी, व्यक्ति या व्यक्ति समूह के द्वारा कुछ ऐसा गलत या सही कार्य निष्पादित हो जाता है, जिससे सम्बन्धि जुड़ाव कार्यालय संस्था या सरकार से हो तथा उसका प्रभाव किसी पर बुरा पड़ रहा हो तो वैसी स्थिति में कार्यालय द्वारा आलेख तैयार कर संबंध व्यक्ति या व्यक्ति समूह या संस्था से जानने की लिखित इच्छा प्रारूपण कहलाता है। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है "किसी सरकारी कार्यालय संस्था या संगठन के द्वारा पत्र लेखन के पूर्व उसका जो ढांचा तैयार करने का प्रारूप तैयार कर सम्बन्धित पदाधिकारी से अनुमोदन लिया जाता है प्रारूपण कहलाता है। जिस तरह से चित्रकार चित्र बनाने के पूर्व पहले उसका रूप मनः प्रदेश में तैयार करता है उसके बाद उसे कागज पर अपनी कूची के सहयोग से रूप-रंग देकर व्यवहारिक रूप देता है, ठीक उसी प्रकार किसी भी तथ्य को व्यक्त करने के लिए जो तैयार किया जाता है प्रारूपण है। इससे संबंधित कर्मि पहले तैयार करता है, उसे अपने पदाधिकारी के पास ले जाता है उसको सुझाव के अनुसार जो तैयार किया जाता है वही प्रारूप है। यह पत्र का प्रारूप नहीं है, यह तैयार हो जाने के बाद उसे टंकित या सुलेख के द्वारा साफ-सुथरे अक्षरों में प्रस्तुत किया

जाता है उसे सम्बन्धित पदाधिकारी से अंत में हस्ताक्षर करवाकर प्रेषित किया जाता है।

- **पत्रलेखन :-** पत्रलेखन एक कला है, जिसमें व्यक्ति खुलकर अपने हृदय की बातों को रखता है वहाँ उसका चरित्र, दृष्टिकोण, संस्कार, मानसिक स्थिति, आचरण इत्यादि एक साथ स्पष्ट होते हैं। इस प्रकार पत्र एक कलात्मक अभिव्यक्ति है एक अच्छे पत्र में निम्नवत, विशेषताएँ होनी चाहिए -

- (1) भाषाशैली की सरलता
- (2) विचारों की स्पष्टता
- (3) संक्षिप्ता और सम्पूर्णता
- (4) प्रभावित्व और
- (5) वाह्य सजावट

- **पत्र के निम्न प्रकार होते हैं, जिसे**

- (1) सामाजिक पत्र
- (2) व्यासाधिक पत्र एवं सरकारी पत्र

▶ प्रतिवेदन

प्रतिवेदन का सामान्य अर्थ है किसी प्रकरण, घटना या स्थिति-विशेष को क्रधिक जानकारी (रिपोर्ट) प्रस्तुत करना। आप जानते हैं कि देश-विदेश में अनेक ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं जिनके बारे में विस्तार से जानने के लिए हम सभी उत्सुक रहते हैं। लेकिन उसके लिए तथ्यों की जाँच-पड़ताल करनी पड़ती है अर्थात् मामले की बारीकी से खोजबीन की आवश्यकता पड़ती है जो किसी सरकारी या गैर सरकारी संस्था/एजेंसी द्वारा अथवा उसके द्वारा नियुक्त एक या एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत विवरण को ही प्रतिवेदन कहा जाता है। जिस व्यक्ति वा समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है उसे प्रतिवेदक कहते हैं।

- **साधारणतः** ऐसा महसूस होता है कि बहुत-सी अंग्रेजी विधाओं का अनुकरण की परिपाटी हिन्दी में स्वीकारी जा रही है। उसी का प्रतिफल यहाँ सामने में बना है। अंग्रेजी में एक विधा है रिपोर्ट (Report)। जिसका समानार्थी शब्द माना गया है प्रतिवेदन। जबकि यह दोनों समानार्थी हैं नहीं फिर भी अंग्रेजी का रिपोर्ट शब्द समाचार के माध्यमों में 'सूचना' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। किसी अपराधी के बारे में थाने में जो शिकायत की जाती है। उसे भी रिपोर्ट की श्रेणी रखा जाता है।

- 'वृहत् हिन्दी कोश' में प्रतिवेदन का आशय इस प्रकार स्पष्ट किया गया है- "किसी घटना, कार्य योजना आदि के सम्बन्ध में छानबीन पूछताछ आदि करने के बाद तैयार किया गया विवरण जिस अधिकारी या सभा आदि के समक्ष प्रस्तुत किया जाता हो उसे 'प्रतिवेदन' कहते हैं।"

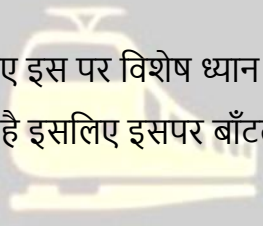
प्रतिवेदन की एक सरल परिभाषा यह भी हो सकती है "किसी सक्षम पीठासीन पदाधिकारी के अधीन गठित समिति या आयोग द्वारा किसी विशेष मामले की जाँच पड़ताल और छानबीन पर आधारित विवरण या मंतव्य आदि के अभिलेख को प्रतिवेदन कहते हैं।

प्रतिवेदन एक लिखित ऐसा विवरण है जिसमें तथ्यात्मक बातें सही-सीधी एवं सपाट स्थिति में सामने आती है। यह किसी घटना संस्था, विभाग इत्यादि को सपाट जानकारी उपलब्ध कराता है। इसके द्वारा किसी कार्य की प्रगति, जांच

स्तर, कार्य और उनके परिणामों को स्पष्ट रूपों में व्यक्त किया जाता है। इतना ही नहीं, अब तो किसी स्कूल या कॉलेज के वर्षभर की गतिविधियों आयोजित वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुरस्कार विवरण समारोह आदि को भी प्राचार्य/प्राचार्या के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

प्रतिवेदन की खूबियाँ विशेषताएँ / गुण निम्नवत् होना सुनिश्चित किया जाय :-

1. प्रतिवेदन तथ्यात्मक हो।
2. तयों का प्रमाणिक होना जरूरी है।
3. कोई भी प्रतिवेदन एक कानूनी या वैधानिक दस्तावेजका रूप ले सकता है इसके आधार पर अनेक सर्वव्यापी जनहित के फैसले लिये जा सकते हैं। इसलिए प्रतिवेदन का थोड़ा-सा भी भाग तथ्यहीन, भ्रामक, अप्रमाणिक या अनुत्तरदायित्वपूर्ण हो अन्यथा अहित का बहुत बड़ा कारण बन सकता है।
4. निर्णयात्मकता की भी क्षमता हो।
5. विसंगति हीनता और विरोधाभासी हीनता का गुण हो।
6. विषयनिष्ठता का गुण हो।
7. प्रतिवेदन संक्षिप्त सुगठित एवं उपयोगी हो
8. प्रतिवेदन में शीर्षक का महत्व होता है इसलिए इस पर विशेष ध्यान रखना है।
9. प्रतिवेदन में अनुच्छेद का विशेष महत्व होता है इसलिए इसपर बाँटते समय तथ्य पर विशेष ध्यान देने को जरूरत है।



**Teachers
Express**

2

साहित्य

काव्य पुस्तक - काव्य कुंज

विद्यापति



- ★ विद्यापति को **मैथिली कोकिला** भी कहा जाता है।
- ★ विद्यापति का जन्म **मिथिलांचल** के प्रतिष्ठित **ब्राह्मण कुल** में हुआ था। इनका जन्म स्थान **मधुबनी जिला बिसफी** नमक ग्राम है।
- ★ विद्यापति की पूर्वज **संस्कृत के विद्वान** थे। इनके पिता का नाम **पंडित गणपति ठाकुर** था।
- ★ वे दरभंगा नरेश के **राजघराने के पंडित** थे। दरभंगा - नरेश शिव सिंह विद्यापति के बाल सखा थे।
- ★ राजा शिव सिंह के अभिन्न मित्र होने के कारण विद्यापति को अत्यधिक सम्मान प्राप्त हुआ तथा उन्हें '**अभिनव जयदेव**' की उपाधि प्रदान की गयी थी।
- ★ इन्होंने अपने गीतों से **राजा शिव सिंह और लखिमा देवी** की स्तुति कर उन्हें अमरता प्रदान किया।
- ★ विभिन्न विद्वानों ने विद्यापति के निधन वर्ष के रूप में **1440 ई., 1447 ई., 1460 ई. और 1466 ई.** को स्वीकार किया गया है।
- ★ विद्यापति की काव्य-प्रतिभा प्रमुख रूप से तीन भाषाओं - **संस्कृत, अवहट्ट (पुरानी हिंदी) तथा मैथिलि** में प्रस्फुटित।
- ★ इनकी काव्यकला की चरम उपलब्धि के रूप में इनकी '**पदावली**' है।
- ★ मैथिली भाषा में श्रृंगार-परक गीतों की रचना परंपरा विद्यापति ने ही की।
- ★ विद्यापति के काव्य में **भक्ति, श्रृंगार** जैसी दो प्रकृतियाँ स्पष्ट तौर पर दिखती हैं। विद्यापति की प्रसिद्ध कृष्ण भक्त कवि की रही है।
- ★ विद्यापति को हिंदी के श्रेष्ठ गीतकार और रसिक कवी के रूप में जाना जाता है।

- ★ विद्यापति की प्रमुख काव्य कृतियाँ है -
 - गोरक्ष विजय
 - भू-परिक्रमा
 - पुरुष-परीक्षा
 - शैव सर्वस्वसार आदि
- ★ विद्यापति के काव्य में मुख्यतः दो प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं
1. भक्ति और 2. श्रृंगार

- * **जन्म** : 1352
- * **मृत्यु** : 1448
- * **स्थान** : उत्तरी बिहार के मधुबनी जिला के बिस्फी ग्राम में हुआ था
- * **पिता** : गणपति ठाकुर (शैव ब्राह्मण)

⇒ विद्यापति ने सर्वप्रथम कीर्ति सिंह के दरबार में काम किया।

इस समय इन्होंने कीर्तिलता की रचना की। इस कृति में दिल्ली के दरबारियों की प्रशंसा करते हुए वर्णन किया गया। "यह एक एक ऐसी घटना का संदर्भ देता है जिसमें ओइनवार राजा, राजा गणेश्वर को तुर्की सेनापति मलिक अरसलान ने 1371 ई. में मार दिया

- * **पदाबली** : कृष्ण-राधा विषयक श्रृंगार पद है। राधा जी का चित्रण मुग्धा एवं कृष्ण जी भगवान का कामी स्वरूप "
- * **कीर्तिपताका** : अवहट्ट में लिखी गयी।
- * **भाषा** : मैथली, संस्कृत, अवहट्ट ।। प्राकृत के तुरंत बाद का काल।
- * **पदाबली** - मैथली
- * **अवहटक** - कीर्तिलता
कीर्तिपताका

► कबीर दास



- ★ हिंदी साहित्य जगत में पहला जनकवि कहलाने का हकदार कबीर ही हैं। इस महान जन-कवि का जन्म-काल विवादास्पद है किन्तु अनुमानतः **इसका जन्म 1398 ई. में काशी** में हुआ था **किंबदन्ती** के अनुसार इनकी माता एक विधवा **ब्रह्मणी** थी।
- ★ लोक - लाज के भय से अपने नवजात शिशु को काशी के **लहरताला तालाब** के निकट रख दिया था।
- ★ कबीर का विवाह लोई नमक लड़की से हुई जिससे इसकी **दो संताने** पैदा हुई - पुत्र कमल और पुत्री कमाली।
- ★ यह भी ध्यातव्य है की कबीर मृत्यु के कशी छोड़कर मगहर चले गए थे।
- ★ कबीर ने संस्कृति जैसी साहित्यिक और कथित देव-भाषा के स्थान पर लोक-प्रचलित जन-भाषा को अधिक महत्व दिया और कहानी - **"संसकिरत है कूप जल, भाखा बेहता नीर।"**
- ★ कबीर-बाणियां बीजक के नाम से संकलित है यह तीन भागों में विभक्त है - **"साखी, सबदी और रैमिनी"**।
- ★ साखी का शाब्दिक अर्थ है **'साक्षी'** जिसके अंतर्गत सैद्धांतिक उपदेश आते हैं। इस प्रकार साखी का अर्थ प्रकारांतर से उपदेश है।
- ★ कबीर बचपन से ही सात्विक प्रवृत्ति के थे।
- ★ वे **घुमक्कड़ी** प्रवृत्ति के थे, इसी वजह से वे साधु - संतो, फकीरों और आमजन के निकर संपर्क में आ सकें।
- ★ **'मसि कागद छुयो नहीं कलम गह्यो नहीं हाथ'** कहने वाले कबीर ने जीवन को अत्यंत निकट से देखा और गहराई से जाना। यही कारन है की उन्होंने अनुभवजन्य ज्ञान को ज्यादा महत्व दिया - **"तू कहता कागद की लेखी, मैं कहत आँखिन की देखी।"**
- ★ कबीर के तत्कालीन समाज में रूढ़िवादि, शोषण, उत्पीड़न। का बोलबाला था। वे एक **सजग, द्रष्टा, विचारक और समाज-सुधारक** के रूप में आजीवन सक्रिय रहे।

- ✱ उनमें धार्मिकता और क्रान्तिकारिता, धैर्य, ज्ञान और प्रेम का अद्भूत संयोग दिखता है। इन्होंने जीवन-पर्यन्त अंध | विश्वासों, रूढ़ियों, आडंबरों पर तीखा प्रहार किया और । सगुन साकार के बरक्स निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल दिया।
- ✱ वे जातिगत श्रेष्ठता को 'तू बाम्इन मैं कासी का जुलाहा' और 'जौ तू बाम्हन बाम्हनी जाया, आन बाट ते काहेन आया' करहर सवालों के घेरे में लेते हैं।
- ✱ इनकी कृतियाँ 'बीजक, रमैनी और साखी' हैं। वास्तव में कबीर एक सन्त थे, वे कवि नहीं भी थे तो उनके मुख जो वाणियाँ निःसृत हुई हैं, वे ही उनकी कविता हैं।

- * **जन्म** = 1398 ई० (संवत् 1455), वाराणसीच उ० प्र० भारत
- * **भाषा** = सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी, इनको भाषा का डिटेक्टर बोला जाता है
- * मस्तमौला हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा ॥
- * निर्गुण काव्यधारा, भक्तिकालीन युग जानाश्रयी कवि थे ।
- * **कबीर शब्दावली** : आत्मा को परमात्मा से मेल ॥
- * **कबीर ग्रन्थावली** : दोहे सम्मिलित हैं ॥ एवं पद
- * **कबीर दोहावली** : दोहे सम्मिलित
- * **कबीर सागर** : यह सूक्ष्म वेद है, जिसमें परमात्मा की विस्तृत जानकारी है ।
- * **पालन पोषण** : नीलू एवं नीमा नामक जुलाहे दंपति
- * **विवाह** : लोई नामक स्त्री से हुआ।
- * **गुरु** : रामानंद जी

⇒ कबीर बीचक

- * **साखी** → राजस्थानी पंजाबी मिली खड़ी बोली
- * **शब्द** → ब्रजभाषा एवं पूर्वी बोली
- * **रमैनी** → ब्रजभाषा एवं पूर्वी बोली

⇒ **मृत्यु** : 1518 मगहर

► सूरदास



- ✧ सूरदास का जन्म दिल्ली में **1478 ई.** में हुआ था। इनका निधन **सन् 1583 ई.** में हुआ।
- ✧ सूरदास कृष्ण भक्ति **काव्य धारा** के प्रमुख कवि थे। ये **वल्लभ सम्प्रदाय** के कृष्ण भक्त थे।
- ✧ किंबदन्ती के अनुसार ये जन्मान्ध थे। 1565 ई. में गोस्वामी बिठ्ठल नाथ ने अष्टछाप की स्थापना की थी।
- ✧ सूरदास के थे बल्लभाचार्य। 18वर्ष की आयु में ही सूरदास सांसारिकता से विरक्त होने लगे थे। मथुरा और आगरा से सटे गऊघाट पर रहने लगे थे।
- ✧ बल्लभ सम्प्रदाय में 'अष्टयाम' की सेवा है जिसमें मंगलाचरण, श्रृंगार, ग्वाल, राजयोग, उत्थापन, भोग, संध्याआरती और शयन के आठ चरण हैं।
- ✧ सूरदास वात्सल्य और श्रृंगार के कवि हैं। शुक्ल जी के अनुसार- '**सूरदास ने वात्सल्य और श्रृंगार का कोना-कोना छान लिया है।**'
- ✧ सूरदास **ब्रजभाषा साहित्य शिरोमणी** कवि हैं। इनके साहित्य में बाल मनोविज्ञान की सूक्ष्म अनुभूति है। भक्त शिरोमणी सूरदास ब्रह्मा के सगुण रूप के उपासक हैं। 'सूरसागर' का भ्रमर गीत अत्यन्त मार्मिक है। इसमें गोपियों की वचन-वक्रता अन्यत्र दुर्लभ है। **सगुणोपासना** के ऐसी मार्मिक अभिव्यक्ति विरले ही मिलती है। सूरदास ने निर्गुणोपासना से बिना टकराव किए सगुणोपासना का विशाल भवन खड़ा किया है।
- ✧ राधा-कृष्ण की प्रेमलीला के गीत की परम्परा पूर्व से चली आ रही थी। जयदेव और विद्यापति के चरित-गान की उस परम्परा की मजबूत कड़ी सूरदास हैं।
- ✧ सूरदास की मुख्य रचना '**सूरसागर**' है जिसमें लगभग छः हजार पद मिलते हैं, ऐसे तो सूरदास ने **कुल एक लाख पदों की रचना की थी।** सूरदास ने ब्रजभाषा में अपनी रचना की किन्तु अवधी में भी उनकी कुछ रचना है। दोनों भाषाओं में इनकी रचनाने इन्हें काफी लोकप्रियता प्रदान की।
- ✧ ब्रजभूमि में सूरदास आजीवन आपने **इष्टदेव कृष्ण** के पद गाते रहे। सूरदास की कृष्ण भक्ति तीन प्रकार की है- दास्य, सखा और स्वामी रूप की। प्रारंभ में दास्य भक्ति रही थी। 'भागवत'

का दसम स्कन्ध कृष्ण-भक्ता कवियों को बहुत प्रिय लगा। सूरदास को पुष्टि मार्ग का जहाज कहा जाता है।

* नाम	→ सूरदास
* जन्म तिथि	→ सन् 1478 ई० (सम्वत् 1535 वि०)
* जन्म स्थान	→ रुनकता (आगरा)
* मृत्यु	→ 1583 ई (सम्वत् 1640 वि)
* आयु (मृत्यु के समय)	→ अनुमानित 101 वर्ष
* धर्म	→ हिन्दू
* राष्ट्रियता	→ भारतीय
* पेशा	→ कवि और गायक
* गुरु	→ स्वामी बल्लभाचार्य
* मृत्यु का स्थान	→ ब्रज, उत्तर प्रदेश (भारत)
* भाषा	→ ब्रज
* शैली	→ गीति काव्य की भावपूर्ण और संगीतमयी
* रस	→ वात्सल्य श्रृंगार
* अलंकार	→ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा,
* रचनाएँ	→ साहित्यलहरी, सूरसारावली, सूरसागर
* पत्नी का नाम	→ अविवाहित
* पिता का नाम	→ रामदास सारस्वत



Teachers



JSSC CGL 2024



मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)



हिन्दी-ई-बुक



सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

**खुद ASO अधिकारी एवं
विवेक सर के मार्गदर्शन
में तैयार**



विवेक सर

► तुलसीदास



- ✧ तुलसीदास सगुण भक्ति के अन्तर्गत **रामभक्ति शाखा** के शिखर कवि हैं।
- ✧ इनका जन्म **वैष्णव भक्त ब्राह्मण परिवार** में **उत्तर प्रदेश के राजापुर (बाँदा जिले)** में सरयू पारीन ब्राह्मण कुल में हुआ था।
- ✧ तुलसीदास का जन्मकाल था **1532-1623 ई.** तक।
- ✧ इनके पिता का नाम था **आत्माराम दूबे** तथा माता का नाम था **हुलसी**। इनके गुरु थे **नरहरिदास**।
- ✧ इनकी पत्नी का नाम था रत्नावली।
- ✧ '**अभुक्तमूल**' नक्षत्र में जन्म ग्रहण होने के कारण इनके माता-पिता ने सद्यः जन्मे बालक तुलसी का परित्याग कर दिया था। माता हुलसी के वात्सल्य से बंचित बालक तुलसी का पालन-पोषण निःसन्तान बालकों की ही भाँति दुर्भाग्य और दैन्यपूर्ण परिस्थितियों में ही हुआ। इन्हें बालपन में 'रामबोला' नाम से पुकारा जाता था। अपने इस नाम के विषय में इन्होंने स्वयं 'विनयपत्रिका' में लिखा है-
"हैं रामबोला नाम गुलाम रामसाहिकौ।"
- ✧ **मुनिया नामक दासी** के द्वारा इनका लालन-पालन हुआ।
- ✧ तुलसीदास भारतीय भाषा और साहित्य की सम्पूर्ण शक्तियों के प्रतिनिधि महाकवि के रूप में सर्वमान्य हैं। ये ब्रजभाषा एवं अवधी की अनेक काव्य-शैलियों के सफल प्रयोक्ता, अद्भूत लोकदृष्टि-सम्पन्न, समन्वयवादी और भारतीय संस्कृति के अद्वितीय प्रवक्ता थे। इनकी कीर्ति का आधार स्तंभ उनका महाकाव्य '**रामचरितमानस**' है जिसकी भाषा **अवधी** है। इनके विषय में प्रसिद्ध है कि भाषा इनकी अनुचरी थी, ये प्रसंगानुकूल इंगित द्वारा भाषा को अनुगमन के लिए विवश करने वाले संत कवि हैं।
- ✧ संकलित काव्यांश '**रामचरितमानस**' से उद्धृत हैं जिसमें मुख्यतः राम बनगमन के अवसर पर श्री रामचन्द्र का माता जानकी को राजभवन में बने रहने का अनुरोध है तथा माता जानकी का अपने प्राण-सर्वस्व पति श्री राम की अनुगामिनी होने का विनम्र आग्रह प्रकट हुआ है। बार-

बार श्रीराम वन की कठिनाई भरे जीवन का हवाला देते हुए रोकना चाहते हैं, किन्तु माता जानकी की पतिरायणता और पतिव्रत धर्म-निर्वाह की निष्ठा के समक्ष सब व्यर्थ हो जाता है।

- ❖ **इनकी प्रमुख कृतियाँ** रामचरित मानस, कवितावली, दोहावली, विनय पत्रिका, राम लला नहछू, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्न, वैराग्य संदीपनी, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, श्री कृष्ण गीतावली, हनुमान बाहुक आदि।

1. **जन्म** = रामबोला 1511 (सम्बत (1568) सोरों शूकरक्षेत्र, जनपद- कासगंज उ० प्र० भारत ।।
2. **मृत्यु** = 1623 ई० वाराणसी (संवत 1680)
3. **गुरू** = बाबा नरहरिदास
4. **खिताब** = गोस्वामी, अभिनव वाल्मीकि आदि ।।

"भक्तिकालीन सगुण काव्यधारा रामाश्रयी कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं" ।।

"चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर । तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुबीर"

5. **रचनाएँ** =

- (i) गीतावली (1571)
- (ii) कृष्ण- गीतावली
- (iii) राम चरितमानस (1571)
- (iv) पावर्ती मंगल (1582)
- (v) विनय पत्रिका (1582)
- (vi) जानकी मंगल (1582)
- (vii) रामलला नहछू (1582)
- (viii) दोहावली (1583)
- (ix) वैराग्य संदीपनी (1612)
- (ix) रामाना प्रश्न (1612)
- (xi) वरखै रामायण (1612)
- (xii) हनुमान चलीसा
- (xiii) हनुमान बाहुक

6. **भाव** = दास्य भाव

7. **दर्शन** = स्मार्त वैष्णव

► बिहारी लाल



- ★ बिहारी लाल रीतिकाल के रीतिसिद्ध अथवा रीतिबद्ध कवि | माने जाते हैं। वे कवि जिन्होंने रीतिग्रंथों की रचना न करके | काव्य सिद्धांतों या लक्षणों के अनुसार काव्य-रचना की उन्हें **रीतिसिद्ध कवि** कहा जाता है। बिहारी लाल का जन्म **गवालियर में सन् 1595 ई.** में हुआ था। इनका जीवन-काल **1595 ई. से 1663 ई.** के बीच का है।
- ★ बिहारी लाल **जहाँगीर** और **शाहजहाँ** के कृपापात्र रहे। ऐसा माना जाता है कि श्रृंगारी कवियों में जितनी लोकप्रियता बिहारी को मिली है, उतनी और किसी को नहीं मिली थी। भारतीय स्वतंत्रता के पहले तक बिहारी सतसई की पचासों | टिकाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं।
- ★ '**बिहारी सतसई**' ही बिहारी लाल की कीर्ति का एकमात्र आधार ग्रंथ है।
- ★ बिहारी के श्रृंगारिक और नीति परक दोहे बहुत लोकप्रिय हुए हैं। अभिव्यक्ति-कौशल की जो ऊँचाई बिहारी के साहित्य में उपलब्ध है, वह अन्यत्र दुर्लभ है-
**"सतसैया के दोहरे, अरू नावक के तीर ।
 देखन में छोटे लगे, घाव करे गम्भीर ॥"**
- ★ बिहारी के काव्य में तीन धाराएँ - **श्रृंगार, भक्ति और नीति**- दिखती हैं। इन तीनों में श्रृंगार की ही प्रमुखता है। इन्होंने राधा - कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति निवेदित की है।
- ★ **सतसई** उनके **713 दोहों** का अनुपम संग्रह है। दोहा जैसे **लघु छंद** में भाषा, भाव और शिल्प का ऐसा योग अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता।
- ★ बिहारी के दोहों में जो कसावट, सौन्दर्य और लालित्य है, वहाँ तक पहुँचना किसी कवि के लिए सम्भव नहीं है।
- ★ पाठकों को चमत्कृत कर देते हैं। वे रसवादी, चमत्कारवादी, वक्रोक्तिवादी और सबसे अधिक श्रृंगारवादी कवि है।
- ★ बिहारी सतसई के पाँच प्रमुख टीके हैं-
कृष्ण कवि की टीका (कवित्त छन्द में) हरि प्रकाश टीका



लल्लू जी लालकी लाल चन्द्रिका

सरदार कवि की टीका और

सुरति मिश्र की टीका

बिहारीलाल चौबे (बिहारी) 1603 ग्वालियर में थे। वे जाति के माथुर चौबे (चतुर्वेदी) वर्ष के थे। उनके पिता का नाम केशवराय जब बिहारी जी 8 वर्ष के थे। तब इनके पिता इन्हें ओरछा ले आए उनका बचपन बुंदेलखंड में बीता इनके गुरु नर हरिदास और युवावस्था थे। और ससुराल में व्यतीत हुआ।

"जन्म ग्वालियर जातिये खंड बुंदेले लाल।

तरुनाई आई सुघर मथुरा बास ससुराल।

सतसई 719 दोहों का संग संकलन।

⇒ बिहारी की एक मात्र रचना सतसई है। यह मुक्तक काव्य हैं।

⇒ सतसई में बृजभाषा का प्रयोग किया गया है।

⇒ सतसई को तीन मुख्य भागों में विभक्त कर सकते हैं।

(क) नीति विषयक

(ख) भक्ति और अध्यात्म शृंगारपरक

(ग) भावपरक

नोट: जगन्नाथ दास रत्नाकर रचित 'बिहारी रत्नाकर' सतसर्व के ऊपर टीका है।

बिहारी ने संयोग एवं वियोग दोनों पर ही लिखा

"संयोग रस"

बतरस लालच लाल की मुरली घरी लुकाय।

सोह करे, भौहन हमें देन कहे नहि जाय ॥

मृत्यु: 1663 वाराणसी

युग एवं काल = रीतिकालीन, सहबद्ध रीतिसिद्ध कवि थे।





► रसखान



- ★ रसखान का जन्म और निधन क्रमशः **1558 और 1628 ई.** है। उपर्युक्त दोनों तिथियाँ अनुमानित हैं। इनका जन्म दिल्ली के पिहानी में हुआ था इनका जन्म पठान कुल में हुआ था। उन्हें अपने जीवन काल में कई थपेड़े सहने पड़े। चूँकि ये प्रतिभाशाली थे, इसलिए जीवन के थपेड़े इनसे हार गए। इन्होंने कालान्तर में कृष्ण भक्ति को अपनाया।
- ★ उन्होंने कालान्तर में **गोस्वामी बिट्टल नाथ** से दीक्षा ग्रहण कर ली।
- ★ दरअसल घटना यह थी कि दिल्ली नगर में गदर हो गया। उस गदर ने इन्हें भीतर तक हिला दिया। श्मशान भूमि पड़ी दिल्ली की दुर्दशा और पीड़ितों के आर्तनाद से वे अत्यन्त दुखी हो गए। इन्होंने लिखा-

“देखि गदर हित साहिवी, दिल्ली नगर मसान,

छिनहि बादसा बंस की ठसक छोरि रसखान।

प्रेम निकेतन श्रीवनहि आइ गोवर्धन धाम, लयो

सरन चित चाहिकै जुगल सरूप ललाम।”

- ★ ब्रजभाषा उनके लिए अपनी सी जान पड़ती है। 'रसखान शक्त, प्रेमवाटिका' और 'सुजान रसखान' इनकी कृतियाँ हैं।



- * **जन्म** : 1548 ई० कृष्ण भक्त मुस्लिम कवि "जन्म मतभेद था ।
- * **गुरु** : विठ्ठलनाथ

- * **नोट** : रीतिकालीन, रीतिमुक्त कवियों मे
- * **वास्तविक नाम** : सैयद इब्राहिम
- * रसरखान की समाधि जिला मथुरा [महाबत में]
- * **नोट** : कृष्ण भक्त रसरखान मुस्लिम थे रस भक्ति एवं शृंगार रस दोनों प्रमुखता से मिलते हैं ।
- * **मृत्यु** = 1628 वृन्दावन
- * **प्रसिद्ध रचनाएँ** : सुजान रसरखान , प्रेम वाटिका

* **सुज्ञान रसरखात**

इसको रचना कवित्त एवं सवैया छन्दों हुई है
भक्ति एवं प्रेम-विषयक मुक्तक काव्य है। इसमे 139 भावपूर्ण छन्द है।

* **प्रेमवाटिका**

यह एक दोहा छन्द है दोहों से विरचित राधा-कृष्ण को प्रेम वाटिका के "मालिन माली मानकर
अनूठे प्रेम तत्व का निरूपण किया है ।

**Teachers
Express**

► भूषण



- ★ पद्माकार भूषण का जन्म तिकवापुर-कानपुर में 1613 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित रत्नाकर त्रिपाठी था। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। भूषण चार भाई थे चिन्तामणि और मतिराम इनके दो भाइयों के नाम थे।
- ★ भूषण रीतिकाल के एक मात्र कवि हैं जिन्होंने शृंगार रस से हटकर वीरता और देशप्रेम के वर्णन से कविता को गौरव प्रदान किया। भूषण की मृत्यु 1715 ई. में हुई।
- ★ चित्रकूट के सोलंकी राजा रूद्र ने 'कविभूषण' की उपाधि प्रदान की थी। तभी से ये भूषण के नाम से ही प्रसिद्ध हो गये। ये कई राजाओं के दरबार में रहे। अन्त में इनके मन के अनुकूल आश्रयदाता छत्रपति महाराज शिवाजी मिले और शिवाजी ही इने वीर काव्य के नायक रहे। पन्ना के महाराज छत्रसाल के यहाँ भी इनका बड़ा मान हुआ। ऐसा प्रसिद्ध है कि इन्हें एक-एक छंद पर शिवाजी जी से लाखों रूपये मिले।
- ★ भूषण की कविताओं में तत्सामयिक कितने ही ऐतिहासिक पुरुषों की प्रशंसा का उल्लेख पाया जाता है। इनमें महावा के नरेश चंपतराय के पुत्र छत्रसाल, औरंगजेब के ज्येष्ठ दाराशाह, स्वयं औरंगजेब यशवंतराव और मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र रामसिंह आदि शामिल हैं किन्तु प्रमुखतः इन्होंने शिवाजी और राजा छत्रसाल को खूब सराहा है।
- ★ भूषण ने जिन दो नायकों की कृति को अपने वीर काव्य का विषय बनाया वे अन्यायदमन में तत्पर हिन्दू धर्म के संरक्षक, दो इतिहास प्रसिद्ध वीर थे।
- ★ रीतिकाल के कवि होने के कारण भूषण ने अपना प्रधान ग्रंथ 'शिवराजभूषण' अलंकार ग्रंथ के रूप में बनाया। पर रीतिग्रंथ की दृष्टि से अलंकार-निरूपण के विचार से यह उत्तम ग्रंथ नहीं है। लक्षणों को भाषा भी स्पष्ट नहीं है और उदाहरण भी कई स्थलों पर ठीक नहीं है।
- ★ भूषण की कृतियाँ हैं- 'शिवराज भूषण, शिवा बाबनी, छत्रशाल-दशक, भूषण- हजारा, भूषण उल्लास और दूषण-उल्लास।'



- * **जन्म** : 1613 ईस्वी में
- * **स्थान** : टिकवापुर 30 प्र० कानपुर जिले घाटमपुर तहसील
- * **मृत्यु** : 1715
- * **भाई** : मतिराम एवं चिंतामणि।।
- * **कवि बनने का कारण** : भाभी के ताने पर घर छोड़ दिया
- * **दरबारी कवि** : राजा शिवाजी एवं छत्रसाल
- * **रचनाएँ** : विद्वानों ने इनके छह अन्य माने हैं।
- * **शिवराज भूषण** = 385 पद्यों में विशालकाय ग्रन्थ हैं।
- * **शिवा बावनी** = छत्रपति शिवाजी महाराज के गुणों का वर्णन
- * **छत्रसाल दशक** = छत्रसाल बुन्देला का पराक्रम, दानशीलता
- * भूषण उल्लास
- * दूषण उल्लास
- * भूषण हजारा



**Teachers
Express**

काव्य पुस्तक - काव्य वीथि

► भारतेन्दु हरिश्चंद्र



- ★ आधुनिक हिन्दी के जनक, भारतीय नवोत्थान के प्रतीक । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म एक प्रसिद्ध सेठ परिवार में हुआ । था। वह सेठ परिवार था अमीचंद का। अंग्रेजी राज्य की स्थापना के समय सेठ अमीचन्द अपने पूर्ण उत्कर्ष पर थे। अमीचन्द सिराजुदौला के दरबार के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उस दरबार में इनका काफी सम्मान था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का । जन्म वाराणसी में 1850 ई. में हुआ।
- ★ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह कहे । जाते हैं वे हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे।
- ★ भारतेन्दु जी के पिता का नाम गोपालचन्द था। वे ब्रजभाषा में 'गिरिधरदास' के नाम से कविता लिखते थे। भारतेन्दु जी की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही प्रारंभ हुई थी। ये प्रतिभा के धनी थे।
- ★ बहुत ही कम उम्र में ये संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, मारवाड़ी, बांग्ला, उर्दू तथा पंजाबी भाषाओं के जानकार हो गए थे।
- ★ बाल्यकाल में ही मात्र 13 वर्ष की उम्र में इनका विवाह मन्नो । देवी से हो गया था भारतेन्दु यात्रा करने के शौकीन थे। इनकी । यात्रा के क्रम में ये जहाँ भी गए, वहाँ के साहित्य और वहाँ । की सांस्कृतिक निधियों को समेट लेने का कार्य इन्होंने किया।
- ★ हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं का विकास भारतेन्दु के समय में हुआ। पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु जी ने महत्वपूर्ण । कार्य किया। पत्रकारिता में 'कवि सुधा (1868 ई.) । हरिश्चन्द्र मैगजीन' (1873 ई.) पत्रों का प्रकाशन पत्रकार । के रूप में भारतेन्दु की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। ।
- ★ स्त्रियों के लिए विशेष पत्र 'बाल-बोधिनी' का प्रकाशन किया। इसके अलावा ये सामाजिक संगठनों में भी सक्रिय रहे। वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए इन्होंने संगठन बनाया और इस संगठन के माध्यम से 'भगवद्भक्ति तोषिणी' नामक । अलग पत्रिका निकाली गई।

- ✳ भारतेन्दु जी का नाट्य-साहित्य तीन भागों-अनूदित, मौलिक और अपूर्ण में विभक्त हैं। 'विद्यासुन्दर' नामक नाट्य कृति (1865 ई.) संस्कृत से हिन्दी में अनूदित की गयी। "पाखण्ड, विडम्बन (1872 ई.), धनंजय विजय (1873 ई.), कर्पूरमंजरी (1875 ई.), भारत जननी (1877 ई.), विशाखदत्त के संस्कृत नाटक मुद्राराक्षस (1878 ई.) अनूदित नाट्य कृतियों की रचना की।
- ✳ इन नाट्यकृतियों से इतर अंग्रेजी के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद अपूर्ण रह गया, जिसे रामाशंकर ब्यास और राधाकृष्ण दास ने पूरा किया।
- ✳ इनके मौलिक नाटकों में 'वैदिकी हिंसा न भवति (1873 ई.), सत्यहरिश्चन्द्र (1875 ई.), श्री चन्द्रावली (नाटिका) (1876 ई.), भारत दुर्दशा (1880 ई.), नील देवी (1881 ई.) आदि हैं।
- ✳ "प्रेम जोगिनी (1875 ई.) और सती प्रताप (1883 ई.)" नाटक पूर्ण नहीं हो सके थे। इसी क्रम में 1885 ई. में इनका निधन हो गया।
- ✳ 'चन्द्रावली' नाटिका में प्रेम का आदर्श है। 'नीलदेवी' पंजाब के एक हिन्दू राजा पर मुसलमानों की चढ़ाई का ऐतिहासिक वृत्त लेकर लिखा गया है। 'भारत दुर्दशा' में देश दशा बहुत ही मनोरंजक ढंग से सामने लायी गई है, 'विषस्य विषमौधम्' देशी रजवाड़ों की कुचक्रपूर्ण परिस्थिति दिखाने के लिए रचा गया है। 'प्रेम-योगिनी' में भारतेन्दु ने वर्तमान पाखंडमय धार्मिक और सामाजिक जीवन के बीच अपनी परिस्थिति का चित्रण किया है।

* **जन्म :** 9 Sept. 1850

* **स्थान :** वाराणसी, उ०प्र०, भारत

* **मृत्यु :** 6 Jan 1885, वाराणसी, उ० प्र०

* → भारतेन्द्र युग प्रवर्तक। इसको गद्यकाल एवं आधुनिक काल की शुरुआत माना जाता है।

* **नाटक :** श्री चंद्रावली

* भारत दुर्दशा

* नील देवी

* सती प्रताप

* प्रताप ज्यादा

* अंधेर नगरी

* सत्य हरिश्चन्द्र

* प्रेमजोगिनी

* **रचनाएँ =**

* प्रेम मालिका होली

* प्रेम सरोवर गंगा छवि वर्णन

* प्रेमाश्रवर्षेण कृष्ण चरित्र

* प्रेम माधुरी फूलों का गुच्छा

- * प्रेम तरंगाच वर्षा विनोद
- * कालक अधिक
- * प्रेम प्रलाप
- * प्रेम फुलवारी

- * **अलंकारों में रूचि :-** उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक, संदेह, अनुप्रास !
- * **आत्मकथा :-** एक कहानी कुछ आपबीती, कुछ जबानीती
- * **पत्रिका :-** कविवचन सुधा पत्रिका का संपादन 1867 में काशी से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने किया।

► मैथिलीशरण गुप्त



- ✳ मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. में चिरगाँव, झाँसी, उत्तर प्रदेश में हुआ था।
- ✳ मैथिलीशरण गुप्त के पिता का नाम सेठ रामचरण कनकने और माता का नाम काशीबाई थी।
- ✳ ये द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों में एक थे।
- ✳ ये द्विवेदी युग के श्रेष्ठ प्रबंधकार थे।
- ✳ मैथिलीशरण गुप्त ने दो महाकाव्यों और उन्नीस खण्डकाव्यों की रचना की।
- ✳ भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के लम्बे दौर में राष्ट्रीय जागर के स्वर को सबसे अधिक मुखर करने वाले कवि मैथिलीशरण गुप्त थे। उन्हें भारतीय संस्कृति का पक्षधर और राष्ट्रीय चेतना का उद्बोधक राष्ट्रकवि कहा जाता है।

- ★ गाँधी युग के महाकवि गुप्त ने लगातार अनन्य राष्ट्र प्रेम के कारण ही यह गरिमा प्राप्त की। वे अपनी राष्ट्रीय चेतना और वैष्णव भक्ति के कारण निरन्तर हिन्दी कविता और खड़ीबोली के विकास में लगे रहे।
- ★ अपनी उपलब्धियों के कारण वे लगातार सम्मानित और पुरस्कृत होते रहे।
- ★ 'साकेत' के लिए 1935 ई. में उन्हें हिन्दुस्तानी अकादमी का पुरस्कार मिला और 1936 ई. में 'मंगला प्रसाद' पुरस्कार मिला।
- ★ राष्ट्रपति ने उनका मनोनयन 1952 ई. में पहले संसद सदस्य के रूप में किया।
- ★ सन् 1909 ई. में इनका एक छोटा-सा प्रबंध काव्य, (रंग में भंग) आया दो-तीन वर्षों बाद 'भारत-भारती' (1912) छपी।
- ★ सन् 1954 ई. में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।
- ★ राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत यह रचना हजारों युवकों की प्रेरणा बनी। प्रबंधकाव्य-परम्परा को आगे बढ़ानेवाले गुप्तजी की दूसरी रचनाएँ 'साकेत' और 'यशोधरा' मील का पत्थर साबित हुई।
- ★ 'साकेत' के विषय में कहा जाता है कि गुप्त जी को इसकी प्रेरणा भुजंग भूषण भट्टाचार्य के लेख (कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता) और रविन्द्रनाथ टैगोर के लेख (काव्य की उपेक्षिताएँ) से मिली। ये दोनों लेख 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुए थे। गुप्तजी मृत्यु पर्यन्त साहित्य-समृद्धि हेतु अनवरत लगे रहे।
- ★ इनकी कृतियाँ हैं- रंग में भंग, जयद्रथ बध, शकुन्तला, किसान, पंचवटी, शक्ति, गुरूकुल, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, साकेत, जयभारत, काबा और कर्बला, अजित, विष्णु प्रिया रचनावली, प्रदक्षिण, भारत-भारती, कुणालगीत, वैतालिक, स्वदेश संगीत, विश्व वेदना, मंगल घट आदि 40 काव्य कृतियाँ, दो नाटक, दो संस्मरण तथा संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी से कई कृतियों के अनुवाद।

नीचे बिन्दु बार इनकी काव्यगत विशेषताएँ अंकित हैं-

1. राष्ट्रीयता और गाँधीवाद की प्रधानता।
2. गौरवभय अतीत के इतिहास और भातीय संस्कृति की महत्ता
3. नागरीभाग को विशेष महत्व
4. प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य का लेखन
5. पति वियुक्ता नारी का वर्णन
6. अलंकारों के साथ मुहावरों का प्रयोग
7. जनभाषा को साहित्य की भाषा बनाया

8. किसान-जीवन का विशद् वर्णन प्रस्तुत करना
9. सामंतवादी प्रवृत्तियों को उखाड़ फेंकने के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन।
10. इतिवृत्तात्मकता
11. आदर्शवाद एवं नैतिकता

- * **जन्म** - 3 Aug 1886 चिरगाँव [उ० प्र०]
- * **मृत्यु** - 12 Dec 1964
- * **सम्मान** : हिन्दुस्तान अकादमी 1935 (साकेत)
मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरुष्कार 1937
साहित्यवाचस्पति 1946
पद्मभूषण 1954
- * **पिता** : रामचरण सेठ कनकने
- * **माता** : काशी बाई
- * **महाकाव्य** : साकेत 1931, यशोधरा : 1932
- * **खण्डकाव्य** : जयद्रथ वध (1910), भारत-भारती (1912), पंचवटी 1925)
द्वापर (1936), किसान (1917)
- * **नाटक** = रंग में भंग 1909
राजा - प्रजा
हिडिम्बा
- * **नोट** - भारत - भारती रचना के लिए महात्मा गाँधी जी ने राष्ट्रकवि की संज्ञा दी।।
काव्य भाषा शैली खड़ी बोली

► सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'



- ✧ सूर्यकान्त त्रिपाठी का जन्म सन् 1896 ई० में बंगाल के महिषादल राज्य के अन्तर्गत मिदनापुर में हुआ था। ये हिन्दी साहित्य में छायावाद के सबसे सशक्त कवि माने जाते हैं।
- ✧ इनका जन्म बसन्त पंचमी के दिन हुआ था। ये सरस्वती - पुत्र हैं। इनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी था। ये ब्राह्मण जाति के थे। निराला की प्रारंभिक शिक्षा बंगला भाषा के माध्यम से हुई थी।
- ✧ कालान्तर में उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू का अभ्यास करके अपने ज्ञान को समृद्ध किया। निराला का सम्पूर्ण जीवन अभावों, दुखों और संघर्षों में बीता। तीन वर्ष की उम्र में इनकी माता का निधन हो गया। 15 वर्ष की उम्र में इनका विवाह मनोरमा देवी से हुआ। विवाह के सात वर्ष के उपरान्त एक पुत्र 'रामकृष्ण' तथा एक पुत्री 'सरोज' को जन्म देने के बाद इनकी पत्नी भी परलोक सिधार गई।
- ✧ 'निराला' का मूल गाँव गढ़ाकोला था जो उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में पड़ता है। 'निराला' आधुनिक कविता के युग-प्रवर्तक ओजस्वी कवि माने जाते हैं। वे मुक्तछन्द छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनकी वाणी एवं लेखनी के वर्चस्व से हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ प्रस्फुटित हुई हैं जो इनके 'महाप्राण' और 'निराला' विशेषण एवं उपनाम को सार्थक सिद्ध करते हैं।
- ✧ निरालाजी ने 1920 ई. के आस-पास से लेखन कार्य आरंभ किया।
- ✧ उनकी पहली रचना 'जन्मभूमि' पर लिखा गया एक गीत था। लंबे समय तक निराला जी की प्रथम रचना के रूप में प्रसिद्ध (जूही की कली) शीर्षक कविता, इसका रचनाकाल निराला ने स्वयं 1916 ई. बतलाया था। यह कविता छायावाद की श्रेष्ठतम कविताओं में से एक है।
- ✧ इस कविता की रचना सन् 1916 ई. में हुई थी।
- ✧ 'निराला' जी की प्रौढ़ रचना-काल 1935-1938 ई० तक कहा जा सकता है। सन् 1923 ई० में 'अनामिका' काव्य की रचना हुई। इसके दो संग्रह प्रकाशित हुए। पहला संग्रह तो 1923 में अस्तित्व में पर दूसरे संग्रह का प्रकाशन 1938 ई. में हो पाया। इस बीच उन्होंने 1936

ई० में 'राम की शक्ति पूजा' की रचना की। यह काव्य आधुनिक हिन्दी जगत की एक अन्यतम रचना है। इसमें 'निराला' जी का भक्ति-भाव तो परिलक्षित होता ही है, उनके जीवन-जमित धैर्य की अभिव्यक्ति भी भगवान राम के धैर्य के माध्यम से हुई है। यह काव्य भी मुक्त छन्द में ही सृजित है।

❖ 'निराला' जी की रचना "परिमल" में संग्रहित कविताएँ-- 'शेफालिका', 'जागो फिर एक बार' और 'महाराजा जय सिंह को शिवाजी का पत्र' जहाँ एक ओर प्रकृति चित्रण को इंगित करती है, वहीं दूसरी ओर देश-भक्ति, मातृभूमि की रक्षा का संदेश देती है।

❖ सन् 1938 ई. में प्रकाशित 'अनामिका' के द्वितीय काव्य-पुस्तक में 'प्रयेसी' 'रेखा', 'सरोज स्मृति', और 'राम की शक्ति पूजा' आदि रचनाएँ संग्रहित हैं। 'सरोज स्मृति' हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीत है। 'कुकुरमुत्ता', गर्म पकौड़ी, प्रेम संगीत, रानी और कानी, खजोहरा, मास्को डायलग्स, स्फटिक शिला' आदि कविताएँ व्यंग्य, प्रेम आदि भावों को अभिव्यक्त करती है।

• प्रमुख रचनाएँ

- काव्यकृति - परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नये पत्ते, बेला, अर्चना, अराधना, सांध्यकाकली।
- कहानी - लिली, सखी, देवी, सुकुल की देवी
- उपन्यास - अलका, अप्सरा, निरूपमा, प्रभावती, चोटी, की पकड़, काले कारनामे
- रेखाचित्र - बिल्लेसुर बकरिहा, चतुरी चमार

* **जन्म :-** फरवरी सन 1896 (बंगाल दबंगाल की महिषादल रियासत जिला मेदनी)

* **मृत्यु :-** 15 oct 1961

* **उपनाम :-** निराला

* **युग :-** छायावादी युग के कवि

* पहली कविता **अनामिका** है।

* **प्रकाशित कृतियाँ**

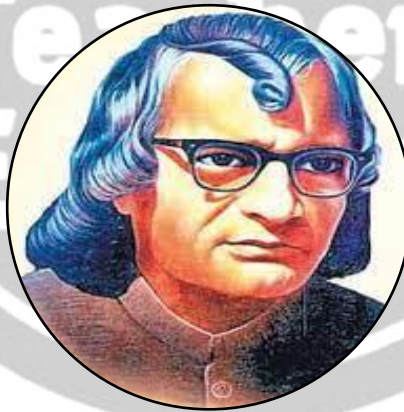
* अनामिका	कुकुरमुत्ता	गीत कुंज
* परिमल	अणिमा	अपरा
* गीतिका	बेला	
* अनामिका द्वितीय	नए पत्ते	
* तुलसीदास	अर्चना	

* **उपन्यास :-**

- * काले कारनामे
- * अप्सरा
- * इन्दुलेखा
- * तकनीकी

- * **निराला की साहित्य साधना** - डा० राम बिलास शर्मा जी।
- * **इनको भारत - भूषण मिला ।**
- * "सरोज स्मृति" एक शोक गीत है।
- * प्रसिद्ध रेखाचित्र 'चतुरी चमार' ।

► **सुमित्रानन्दन पंत**



- * सुमित्रानन्दन पंत का जन्म सन् 1900 ई. में कौसानी, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगादत्त पंत था। इनके बचपन का नाम गोसाई दत्त पन्त था। इनकी माता (सरस्वती देवी) का देहान्त इनके बचपन में ही हो गया था। माता की मृत्यु के बाद इनका • लालन-पालन इनकी दादी ने किया था। इनकी शिक्षा गवर्नमेंट हाई स्कूल, अल्मोड़ा तथा जयनारायण उच्च विद्यालय, बनारस में हुई थी।
- * बनारस के इसी विद्यालय से इन्होंने 1919 ई. में मैट्रिक की परीक्षा पास की। उच्च शिक्षा के लिए इनका नामांकन इलाहाबाद के 'स्योर सेन्ट्रल कॉलेज' में करवाया गया। 1921 ई. में इन्होंने ! स्वयं को महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन से सम्बद्ध कर लिया और आगे की

पढ़ाई छोड़ दी। तत्पश्चात् प्रयाग राज (इलाहाबाद) में रहकर इन्होंने काव्य-सृजन करना शुरू किया।

- ✧ 1938 में प्रगतिशील मासिक पत्रिका 'रूपाभ' सम्पादन किया।
- ✧ 1950-1957 तक आकाशवाणी में परामर्शदाता रहे।
- ✧ उनकी मृत्यु 28 दिसम्बर, 1977 को हुई।
- ✧ इनके काव्य में श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों की सफल अभिव्यक्ति हुई है। श्रृंगार रस के अतिरिक्त इनकी कविताओं में वीर, रौद्र, भयानक, करुण और शान्त रसों की भी उपस्थिति परिलक्षित होती है।

✧ सुमित्रानन्दन पंत की प्रमुख कृतियाँ हैं -

- * "वीणा (1918 पंतजी की प्रथम काव्य), ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, उच्छ्वास, युगांत, युगवाण, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, लोकायतन, कला और बूढ़ा चाँद, चिदम्बरा, खादी के फूल, रश्मिबंध, जैसे काव्य-संकलनों के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध और आलोचना आदि प्रकाशित रचनाएँ।
- * **सम्मान :** पंतजी को 'कला और बूढ़ा चाँद' पर 1961 ई. में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' मिला। 'लोकायतन (विशाल महाकाव्य)' पर 1965 ई. में 'प्रथम नेहरू पुरस्कार' और 'चिदम्बरा' पर 1969 ई. में 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार मिला, हिन्दी साहित्य सेवा के लिए उन्हें 1961 में पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया, और 1968 में ज्ञानपीठ पुरस्कार का सम्मान मिला।

सुमित्रानन्दन पंत हिन्दी साहित्य में छायावादी युग चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इस युग को जयशंकर प्रसाद सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और रामकुमार वर्मा महादेवी वर्मा जैसे कवियों का युग कहा जाता है।

* जीवन परिचय

- * **जन्म :-** 20 मई 1900 ई०, बागेश्वर जिले के कौसानी, उत्तर- पश्चिम प्रांत, ब्रितानी भारत
- * **मृत्यु** → 28 दिसम्बर 1977 (उम्र 77)
- * "इलाहाबाद उत्तर प्रदेश भारत
- * **पेशा** → लेखक, कवि
- * **शिक्षा** → हिन्दी साहित्य
- * **राष्ट्रीयता** → भारतीय
- * **विषय** → संस्कृत
- * **खिताब** → पद्म भूषण (1961)
ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968)

जन्म के 6 घंटे बाद ही उनकी माँ का निधन हो गया। उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। उनका नाम उनका नाम गोसाई दत्त रखा गया वह गंगादन पंत की आठवीं संतान थे



1910 में शिक्षा प्राप्त करने गवर्नमेंट हाईस्कूल अल्मोड़ा गये। यहीं उन्होंने अपना नाम गोंसाई दत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया।

► महादेवी वर्मा



- ★ महादेवी वर्मा का जन्म फर्रूखाबाद, उत्तर प्रदेश में सन् 1907 ई. में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में हुई। बारह वर्ष की उम्र में ही इनका विवाह डॉ. स्वरूप नारायण वर्मा से हो गया। विवाह के उपरान्त इनका अध्ययन स्थगित हो गया। बाद में प्रयाग से 1920 ई. में मिडिल की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णता प्राप्त की।
- ★ 1924 ई. में मैट्रिक, 1926 ई. में इन्टरमीडिएट तथा 1928 ई. में स्नातक की परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। 1935 ई. में उन्होंने स्नातकोत्तर परीक्षा में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- ★ इनकी मृत्यु 11 सितम्बर, 1987 में उत्तर प्रदेश (प्रयागराज) में हुई।
- ★ छायावाद के चार स्तम्भों में महादेवी वर्मा का नाम भी शुमार है।
- ★ आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रीयों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से जाना जाता है।
- ★ कवि निराला ने उन्हें 'हिन्दी की विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है।
- ★ **इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं** - 'नीहार' (1930 पहली कृति), रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा, परिधि, सप्तपर्णा, प्रथम आयाम, अग्निरेखा आदि काव्यकृतियाँ।
- ★ **निबंध** : शृंखला की कड़ियाँ, विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध और संकल्पिता।
- ★ **रेखाचित्र** : अतित की चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ। संस्मरण : पथ के साथी, मेरा परिवार।
- ★ **ललित निबंध** : क्षणदा।
- ★ **कहानियाँ** : गिल्लू।

- ✧ **सम्मान** : 1956 ई. में इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया। 'यामा' कृति पर इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक, ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982) तथा पद्मविभूषण (1988) प्राप्त हुआ।
- ✧ महादेवी वर्मा का प्राथम काव्य-संग्रह 'नीहार' है।

- * **जन्म** → 26 मार्च 1907
- * फ़र्रुखाबाद, संयुक्त प्रान्त आगाए व अवध, ब्रिटिश राज
- * **मृत्यु** → 11 सितम्बर 1987 (उम्र 30)
- * प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
- * **पेशा** → उपन्यासकार, कवयित्री, लघुकथा लेखिका
- * **राष्ट्रीयता** → भारतीय
- * **उच्च शिक्षा** → संस्कृत, प्रयागराज विश्वविद्यालय में
- * **काल** → बीसवीं शताब्दी
- * **आंदोलन** → छायावाद
- * **उल्लेखनीय काम** → यम, मेरा परिवार, पथ के साथी
- * **खिताब** → 1956 → पद्म भूषण (साहित्यिक सेवा के लिए)
 - 1982 → ज्ञानपीठ पुरस्कार (यामा)
 - 1988 → पद्म विभूषण (मरणोपरांत)
- * **जीवनसाथी का नाम** → डॉ॰ स्वरूप नारायण धर्मा

महादेवी जी के परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा बाबू बाँके बिहारी जी हर्ष से झूठ उठे और इन्हें घरे की देवी महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद बूर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे उनकी मात्र माता का नाम हेमरानी देवी था।



► जयशंकर प्रसाद



- ★ जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में सन् 1889 ई. में हुआ था। इनका जीवन-काल 1889 से 1937 ई. का रहा है। इनके पितामह शिवरत्न साहु वाराणसी। के अत्यन्त प्रतिष्ठित नागरिक थे। एक विशेष प्रकार का तम्बाकू बनाने के कारण 'सुंघनी साहु' के नाम से विख्यात थे।
 - ★ जयशंकर प्रसाद के पिता देवी प्रसाद साहु थे। जयशंकर प्रसाद की शिक्षा घर पर ही हुई। कालान्तर में क्वींस कॉलेज में प्रसाद का नामांकन करा दिया गया।
 - ★ नौ वर्ष की अवस्था में ही जयशंकर प्रसाद ने 'कलाधर' उपनाम से ब्रजभाषा में एक सवैया लिखकर अपने गुरू को दिखाया था।
 - ★ उनकी प्रारंभिक रचनाएँ ब्रजभाषा में मिलती हैं, पर क्रमशः वे खड़ी बोली को अपनाते गए। इस समय 1909 ई. में उनके भाँजे अम्बिका प्रसाद गुप्त के सम्पादकत्व में 'इन्दु' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ।
 - ★ प्रसाद ने अपनी प्रथम कृति की रचना ब्रजभाषा में की थी किंतु बाद में उसे खड़ी बोली में 'प्रेमपथिक' के रूप में। रूपान्तरित किया। दार्शनिक दृष्टि से प्रसाद शैव थे।
 - ★ बचपन में जयशंकर प्रसाद का नाम था 'झारखण्डी'। प्रसाद के गुरु रसमय सिद्ध थे। प्रसादजी ब्रजभाषा में। 'कलाधर' उपनाम से कविता रचते थे।
 - ★ प्रसाद की ब्रजभाषा की कविताएँ 'चित्राधार' काव्य-संग्रह में संकलित हैं। इनकी खड़ी बोली की कविताओं का प्रथम संग्रह 'कानन कुसुम' है।
 - ★ 'करुणालय' की रचना प्रसाद ने 'गीतिनाट्य' के रूप में की है। सन् 1925 ई. में इन्होंने 'आँसू' काव्य की रचना की। इसका प्रथम संस्करण 1925 ई. में तथा द्वितीय संस्करण 1933 ई. में किया गया। 'आँसू' की रचना में 'आनंद छंद' में का प्रयोग हुआ है। 'आनन्द छंद' को 'सखी छंद' भी कहा जाता है। प्रसाद ने अन्त में 'कामायनी' महाकाव्य की रचना 'ताटक' छन्द में की। प्रसाद का पहला काव्य-संग्रह 'चित्राधार' है।
- इनकी रचनाएँ हैं-

- ❖ **काव्य-संग्रह :-** चित्राधार, काननकुसुम, प्रेमपथिक, करुणालय, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू लहर, कामायनी ।
- ❖ **नाटक :-** राज्यश्री, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुव-स्वामिनी, सज्जन, प्रायश्चित्त, कल्याणी परिचय, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, एक घूँट, आदि।
- ❖ **उपन्यास :-** कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण) ।
- ❖ **कहानी संग्रह :-** छाया, प्रतिध्वनि, आकाशद्वीप, आँधी, इन्द्रजाल आदि।
- ❖ **सम्मान :-** मंगला प्रसाद पारितोषिक 'कामायनी' के लिए।

- * **जन्म :-** 30 Jan 1889 काशी
- * **मौत :-** 15 NOV 1937 (उम्र 47)
- * **पेशा :-** कवि, नाटककार, कहानीकार उपन्यासकार
- * **पुत्र :-** रत्न शंकर
- * **पहली पत्नी :-** विन्ध्यवाहिनी, दूसरी पत्नी :- कमला देवी
- * भाषा ने ब्रजभाषा (प्रारम्भिक हिन्दी कविता एवं रचनाएँ बाद में खड़ी बोली में लिखने लगे।।
- * **प्रथम रचना :-** ग्राम (1972) कुल 72) कहानियाँ लिखी
- * **एकांकी :-** एक घूँट (प्रथम एकांकी)
- * **इनका रचना काल :-** 1909-1936
- * कामायनी (अंतिम काव्य रचना) (मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरुस्कार)
- * **शिक्षा :-** आठवीं तक
- * **रचनाएँ**
 - स्कन्दगुप्त (नाटक)
 - महाराणा
 - इरावती (उपन्यास)
 - आँधी (कहानी)
 - सरना
 - कामायनी (महाकाव्य)
 - कामना (नाटक)
 - लहर
 - छाया
 - अकाशदीप (कहानी)
 - चन्द्रगुप्त (नाटक)
 - अजात शत्रु
 - आँसू (कहानी)
 - तितली
 - राज्यश्री (नाटक)
 - एक घूँट
 - प्रेम
 - तरंग
 - प्रतिध्वनि
 - इन्द्रजाल (कहानी)

► रामधारी सिंह 'दिनकर'



- ★ रामधारी सिंह दिनकर का जन्म सन् 23 दिसम्बर, 1908 ई. को बिहार राज्य के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में के एक कृषक परिवार में हुआ था।
- ★ इनके पिता का नाम रविसिंह और माता का नाम मनरूपी देवी था। जब दिनकर जी दो वर्ष के थे तभी इनके पिता का देहान्त हो गया था।
- ★ इनकी प्रारंभिक शिक्षा इनके अपने गाँव सिमरिया में ही हुई। थी। सन् 1928 ई. में इन्होंने मोकामा घाट हाई। स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की। 1930 ई. में इन्टरमीडिएट तथा सन् 1932 ई. में पटना विश्वविद्यालय से इतिहास विषय से प्रतिष्ठा के साथ स्नातक की परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की। 'दिनकर' जी राष्ट्रीय व सांस्कृतिक चेतना के। ओजस्वी कवि थे। प्रारंभ से ही 'दिनकर' जी का जीवन अत्यन्त संघर्षमय रहा।
- ★ दिनकर जी सन् 1952 ई. से 1964 ई. तक राष्ट्रपति द्वारा मनोनित राज्यसभा सदस्य (तीन बार) बने।
- ★ ये 1965 ई. से 1971 ई. तक भारत सरकार के गृह। मंत्रालय में हिन्दी के सलाहकार भी रहे।
- ★ दिनकर की पहली कविता 1924 में छात्र सहोदर ('छात्रों का भाई') नामक पत्र में प्रकाशित हुई थी। दिनकर का पहला कविता संग्रह रेणुका नवम्बर 1935 में प्रकाशित हुआ था।
- ★ 'दिनकर' जी की प्रमुख कृतियाँ :- रेणुका, हुँकार, रसवन्ती, सामधेनी, प्रणभंग, बापू, इतिहास के आँसू, हारे को हरिनाम, रश्मिरथी, कुरूक्षेत्र, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, शिपी और शंख, 'द्वन्द्वगीत, धूप और धुआँ दिल्ली, इसके अलावा इतिहास, समालोचना, डायरी, यात्रावृत्तांत, संस्मरण आदि गद्यकृतियाँ प्रकाशित है।
- ★ **सम्मान:-** 1956 में 'संस्कृति के चार अध्याय के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार, सन् 1959 ई. में पद्मभूषण का सम्मान; सन् 1972 ई. में 'उर्वशी' के लिए 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार।

- * **जन्म :** 23/Dec/1908 (बेगूसराय बिहार के सिमरिया गाँव में)
- * **मृत्यु :** 1974 (उम्र 65)
- * **काल एवं युग :** आधुनिक काल एवं प्रगतिवादी युग

- * **सम्मान :-** 1959 : साहित्य अकादमी पुरस्कार-संस्कृति के चार अध्याय
1959 : पद्म भूषण
1972 : ज्ञान पीठ पुरस्कार "उर्वशीक
- * **जीवन साथी :** श्यामवती देवी
- * **शिक्षा :-** पटना विश्वविद्यालय इतिहास राजनीति विज्ञान में वीए किया।
- * बांग्ला संस्कृत, ऊई का गहन अध्ययन किया।
- * विश्व के सर्वश्रेष्ठ (100) काव्यों में 79वाँ स्थान इनकी रचना कुरुक्षेत्र को है।
- * 1952 से, 12 वर्ष तक राज्यसभा सांसद नेहरू की नीतियों का विरोध करते हुए यह पंक्तियाँ लिखी " देखने मे देवता सदृश्य लगता है बंद कमरे में बैठकर गलत हुक्म लिखता है जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा हो समझते उसी ने हमें मारा है।। "
- * **रचनाएँ:** रेणुका, प्रणभंग, रसवन्ती, हकार, रश्मिरथी, उर्वशी, कुरुक्षेत्र, परशुराम की परीक्षा, नीम के पत्ते, नील कुसुम, आत्मा की आँखें, दिनकर के गीत, दिल्ली, रेत के फूल, रसवन्ती, इत्कंगीत, संचिपता, भिमलोक अर्द्धनारीश्वर ।

► अज्ञेय



- * 'अज्ञेय' का पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के कसया (आधुनिक कुशीनगर) में हुआ था। इनका जीवन काल 1911 ई. से 1987 ई. तक का था। इनकी बाल्यावस्था अधिकांशतः लखनऊ, बिहार, कश्मीर और मद्रास में व्यतीत हुई। इनकी शिक्षा कुछ मद्रास और शेष लाहौर में पूर्ण हुई। इन्होंने बी.एस.सी. की परीक्षा पास करने के उपरान्त अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर परीक्षा पास की। इनका सानिध्य आन्दोलनकारियों से



हो गया, अतः स्वातंत्र्य संग्राम-आन्दोलन से जुड़ गए। प्रतिफल स्वरूप इन्हें चार वर्षों तक नजरबन्द रहे।

- ★ ये "सैनिक, विशाल भारत, बिजली, प्रतीक, वाक्, दिनमान पत्रिकाओं के सम्पादक रहे।
- ★ जोधपुर विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे और बाद में विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
- ★ 'अज्ञेय' मुख्य रूप से कवि और उपन्यासकार रहे हैं। इनके नाम से हिन्दी जगत में पहचाने जाने वाले विशिष्ट व्यक्तित्व में धनी सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन मुख्यतः अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले पुरुष थे। 'शेखरः एक जीवनी' नामक उपन्यास तथा 'हरी घास पर क्षण भर' काव्य के कारण अलग पहचान बनाने वाले अज्ञेय की नवप्रयोगधर्मिता तथा नवीनता के प्रति आसक्ति के कारण काफी आलोचना होती रही। इन्हें कविता की प्रयोगवादी धारा का प्रवर्तक माना जाता है।
- ★ इनकी संकलित कवितायें प्रयोगवादी रचनाओं में प्रतिनिधि रचना के तौर पर परिगणित की जाती है। 'नदी के द्वीप में' जहाँ अपनी पहचान न मिटने की पैरवी और दलील प्रस्तुत हैं, वहीं 'कलगी बाजरे की' में कवि ने पुरातन उपमानों की कलाई उतर जाने का तर्कपूर्ण रहस्य सामने रखा है और प्रेयसी को बाजरे की कलगी के समतुलनीय बताया है।
- ★ 'अज्ञेय' जी ने 'तारसप्तक' (दूसरा सप्तक), इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर-का सम्पादन किया। इसी 'तारसप्तक' से हिन्दी साहित्य में 'प्रयोगवाद' की संकल्पना आयी।
- ★ 'अज्ञेय' की प्रमुख कृतियाँ हैं -
- ★ **कविता :-** भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम, हरि घाँस पर छन भर, बावरा अहेरी, 'इन्द्र धनुष रौंदे हुए थे', 'अरी ओ करूणा प्रभामय', आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि उसे मैं जानता हूँ, पहले मैं सन्नाटा बूँतता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बाँक पर छाया, सागर मुद्रा प्रिजेन डेज एंड अदर पोएम्स' (अंग्रेजी में)।
- ★ **कहानियाँ :-** विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, शरनार्थी, जयदोल।
- ★ **उपन्यास :-** शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी।
- ★ **यात्रा साहित्य -** 'अरे यायावर याद रहेगा', 'एक बूँद सहसा उछली।
- ★ **आलोचना :-** 'त्रिशंकु' 'आत्मेन पद' 'भवन्ती', 'आलवाल।
- ★ **सम्पादित ग्रंथ :-** 'आधुनिक हिन्दी साहित्य' एक आधुनिक परिदृश्य' (निबंध संग्रह)।
- ★ **'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित काव्य-संग्रह :-** तार सप्तक (1943), दूसरा सप्तक (1951), तीसरा सप्तक (1959), चौथा सप्तक (1971), पुष्करिणी (1959), रूपाम्बरा (1960) एवं नवधा'।
- ★ **सम्मान :-** अज्ञेय को 'आँगन के पार द्वार के लिए' वर्ष 1964 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए वर्ष 1978 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इनका वास्तविक नाम "सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन" है

* **जन्म :-** 7 मार्च 1911, (कुशीनगर उ०प्र०)

- * **मृत्यु :-** 4 april 1987 (नई दिल्ली)
- * **शिक्षा :-** मद्रास विश्वविद्यालय
- * **जीवनसाथी :-** कपिला वात्स्यायन

- * **1964 आँगत के उस पार** = साहित्य अकादमी पुरस्कार
- * **1978** कितनी नावों में कितनी बार = ज्ञानपीठ पुरस्कार
- * **काव्य संग्रह :** भग्नइत (1933), चिन्ता 1942, इत्यलम 1946 ,हरी घास पर क्षण भर (1999),
वाहरा अहेरी 1954 मधुवृक्ष के नीचे 1977
- * **कहानियाँ :-** विपथगा (1937), कोठरी की बात (1995), शरणार्थी 1948
- * **यात्रा वृतांत** = अरे यायावार रहेगा याद (1953)
- * **एक बूँद सदमा उछली** (1960)
- * **उपन्यास :-** शेखर एक जीकी (1941)
 - द्वितीय भाग (1994)
 - नदी के द्वीप (1951)
- * **जीवनी :-** रामकमल राय द्वारा लिखित "शिखर से सागर तक"

" इनको प्रयोगवाद का प्रवर्तक माना जाता है, तारसप्तक एक काव्य संग्रह है।

अज्ञेय द्वारा 1943 ई० नदी कविता के प्रणयन हेतु सात कवियों का एक मण्डल बनाकर तारसप्तक का संकलन किया।

अमुभा प्रगिरा।

अ = अज्ञेय

मु = मुक्तिबोध

भा = भारत भूषण अग्रवाल

प्र = प्रभाकर

ने = नेविचंद्र

गि = गिरिजाकुमार

रा = रामविलास

► नागार्जुन



- ✧ नागार्जुन का जन्म 30 जून, 1911 ई. में वर्तमान | मधुबनी जिले के सतलखा गाँव में हुआ था। यह ! उनका ननिहाल था। उनका पैतृक गाँव वर्तमान दरभंगा । जिले का तरौनी था। इनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था। इनका जन्म रूढ़िवादी निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। नागार्जुन के बचपन का नाम ठक्कन मिश्र था।
- ✧ ये निर्भीक एवं फक्कड़ स्वभाव के थे। इसी कारण हिन्दी साहित्य जगत में इनका विशिष्ट स्थान है। निर्भीक और फक्कड़ स्वभाव वाले नागार्जुन लोकप्रिय कवि हैं। कालान्तर में इन्होंने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर | लिया। इसके पश्चात् ही इन्होंने अपना नाम नागार्जुन ! लिखना शुरू किया।
- ✧ इनकी शिक्षा-दीक्षा गाँव के ही संस्कृत पाठशाला में प्रारम्भ हुई थी। काशी जाकर इन्होंने संस्कृत का विशेष अध्ययन किया तथा शास्त्री की परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की।
- ✧ इसके बाद नागार्जुन ने कलकत्ता से साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त कर पालि और प्राकृत भाषाओं का विशेष अध्ययन किया। श्रीलंका में इन्होंने दो वर्षों तक अध्यापन-कार्य किया और स्वाध्याय द्वारा बौद्ध साहित्य का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त किया।
- ✧ मैथिली में नागार्जुन यात्री के नाम से लिखते थे। इन्होंने संस्कृत, बांग्ला और मैथिली में भी कविताएँ लिखीं।
- ✧ नागार्जुन की पहली प्रकाशित रचना एक मैथिली कविता थी जो दरभंगा से प्रकाशित मिथिला नामक पत्रिका में छपी थी। उनकी पहली हिन्दी रचना राम के प्रति नामक कविता थी जो लाहौर से निकलनेवाली सप्ताहिक विश्वबंधु में छपी थी।

❖ नागार्जुन की रचनाएँ :-

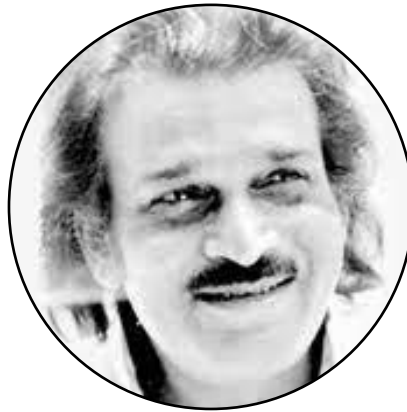
- ★ **काव्य (मैथिली भाषा में) :-** चिन्ता, पत्रहीन, नग्न गाछ।
- ★ **काव्य (हिन्दी भाषा में) :** युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, तुमने कहा था, भस्मांकुर (प्रबंध काव्य), भूमिजा (प्रबंध काव्य)।
- ★ **उपन्यास (मैथिली में) -** पारो, बलचनमा, नव-तुरिया।
- ★ **उपन्यास (हिन्दी में) -** रतिनाथ की चाची, बलचनमा नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुम्भीपाक, हरिक जयन्ती, उग्रतारा, इमरतिया और जमनिया का बाबा।
- ★ **अलोचना :-** एक व्यक्ति एक युग।
- ★ **कहानी संग्रह -** आसमान में चंदा तेरे,
- ★ **सम्मान :-** साहित्य अकादमी पुरस्कार- 1969 (मैथिली में, 'पत्र हीन नग्न' के लिए)
- ★ **भारत भारती सम्मान** (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा)
- ★ **मैथिलीशरण गुप्त सम्मान** (मध्य प्रदेश सरकार द्वारा)
- ★ **राजेन्द्र शिखर सम्मान -** 1994 (बिहार सरकार द्वारा)

❖ (जीवन परिचय)

- * **नाम** → वैद्यनाथ मिश्र
- * **उपनाम** → नागार्जुन
- * **जन्म** → 30 जून 1911
- * **जन्मस्थान** → सतलखा गाँव, दरभंगा, बिहार
- * **निधन** → 5 नवंबर 1998
- * **पिता का नाम** → गोकुल मिश्र
- * **माता का नाम** → उमा देवी
- * **पेशा** → कवि, लेखक, उपन्यासकार
- * **प्रमुख रचनाएँ** → युगधारा, सूतरंगे पंखों वाली, खून और शोले, प्यासी पथराई आँखें, भस्मांकुर, पुरानी जूतियों का कोरस, तालाब की मछलियाँ
- * **भाषा** → हिंदी भाषा
- * **साहित्य** → प्रगतिवादी काव्यधारा
- * **विधाएं** → कविता, काव्य, उपन्यास कहानी
- * **पुरस्कार** → साहित्य अकादमी पुरस्कार

नागार्जुन मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार से थे। उनके पिता बिल्कुल ही निरक्षर थे। वह कुछ भी कमाई नहीं करते थे। धन के नाम पर जो कुछ भी पूजा पाठ करवाने से मिलता वह उससे ही अपना जीवन का गुजारा कर रहे थे।

► सर्वेश्वर दयाल सक्सेना



- ✧ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में 15 सितम्बर, 1927 ई. में हुआ था। इनका जीवन काल 1927 ई. से 1983 ई. तक का रहा। इनका बचपन आर्थिक संकट के संघर्ष में बीता।
- ✧ इनकी प्रारंभिक शिक्षा बस्ती में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई। इन्होंने सन् 1949 ई. में स्नातकोत्तर परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की। स्नातकोत्तर में उत्तीर्णता के बाद इन्होंने कुछ समय तक स्कूल में अध्यापन का कार्य किया, फिर किरानी-गिरी किया वहां की नौकरी से इस्तीफा देकर वे नौकरी से अलग हो गए।
- ✧ सर्वेश्वर की आरंभिक प्रेम-कविताएँ अपनी सहजता से आकर्षक बन पड़ी हैं - 'चार नयन मुस्काये, खोये, भींगे, फिर पथराये।' 'कितनी बड़ी विवशता जीवन की कितनी कह पाये।' जब कभी कवि जटिलता पैदा करना चाहता है तो, कविता की संवदेना बिखरने लगती है; जैसे- 'खूंटियों पर टंगे लोग की 'चलो घूम आये' कविता।
- ✧ सर्वेश्वर की राजनीतिक कविताओं में व्यंग्य की प्रधानता है- 'लोकतंत्र को जूते की तरह लाठी से लटकाए, भागे जा रहे हैं सीना फुलाए।' हालाँकि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना किसी राजनीतिक दल से बंधे नहीं हैं, फिर भी किसान-मजदूर के जीवन-संघर्ष के समर्थन तथा व्यवस्था-विरोध में वे प्रायः खड़े दिखते हैं। इन्हें हम प्रयोगवादी दौर के प्रगतिवादी कवि की तरह देखते हैं। ये शब्दों और वाक्यों की जटिलता से पूर्णतया अलग रहकर आपनी काव्य-रचना करते हैं।

❖ इनकी कृतियाँ हैं :-

- ✧ **कविताएँ :-** 'तीसरा सप्तक' में संकलित कविताएँ यथा 'काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव गर्म हवाएँ कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूंटियों पर टंगे लोग, क्या कहकर पुकारूँ (प्रेम कविताएँ), कोई मेरे साथ चले, मेघ आए, काला कोयल आदि।
- ✧ **कहानियाँ :-** पागल कुत्तों का मसीहा (लघु उपन्यास), सोया हुआ जल (लघु उपन्यास), उड़े हुए रंग, कच्ची सड़क, अंधेरे पर अंधेरा।
- ✧ **नाटक :-** बकरी, लड़ाई, अब गरीबी हटाओ, कल भात आएगा तथा हवालात, (एकांकी नाटक)। यात्रा संस्मरण :- कुछ रंग कुछ गंध।

- ★ **बाल कविता :-** बतुता का जूता, महँगू पीटाई ।
- ★ **बाल नाटक :-** भों-भों खों-खों, लाख की नाक ।
- ★ इसके अलावा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने 'दिनमान' में उनका स्तंभ 'चरचे और चरखे' नाम से प्रकाशित होता था जिसमें सच को बेवाक और बेलौस तरीके से कहा जाता था। अभिव्यक्ति की सहज और स्वाभाविकता सर्वेश्वर के समस्त लेखन की विशेषता है। प्रयोगवादी भाव-क्लिष्टता नहीं है।
- ★ **सम्मान :-** 1983 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (खूँटियों पर टंगे लोग-कविता संग्रह के लिए) से सम्मानित किया गया।

- * **जन्म :** 15/sep/ 1927 बस्ती में विश्वेश्वर दयाल सक्सेना के घर
- * **मृत्यु :** 23/54/1983 नई दिल्ली
- * **शिक्षा :** बीए एवं एम० ए० हिन्दी

* **काव्य**

- (i) काठ की घंटियाँ
- (ii) बांस का पुल
- (iii) एक सूनी नाव
- (iv) गर्म हवाएँ
- (v) कुआनो नदी
- (vi) जंगल का दर्द
- (vii) खूँटियों पर टंगे लोग
- (viii) क्या कुछ कर पुकारूँ
- (ix) कविताएँ (1)
- (x) कविताएँ (2)
- (xi) कोई मेरे साथ चले
- (xii) मेघ आए
- (xiii) काला कोयल

* **संपादन**

- शमशेर (मलयज के साथ) 1971
- रूपाबरा (सं- अज्ञेय जी 1980 में सहायक संपादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)
- अंधेरों का हिसाब 1981
- नेपाली कविताएँ 1982
- रक्तबीज 1977

1983, साहित्य अकादमी पुरस्कार "खूँटियों पर टंगे लोग"

► धूमिल



- ★ धूमिल का जन्म 1936 ई. में वाराणसी में हुआ था। इनका जीवन-काल 1936 ई. से 1975 ई. तक रहा। इनका मूल नाम है सुदामा पाण्डेय। हाईस्कूल पास। करके ये रोजी-रोटी की तलाश में चक्कर काटने लगे। | 1958 ई. में इन्होंने आई. टी. आई. की परीक्षा पास की। विद्युत में डिप्लोमा किया और वाराणसी के उसी | संस्थान में अनुदेशक के रूप में बहाल हो गए।
- ★ धूमिल के काव्य-संस्कारों में एक प्रकार का गँवईपन है, एक भदेसपन है जो उनके व्यंग्य को धारदार और कविता को असरदार बनाता है। उन्होंने अपनी कविता में समकालीन राजनीतिक परिवेश में जी रहे जागरूक व्यक्ति की तस्वीर पेश की है और 1960 ई. के बाद के मोहभंग को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। इनकी कविताओं में संघर्षरत आदमी के प्रति खास किस्म की करुणा और आक्रोश है।
- ★ धूमिल नागार्जुन की तरह लोकधर्मी कवि हैं। सामान्य जन के प्रति दायित्व बोध इनकी कविताओं में सहज उपलब्ध हो जाता है जो इनकी काव्य-रचना की उपजीव्य बन जाता है।
- ★ **इनकी कृतियाँ हैं** - सड़क से संसद तक (1972), कल सुनना मुझे (1976), सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र (1984)।
- ★ **धूमिल की कुछ सबसे लोकप्रिय कविताएँ हैं** - मोची राम, बीस साल बाद, पटकथा, रोटी और संसद, लोहे का स्वाद आदि।
- ★ **सम्मान** - उन्हें मरणोपरान्त 1979 में 'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

धूमिल का जन्म "वाराणसी के पास खेवली गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम सुदामा पाण्डेय था। सन 1958 में आई टी आई (वाराणसी) से विद्युत से डिप्लोमा लेकर वे वहीं अनुदेशक बन गए 38 वर्ष की अल्पायु में ही ब्रेन ट्यूमर से उनकी मृत्यु हो गई।



❖ रचनाएँ

धूमिल के तीन काव्य संग्रह :-

(क) संसद से सड़क तक 1972

(ख) कल सुनना मुझे 1976

(ग) सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र 1984

साहित्य अकादमी सम्मान 1979 मरणोपरान्त "कल सुनना मुझे के लिए मिला"

जन्म : 9 | Nov. | 1936

मृत्यु :- 10 | फरवरी | 1975

माता एवं पिता :- शिवनारायण पाण्डेय व इनकी माता रजवंती देवी ||

पत्नी का नाम :- मूरत देवी

बच्चे :- रलशंकर पाण्डेय

❖ कविताएँ :

- * मोचीराम
- * बीस साल बाद
- * पटकथा
- * रोटी और संसद
- * लोहे का स्वाद



**Teachers
Express**

3

उपन्यास

गोदान - प्रेमचन्द्र

प्रकाशन वर्ष - 1936 ई.



प्रेमचन्द्र का जीवन परिचय

प्रेमचन्द्र का जन्म	31 जुलाई, 1890 को वाराणसी जिले (उत्तर प्रदेश) के लमही गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाक मुंशी थे।
प्रेमचन्द्र का वास्तविक नाम	<ul style="list-style-type: none"> धनपत राय श्रीवास्तव था। प्रेमचन्द्र की प्रारंभिक शिक्षा फारसी में हुई। जब वे सात साल के थे तभी उनकी माता का स्वर्गवास हो गया, और सोलह वर्ष के आयु में उनके पिता का देहान्त हो गया।
उनका पहला विवाह	पन्द्रह साल की उम्र में हुआ तथा 1906 में उनका दुसरा विवाह शिवरानी देवी से हुआ जो बाल विधवा थी।
उनकी संतानें	उनकी तीन संतानें हुई- श्रीपत राय, अमृत राय, कमला देवी श्रीवास्तव।
उनकी शिक्षा	1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक के रूप में नियुक्त हो गए।
आन्दोलन	1921 ई. में असहयोग आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी के सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून को त्यागपत्र दे दिया।
लोकप्रिय उपन्यास	प्रेमचन्द्र हिन्दी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे, उन्होंने सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमी, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं। उनमें से अधिकांश हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषा में प्रकाशित हुई। उन्होंने अपने दौर की सभी प्रमुख उर्दू और हिन्दी पत्रिकाओं जमाना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि में लिखा।

संपादन और प्रकाशन	उन्होंने हिन्दी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया।
-------------------	---

गोदान के पात्र

होरी	गाँव का किसान
धनिया	होरी की पत्नी
गोबर	होरी का पुत्र
झुनिया	गोबर की पत्नी
हीरा	होरी का भाई
भोला	होरी का भाई
सोना	होरी की बड़ी बेटी
रूपा	होरी की छोटी बेटी
पुनिया	हीरा की पत्नी
रायसाहब अमरपाल	अवध प्रान्त का जमींदार
दातादीन	मातादीन के पिता
मेहता	दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक
मातादीन	दातादीन का बेटा
मालती	इंग्लैंड से डॉक्टरी पढ़कर आयी युवती
सरोज	मालती की बहन
सिलिया	चमारिन
झींगुरी सिंह	गाँव का महाजन
गोविंदी	खन्ना साहब की पत्नी
मिस्टर खन्ना	बैंक मैनेजर और शक्कर मिल के मालिक
ओंकारनाथ	रायसाहब के मित्र, दैनिक पत्र बिजली के संपादक

गोदान के गौण-पात्र

सरोज	मालती की बहन
पंडित नोखेराम	जमींदार के कारकुन, गाँव के प्रमुख व्यक्ति, किसानों के शोषक, दूसरे की मुसीबत का लाभ उठाने वाले साहूकार।
नोहारी	झुनिया के पिता भोला से दूसरा विवाह किया। बाद में भोला को लेकर नोखेराम के यहाँ रहने लगी।
मंगरू	गाँव का सबसे धनी व्यक्ति, पूजा-पाठ में रत रहने वाला।
दुलारी सहुआइन	गाँव की साहुआरिन
चुहिया	झुनिया की शहर में रहने वाली पड़ोसन, झुनिया को प्रसव में सहायता करने वाली तथा उसके बच्चे को अपना दूध पिलाने वाली नरम दिल स्त्री।

गोदान के पुरुष पात्र

होरी

जीवन परिचय: उपन्यास का नायक; कृषक वर्ग का प्रतिनिधि, बेलारी ग्राम का साधारण परिवार का कृषक

चारित्रिक विशेषताएँ: परिश्रमी एवं ईमानदार, शोषण का शिकार, मर्यादा का रक्षक, आर्थिक अभावों से ग्रस्त

रायसाहब अमरपाल सिंह

जीवन परिचय: सेमरी ग्राम का निवासी, अवधप्रान्त का

जमींदार, रूद्रपाल और मीनाक्षी का पिता, मेहता, खन्ना, मिर्जा खुर्शेद का मित्र

चारित्रिक विशेषताएँ : कथनी और करनी में अंतर, मानव स्वभाव के पारखी, किसानों के शोषक, सभा चतुर व्यक्ति ।

प्रोफेसर मेहता

जीवन परिचय: दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर, मालती के प्रेमी, बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतिनिधि पात्र, रायसाहब के मित्र ।

चारित्रिक विशेषताएँ: परिश्रमी एवं नैतिकतावादी, विनोदी स्वभाव के व्यक्ति, प्रकृति प्रेमी, नारी जाति के प्रति श्रद्धावान, कुशल वक्ता, प्रेमचंद के विचारों के वाहक ।

गोबर

जीवन परिचय: होरी का पुत्र, झुनिया का पति, विद्रोही चेतना का प्रतीक, सोना और रूपा का भाई, सोलह वर्ष का युवक ।

चारित्रिक विशेषताएँ: जागरूक एवं प्रगतिशील, अल्लहड़ प्रेमी, परिश्रमी एवं ईमानदार, माता-पिता का भक्त, शोषण का शिकार, निर्भीक एवं निडर

दातादीन

जीवन परिचय: मातादीन का पिता, गांव के सम्मानित व्यक्ति, कृषकों को सूद पर पैसा देने वाले।

चारित्रिक विशेषताएँ: कर्मकांड में विश्वास, धूर्त एवं चालक, कृषक वर्ग का शोषक, दंभी एवं अहंकारी ।

गोदान के स्त्री पात्र

धनिया

जीवन परिचय: होरी की पत्नी, उपन्यास की नायिका, कृषक स्त्री वर्ग की प्रतिनिधि पात्र।

चारित्रिक विशेषताएँ : निर्भीक एवं निडर, लड़ाकू स्वभाव वाली, संघर्ष से जूझती स्त्री, सेवा और त्याग की देवी, मातृत्व भावना से युक्त ।

मालती

जीवन परिचय: सरोज की बहन, प्रोफेसर मेहता के प्रति आकृष्ट, गतिशील चरित्र वाली युवती, इंग्लैंड से डॉक्टरी पढ़कर आई हुई नवयुवती

चारित्रिक विशेषताएँ : सुंदर व्यक्तित्व की स्वामिनी, बाहर से तितली भीतर से मधुमक्खी, सेवा और त्याग से युक्त, बुद्धिजीवी महिलावर्ग की प्रतिनिधि।

झुनिया

जीवन परिचय: भोला की विधवा पुत्र, अहीर जाति की कन्या, गोबर की प्रेमिका एवं पत्नी, धनिया के प्रति सेवाभाव से युक्त ।

चारित्रिक विशेषताएँ : कर्तव्यमयी पत्नी, उन्मादिनी प्रेमिका, वैधव्य की पीड़ा से त्रस्त, वात्सल्यमयी माँ

गोविंदी

जीवन परिचय: खन्ना साहब की पत्नी, प्रेमचंद की नारी भावना के मूर्त करने वाली नारी, प्रेमचंद ने इनका नाम प्रारंभ में कामिनी रखा था।

चारित्रिक विशेषताएँ : पति परायण पत्नी, आदर्श नारी पात्र, सेवाभावना से युक्त, वफादार, के प्रति ईष्यालु।

सिलिया

जीवन परिचय: मातादीन की प्रेमिका, जाति प्रथा की शिकार युवती, मातादीन द्वारा अंत में पत्नी रूप में स्वीकार किया गया।

चारित्रिक विशेषताएँ: रूपवती युवती, गुणवती स्त्री, सेवा भावना से युक्त, मातादीन के प्रति समर्पित, आदर्श प्रेमिका ।

परीक्षा में आने वाले मुख्य तथ्य

- मुंशी प्रेमचन्द प्रारंभ में उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से लेखन करते थे। 1910 तक ये नवाबराय बनारसी नाम से लिखते थे।
- बंगला कथाकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने प्रेमचन्द को 'उपन्यास सम्राट' की संज्ञा दी।
- प्रेमचन्द ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी जिनका संकलन मानसरोवर के आठ भागों में किया गया है।
- मुंशी दयानारायण निगम (प्रेमचन्द की मित्र) ने प्रेमचन्द नाम दिया।
- प्रेमचन्द 'जमाना पत्रिका' में आरंभ में लेखन कार्य किया।
- प्रेमचन्द को 'कलम का सिपाही' नाम अमृत राय ने दिया।
- मोहन दयाराम भवनानी की अजंता सिनेटॉन कम्पनी में 1934 ई. में आई फिल्म मजदूर की कहानी प्रेमचन्द ने लिखा।
- प्रेमचन्द का पहला उर्दू उपन्यास असरारे मआबिद है।
- प्रेमचन्द की पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' थी जो जमाना (1910 ई.) पत्रिका में प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द का पहला हिन्दी उपन्यास सेवा सदन 1918 ई. में प्रकाशित हुई।
- प्रेमचन्द को रंगभूमि नामक उपन्यास के लिए मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया है।
- गोदान : होरी बिलारी गाँव का रहने वाला किसान है उसकी पत्नी धनिया, पुत्र, गोबर, और सोना तथा रूपा पुत्रियाँ हैं। शोभा और हीरा उसके दो भाई हैं।
- होरी की सबसे बड़ी इच्छा थी कि घर में एक गाय हो।
- 'गाँव क्या था, पुरवा था, दस-बारह घरों का जिसमें आधे खपरैल के थे, आधे फूस के।'- कोदड़ गाँव का वर्णन।
- गोबर का वास्तविक नाम गोवर्धन था।
- गोदान उपन्यास में मालती के लिए कथन है 'बाहर से तितली है और भीतर से मधुमक्खी'।
- 'गोदान' उपन्यास यथार्थवाद उपन्यास है, न कि आदर्शवाद।
- पहना दो मेरे हाथ में हथकड़ियाँ, देख लिया तुम्हारा न्याय और अक्ल की दौड़ कथन है, धनिया का।
- उपन्यास में महाजनी सभ्यता का विरोध हुआ है।
- कृषक की आर्थिक समस्या का चित्रण हुआ है।
- यह उपन्यास समस्या का चित्रण हुआ है।
- गाँव की कथा और शहर की कथा साथ-साथ चलती है फिर दोनों कथाओं में संबद्धता और संतुलन पाया जाता है।
- गोदान एक राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास है।
- मालती व मेहता लखनऊ में रहते हैं।
- राय साहब सेमरी गाँव में रहते हैं।
- पंडित दातादीन के पुत्र का नाम मातादीन था।

गोदान

गोदान प्रेमचन्द्र जी का अन्तिम उपन्यास माना जाता है। यदि हमें तत्कालीन भारत को समझना है तो हमें निश्चित ही गोदान को पढ़ना चाहिए। इसमें देश-काल की परिस्थितियों का सटीक वर्णन किया गया है। कथा नायक होरी की वेदना पाठकों के मन में गहरी संवेदना भर देती है। संयुक्त परिवार के विघटन की पीड़ा होरी को तोड़ देती है, परन्तु गोदान की इच्छा उसे जीवित रखती है। आजीवन दुर्धर्ष एवं संघर्ष के बावजूद भी उसकी एक गाय की आकांक्षा पूर्ण नहीं हो पाती है। गोदान होरी की कहानी उस होरी की है जो जीवन भर मेहनत करता है और अनेक कष्ट सहता है केवल इसलिए कि उसकी मर्यादा की रक्षा हो सके।

प्रकाशन वर्ष	1936
भाषा	हिन्दी
लेखक	मुंशी प्रेमचन्द्र

प्रकाशक	हंस प्रकाशन
पृष्ठ	328
1) होरी के जीवन का सबसे बड़ा स्वपन था - गाय का दान	
2) जो दुष्ट किसी मेहरिया की तरफ ताके उसे गोली मार देनी चाहिए यह कथन किसका है। - भोला	
3) रायसाहब क्या थे? - वह राष्ट्रवादी थे, संगीत प्रेमी अच्छे लेखक थे।	
4) भिक्षुक को एक ही द्वार पर भरपेट मिल जाये, तो क्यों द्वार-द्वार घूमे? - गोबर का झुनिया से	
5) मी. खन्ना का पूरा नाम - चन्द्रप्रकाश खन्ना	
6) होरी की जमीन 5 बीघा थी।	
7) घर से भागकर गोबर को कौन सा काम मिलाय पौधे सिचने का	

मैला आँचल

प्रकाशन वर्ष - 1954 ई.



फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जीवन परिचय

फणीश्वर नाथ रेणु

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म	फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च, 1921 अररिया बिहार के अररिया जिले में फॉरबिसगंज के पास औराही हिंगवा गाँव में हुआ था।
उनकी शिक्षा	<ul style="list-style-type: none"> उनकी शिक्षा भारत और नेपाल में हुई। रेणु जी का बिहार के कटिहार से गहरा संबंध रहा है। पहली शादी कटिहार जिले के हसनगंज प्रखंड अंतर्गत बलुआ ग्राम में काशी नाथ विश्वास की पुत्री रेखा रेणु से हुई, हसनगंज के ही गांव महमदिया ग्राम में पद्मा रेणु की मायके हैं और रेणु जी के दो और पुत्री सबसे बड़ी कविता रॉय और सबसे छोटी वहीदा रॉय की शादी महमदिया और कवैया गांव में हुई है। प्रारंभिक शिक्षा फारबिसगंज तथा अररिया में पूरी करने के बाद रेणु ने मैट्रिक नेपाल के विराटनगर आदर्श विद्यालय से कोईराला परिवार में रहकर की। इन्होंने

	<p>इन्टरमीडिएट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में की जिसके बाद वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। बाद में 1950 में उन्होंने नेपाली क्रांतिकारी में भी हिस्सा लिया जिसके परिणामस्वरूप नेपाल में जनतंत्र की स्थापना हुई। पटना विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ छात्र संघर्ष समिति में सक्रिय रूप से भाग लिया और जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति में में अहम भूमिका निभाई।</p> <ul style="list-style-type: none"> उनके इस काल की झलक उनकी कहानी तबे एकला चलो रे में मिलती है। उन्होंने हिन्दी में आंचलिक कथा की नींव रखी। सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय, एक समकालीन कवि, उनके परम मित्र थे। इनकी कई रचनाओं में कटिहार के रेलवे स्टेशन का उल्लेख मिलता है।
लोकप्रिय उपन्यास	<ul style="list-style-type: none"> फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखा गया उपन्यास: मैला आँचल (1954), परती परी कथा (1957), जुलूस, दीर्घतपा कितने चौराहें कलंक मुक्ति, पल्लू बाबू रोड। इन्होंने अपने उपन्यासों में आंचलिक जीवन की हर धुन, गन्ध, लय, ताल, सुर, सुन्दरता और कुरूपता को अपने शब्दों में बाँधने की सफल कोशिश की है। इनकी भाषा-शैली में एक चमत्कार है, जो पाठकों को अपने साथ बाँधकर रखता है। 'रेणु' जी को जितनी ख्याति हिन्दी साहित्य में अपने उपन्यास 'मैला आँचल' से मिली, उतनी अन्य कृति से नहीं मिली। इस रचना के लिए इन्हें 'पद्मश्री' सम्मान से विभूषित किया गया।
प्रसिद्ध कहानियाँ	मारे गए गुलफाम, एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंच लाइट, तबे एकला चलो रे, ठेस, संवदिया।

मैला आँचल

मैला आंचल के पात्र

पुरुष पात्र

प्रशांत बनर्जी	मलेरिया का डॉक्टर, कमली का प्रेमी और दोनों का हितैषी युवक
तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद	मेरीगंज का सर्वाधिक प्रतिष्ठित तथा कानूनी दांव-पेंच में माहिर व्यक्ति
महंत सेवादास	मेरीगंज के मठ का विलासी एवं अंधा महंत जिसका दासी लक्ष्मी के अवैध संबंध था
ठाकुर रामकिरपालसिंह	राजपूत टोले का प्रमुख व्यक्ति अनपढ़ किंतु चतुर व्यक्ति
महंत सेवादास	पसरठा मठ का संत
महंत रामदास	महंत सेवादास का शिष्य, बाद में मेरीगंज के मठ का महंत
कालीचरण	यादव परिवार का निर्भिक युवक
बालदेव	कांग्रेसी नेता जो लक्ष्मी के प्रति अनुराग भाव रखता है।

गौण पुरुष पात्र

प्यारू	डॉक्टर प्रशांत का कर्मठ सेवक
तहसीलदार हरगौरी	अपनी धूर्तता का शिकार हुआ भ्रष्ट तहसीलदार
वासुदेव	कालीचरण का दाहिना हाथ, समाजवादी नेता
डब्ल्यू मार्टिन	मेरीगंज गांव के नाम का सूत्रधार
सोमा जट	खूंखार व्यक्ति कालीचरण का साथी
लरसिंह दास	कामुक एवं धूर्त साधू
रामकिसुन बाबू	कांग्रेसी कार्यकर्ता
जोतखी काका	कूपमंडूप ओझा (ज्योतिषी)
खेलावनसिंह यादव	यादवटोली का प्रमुख व्यक्ति

नारी पात्र

कमली- विश्वनाथ प्रसाद की पुत्री

लक्ष्मी- पसरठा मठ की सेविका

फुलिया- अनेक प्रेम प्रसंगों की नायिका बनी शिथिल चरित्रा

युवती रामपियरिया- महंत रामदास की दासी पत्नी बनी कुटिल युवती

गौण नारी पात्र

मंगला- चरखा सेंटर की सहृदय शिक्षिका

आभारानी- सहृदय कांग्रेसी कार्यकर्ता

पारवर्ती मौसी- अंधविश्वास की शिकार विधवा नारी

मैला आँचल के विषय

- रेणु जी ने इस उपन्यास का काल-खण्ड एकदम उपयुक्त चुना है। कहानी देश आजाद के कुछ समय पहले अर्थात् 1942 से शुरू होती है।
 1. एक गाँव में प्रचलित जातिवाद
 2. राजनीति की दारुण निरर्थकता और मानवतावाद
 3. सामाजिक स्थिति का चित्रण
 4. जमींदार प्रथा
 5. जातिप्रथा का चित्रण
 6. राजनैतिक और धार्मिक विसंगतियों का वर्णन
 7. स्वदेशी का महत्व
 8. भूमि सम्बन्धी समस्या का चित्रण
 9. जन सामान्य के शोषण की समस्या
- इसके माध्यम से अंग्रेजों का राज करने का तरीका देखने का मौका मिलता है और साथ ही साथ कांग्रेसी गतिविधियों को दिखया जा सकता है।
- बाद में सोसलिस्ट पार्टी ने भी गाँव में अपने झंडे गाड़ दिये थे।
- इन दोनों पार्टियों की विचारधारा और कार्य करने के तरीकों में अन्तर को विभिन्न घटनाओं के द्वारा दर्शाया गया है।
- देश की आजादी का लोगों पर क्या प्रभाव हुआ उसकी प्रतिक्रिया भी उपन्यास में दिखाई गई।
- लोगों ने यह पूछा कि आजादी के कारण जमीनी बदलाव क्या हुए? बाद में जब भारत के लिए एम. एल.ए., मिनिस्टर आदि पदों पर बैठने लगे तो उनके भ्रष्ट होने को भी दिखाया गया है।

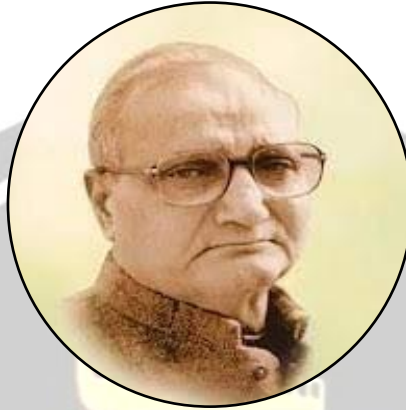
महत्वपूर्ण बातें

- मैला आँचल (1954 ई.) से आंचलिक उपन्यास लेखन परंपरा का आरंभ माना जाता है।
- मलेरिया सेंटर की जमीन का क्षेत्रफल 1 एकड़ 10 डेसीमल
- गाँव का नाम- मेरीगंज
- भौगोलिक स्थिति- रौतहट स्टेशन से 7 कोस पूर्व कोसी नदी को पार करके।
- गाँव का नाम अंग्रेज अफसर डब्लू. जी. मार्टिन ने अपनी दुल्हन मेरी के नाम पर रखा।
- मलेरिया सेंटर मिस्टर मार्टिन की ज़मीन पर बना था।
- नवाबी तड़बन्ना- कोसी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ एवं खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है, इसे ही नवाबी तड़बन्ना कहते हैं।
- गाँव की मुख्य पैदावार धान पाट खेसारी
- गाँव में अलग-अलग जातियों के लोग अलग-अलग टोली बनाकर रहते हैं।
- स्वयं को श्रेष्ठ दिखाने की होड़ रहती है।
- राजपूत टोली के लोग कायस्थ टोली को 'कैथटोली' कहते हैं, गाँव की अन्य जातियों के लोग 'मालिक टोला' कहते हैं। कायस्थ टोली के लोग राजपूत टोली को सिपहिया टोली कहते हैं।
- मठ में सुबह बीजक सबद का वाचन होता है।
- चंदनपट्टी नामक गाँव में हुई सभा में बालदेव, बावनदास एवं चुन्नी गुसाईं तीन ने सुराजी में नाम लिखवाये थे। 'सुराजी' पद से आशय स्वराज्य चाहने वाले कांग्रेस के सदस्यों से है।
- जोतखी नामक चरित्र तुलसी की चौपाई का उल्लेख करता है- "नदी चलि भरि उतराई, जस थोरे धन खल बौराई । " -छुद्र
- उपन्यास दो खण्डों में विभाजित किया गया है, जिसमें प्रथम खण्ड को चवालीस परिच्छेदों में एवं दूसरे खण्ड को तेईस परिच्छेदों में बाँटा गया है। नीचे महत्वपूर्ण परिच्छेदों की चर्चा की गयी है-
 - पहले खंड के परिच्छेद 11 में सुरंगा सदाबृज की कथा का जिक्र है।
 - खंड 1 के परिच्छेद 15 में लोरिक या कुंवर बिज्जेभान (विजयभान) एवं बिदापत नृत्य में का जिक्र है। बिदापत नृत्य बीच में विद्यापति का गीत 'अरे अपजस होइत जगत भरि हो' गाया जाता है।
 - परिच्छेद 24 में भवभूति की रचना के पात्र माधवमालती का जिक्र है।
 - परिच्छेद 27 में पंत की कविता 'भारतमाता' का जिक्र
- "भारत माता ग्रामवासिनी
- खेतों में फैला है श्यामल
- धूल भरा मैला-सा आंचल । "
 - परिच्छेद 36 में हंस कुमार तिवारी की कविता का जिक्र
- "दुनिया फूस बटोर चुकी है
- मैं दो चिनगारी दे दूंगा।'
- परिच्छेद 37 में वर्षा के देवता माने जाने वाले इंद्र को रिझाने के लिये महिलाओं द्वारा 'जाट जट्टिन' खेल खेला जाता है। यह खेल पुरुष नहीं देख सकते।
- परिच्छेद 30 में संथाल टोली और अन्य में हुए हिंसक संघर्ष में संथाल तीर से तो अन्य भाला और गुलेल से लड़ते हैं। इसी संघर्ष में तहसीलदार हरगौरी सिंह मारा जाता है।
- राजबल्ली महतो हारमोनियम बजाता है।
- स्वराज मिलने के उत्सव में निम्न में कार्यक्रम तय होते हैं- बलवाही, बिदेशिया, कमला एवं महमदिया की नौटंकी कंपनी । धमदाहा-शंकरपुर का बिदापद, बँसगढ़ा की बलवाही, औराही हिंगना की भठियाली भक्तै।
- दूसरे खंड के परिच्छेद 18 में गांधीजी की हत्या का जिक्र है।

- परिच्छेद 20 में नागर नदी के भारत-पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) के बीच सीमा रेखा होने का जिक्र है।
- कमली और डॉक्टर प्रशांत के पुत्र का नाम ममता कुमार निलोत्पल' (नीलू) रखती है।

राग दरबारी

प्रकाशन वर्ष - 1960 ई.



राग दरबारी (श्रीलाल शुक्ल) का जीवन परिचय

पात्र

मुख्य पात्र

- वैद्य जी** : यह गाँव की केंद्रीय सत्ता के प्रतीक हैं जो गाँव की राजनीति के मास्टमाइंड हैं।
- बद्री पहलवान** : वैद्य जी के बड़े बेटे। शरीर को सुगठित बनाने का अभ्यास करने में व्यस्त तथा अपने आश्रय में रहने वालों की देखभाल करते थे।
- रूपन**: वैद्य जी के छोटे बेटे और कई वर्षों से 10वीं कक्षा के छात्र थे और छात्र नेता भी थे।
- रंगनाथ** : वैद्यजी के भाँजे। इतिहास से एम.ए करके लगभग 5-6 महीने के लिये छुट्टी पर शिवपालगंज आए।
- छोटे पहलवान** : बद्री पहलवान के शिष्य। गाँव की राजनीति में सक्रियता रखने वाले। अपने पिता से बदतमीज़ी करने वाले।
- प्रिंसिपल साहब**: छंगामल इंटर कॉलेज के प्राचार्य कॉलेज की साजिशों में महत्वपूर्ण स्थान।
- खन्ना मास्टर** : छंगामल इंटर कॉलेज में इतिहास के अध्यापक।
- मास्टर मोती राम**: छंगामल इंटर कॉलेज में अध्यापक साथ ही आटा चक्की का काम करने वाले।
- जोगनाथ** : स्थानीय गुंडा, हमेशा नशे में रहने वाला।
- सनीचर**: असली नाम मंगलदास वैद्यनाथ जी का नौकर उपन्यास के अंत में प्रधान बनाया जाता
- लंगड़** : भ्रष्ट व्यवस्था का शिकार
- बेला**: गयादीन की कुंवारी लड़की। जो कुंवारी रहकर वैवाहिक जीवन का आनन्द लेती है।
- रामाधीन भीकमखेड़वी** : अफीम का कारोबार करता था। वैद्यजी का विरोधी।

गौण पात्र

कालिका प्रसाद, कुसहर प्रसाद, गयादीन, पंडित राधेलाल, शत्रुघ्न सिंह, रिपुदमन, सर्वदमन सिंह, डा. बलराम सिंह

विशेष

- कस्बाई जीवन की व्यंग्यपूर्ण अभिव्यक्ति एवं ग्रामीणकरुणाई जीवन की आलोचना ।
- रागदरबारी में भाषा प्रयोग के विविध रूप दिखाई देते हैं। एकतरफ ग्रामीण पात्र, वैद्यजी, रुप्पन, सनीचर, जोगनाथ आदि की भाषा गाँव के परिवेश से है, वहीं शहर से आए रंगनाथ की भाषा में बौद्धिकता है। शराबी, जुआरी की भी अपनी गँवई भाषा है।
- लोकजीवन के शब्द- लकदक, चकाचक, फंटूश, खड़दूस, तिड़ी-बिड़ी, कल्लाना, लुलुहाना, कुकुरहॉव, चिड़ीमार, चुरेंट, हड़काना आदि।

कथासार

- इस उपन्यास की कहानी किन्हीं मुख्य किरदारों के इर्द-गिर्द नहीं घूमती । उपन्यास में अनेक पात्र हैं और सबकी अपनी अहमियत है। गाँव की राजनीति मुख्य तौर पर दो ध्रुवों पर केंद्रित है। एक है वैद्यजी और दूसरा रामधीन भीखमखेड़वी वैद्यजी बड़े चालाक, चतुर। और कुटिल पात्र हैं। वे अप्रत्यक्ष रूप से ही सही पर गाँव के कॉलेज और कोऑपरेटिव पर कब्ज़ा जमाए बैठे थे। उनके दो पुत्र हैं, दोनों शैक्षिक मामले में भदेस हैं। बड़ा बेटा पहलवानी करता है और छोटा रुप्पन कई सालों से दसवीं का छात्र है, तथा छात्रों के बीच नेता बना बैठा है। रंगनाथ, वैद्यजी का भाँजा है जो शहर से पढ़कर मामा के गाँव शिवपालगंज आता है। वह अपने किताबी आदर्शों को लेकर गाँव पहुँचता है। धीरे-धीरे उसका सामना पुलिस तंत्र, न्याय तंत्र, शैक्षिक तंत्र और सामाजिक तंत्र में व्याप्त बुराईयों से होता है।
- रंगनाथ ने अप्रत्यक्ष रूप से बेईमानों के विरुद्ध लड़ने के लिये एक पक्ष को उकसाया भी पर उसकी कोशिश सफल नहीं हुई और उसने भी हार मान ली और गाँव छोड़कर जाने का फैसला कर लिया। इसी प्रसंग में एक पात्र उससे कहता है कि जाओगे कहाँ? हर जगह तो बेईमान और भ्रष्टाचार व्याप्त है। इस बात से लेखक ने यह संकेत किया है कि देशभर में न जाने कितने ऐसे शिवपालगंज भरे पड़े हैं!
- इस उपन्यास में रागदरबारी से अभिप्राय है कि वैद्यजी की बैठक (दरबार) केवल उन्हीं का राग न होकर समूचे देश के प्रमुख सत्ता प्रतिष्ठानों का भी राग बन गया है। जिसमें राष्ट्रीय प्रजातंत्र में पंचायत, ग्राम सभा, सहकारी समितियों के चुनावों में हथकंडे से लेकर गुटबंदी, तिकड़मबाज़ी, शोषण, उत्पीड़न चौतरफा व्याप्त

न्याय की स्थिति का चित्रण

- बेशर्मी के साथ बेईमानी का चित्रण
- जमींदारी प्रथा के प्रभाव की कमी
- राजनीति में भ्रष्टाचार का चित्रण
- गाँवों में आपसी रंजिश का चित्रण
- शिक्षित व्यक्ति (रंगनाथ) की आँखों के माध्यम से
- गाँवों में दयनीय स्थिति को दिखलाया।

परिचय

श्रीलाल शुक्ल कृत रागदरबारी हिंदी साहित्य के अमर उपन्यासों में से एक है। यह पूर्णतः व्यंग्य शैली में लिखा गया है जिसमें हास्य का पुट भी कई बारगी नज़र आता है। यह

	<p>उपन्यास स्वतंत्र भारत की ईमानदारी, नैतिकता, न्याय और शिक्षा व्यवस्था की खुलेआम धज्जियाँ उड़ाता है।</p> <p>इस उपन्यास के लिये श्रीलाल शुक्ल को प्रकाशन के अगले वर्ष ही 1969 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह रचना आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।</p> <p>'राग दरबारी' पैंतीस अंशों में विभक्त रिपोर्ताज शैली में रचित उपन्यास है।</p>
महत्त्वपूर्ण उपन्यास	<p>'राग दरबारी' हिंदी का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है जो पूर्णतः व्यंग्य शैली में लिखा गया है। लेखक शिवपालगंज नामक गाँव के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत की शासन व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था आदि की पोल खोलकर रख देता है। व्यंग्य शैली में होने के कारण हँसी-मजाक और रोना दोनों का अनुभव एक साथ होता है। यहाँ धारदार व्यंग्य मनोरंजन के साथ-साथ पाठक को आत्मनिरीक्षण का भी अवसर बखूबी प्रदान करता है। भारतीय शासन व्यवस्था एवं व्यक्ति में व्याप्त धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार, वंशवाद, जातिवाद इत्यादि को कुछ इस तरह उभारा गया है कि पाठक उनकी तहों तक पहुँचता है।</p>



JSSC CGL 2024





मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)



हिन्दी-ई-बुक



सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

खुद ASO अधिकारी एवं विवेक सर के मार्गदर्शन में तैयार



विवेक सर

4

कहानियाँ

► मधुआ - जयशंकर

मधुआ कहानी में कवि श्री जयशंकर प्रसाद एक शराबी के मानवीय संवेदना की भूमिका स्पष्ट करते हैं।

रस कहानी में शराबी अपने जीवन को मल्यहीन मानकर मनमाने जीवन को चला रहा था। शराबी अपने पीने के इंतजाम के लिए दूसरों को कहानियाँ सुनाकर उनका मन बहलाकर उनसे जो पैसे करता प्राप्त उन पैसे को शराब (मदिरा) में उड़ाया करता था।

लखनऊ में ठाकुर साहब का लड़का पढ़ता था। ठाकुर साहब यदा-कदा लखनऊ जाते थे।

किस्सा कहानी सुनना उनकी पुरानी आदत थी। एक दिन उनकी मुलाकात एक गप्पी शराबी से हुई उसके कपड़ों से शराब की गंध आ रही थी। ठाकुर साहब के पूछने पर कहता है कि सात दिन एक बूँद भी गले के नीचे नहीं गयी है।

ठाकुर साहब ने आश्चर्य से पूछा कि सात दिन से कुछ भी नहीं फिर भी पीना ही चाहते हो इसके पश्चात उसने ऐसी कहानी सुनाई बड़े-बड़े लोग पल भर राजा से रंक हो जाते हैं।

उस दिन ठाकुर सरदार सिंह जी की तबियत कुछ ठीक नहीं थी इसलिए सरदार

जी ने शराबी से कहानी सुनकर उसे रुपए दे कर जाने को कहा और कहा जमादार लल्लू को भेज देना जब वह लल्लू को ढूँढ रहा था तब वह फाटकके बगल वाली कोठी से एक बच्चे की

सिसकियों भरी आवाज सुनता है, कुंवर साहब सिंह एक गोरे से एवं सुन्दर मुख वाले मधुवा

नामक अनाथ बालक को डांट रहा था और वह बच्चा सिसकियां ले लेके रो रहा था शराबी उसे

बच्चे के पास जाता है और आंसू पोछकर कर उसकी गोद में उठाकर ले चला जाता है थोड़ी देर

शांत रहने के बाद वह बच्चा रोने लगता है शराबी उसको गोद से उतारकर रोने का कारण पूछने

लगता है। इस पर वह उत्तर देता है कि मैंने सुबह से कुछ खाया नहीं साहब काम बचा हुआ

करवा रहे थे जब मैंने खाना के लिए बोला तब वह डांटने लगे।

शराबी उस बच्चे को गंदी सी कोठी में लाकर बिठा देता है और सरदार सिंह जी द्वारा मिले रुपए

से मधुआ के लिए पूरियां एवं मिठाई ले आता है मधुरा खुद एवं शराबी को खिला देता है। और बचा

हुआ सुबह के लिए रख देता है।

शराबी रात- भर उधेड़-बन में रहा कि मधुआ को भगा कर वहीं जिंदगी जी रहा हूँ वही जी लूँ या

मधुवा की जिम्मेदारी उठाऊँ और वह जब सुबह उठता है वह मधुआ से कहता बचा हुआ खाना

खाकर यहां से चले जाना और इतना कहकर वह गोमती के तट हाथ - मुंह धोने चला जाता है और

अंत में वह जब गोमती तट पर बैठा हुआ था वह पीछे से उसके मित्र राम जी की आवाज अपनी

कल (धार रखने वाली मशीन) मेरे घर रखी है ले जाओ इतने में उसको सब याद आ जाता है और

वह निर्णय लेता है की शराब का त्याग कर देगा मधुआ को कुशल कारीगर तथा मधुआ का पालन-पोषण करने का उत्तरदायित्व अपने मन में दृढ़ - संकल्प करता है।

जन्म	30 जनवरी 1889
निधन	15 नवम्बर 1937
जन्म स्थान	वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
कुछ प्रमुख कृतियाँ	
कामायनी, आँसू, कानन-कुसुम, प्रेम पथिक, झरना, लहर	
विविध	
हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। प्रसाद जी ने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई।	

❖ जीवन परिचय

जन्म: ३० जनवरी १८९० को वाराणसी में। स्कूली शिक्षा आठवीं तक किंतु घर पर संस्कृत, अंग्रेज़ी, पाली, प्राकृत भाषाओं का अध्ययन। इसके बाद भारतीय इतिहास, संस्कृति, दर्शन, साहित्य और पुराण कथाओं का एकनिष्ठ स्वाध्याय। पिता देवी प्रसाद तंबाकू और सुंघनी का व्यवसाय करते थे और वाराणसी में इनका परिवार सुंघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध था। छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक। एक महान लेखक के रूप में प्रख्यात। विविध रचनाओं के माध्यम से मानवीय करूणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक गौरवपूर्ण पक्षों का उद्घाटन। ४८ वर्षों के छोटे से जीवन में कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचनात्मक निबंध आदि विभिन्न विधाओं में रचनाएं। १४ जनवरी १९३७ को वाराणसी में निधन ॥



▶ ठाकुर का कुँआ - प्रेमचन्द्र

❖ उद्देश्य

उपन्यास एवं कहानी' पाठ्यक्रम की चौदहवीं इकाई 'ठाकुर का कुँआ' आपके सामने हैं। प्रेमचन्द्र इस कहानी के माध्यम से भारतीय जातिप्रथा की सबसे घृणित परंपरा अस्पृश्यता के कारण तिरस्कार, अपमान और मानवीय अधिकारों से वंचित जीवन जी रहे अछूतों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को अभिव्यक्त किया है। पानी के लिए तरसते अछूतों अद्भुत जीवन की वास्तविकता की यह कहानी है। प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप भारतीय समाज में जातिप्रथा के कारण गैर-बराबरी, अभाव, विपन्नता, तिरस्कार, उत्पीड़न को सह रहे तमाम अछूत वर्ग को त्रासदी को जान सकेंगे। उस पर गहराई से सोच सकेंगे और साथ-साथ :

इंसान ने ही जातिगत भेदभाव के आधार पर गैरबराबरी को बढ़ावा देकर उसे स्थायी रूप देने के लिए अनेकानेक धार्मिक, पारंपरिक, सनातनी ढकोसलों का सहारा लिया और किस प्रकार करोड़ों अछूतों को इंसान होने के दर्जे से नीचे गिराकर गुलामों का जीवन जीने पर मजबूर किया, इस वास्तविकता को आप जान सकेंगे।

अछूत गंगी को पानी के लिए जातिप्रथा और छुआछूत परंपरा को बाधाओं को पार करके जीवन को दांव पर लगाना पड़ता है इस सच्चाई से आप परिचित हो सकेंगे ;

गंगी की अछूत बस्ति में उनका अपना कुँआ न होना अछूतों की गरीबी और आर्थिक विपन्नता की स्थिति को दर्शाता है। अछूत बस्ति आर्थिक रूप से इतनी बिपन्न क्यों है ? के सवाल को भी समझने में यह इकाई आपकी सहायता करेगी ;

अस्पृश्यता का व्यवहार करने वाले हिन्दुओं से संघर्ष करने के स्थान पर गंगी का पलायन करना, समस्या का समाधान नहीं है, बल्कि जातिप्रथा और अस्पृश्यता निर्मूलन के लिए गंगी द्वारा कड़ा संघर्ष करने की आवश्यकता थी सहमत हो सकेंगे। उससे आप सहमत

❖ कहानी का आशय

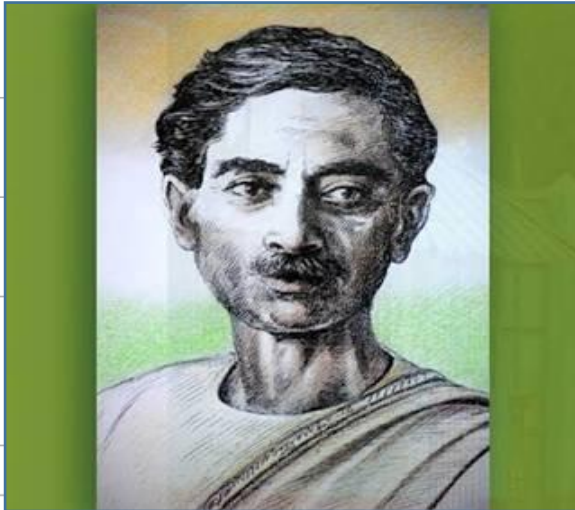
जोखू बीमार है, और प्यास के कारण बेहाल है गंगी कल रात जो पानी भर लायी थी, तब उसमें बांस नहीं थी। लेकिन जब दूसरे दिन जोखू पानी पीने लगता है तो उसमें से सड़ी हुई बांस आती है। गंगी उसे पानी पीने से रोक देती है। उसे डर है कहीं जोखू और ज्यादा बीमार हो जाए। वह ताज़ा पानी भर लाने की बात करती है। लेकिन जोखू उसे मना करता है कि ठाकुर के कुँएँ पर कौन चढ़ने देगा। नाहक हाथ - पाब तुड़वा आयेगी इसलिए उसे बहु चुपचाप बैठी रहने के लिए कहता है। वह जानता है कि अंसभव है कि गंगी ठाकुर या साहू के कुँएँ पर चढ़कर पानी ले आ

सकती है। गंगी जिद करती है कि वह कम से-कम मांगकर ही सही एक लोटा पानी ले आएगी वह देर तक इंतजार करती है और जब सभी लोग सोने चले जाते हैं, ठाकुर दरवाजा बंद करके अंदर चला जाता है वह लपककर कुँए पर चढ़ जाती है। घड़ा पानी भी वह खींच लेती है। घड़ा जगत पर रखने ही वाली होती है कि ठाकुर का दरवाजा खुलता है। गंगी देखती है कि शेर से भी भयंकर मुँह वाला ठाकुर दरवाजे पर खड़ा है। दहशत के मारे गंगी के हाथ से रस्सी छूट जाती है और घड़ा पानी में गिरने की आवाज़ सुनाई देती है। गूंगी पूरी ताकत से कुँए की जगत से कूद कर भागती दुई घर पहुँचती है। वह देखती है कि जोखू लोटा मुँह को लगाए वही मैला गंदा पानी पी रहा है। कहानी यहाँ समाप्त होती है। एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न छोड़ देती है, पाठको के लिए। यह प्रेमचंद्र की सबसे छोटी कहानी है, लेकिन एक ज्वलंत समस्या की ओर संकेत करती है। जातिप्रथा की जकड़न उसकी अमानवीयता और अछूतों की दीनहीन स्थिति को उजागर करती है।

❖ सारांश

आपने 'मकुर का कुआँ' कहानी के पाठ को ध्यान पूर्वक अध्ययन किया है। इस पाठ को पढ़ने के बाद आपके सामने कहानी के माध्यम से उठाई गई 'सामाजिक समस्या का एक संपूर्ण चित्र उभर आया होगा। प्रेमचंद्र ने तत्कालीन समय में भारतीय समाज की ज्वलंत समस्या जातिप्रथा से उत्पन्न छुआछूत जैसी अपमानजनक, मानवता विरोधी, जघन्य परंपरा की वास्तविकता को उघाड़ा है। जातिप्रथा को प्रश्रय देने वाली सामंति व्यवस्था की क्रूरता को चित्रित किया है। जोखू और गंगी अछूत है इसलिए उन्हें सवर्णों के कुँए से पानी पीने का लेने का अधिकार नहीं। अछूत जीवन की मूलभूत जरूरतों के लिए सवर्ण या तथाकथित उच्च मानी गई जातियों पर निर्भर है। सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जगहों में उनकी उपस्थिति निषेधाई मानी गई तथा संपत्ति प्राप्त करने व रखन के भी ये अधिकारी नहीं। आर्थिक उत्पादन की संपूर्ण व्यवस्था में इनकी भागीदारी केवल बेगारी करने वाले मजदूर मात्र की है। उत्पादन के साधनों पर अधिकार के अभाव में अछूत गरीबी की दयनीय स्थिति में पानी, अन्न से वंचित जीवन जीने के लिए बाध्य है। गंगी और जोखू के कथन में उनकी इस स्थिति की वास्तविकता चित्रित हुई है। जाति के श्रेष्ठ और कनिष्ठ होने के आधार पर सामाजिक सम्मान या अपमान, आर्थिक संपन्नता या अभाव धार्मिक अधिकार या पंचना, राजनीतिक सत्ता अथवा गुलामी, मानव अधिकारों की प्राप्ति या वंचित होना निश्चित है अछूत जोखू की को पीने का पानी हासिल न होना तथा पानी की तलाश में गंगी का भयग्रस्त, शंकित अपमानित स्थिति से गुजरना दलित जीवन की प्रासदी को अभिव्यक्ति देता है। ठाकुर के कुँए से दो स्वर्ण महिलाओं का बहिचक, अधिकार पूर्ण विश्वास के साथ चढ़कर पानी लेने लिए घूंसे इंतजार कसा भरना और गंगी का पेड़ों की ओट में छिपकर ठाकुर के कुँए पर चढ़कर पानी लेने के लिए घंटों इंतजार करना अछूतों की सामाजिक स्थिति को स्पष्टतः बयान करता है। जातिप्रथा मूल उल्लंघन करने पर एक अछूत को मिलने वाले दंड की गूंगी को जानकारी है। हाथ-पांव तोड़ने से लेकर मृत्युदंड तक की सजा मिल सकती हैं। उसका यह अपराध दंडनीय है जबकि पंडित का अपने घर को धुंआ घर बनावे, ठाकुर द्वारा गरीब को भेड़

चुराकर खा जाने और साहू द्वारा घी में तेल की मिलावट करने जैसे अपरोधो को अपराध नहीं माना जाता बल्कि स्वर्ण जातियों को जाति श्रेष्ठ के ऐवज में मिले अधिकारों के रूप में मान्यता ही मिली है। यह एक ऐसे समाज का यथार्थ चित्र है जिसमें इंसान अंधेरे विवर में ढकेल दिया गया है, जहाँ से ऊपर उठने का कोई रास्ता नज़र नहीं आता। प्रेमचंदकालीन अस्पृश्यता समस्या को चौपन्न वर्षों की आजादी नष्ट नहीं कर पाई है। आज भी अछूत अस्पृश्यता के कारण अपमानबोध से ग्रसित है। गरीबी की स्थिति में अभावपूर्ण जीवन जीने के लिए विवश है। पानी के स्रोत अभी भी इनके छूने से अपवित्र होते हैं, यह तथाकथित उच्च वर्ग की मानसिकता में जस का तस बैग हुआ है। चार वर्ष की अछूत धूम की आंख आज भी उसी के द्वारा फोड़ दी जाती है, जब अछूत बालिका प्यास बुझाने के लिए स्वर्णों के लिए रखे मटके से पानी पीना चाहती है।

पूरा नाम	मुंशी प्रेमचंद	
अन्य नाम	नवाब राय	
जन्म	31 जुलाई, 1880	
जन्म भूमि	लमही गाँव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश	
मृत्यु	8 अक्टूबर 1936	
मृत्यु स्थान	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	
अभिभावक	मुंशी अजायब लाल और आनन्दी देवी	
पति/पत्नी	शिवरानी देवी	
संतान	श्रीपत राय और अमृत राय (पुत्र)	
कर्म भूमि	गोरखपुर	
कर्म-क्षेत्र	अध्यापक, लेखक, उपन्यासकार	
मुख्य रचनाएँ	ग़बन, गोदान, बड़े घर की बेटी, नमक का दारोगा आदि	
विषय	सामाजिक	
भाषा	हिन्दी	
विद्यालय	इलाहाबाद विश्वविद्यालय	
शिक्षा	स्नातक	
प्रसिद्धि	उपन्यास सम्राट	
नागरिकता	भारतीय	
साहित्यिक	आदर्शोन्मुख यथार्थवाद	
आन्दोलन	प्रगतिशील लेखक आन्दोलन	
अन्य जानकारी	प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षों बाद उन्होंने यह नाम अपनाया था। उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था	

► नीलम देश की राजकन्या - जैनंद्र कुमार

नीलम देश की राजकन्या कहानीकार जैनंद्र कुमार रचित एक मनोवैज्ञानिक कहानी है प्रस्तुत कहानी में कथानक का ताना बाना नीलम देश की राजकन्या केंद्र में रखकर गुना गया है वह अपनी सखियों के संग खुश रहती है। परंतु जाने क्यों उदास रहने लगी। किनारियों को वह बहुत दुह्त्कारती है और अकेलापन उसे अच्छा लगता है। उसे जैसे किसी की प्रतीक्षा हो पर कोई राजपुत्र नहीं आता है। यदि वह चारों तरफ देख आती है एक दिन किन्नर बलाएं हाथ में उपहार लिए प्रस्तुत होती है उनके मुंह से राजपुत्र की इच्छा से उपहार प्रस्तुत लाने जाने की बात सुनकर राज कन्या उन्हें कैदखाने में डाल देने की बात कहते हैं। तत्पश्चात राजकन्या अपने किन्नर साथियों से एक-एक करके मिलकर उन्हें के साथ क्रीडा में मग्न हो जाती है।

प्रस्तुत कहानी में केंद्रीय पात्र नीलम देश की राजकन्या का मन बदलता रहता है। किंतु एकाएक अपने मन में किसी की प्रतीक्षा का आभास पकड़ और उदास रहने लगती है। किनारियां उसे अकेला छोड़ देती है। राजकन्या पुखराज, हीरे, पन्ने के महल में अपने सपने में उपस्थित हुए राजकुमार को ढूंढती है। उदास होती है तत्पश्चात उसे अकेलापन चलता हुआ प्रतीत होता है।

राजकन्या को केन्द्रीयता प्राप्त होने के कारण चरित्र ही प्रधान रहता है। यही है कि यहाँ कहानीकार द्वारा चारत का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। "नीलम देश कर राजकृत्या रूप में चित्रित हुई है जो अपने सखियों के साथ क्रीडा में मग्न होती है। किसी की प्रतीक्षा का आभास पाकर उदासी रहने लगती है और उसे प्रतीक्षा ही सत्य प्रतीत होने लगती है ऐसा कहानीकार का मानना है।

किसी कहानी में सवाद पात्रों के चरित्रोद्घाटन में सहायक होता है। जिनका अन्य सेवादोलत ही गुणों से युक्त होने के साथ ही प्रभोत्पादक और व्यंजक होना अत्यंत आवश्यक है। इस दृष्टि से नीलम देश की राज कन्या कथन किन्नरियों के प्रति "तुम जाओ मुझे तो तुमने बहुत आनंदित कर दिया मैं उतने योग्य नहीं हूँ बस तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ मुझे अब अकेला छोड़ दो राजकन्या का कथन कैसा राजकुमार ! कौन राजकुमार तुम मेरी बेरीन क्यों बनी हो"

राजकन्या का कथन- "नहीं- नहीं सखियों ऐसी बात मत कह हम सब बचपन की संगिनी है। तुम्हारे बिना मैं क्या कहूँ? चित्र- कभी उदास हो जाता है। सो जाने क्यों ? पर मैं तुम लोगों से अलग नहीं हूँ तुम्हारी हूँ। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार द्वारा राजकन्या की मानसिक स्थिति को दर्शाने के लिए कई स्थानों पर वह वातावरण का चित्रण किया गया है।

इस दृष्टि से कुछ के उदाहरण दृष्टव्य है - " बड़े प्रसाधों के आंगनों और कोष्ठों में जा जाकर राजकन्या अपने को बहलाती फिरती है पर सब तरुणी संगीनियों के बीच घिरी रहकर ही जाने कैसे सुना लगता है"

“चारों ओर होता हुआ अट्टहास चीत्कार रूप घर उठा मानव सहस्त्रो कंकाल दांत किट- किट आकार विकट रूप से गर्जन कर हो रहा हो। हवा प्रचंड हो उठी। समुद्र दुन्दाती (भयंकर) रूप से महल पर फन रूप से फटक कर फुत्कार करने लगा। जान पड़ा सब ध्वान्श हो जाएगा।” प्रस्तुत कहानी में राशि कन्या के माध्यम से नारी चरित्र की प्रकृत भाव दशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण करना कहानीकार का एकमात्र उद्देश्य रहा है। कहानी में प्रयुक्त भाषाशैली में साहित्यिकता गंभीरता और प्रतीकात्मकता विद्यमान है। प्रस्तुत कहानी विषय के अनुसार शीर्षक नीलम देश की राजकन्या औचित्य पूर्ण है। इसलिए हम यह कर सकते हैं कि नीलम देश की राजकन्या कहानी कला के तत्वों से युक्त कहानी है और यह कहानीकार की सबसे उत्कृष्ट कहानी है। इस कहानी में कहानीकार आशातीत सफलता मिली है।

जैनेंद्र कुमार

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में जैनेंद्र (2 जनवरी 1905 से 24 दिसंबर 1988) का विशिष्ट स्थान है। वह हिंदी उपन्यास के इतिहास में मानोविश्लेषणत्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में मान्य है। जैनेंद्र अपने पात्रों की सामान्य गति में सूक्ष्म संकेत की निहित कीखोज करके उन्हें बड़े कौशल से प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्रों की चारित्रिक विशेषताएं इसी कारण से संयुक्त होकर उभरती हैं। जैनेंद्र के उपन्यासों में घटनाओं की संघघटनात्मक और बहुत कम बल दिया गया मिलता है। चरित्रों की प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं के निर्देशक सूत्र ही मनोविज्ञान और दर्शन का आश्रय लेकर विकास को प्राप्त होते हैं।



जन्म :- 1905 अलीगढ़ के कौड़ियागंज गांव में

मृत्यु :- 24 दिसंबर 1988

नागरिकता :- भारत, ब्रिटिश राज, भारतीय अधिराज्य,

पेश :- लेखक

प्रसिद्धि का कारण :- मुक्तिबोध

पुरस्कार :- साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्मभूषण।

बचपन का नाम :- आनंदीलाल

प्रारंभिक परीक्षा :- मामा द्वारा हस्तिनापुर में की गई “गुरुकुल” की स्थापना

उच्च शिक्षा :- काशी हिंदू विश्वविद्यालय

▶ परिंदे - निर्मल वर्मा

लतिका कान्वेंट स्कूल में अध्यापिका एवं स्कूल की वार्डन है। स्कूल की पहाड़ी इलाके में है। लतिका कुमायनी रेजीमेन्ट में कार्यरत कैप्टन नेमी गिरीश नेगी से प्रेम करती है। कैप्टन गिरीश मृत्यु की जम्मू एवं कश्मीर दौरे पर हो जाती है। लतिका कभी ना विवाह का निर्णय लिए कैप्टन नेगी की यादों में जीवन बिताना प्रारम्भ कर देती है।

डा. मुखर्जी जो की वर्मा एवं जापान के आक्रमण के कारण सपली भारत आते है रास्ते में आते समय डा. मुखर्जी की पत्नी की मृत्यु हो जाती है। डा. मुखर्जी कान्वेंट स्कूल में विज्ञान के शिक्षक पद पर कार्यरत हो गए थे उनकी यह इच्छा भी इच्छा थी कि जीवन में मरने से पहले वर्मा अवश्य जाएंगे।

मि. हयुवर्ट कान्वेंट स्कूल में संगीत अध्यापक के पद पर कार्यरत थे इनको पियानो बहुत अच्छी तरीके से बजाना आता था। इन्होंने लतिका के लिए एक प्रेम भरा पत्र तथा भावुक याचना से भरा पत्र लिखा था तथा लतिका को जब पत्र मिला तो उसे लगा लतिका नाराज होगी या उत्तर देगीपर इन दोनों स्थितियों में से कुछ भी नहीं हुआ पर लतिका को यह एहसास मात्रा हुआ कि अभी भी वह आकर्षण का बिंदु हो सकती है।

कहानी एक दिन की है छुट्टियों से एक दिन पहले फादर का सत्संग विद्यालय में था छुट्टियों पहाड़ी इलाके में सिर्फ सर्दियों के दिनों में हुआ करती थी। उस दिन छुट्टियों से एक दिन पहले सभी लड़कियाँ रोज की तरह नहीं दिख रहीं थी उनके चेहरे पर घर जाने की एक चाह चेहरे रिक्त रहे थे।

जूली हॉस्टल की एक लड़की जिसका प्रेम पत्र जो कुमायिनी रेजीमेंट में कर्नेल थे उनका पत्र जो की नीले रंग का था आया पत्र जूली को ना मिलकर लतिका को मिलालतिका सख्त अनुशासन वाली हॉस्टल वार्डन थी उसने पत्र तो जूली को नहीं दियापर डांट भी लगे जूली को। स्कूल में ऐसी व्यवस्था थी कि जो छुट्टियों में भी घर न जाना चाहे वह अपने खर्चे पर वहां रुक सकता था। लतिका छुट्टियों में घर नहीं जाती थी वह कैप्टन नेगी की यादों से दूर नहीं जाना चाहती थी।

छुट्टी हो गई सभी लड़कियां चली गई पर जब लतिका छत पर गई तब उसने देखा कि सभी लड़कियों के दरवाजे बंद थे सिवाय जूली का जब वह जूली के कमरे में गई तब उसने देखा कि जूली के लैंप जल रहे हैं और जूली का मुंह पीला पड़ चुका था रो-रो कर लतिका का हृदय द्रवित होता है कि मानो लतिका एवं जूली की स्थिति एक ही हो चुपचाप नीला लिफाफा (पत्र) जूली की तकिया के नीचे रख देती है।



❖ “परिंदे कहानी के पात्र”

1. **लतिका :-** इस कहानी की नायिका या केंद्र बिंदु यही है।
2. **सुधा :-** हॉस्टल में शायद सबसे लोकप्रिय लड़की यही है।
3. **जूली :-** हॉस्टल की लड़की जिसका प्रेम पत्र लतिका के हाथ में लग गया।
4. **करीमुद्दीन :-** हॉस्टल का नौकर, मिलिट्री में अर्दली कर चुका था।
5. **डॉक्टर मुखर्जी :-** आधे वर्मी थे कुछ लोगों का कहना था कि जापान एवं वर्मा के आक्रमण के समय वर्मा से आते समय उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई यह कान्वेंट स्कूल में फिजियोलॉजी के अध्यापक थे।
6. **मिस्टर ह्यूवर्ट :-** लतिका से प्रेम करते थे, संगीत शिक्षक, पियानो बहुत मन से बजाते थे। लतिका के लिए भावुक की याचना से प्रेम भरा पत्र भी लिख चुका था।
7. **प्रिंसिपल मिस बुड :-** पोपला मुंह, आंख के नीचे झूलती हुई मांस की थालियां, जरा-जरा सी बात पर चढ़ जाना, कर्कश आवाज में चीखना उसे ओल्डमैन कह कर पुकारते थे।
8. **गिरीश नेगी :-** कुमाऊं रेजीमेंट में कैप्टन था जिसे लतिका प्रेम करती थी।

❖ परिन्दे (निर्मल वर्मा)

- **प्रथम प्रकाशन :** हंस, (1957 ई.)
- **संग्रह :** परिंदे (1959 ई.)
 - ◊ डायरी का खेल
 - ◊ माया का मर्म
 - ◊ तीसरा गवाह
 - ◊ अंधेरे में
 - ◊ पिक्चर पोस्टकार्ड
 - ◊ सितंबर की एक शाम
 - ◊ परिंदे

• प्रतिपाद्य

- सर्वथा नए ढंग से प्रेम और मानवीय नियति की पड़ताल करती हुई कहानी।
- इस कहानी का केंद्रीय कथ्य मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त अकेलापन है। सभी चरित्र न सिर्फ अकेले हैं बल्कि कभी न खत्म होने वाले इंतज़ार की प्रक्रिया में बोझिल, उदास और टूटे हुए हैं। इसी इंतज़ार की समरूपता को आधार बनाकर लेखक ने इसका नाम 'परिन्दे' रखा है।

- प्रेम का तीव्र सम्मोहन तथा उससे मुक्त होने की अकुलाहट ।
- "फ़क़त सात कहानियों का संग्रह 'परिदे' निर्मल वर्मा की ही पहली कृति नहीं है, बल्कि जिसे हम 'नयी कहानी' कहना चाहते हैं, उसकी भी पहली कृति है। "

- नामवर सिंह

❖ प्रमुख उद्धरण

- " मरने से पहले मैं एक दफा बर्मा जरूर जाऊँगा"- और तब एक क्षण के लिये उनकी आँखों में गीली सी नमी छा जाती ।

- डॉक्टर मुकर्जी

- "होम सिकनैस ही एक ऐसी बीमारी है जिसका इलाज किसी डॉक्टर के पास नहीं है।"
- " उसे याद आया कुछ महीने पहले अचानक उसे ह्यूबर्ट का प्रेमपत्र मिला था - भावुक याचना से भरा हुआ पत्र, जिसमें उसने न जाने क्या कुछ लिखा था, जो कभी उसकी समझ में नहीं आया। उसे ह्यूबर्ट की इस बचकाना हरकत पर हँसी आई थी, किंतु भीतर-ही-भीतर प्रसन्नता भी हुई थी- उसकी उम्र अभी बीती नहीं है, अब भी वह दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सकती है।" ह्यूबर्ट का पत्र पढ़कर उसे क्रोध नहीं आया, आई थी केवल ममता । वह चाहती तो उसकी ग़लतफ़हमी को दूर करने में देर न लगती, किंतु कोई शक्ति उसे रोके रहती है, उसके कारण अपने पर विश्वास रहता है, अपने सुख का भ्रम मानो ह्यूबर्ट की ग़लतफ़हमी से जुड़ा है । "
- "मैं कभी-कभी सोचता हूँ, इंसान जिंदा किसलिये रहता है- क्या उसे कोई और बेहतर काम करने को नहीं मिला? क्या तुमने कभी महसूस किया है कि एक अजनबी की हैसियत से पराई ज़मीन पर मर जाना काफी खौफनाफ बात है...! "

- डॉक्टर मुकर्जी, ह्यूबर्ट से

- "लीड काइण्डली लाइट... संगीत के सुर मानो एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर हाँफती हुई साँसों को आकाश की अबाध शून्यता में बिखेरते हुए नीचे उतर रहे हैं। बारिश की मुलायम धूप चैपल के लंबे-चौकोर शीशों पर झलमता रही है, जिसकी एक महीन चमकीली रेखा ईसा मसीह की प्रतिमा पर तिरछी होकर गिर रही है। मोमबत्तियों का धुआँ धूप में नीली-सी लकीर खींचता हुआ हवा में तिरने लगा है। "
- " उसे लगा कि जैसे मोमबत्तियों के धूमिल आलोक में कुछ भी ठोस, वास्तविक न रहा हो- चैपल की छत, दीवारें, डेस्क पर रखा हुआ डॉक्टर का सुघड़-सुडौल हाथ और पियानो के सुर अतीत की धुन्ध को भेदते हुए स्वयं उस धुन्ध का भाग बनते जा रहे हों... । "
- "पियानो का हर नोट चिरंतन खामोशी की अँधेरी खोह से निकलकर बाहर फैली नीली धुन्ध को काटता, तराशता हुआ एक भूला-सा अर्थ खींच लाता है। गिरता हुआ हर 'पोज' एक छोटी-सी मौत है, मानो घने छायादार वृक्षों की काँपती छायाओं में कोई पगडंडी गुम हो गई हो, एक छोटी-सी मौत जो आने वाले सुरों को अपनी बची-खुची गूँजों की साँसें समर्पित कर जाती है... जो मर जाती

है, किंतु मिट नहीं पाती, मिटती नहीं इसलिये मरकर भी जीवित है, -ह्यूबर्ट का चिंतन दूसरे सुरों में लय हो जाती है...

- "कुछ भी कह लो, अपने देश का सुख कहीं और नहीं मिलता। चाहे कितने वर्ष रह लो, अपने को हमेशा अजनबी ही -मिस वुड, डॉक्टर मुकर्जी से यहाँ तुम पाओगे।"
- "जो वह याद करती है, वही भूलना भी चाहती है, लेकिन जब सचमुच भूलने लगती है, तब उसे भय लगता है कि जैसे कोई उसकी किसी चीज़ को उसके हाथों से छीन लिये जा रहा है, ऐसा कुछ जो सदा के लिये खो जाएगा। बचपन में जब कभी वह अपने किसी खिलौने को खो देती थी, तो वह गुमसुम सी होकर सोचा करती थी, कहाँ रख दिया मैंने। जब बहुत दौड़-धूप करने पर खिलौना मिल जाता, तो वह बहाना करती कि अभी उसे खोज ही रही है, कि वह अभी मिला नहीं है। जिस स्थान पर खिलौना रखा होता, जान-बूझकर उसे छोड़कर घर के दूसरे कोने में उसे खोजने का उपक्रम करती। तब खोई हुई चीज़ याद रहती, इसलिये भूलने का भय नहीं रहता था..."
- "आज वह उस बचपन के खेल का बहाना क्यों नहीं कर पाती? जो भूलता 'बहाना'... शायद करती है, उसे याद करने का बहाना, जा रहा है... दिन, महीने बीत जाते हैं, और वह उलझी रहती है, अनजाने में गिरीश का चेहरा धुँधला पड़ता जाता है, याद वह करती है, किंतु जैसे किसी पुरानी तस्वीर के धूल भरे शीशे को साफ कर रही हो। अब वैसा दर्द नहीं होता, सिर्फ उसको याद करती है, जो पहले कभी होता था- तब उसे अपने पर ग्लानि होती है। वह फिर जान-बूझकर उस घाव को कुरेदती है, जो भरता जा रहा है, खुद-ब-खुद उसकी कोशिशों के बावजूद भरता जा रहा है..."
- "वैसे हम सबकी अपनी-अपनी जिद होती है, कोई छोड़ देता है, कोई आखिर तक उससे चिपका रहता है। "

-डॉक्टर मुकर्जी, लतिका से

- " किसी चीज़ को न जानना यदि गलत है, तो जान-बूझकर न भूल पाना, हमेशा जोंक की तरह उससे चिपटे रहना-यह भी गलत है। बर्मा से आते हुए मेरी पत्नी की मृत्यु हुई थी, मुझे अपनी जिंदगी बेकार-सी लगी थी। आज इस बात को अर्सा गुजर गया और जैसा आप देखती हैं, मैं जी रहा हूँ उम्मीद है कि काफी अर्सा और जीऊँगा। जिंदगी काफी दिलचस्प लगती है, और यदि उम्र की मजबूरी न होती तो शायद मैं दूसरी शादी करने में भी न हिचकता। इसके बावजूद कौन कह सकता है कि मैं अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता था आज भी करता हूँ..."

- डॉक्टर मुकर्जी, लतिका से



पूरा नाम	निर्मल वर्मा
जन्म	3 अप्रैल, 1929
जन्म भूमि	शिमला
मृत्यु	25 अक्टूबर, 2005
मृत्यु स्थान	दिल्ली
अभिभावक	पिता- नंद कुमार वर्मा
कर्म-क्षेत्र	साहित्य
मुख्य रचनाएँ	'रात का रिपोर्टर', 'एक चिथड़ा सुख', 'लाल टीन की छत', 'वे दिन' आदि
भाषा	हिन्दी
विद्यालय शिक्षा	सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली एम.ए. (इतिहास)
पुरस्कार-उपाधि	पद्म भूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार (1985), ज्ञानपीठ पुरस्कार (1999)
नागरिकता	भारतीय
अन्य जानकारी	निर्मल वर्मा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस स्टडीज़ (शिमला) के फेलो (1973), निराला सृजनपीठ भोपाल (1981-83) और यशपाल सृजनपीठ (शिमला) के अध्यक्ष रहे।

► दिल्ली में एक मौत -

इस कहानी में व्यक्त नए यथार्थ की क्रूर विडम्बना के इन दो संदर्भों पर ध्यान दें -

“जब से मैंने अखबार में से सेठ दीवानचंद की मौत की खबर पढ़ी थी, मुझे हर क्षण यही खटका लगा था कि कहीं कोई आकार इस सर्दी में शव के साथ जाने की बात ना कह दे।”

और “चिंता में आग लगा दी गई है और चार-पांच आदमी पेड़ के नीचे रखी बेंच पर बैठे हुए हैं। मेरी तरह वह भी यूँ ही चले आए हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि घर जाकर तैयार होकर दफ्तर जाओ या अब एक मौत का बहाना बनाकर आज छुट्टी ही ले लूं -

आखिर मौत तो मौत ही है और शव - याग्न में शामिल भी हुआ हूँ।”

ये नयी बनती हुई महानगरीय संवेदना के निर्माण संदर्भ है। यह एक थोड़े व्यापक सामाजिक संपत्ति वाली सहानुभूतिपूरक मानवीय भाव संपदा के विलोपन और क्षरण की मार्मिक में कथा सुनाने वाली रचना है। महानगरों के जीवन में एक-दूसरे के प्रति कैसी ठंडी निसंगता पैदा होती गई है, पारस्परिक संबंधों में कितना अलगाव पेय होता गया है।

करुणा और संवेदना के स्रोत कैसे सूखते चले गए हैं - इस यथार्थ को इस कहानी में पढ़ा - अनुभव किया जा सकता है। मनुष्य के सांस्कृतिक सार तत्व की विनाशलीला कि यह व्यंगात्मक अभिव्यक्ति संबंध करने वाली है।

मृत्यु और सब यात्रा के संवेदनशील प्रसंग के बीच कहानी के कुछ चरित्रों की मन स्थिति, दिनचर्या, प्रतिक्रियाएं और बहुत निश्चित व्यवहार या सब मिलकर आधुनिक जीवन के बदलते भाव-संसार का चिंताकुल कर देने वाला चित्र प्रस्तुत करते हैं।

यह एक ऐसा जीवन और परिवेश है, जहां कहानी का वाचक शव यात्रा में सम्मिलित होने वाले संभावित व्यक्तियों की निश्चित दिनचर्या देखकर-सुनकर अपने लिए एक सुरक्षित भाव अर्जित करता है।

“सरदार जी नाश्ते के लिए मकान मंगवा रहे हैं, इसका मतलब है वह सभी शव यात्रा में शामिल नहीं हो रहे हैं। मुझे कुछ राहत मिली।” यह राहत और बढ़ती है, जब कथा वाचक गाउन पहने हुए जुड़ा बांधती मिसेज वासवानी को देखा है और इसके आधार

पर अनुभव करता है की मिस्टर वासवानी भी नहीं जा रहे हैं। शव यात्रा से किसी भी तरह बस निकलने के तर्क जुटाता है। यह वाचक वास्तु जड़ आधुनिकता के साथ विकसित हो रहे एक नए समाज का प्रतिनिधि चरित्र है। यह दिल्ली की किसी एक कॉलोनी या एक आवासीय इलाके की कहानी नहीं, सभी महानगरों और अब तो उसके बाहर भी जड़ जमाती जा रही यांत्रिक और आत्मकेंद्रित जीवन-संस्कृति की कहानी है।

यह मनुष्यता के उदार भाव-बोध के तत्स्य औपचारिकता में अपघटित हो जाने की त्रासदी की कहानी है ।

कथा की प्रभावशाली अभिव्यंजना के लिए कमलेश्वर ने उपयुक्त शिल्प का चयन किया है । भाषा में नवीनता तो है ही, विषय की प्रकृति के अनुरूप संप्रेषणता की रचनात्मक तत्वों का भी सार्थिक उपयोग किया गया है । इस कहानी में अनेक बिंबो की संकेतगर्भित उपस्थिति है । यह केवल परिवेश की दृश्यात्मकता के लिए नहीं, मूल संवेदना के गहन मर्म-स्तरों को अपनी प्रतीकात्मकता में व्यंजित करने के लिए प्रयुक्त है ।

कहानी "दिल्ली की एक मौत" में महानगर की व्यस्त एवं आत्मकेंद्रित जिंदगी का सजीव चित्रण दिखाई देता है । किसी की मौत में भी शामिल होना है तो एक औपचारिकतावश किसी के आस-पास शोक संवेदना प्रकट करने का भी वक्त नहीं । खोई हुई दिशाएं और अपने देश के लोग कहानियां भी शहरी जीवन के अभिशप्त समय को व्यक्त करती है।

❖ जीवन परिचय :-

कमलेश्वर का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में 6 जनवरी, 1932 में हुआ था। जब वे तीन साल के थे तब उनके पिता जी का देहांत हो गया था। कमलेश्वर सात भाई थे जिनमें से पाँच का देहांत हो गया था। जब वे किशोर थे तभी उन्हें क्रांतिकारी समाजवादी दल में संदेशवाहक के तौर पर शामिल कर लिया गया था। वे क्रांतिकारियों के पत्र एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाया करता था। मैनपुरी क्रांतिकारियों का एक प्रमुख केंद्र था। अंग्रेजों ने आगरे पर कब्ज़ा कर लिया था पर मैनपुरी तब तक मुक्त था। अतः बड़ी संख्या में क्रांतिकारी वहाँ शरण लिया करते थे। इसी कारण से उनका क्रांतिकारियों मिलना संभव हुआ और पार्टी में शामिल कर लिए गए। कमलेश्वर का पूरा नाम कमलेश्वर सक्सेना था। लेकिन क्रांतिकारी पार्टी में शामिल होने के कारण उनमें यह भावना बलवती हो गई थी कि जातिसूचक उपनाम इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इसीलिए उन्होंने अपना नाम सिर्फ कमलेश्वर रखा।



पूरा नाम	कमलेश्वर प्रशाद सक्सेना
जन्म	6 जनवरी 1932
जन्म स्थान	मैनपुरी, उत्तरप्रदेश
पहचान	लेखक, उपन्यासकार, पटकथा लेखक
अवधि/काल	नई कहानी
यादगार कृतियाँ	कितने पाकिस्तान

► वापसी - उषा प्रियवंदा

प्रकाशन :- वर्ष 1960

लेखक :- उषा प्रियवंदा

❖ वापसी कहानी का सारांश

गजाधर बाबू 35 वर्षों से रेल की नौकरी करके अवकाश प्राप्त हुए वे अपने घर वापस लौटने की तैयारी में लगे थे सारा सामान बंध चुका था। उसे समय उनके मन में जहां एक और अपने परिवार के बीच जाने की उत्सुकता थी वह दूसरी और अपने पड़ोसियों, कर्मचारियों का स्नेह उन्हें विषाद से भर दे रहा था। गणेशी गजाधर बाबू का बड़ा ख्याल रखता है।

वह उनके लिए बेसन का लड्डू बना दिया था। सांसारिक दृष्टि से उनका जीवन सफल था। उन्होंने शहर में एक बड़ा मकान बना लिया था बड़े लड़के अमर और कांति की शादी कर चुके थे। वह बच्चे ऊंची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। बच्चों की पढ़ाई के कारण पत्नी अधिकतर शहर में रहती है और उन्हें अकेला रहना पड़ता था। उन्हें इस बात की अत्यंत खुशी थी कि वह अपना परिवार के साथ सुख से रह सकेंगे।

गजाधर बाबू स्नेही व्यक्ति थे। अपने आस-पास के लोगों से उनका मधुर व्यवहार था। बीच- बीच जब उनका परिवार उनके साथ रहता तो वह समय उनके लिए असीम सुख होता था। छुट्टी से लौटकर बच्चों का हंसना खेलना एवं पत्नी का दोपहर में देर तक उनके खाने के लिए प्रतीक्षा करना और उसका सजल मुस्कान सब कुछ याद करते हुए उनकी उदासी और बढ़ जाती

है। बाबू सारे अरमान लेकर गजाधर बाबू अपने घर पहुंचे। इतवार का दिन था उनके बच्चे घर में नाश्ता कर रहे थे। बच्चों की हंसी सुनकर वह प्रसन्न हुए और बिना खांसे अंदर चले गए पिता को देखते ही नरेंद्र चुपचाप बैठ गया। बहू ने झट से माथा ठक लिया और बसंती ने अपनी हंसी को दबाने की चेष्टा की उन्होंने नरेंद्र से पूछा क्या हो रहा है। पर नरेंद्र से चुप हो गया जैसे गजाधर बाबू का वहां आना अच्छा ना लगा हो।

बच्चों के इस व्यवहार से वह दुखी हुए। इन्होंने बसंती से अपने लिए चाय पीने के लिए बाहर ही मांगा अब घर में प्रायः बैठक में ही रहते थे क्योंकि मकान छोटा था। गजाधर बाबू घर की हाल-चाल देखकर पत्नी घर खर्च कम करने की सलाह दी। परंतु पत्नी द्वारा उन्हें सहानुभूति नहीं मिली उन्हें यह महसूस होने लगा कि जैसे परिवार की सभी परेशानियों के वही जिम्मेदार हैं।

गजाधर बाबू की हिदायत पर बहू खाना बनाने गई पर चौका खुला छोड़ दी जिससे बिल्ली ने दाल गिरा दी। बसंती ने खाना तो बनाया पर जिसे कोई का नहीं सकता नरेंद्र ने खाना नहीं खाया और गजाधर बाबू पर उतारने लगा। शीला के घर न जाने की मनाही पर बसंती उनसे रुष्ट हो गई अब उनके सामने जाने से कतराने पुत्री के इस व्यवहार से उनकी आत्मा दुखी हो उठी। उन्हें बहुत बड़ा आघात लगा।

अब गजाधर बाबू को अब ऐसा होने लगा जैसे कि परिवार में उनकी अब कोई उपयोगिता नहीं है। इस घटना के बाद वह चुपचाप रहने लगे किंतु किसी ने उनकी चुप्पी का कारण नहीं पूछा। उन्हें अब अपनी पत्नी के व्यवहार में स्वार्थपरता की बू आने लगी। उन्हें परिवार के हितार्थ किसी कार्य के लिए उत्साह ना रहा। इसी बीच गजाधर बाबू ने एक दिन अपने घरेलू नौकर को कम से हटा दिया। इसे सुनकर नरेंद्र आग बबूला हो गया। यह सब देखकर उनका मन विचलित हो उठा और उन्होंने मन ही मन तय किया कि अब उन्हें यहां नहीं रहना।

अवकाश प्राप्ति के बाद रामजी मील वालों ने उन्हें अपनी चीनी की मील में नौकरी का प्रस्ताव दिया था लेकिन उन्होंने परिवार के साथ रहने की कल्पना के कारण स्वीकार नहीं किया अब उन्होंने रजामंदी भेज दी। उन्होंने पत्नी से कहा की क्या वह भी उनके साथ चलेगी परन्तु पत्नी से इनकार सुनकर गजाधर बाबू पारिवारिक सुख से वंचित रिक्से पर बैठ गए। उन्होंने एक नजर परिवार को देख और रिक्शा चल पड़ा। परिवार के सभी लोग प्रसन्न हुए तथा गजाधर बाबू की चारपाई कमरे से निकाल दी गई।

वापसी कहानी के लेखिका उषा प्रियवंदा हैं।

इनका जन्म 24 दिसंबर 1930 कानपुर उत्तर प्रदेश में हुआ है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. तथा पी. एच. डी. की पढ़ाई पूरी करने के बाद दिल्ली के लेडी श्रीराम

कॉलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन किया | इसी समय उन्हें फुल ब्राइट स्कॉलरशिप मिली |

प्रमुख कृतियां :-

- वनवास
- कितना बड़ा झूठ
- शून्य
- जिंदगी और गुलाब
- फिर बसंत आया
- एक कोई दूसरा

पुरस्कार :- 2007 के पद्मभूषण

❖ उषा प्रियंवदा का जीवन परिचय

२४ दिसम्बर १९३० को कानपुर में इनका जन्म हुआ था। लम्बे समय तक अमेरिका में प्रवास बिताया, वर्तमान में स्वतंत्र लेखन कार्य कर रही हैं। उषा प्रियंवदा ने अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त करने के बाद श्रीराम कॉलेज दिल्ली, इलाहबाद विश्वविद्यालय विस्कां सिन विश्वविद्यालय, मैडिसन में दक्षिण एशियाई विभाग में भी अध्यापन के कार्य से जुड़ी रही।



पूरा नाम	उषा प्रियंवदा
जन्म	24 दिसंबर, 1930
जन्म स्थान	कानपुर
पहचान	उपन्यासकार, कहानीकार
सम्मान	2007 में केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा पद्मभूषण
यादगार कृतियाँ	'जिंदगी और गुलाब के फूल', 'एक कोई दूसरा', 'पचपन खंभे', 'लाल दीवारें' आदि 'पहला पाठ', 'भटकती राख'

▪ कहानी संग्रह

'जिंदगी और गुलाब के फूल', 'एक कोई दूसरा', 'मेरी प्रिय कहानियां', वनवास, कितना बड़ा झूठ, शून्य, संपूर्ण कहानियां

▪ उपन्यास

'पचपन खंभे', 'लाल दीवारें', 'रुकोगी नहीं राधिका', 'शेष यात्रा', 'अंतर्वशी'

► अभिशप्त - यशपाल

- लेखक यशपाल का जन्म :- 3 दिसम्बर 1903
- लेखक यशपाल का प्रथम कहानी संग्रह का शीर्षक क्या है "पिजड़े की उड़त"
- लेखक का दूसरा कहानी संग्रह का शीर्षक ⇒ अभिशप्त

अभिशप्त कहानी संग्रह में 16 का घातयाँ हैं।

- | | |
|------------------|--------------------|
| 1) दास धूम | 2) आभिशप्त |
| 3) काला आदमी | 4) समाधि की धूल |
| 5) रोटी की मोल | 6) छलिया नारी |
| 7) चार आने | 8) चूक गयी |
| 9) आदमी का बच्चा | 10) पुलिस की |
| 11) रिजक | 12) भगवान किसके |
| 13) नमल हलाल | 14) पुनिया की होली |
| 15) हवाखोर | 16) शम्बूक |

- लेखक यशपाल के किस उपन्यास को कालजयी उपन्यास का दर्जा प्राप्त है
- झूठा सच
- लेखक यशपाल को साहित्य अकादमी एवं पद्म भूषण पुरस्कार प्राप्त है
- यशपाल जी की मृत्यु कब हुई - **26 दिसंबर 1976**
- लेखक यशपाल का राजनीति व्यक्तित्व भी रहा है शुरुआत कांग्रेस से तथा अभिशप्त लाहौर के नेशनल कॉलेज में शिक्षा लेने के समय भगत सिंह के संपर्क

➤ अभिशप्त कहानी के पात्र

स्वयं लेखक शुक्ला जी (लेखक के मित्र) श्रीमती शुक्ला जी और शुक्ला जी के दो बच्चे [लल्लू एवं सविता] ज्वाला अहीर व्यक्ति एवं उसकी पत्नी एवं उसके तीन बच्चे :-

- 5 वर्ष
- 3 वर्ष
- नवजात शिशु

❖ कहानी का सारांश

अमिनुदौला पार्क में हमेशा ही मेला था जलसा लगा रहता है | मिले थे धक्के से परेशान बिना तमाशे की सेर हो तो शुक्ल जी के मकान जो की दो मंजिला है उनके बरामदे में बैठे | लेखक जब भी परेशान होता है या उसका गपशप करने का मन होता है तो वह शुक्ला जी के यहां जाया

करता था एक दिन लेखक शुक्ला जी के यहां जाता है। मिसेज शुक्ला देखती हैं और लेखक का स्वागत करते हुए बैठने को बोलते हैं।

शुक्ला जी बोलते हैं कैसा जमाना आ गया है एक 5 वर्ष के बालक ने कत्ल (खून) कर दिया है। सब मन में प्रश्न हो उठा कहां और कैसे?

ज्वाला अहीर बहुत ही गरीब था गरीबी एवं भुखमरी के कारण उसकी पत्नी जो कि नवजात शिशु दुग्ध सेवन करना चाहती थी उसके स्वयं के उचित पोषण ना मिलने के कारण दुग्ध नहीं बन पाता है। वह दुग्ध के स्थान आटे का घोल बनाकर नवजात शिशु को पिलाता है और उसके दो बच्चों को यह भी नसीब नहीं होता है। इसे कुपित होकर 5 वर्ष का उसका पुत्र अपने भाई का गला दबाकर खून कर देता है।

इस कहानी से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

- इस कहानी में अमिनुदौला पार्क का जिक्र है।
- अभिशप्त कहानी में जालौन एवं फिरोजपुर कहानी का जिक्र है।
- लेखक शुक्ला जी के घर जाते थे।
- शुक्ला जी के बच्चों के नाम :- लल्लू एवं सविता
- बम पुलिस स्थान के रहने वाला ज्वाला अहीर का 5 वर्षीय पुत्र अपने नवजात शिशु भाई का गला दबाकर मृत्यु कर देता है।
- ज्वाला जाति के अहीर परिवार में बच्चे :-
लड़का 5 वर्षीय
लड़की 3 वर्षीय
नवजात शिशु
- लेखक ने गौ माता एवं नारी की तुलना दुग्ध के संदर्भ में की।
- दूध के अभाव में महिला आटे का गोल नवजात शिशु को पिलाता है।
- कहानी के अंत में लेखक पाप के कारण फल के बीच संबंध
- अभिशप्त कहानी का अंत लेखक ने जन्म से पाप करने के लिए मजबूर यह अभिशप्त क्या कभी पाप मुक्त हो सकेंगे।

यशपाल – जीवन परिचय

नाम	यशपाल
जन्म	03 दिसंबर, 1903 ई०



जन्म स्थान	फिरोजपुर छावनी (पंजाब)
मृत्यु	26 दिसंबर, 1976 ई०
पिता का नाम	श्री हरी लाल
माता का नाम	प्रेमा देवी
पैशा	लेखक, उपन्यासकार, निबंधकार, कहानीकार, नाटककार
साहित्य काल	आधुनिक काल
पुरस्कार	पद्मभूषण, देव पुरस्कार
प्रमुख रचनाएं	दादा कामरेड, देशद्रोही, पिंजरे की उड़ान, तर्क का तूफान, नशे की बात, न्याय का संघर्ष आदि।

❖ यशपाल की प्रमुख रचनाएं

यशपालजी ने अपनी लेखनी में हिंदी गद्य-साहित्य की श्रीवृद्धि की। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

- (i) **उपन्यास** — दादा कामरेड, देशद्रोही, पार्टी कामरेड, दिव्या, मनुष्य के रूप, अमिता, क्यों फँसे, मेरी तेरी उसकी बात, बारह घंटे, अप्सरा का श्राप, झूठा सच आदि।
- (ii) **कहानी संग्रह** — पिंजरे की उड़ान, तर्क का तूफान, ज्ञान दान, वो दुनिया, अभिशप्त, फूलों का कुर्ता, धर्म युद्ध, चित्र का शीर्षक, उत्तराधिकारी, उत्तमी की माँ, सच बोलने की भूल, भास्मवृत चिन्गारी, चार आने, फूल की चोरी, कर्मफल, पाँच तले की डाल आदि।
- (iii) **नाटक** — नशे की बात, रूप की परख, गुडबाई ददें दिल आदि।
- (iv) **व्यंग्य लेख** — चक्कर क्लब आदि।
- (v) **संस्मरण** — सिंहावलोकन आदि।
- (vi) **निबन्ध** — न्याय का संघर्ष, मार्क्सवाद, रामराज्य की कथा आदि।

- यशपाल जी के पुरस्कार एवं सम्मान
- देव पुरस्कार (सन् 1955 ईस्वी)
- सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार (सन् 1970 ईस्वी)
- हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का मंगलाप्रसाद पारितोषिक (सन् 1971 ईस्वी)
- पद्म भूषण

► मिस पाल - मोहन राकेश

❖ मिस पाल कहानी

“मिस पाल” मोहन राकेश की एक प्रसिद्ध कहानी है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने मिस पाल नामक एक स्त्री के अकेलेपन और अव्यवस्थित जीवनचर्या का जीवन चित्रण किया है। दिल्ली जैसे शहर में नौकरी करते हुए सहकर्मियों द्वारा किए जाने वाले व्यंगपूर्ण बातों से आहत होकर एक स्त्री किस प्रकार से दिल्ली जैसी भीड़-भाड़ इलाके से कुल्लू मनाली के निकट एक निर्जन इलाके में एकांत जीवन व्यतीत करने जाती है। लेकिन वहां पर भी वह अपनी शारीरिक गठन तथा बेडौलपन के कारण व्यंग रहती है। उस एकांत जीवन में वह परेशान रहती है और उसकी स्थिति पहले से भी दयनीय हो जाती है। उसकी दयनीयता उसके अव्यवस्थित जीवनचर्या के माध्यम से दिखाई पड़ता है। कहानी के तत्वों के आधार पर “मिस पॉल” कहानी की समीक्षा इस प्रकार है -

❖ कथावस्तु :-

कथावस्तु कहानी का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है तथा वस्तु में मौलिकता, संक्षिप्ता, क्रमबद्धता तथा उत्सुकता आदि गुण होने चाहिए। मिस पॉल लेखक की एक मौलिक रचना है तथा आकार की दृष्टि से संक्षिप्त भी है यह कहानी मिस पाल नामक एक स्त्री की अकेलेपन तथा अव्यवस्थित जीवनचर्या को दर्शाती है। मिस पाल आधुनिक जीवन में उन स्त्रियों की विसंगतियों की करुण चित्रण करती है। जो मुड़ी प्रवृत्ति की है। मिस पाल की शारीरिक गठन बेडोल है और वह अपनी बेडोलपन को कम करने के लिए ऐसे कपड़े पहनती है और खुद को सुंदर दिखाने के लिए चेहरे पर मेकअप लगाती है, जो उन पर फबदा नहीं है और वह हास्यस्पद लगती है। उनके ऑफिस के कुछ लोग उन पर व्यंग करते हैं मिस पॉल ऐसे व्यंगों से आहत होकर दिल्ली की नौकरी छोड़कर कुल्लू मनाली के बीच में किसी एकांत स्थान पर रहने लगते हैं। एक दिन अचानक मिस पॉल की मुलाकात रायसन के बस स्टैंड पर उनके एक मित्र रणजीत से हो जाती है रणजीत दिल्ली में उनके ऑफिस में ही काम करते रणजीत का व्यवहार मिस पाल के प्रति अच्छा था और उसके परिवार के साथ मिस पाल का व्यवहार अच्छा था। लेकिन एक दिन अचानक मिस पाल दिल्ली और अपनी नौकरी छोड़कर पहाड़ के एकांत में रहने लगती है। रणजीत जब उसे अचानक मिलता है तो मिस पाल के अचानक दिल्ली छोड़ अपने की वजह जानने की इच्छा होती है और वह उसके पास जाता है। उसकी बस छूट जाती है और वह एक दिन के लिए मिस पाल के घर पर ठहरता है।

वहां ठहरकर रणजीत को आश्चर्य होता है कि मिस पाल का जीवन उस पहाड़ के एकांत में पहले में भी दयनीय हो गई है। वह बहुत अव्यवस्थित तरीके से जीवन जीती है। जिस व्यंग्य भरी बातों से पीछा छुड़ाने के लिए वह दिल्ली शहर को छोड़कर आई थी वह व्यंग्यभरी बातें उसे वहां पर भी सुनना पड़ता है मिस पाल कि यह स्थिति देखकर रणजीत के मन में उसके प्रति करुणा का भाव जागता है और अगले दिन जब वह कुल्लू-मनाली को छोड़कर जाता है तो वह मन-ही-मन मिस पाल के लिए दुआ करता है। कहानी की कथावस्तु में मौलिकता, संक्षिप्तता, क्रमबद्धता, उत्सुकता आदि गुण होने चाहिए। मिस पाल की कहानी आकार की दृष्टि से संक्षिप्त है और मौलिक भी है लेकिन क्रमबद्ध तरीके से कहानी को प्रस्तुत किया गया है शुरू से अंत तक रोचकता बनी रहती है। कहानी मिस पाल नामक एक स्त्री के अकेलेपन की समस्या पर आधारित है। पूरी कहानी में मिस पाल के जीवन के कुछ अंशों से संबंधित घटनाओं का वर्णन लेखक ने किया है इस लिहाज से कहानी का शीर्षक मिस पॉल सार्थक बन पड़ा है - :

❖ चरित्र चित्रण :

प्रस्तुत कहानी में दो मुख्य पात्रों की रचना की गई है मिस पाल जो इस कहानी के केंद्र में है और रंजीत उसके माध्यम में मिस पाल के चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है। मिस पॉल एक पलायनवादी स्त्री है। जो समाज के कुछ असभ्य व्यक्तियों के व्यंग्यों से आहत होने से बचना चाहती है। और दिल्ली की नौकरी छोड़कर कुल्लू-मनाली के बीच एक छोटे से गांव में एकांकी जीवन बिताने चली जाती है। लेकिन वहां उनका जीवन पहले से भी दयनीय हो जाता है। दूसरा पात्र रणजीत जो की मिस पॉल का दिल्ली में सहकर्मी था। वह एक बुद्धिमान, उदार और सहानुभूति रखने वाला चरित्र है। उसे मिस पॉल के प्रति सहानुभूति है इसलिए ही वह जब वह अचानक उनसे मिलता है, तो मिस पाल के हाल-चाल /परिस्थिति के विषय में जानने की उसके मन में भाव जागते हैं।

वह मिस पाल के घर एक दिन ठहरकर उनकी परेशानियों को समझ पाता है। लेखक ने मिस पॉल और रणजीत आदि प्रमुख पात्रों को सजीव यथार्थ तथा मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर दिखाया है। इनके अतिरिक्त कुछ गोण पात्रों - बुखारिया, जोरावर सिंह, पोस्ट मास्टर तथा कुछ स्कूली बच्चों को भी उनके चरित्रों के अनुरूप दर्शाया गया है। इस प्रकार चरित्र-चित्रण के आधार पर कहानी सटीक सिद्ध होती है।

**जीवन परिचय :-**

पूरा नाम	मोहन राकेश
जन्म	8 जनवरी, 1925
जन्म भूमि	अमृतसर, पंजाब
मृत्यु	3 जनवरी, 1972
मृत्यु स्थान	नई दिल्ली
कर्म भूमि	भारत
कर्म-क्षेत्र	नाटककार और उपन्यासकार
मुख्य रचनाएँ	उपन्यास- अँधेरे बंद कमरे, अन्तराल नाटक- आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, 'आधे अधूरे'
भाषा	हिन्दी, अंग्रेज़ी
विद्यालय	'ओरियंटल कॉलेज' (लाहौर में), पंजाब विश्वविद्यालय
शिक्षा	एम.ए. (हिन्दी और अंग्रेज़ी)
पुरस्कार-उपाधि	1968 में 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार'
विशेष योगदान	मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन चुनिंदा साहित्यकारों में हैं जिन्हें 'नयी कहानी आंदोलन' का नायक माना जाता है और साहित्य जगत् में अधिकांश लोग उन्हें उस दौर का 'महानायक' कहते हैं।



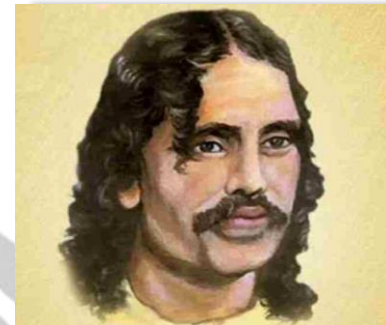
5

नाटक

▶ भारत दुर्दशा - भारतेन्दु हरिश्चंद्र

❖ जीवन-परिचय-

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म भाद्रपद शुक्ल 5 सं० 1907 वि० (सन् 1850 ई०) में काणी के एक वैश्य परिवार में हुआ। इनके पिता गोपालचन्द्र (उपनाम गिरधार दास) बड़े काव्य-रसिक व्यक्ति थे। भारतेन्दु जी जन्मजात कवि थे। पाँच वर्ष की आयु में ही उन्होंने निम्नलिखित दोहा बनाकर अपने पिता की सुनाया और उनसे सुकवि बनने का आशीर्वाद प्राप्त किया-



भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

“ले ब्योढा ठाढ़े भये, श्री अनिरुद्ध सुजान।
बाणासुर, की सैन्य को, हनन लगे 'बलवान्॥

बचपन में ही माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण भारतेन्दु को शिक्षा का अनुकूल वातावरण नहीं मिल सका। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने घर पर ही हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा बंगला का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। 18 वर्ष की अवस्था में ही आपने साहित्य रचना आरंभ कर दी थी। आपने 'पेनी रीडिंग' चंथा 'तदीय समाज' नाम की दो संस्थाएँ चलायीं तथा एक स्कूल खोला।

आपने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तथा 'कवि वचन सुधा' दो पत्रिका भी निकालीं। भारतेन्दु जी दीन-दुःखियों की सेवा, देश-सेवा तथा साहित्य सेवा पर खूब खर्च करते थे। कई पुस्तकालयों और नाट्यशालाओं की भी इन्होंने स्थापना की और काफी व्यय करके उन्हें चलाया। धन को पानी की तरह बहाने के कारण जीवन का अन्तिम समय कष्ट में बिताना पड़ा। अंत में क्षय रोग से ग्रस्त होकर केवल 35 वर्ष की अल्पायु में सं० 1942 वि० (सन् 1885 ई०) में परलोकवासी हो गये।

भारत दुर्दशा भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा सन 1875 ई में रचित एक हिंदी नाटक है। इसमें भारतेन्दु ने प्रति के माध्यम से भारत की तत्कालीन स्थिति का चित्रण किया है। वह भारतवासियों से भारत की दुर्दशा पर होने वाले और फिर इस दुर्दशा का अंत करने का प्रयास करने का आवाहन करते हैं। भारतेन्दु का यह नाटक अपनी युगीन समस्याओं को उजागर करता है उसका समाधान करता है।



भारत दुर्दशा में भारतेन्दु ने अपने सामने प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वर्तमान लक्ष्यहीन पतन की ओर उन्मुख भारत का वर्णन किया है।

भारतेन्दु ब्रिटिश राज और आपसी कलह को भारत की दुर्दशा का मुख्य कारण मानते हैं। तत्पश्चात हुई कुरीतियां, रोग, अलसी, मदिरा, अंधकार, धर्म, संतोष, अपव्यय, फैशन, सिफारिश, लोभ, भय, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, काल, बाढ़, आदि को भी भारत दुर्दशा का कारण मानते हैं। लेकिन सबसे बड़ा कारण अंग्रेजों की भारत को लूटने की नीति को मानते हैं अंग्रेजों ने अपना शासन मजबूत करने के लिए देश में शिक्षा व्यवस्था, कानून व्यवस्था, डाक सेवा, रेल सेवा, प्रिंटिंग प्रेस, जैसी सुविधाओं का सृजन किया पर यह सब कुछ अपने लिए अपने शासन को आसान बनाने के लिए था। देश की अर्थव्यवस्था जिन कुटीर उद्योगों से पनपती थी उनको बर्बाद करके अपने कारखाने में बने माल को जबरदस्ती हम पर ठोकने लगे। कमाई के जरिये छीन लेने से देश में भूखमरी फैल गयी। लाखों लोग अकाल और महामारी से मरने लगे। पर इससे अंग्रेज विचलित नहीं हुए वह बदस्तूर अपनी तिजोरिया भरते जा रहे थे। सारा देश खामोशी से अपने को लुटते हुए देख रहा था, मरते हुए देख रहा था। बिल्कुल से शान्ति से, तटस्थ भाव से, निरासक्ति, निष्क्रियता से।

ऐसे समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का भारत दुर्दशा नाटक प्रकाशित हुआ उन्होंने लिखा

रोअहु सब मिलिके आवहू भारत भाई।

हा ! हाँ ! भारतदुर्दशा न देखी जाई ॥

'भारत दुर्दशा' में छः अंक है। अंक इतने छोटे - है कि यदि अंक की जगह दृश्य भी लिख दिया जाये तो उससे नाटक की संरचना में कोई अन्तर नहीं आएगा।

पहले अंक में एक योगी लावनी गाता देश के अतीत गौरव के परिप्रेक्ष्य में उसकी गाता हुआ वर्तमान हीन दशा का ब्योरा देता है। वह शुरू में ही भारतीय दुर्दशा पर भारत भाइयों के का आह्वान कर नाटक के राष्ट्रीय सरोकार को ध्वनित कर देता है।

यह योगी हमारे नाट्य शास्त्र का परिचित सूत्रधार मात्र नहीं है यह तो मानो भारतीय आत्मा की आवाज़ है।

रोबहु सब मिलि है आवहू भारत भाई।

हा! हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई।

गाकर दर्शकों को भारत का दैन्य देखने के लिए मानसिक रूप से तैयार कर देता है।



❖ दूसरा अंक

दूसरे अंक में श्मशान में कुत्ते, कौओं, प्रवेश देता स्यारों के बीच फटेहाल भारत का प्रवेश होता है। वह अपनी रक्षा के लिए कभी ईश्वर को और कभी राज-राजेश्वरी को पुकारता वह स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता। यह उन्हीं पूर्वजों का भारत नई जो बिना लड़े सुई की नोक के बराबर जमीन देने को भी नहीं तैयार नहीं होते थे। यह दुर्बल एवं रणवीर भारत नेपथ्य से भारत दुर्देव की कर्कश गरजना सुनकर मूर्छित हो जाता है उसकी फटेहाली भारतीय विपन्नता एवं उसकी मूर्छा आत्मविश्वास - शून्यता एवं भयग्रस्तता के बिम्ब को उभारती है।

❖ तीसरा अंक

तीसरी अंक में "भारत दुर्देव" एवं "सत्यानाश फौजदार" अपने भारत की दुर्दशा मूलक प्रयोजनों को स्पष्ट करते हैं। भारत दुर्देव की वेशभूषा मुसलमानी एवं आदि किर्किस्तानी है। भारत की हजार वर्षों की गुलामी को प्रत्यक्ष करते की यह बेजोड़ नाट्य युक्ति है।

❖ चौथा अंक

चौथे अंक में गुलाम हीन एवं हाथ दर्द बनने के कारण का उल्लेख है कारण है आलस्य, अपव्यय, रोग, मदिरा, अंधकार। ये अमूर्त, प्रतीकात्मक पात्र से दुर्दशा के कर्म का खुलासा करते हैं। उनकी बोली बनी एवं वेशभूषा हस्यरसोत्पदक है इनके संवादों से भारत पर हमले के निम्नवत की गई इनकी सैन्य तैयारी का पता चलता है।

❖ पांचवा अंक

पांचवें अंक में भारत दुर्देव हमले से बचने के लिए बंगाली, महाराष्ट्र, ददेशी, कवि, एडिटर, सजीव, आदि पात्र हैं, बंगाली महाराष्ट्र एवं एडिटर की साहसिकता तथा हिंदी भाषा देशी सज्जन एवं कवि की कायरता का दृश्य खड़ा कर नाटकार ने बंगाली एवं बंगाली नव जागरण एवं मराठी नवजागरण की तुलना में हिंदी नवजागरण के पिछड़ेपान को उभारा है।

❖ छठे अंक

छठवें अंक में भारत भाग्य नामक केवल एक पात्र का संवाद एवं कार्य व्यापार चित्रित है। भारत भाग्य का लंबा गीतात्मक संवाद भारत के गौरव में अतीत एवं दुखद वर्तमान दोनों को समेटता है। भारत भाग्य का आत्माधिकार कारुणिक है। वह अंततः छाती में चाकू भोककर आत्महत्या कर लेता है।

❖ पात्र

☛ मुख्य पात्र

- भारत: नाटक में भारत नायक के रूप में है। वह नाटक के दूसरे अंक में आता है। नाटक में भारत अपनी अत्यंत दीन-हीन दशा पर कि रोता है। और अंत में भारत-दुर्देव के भय से मूर्च्छित हो जाता है। उसकी यही मूर्च्छा मृत्यु में बदल जाती है।
- भारत-दुर्देव : यह नाटक में खलनायक के रूप में आता है। यह एक शक्तिशाली चरित्र है। यह नाटक के तीसरे अंक में आता है।
- भारत-भाग्य: भारत-भाग्य भारत का एक सहयोगी चरित्र है। वह भारत के अतीत का गौरव गान करता है तथा उसे बार-बार जगाने की चेष्टा करता है, पर वह सफल नहीं हो पाता है। अंत में वह आत्मघात कर लेता है।

☛ गौण पात्र

- निर्लज्जता
- डिसलॉयल्टी
- सत्यानाश फौजदार
- रोग, महर्ध, कर, मद्य, आलस, अंधकार
- अपव्यय, अदालत, फैशन और सिफारिश
- फूट, डाह, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थपरता, पक्षपात, हठ, शोक आश्रयभाजन, निर्बलता
- बंगाली, महाराष्ट्रीय, एडिटर, देशी महानुभाव

☛ विशेष

- यह वस्तुतः एक 'नाट्य रासक' है।
- भारत दुर्दशा का गद्य तो खड़ी बोली में है, लेकिन पद्य ब्रजभाषा में।
- भारत दुर्दशा हिंदी का संभवतः पहला ऐसा नाटक है जो राजनीतिक विषयवस्तु पर आधारित है।
- नवजागरण के दौर में भारतेन्दु की इस नाट्य कृति ने एक मशाल की भूमिका निभाई।

► ध्रुव स्वामिनी -

• प्रकाशन 1933

गुप्त कालीन एवं शक वंश में विरोधाभास

• उद्देश्य

नाटक के माध्यम से लेखक यह संदेश देते हैं। राष्ट्र का कुशलतापूर्वक संचालन रामगुप्त जैसे कायर नहीं बल्कि चंद्रगुप्त जैसे सबल शासक ही कर सकते हैं।



जयशंकर प्रसाद

❖ सारांश ध्रुव स्वामिनी

गुप्त वंश के राजा स्व समुद्रगुप्त गुप्त जी के दो पुत्र थे राम गुप्ता जी और चंद्रगुप्त जी राम गुप्त जी कायर, आलसी, मूर्ख, नपुंसक, स्त्रियों की ना इज्जत करने वाला था वही इनका दूसरा पुत्र चंद्रगुप्त आकर्षक व्यक्तित्व, आज्ञाकारी पुत्र, वीर, राष्ट्रभक्ति, स्त्रियों की इज्जत करने वाला अपना कर्तव्य निभाने वाला था। अपने पुत्र चंद्रगुप्त को गुप्त वंश के राजा के रूप में बनाने की चाह क्योंकि वह इस पद के सुयोग्य थे। इसलिए समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त को गुप्त वंश के उत्तराधिकारी बना देते हैं। लेकिन समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात महामंत्री शिखर स्वामी के साथ षड्यंत्र करके राम गुप्त समुद्रगुप्त का बड़ा पुत्र सिंहासन पर बैठ जाता है चंद्रगुप्त बड़े ही शांत स्वभाव एवं संबंधों को मानने की वजह से रामगुप्त को गुप्त वंश का राजा स्वीकार कर लेता है। लेकिन राम गुप्त ने राजगद्दी के साथ चंद्रगुप्त की बागदत्ता ध्रुवस्वामिनी से विवाह कर लिया था ध्रुवस्वामिनी का मानों भाग्य सा फूट गया था। कायर, मूर्ख, आलसी, नपुंसक, स्त्रियों की इज्जत ना करने वालो वाले व्यक्ति से विवाह उसके ऊपर तनिक भी ना ध्यान देने वाला उसको एक वस्तु मात्र समझते बाला, जरा भी प्रेम ना करने वाला राक्षस प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसका पति तो फिर ऐसा कहा जा सकता है उसका भाग्य ही फूट गया। ध्रुवस्वामिनी का स्नेह एवं आकर्षण चंद्रगुप्त की तरफ था। क्योंकि चंद्रगुप्त में आकर्षण एवं राष्ट्रभक्ति एवं नारी की इज्जत करने का गुण विद्यमान था।

शकवंश के शासक सकराज ने गुप्त वंश पर आक्रमण कर दिया सकराज की सेना का शिविर राम गुप्त के महल के बाहर घेरा लगा रहा था। सकराज ने संधि के रूप प्रस्ताव भेजा की संधि तभी संभव है जब ध्रुवस्वामिनी को भेंट स्वरूप रामगुप्त, सकराज को देगा तथा उसके साथ सामंत कुमारी को भी भेंट स्वरूप दिया जाए।

ध्रुवस्वामिनी को भेंट स्वरूप देने के लिए राम गुप्त तैयार हो जाता है महामंत्री शिखर स्वामी की सलाह पर ध्रुवस्वामिनी बहुत विनती करती है रामगुप्त से एवं उसके पैर पड़कर के विनती करती है राम गुप्त उसकी एक ना सुनता है।

चंद्रगुप्त से यह सब बर्दाश्त नहीं हो रहा था भी कैसे एक राष्ट्र-भक्त यह सब कैसे सहन कर पता कि उसकी राज्य की भेंट स्वरूप किसी राजा के दरबार में जा रही है चंद्रगुप्त निश्चय करता है कि वह अब खुद ध्रुवस्वामिनी के भेष में सकराज के पास जाएगा और सकराज का वध कर देगा। ऐसा ही होता है चंद्रगुप्त जी ध्रुवस्वामिनी के भेष में जाते हैं सकराज के शिविर में और वही सकराज का वध कर देते हैं। चंद्रगुप्त जी इसे गुप्त वंश की प्रजा सामंत कुमार एवं ध्रुवस्वामिनी अत्यंत प्रसन्न होते हैं और वह सभी निश्चय करते हैं कि राम गुप्त को सिंहासन से उतार कर चंद्रगुप्त को सिंहासन पर बैठाएंगे सभी ऐसा ही करते हैं। इससे कुपित होकर राम गुप्त चंद्रगुप्त पर पीछे से वार करते हैं, लेकिन समान्त कुमार राम गुप्त का वध कर देते हैं।

ध्रुवस्वामिनी सभा में तरह तरह के अपने विवाह के तर्क प्रस्तुत करती है जिसे पुरोहित स्वीकार करते हैं। अंत में चंद्रगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी का विवाह हो जाता हिया और वह गुप्त वंश दोनों भोग करते हैं।

Note : अंक : 3

गीत : 4 गाते हैं

ध्रुवस्वामिनी :- मुख्य पात्र राम गुप्त से प्रथम विवाह एवं चंद्रगुप्त से दूसरा विवाह

रामगुप्त :- मूर्ख, कायर, नपुसंक, समुद्रगुप्त का बड़ा पुत्र एवं गुप्त वंश का शासक

चंद्रगुप्त :- आकर्षक व्यक्तित्व, राष्ट्रभक्ति, ध्रुवस्वामिनी का प्रेमी, समुद्रगुप्त द्वारा बनाया गया उत्तराधिकारी

शिखर स्वामी :- गुप्त वंश का महामंत्री एवं राम गुप्त के षड्यंत्र से शासक बनने में सहायता करने वाला

- 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है। इसकी रचना सन् 1933 में की गई थी। यह जयशंकर प्रसाद का अन्तिम नाटक है। इस नाटक का कथानक ऐतिहासिक है।
- ध्रुवस्वामिनी एक नारी प्रधान नाटक है।
- कथानक का सम्बन्ध 'गुप्तकाल' से है। ऐतिहासिक प्राचीनता की कथावस्तु से युक्त यह नाटक वर्तमान काल की समस्या को प्रस्तुत करता है। प्रसाद जी ने इतिहास को अपनी नाट्याभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर शाश्वत मानवजीवन का स्वरूप दिखाया है। रंगमंच की दृष्टि से तीन अंकों का यह नाटक प्रसादजी का सर्वोत्तम नाटक है।
- 'ध्रुवस्वामिनी' इस नाटक की नायिका है। इसकी भाषा ! में वीरांगना की ओजस्विता है। प्रसाद की भाषासंस्कृत निष्ठ हुआ करती है जो इस नाटक में भी है किन्तु पाठक को समझने में, दर्शक

को सुनने में दुरुहता कहीं आड़े नहीं आती। नाटक में अनेक स्थलों पर अर्द्धवाक्यों के प्रयोग की सफल योजना है जो नाटक में सौन्दर्य तथा गहरे अर्थ की सृष्टि करती है।

पुरुष पात्र

चंद्रगुप्त	सम्राट
रामगुप्त	धुस्वामिनी का पति और षडयंत्रकारी व्यक्ति, समुद्रगुप्त का ज्येष्ठ पुत्र व मगध का सम्राट, चन्द्रगुप्त का अग्रज, सुरा और सुंदरी में लिप्त व्यक्ति, महत्वाकांक्षी और निरंकुश शासक
शिखरस्वामी	कुटिल, अवसरवादी, धूर्त, प्रवंचक चाटुकार, मर्यादाहीन, दम्भी कलहकारी, स्वार्थी, निष्ठुर कुकर्मि एवं चरित्रहीन के रूप में चरितार्थ: रामगुप्त के प्रति कृतज्ञ व्यक्ति
शकराज	कोमा का प्रेमी क्रूर एवं मिथ्या अहंकारी, महत्वाकांक्षी, कूटनीतिज्ञ एवं युद्ध कला में पारंगत
मिहिरदेव	आचार्य

नारी पात्र

धुस्वामिनी	नाटक की प्रमुख पात्र, रामगुप्त की पत्नी
कोमा	आचार्य मिहिरदेव की प्रतिपालित कन्या, शकराज की प्रेमिका, अन्याय का विरोध करने वाली सक्षम पात्रा, सौंदर्य की उपासिका
मन्दाकिनी	धुवस्वामिनी की सहचरी, चन्द्रगुप्त और रामगुप्त की बहन



Teachers Express

JSSC CGL 2024



मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)



हिन्दी-ई-बुक



सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

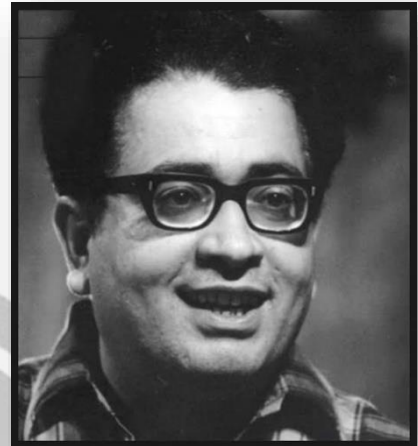
**खुद ASO अधिकारी एवं
विवेक सर के मार्गदर्शन
में तैयार**



विवेक सर

▶ आधे-अधूरे - मोहन

आधे-अधूरे' मोहन राकेश द्वारा लिखित हिन्दी का प्रसिद्ध नाटक है। यह नाटक मध्यमवर्गीय जीवन पर आधारित है। इसमें तीन स्त्री पात्र हैं तथा पांच पुरुष पात्र। इनमें से चार पुरुषों की भूमिका एक ही पुरुष पात्र निभाता है। हिन्दी नाटक में यह अलग ढंग का प्रयोग है। इस नाटक का प्रकाशन 1969 ई. में हुआ था। यह पूर्णता की तलाश का नाटक है। इस नाटक को मील का पत्थर भी कहा जाता है।



मोहन राकेश

पुरुष पात्र

महेन्द्रनाथ
सिंघानिया
जगमोहन
जुनेजा
मनोज
अशोक

- सावित्री का पति
- सावित्री का बॉस
- महेन्द्रनाथ का मित्र
- महेन्द्रनाथ का बचपन का मित्र
- बिन्नी का पति
- सावित्री का बेटा

स्त्री पात्र

सावित्री
बिन्नी
किन्नी

- महेन्द्रनाथ की पत्नी
- सावित्री की बड़ी बेटी
- सावित्री की छोटी बेटी

आधे-अधूरे पात्र

- काले सूट वाला आदमी: जो कि पुरुष एक, पुरुष दो, पुरुष तीन तथा पुरुष चार की भूमिकाओं में भी है।
- पुरुष एक के रूप में वेशांतर : पतलून-कमीज़। (महेन्द्रनाथ)
- सावित्री (स्त्री) का पति। 22 साल का दांपत्य जीवन।
- जिंदगी से अपनी लड़ाई हार चुकने की छटपटाहट लिये।

- परिवार में अपने आपको बॉस की तरह पाता है। अब वह केवल 'एक ठप्पा, एक रबड़ का टुकड़ा' है।
- महेंद्रनाथ का परिवार दिल्ली में रहता है।
- अन्य पुरुषों से पत्नी के संबंधों को लेकर असहज।

- **पुरुष दो के रूप में** : पतलून और बंद गले का कोट। (सिंघानिया)
- सावित्री का बॉस ।
- इससे सावित्री अपने लड़के की नौकरी की सिफारिश करती है।
- असंबद्ध बातें करता है।
- अपने-आप से संतुष्ट फिर भी आशंकित।

- **पुरुष तीन के रूप में** : पतलून-टीशर्ट । (जगमोहन)
- सावित्री का पुराना मित्र ।
- वर्तमान में पुनः दिल्ली ट्रांसफर।
- सावित्री अंत में जगमोहन के साथ जाना चाहती है; परंतु असफल।
- अपनी सुविधा के लिये जीने का दर्शन पूरे हाव-भाव में।

- **पुरुष चार के रूप में** : पतलून के साथ पुरानी काट का लम्बा कोट। (जुनेजा)
- महेंद्रनाथ का मित्र तथा पुराना बिजनेस पार्टनर ।
- नाराज़/व्यथित होकर महेंद्रनाथ जुनेजा के घर जाता है।
- सावित्री से महेंद्र को मुक्त कराने का आग्रह करता है।
- स्वभाव में काइयाँपन।

- **स्त्री** : उम्र चालीस को छूती। (सावित्री)
- केंद्रीय पात्र ।
- पुरुष एक की पत्नी ।
- एक पूर्ण मनुष्य की तलाश।
- पारिवारिक जीवन में ज़िम्मेदारियों तथा अन्य सदस्यों की लापरवाही से तंग ।
- खीझ और तनाव से ग्रस्त।

- **बड़ी लड़की** : उम्र बीस से ऊपर नहीं। (बित्री)
- सावित्री के दोस्त मनोज के साथ भागकर शादी।
- भाव में परिस्थितियों से संघर्ष का अवसाद और उतावलापन।
- कभी-कभी उम्र से बढ़कर बड़प्पन।



- पूर व्यक्तित्व में एक बिखराव ।
- अब घर में बेगाना महसूस करती है।

- **छोटी लड़की** : उम्र बारह और तेरह के बीच। (किन्नी)
- भाव, स्वर, चाल हर चीज में विद्रोह ।
- स्कूल की विद्यार्थी ।

- **लड़का** : उम्र इक्कीस के आस-पास। (अशोक)
- बी.एस.सी की पढ़ाई अधूरी।
- एयर फोर्स की नौकरी छोड़ी।
- चेहरे से, यहाँ तक कि हँसी से भी झलकती खास तरह की कड़वाहट ।

❖ कथासार

- यह नाटक दो भागों- पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध में विभक्त है।
- 'आधे-अधूरे' एक आधुनिक मध्य-वर्गीय शहरी परिवार की कहानी है। महेंद्रनाथ बेरोज़गार है। उसकी पत्नी सावित्री नौकरी से घर चलाती है। वह अपने पति को असफल और अपूर्ण मानती है। एक पूर्ण मनुष्य की तलाश में वह जगमोहन, सिंघानिया, जुनेजा तथा मनोज से मिलती है; परंतु अंततः उसकी तलाश अपूर्ण ही रह जाती है। महेंद्रनाथ अपनी बेकारी से उपजी अशक्तता से क्षुब्ध है। पति-पत्नी के मध्य यह तनाव बच्चों- बिन्नी, किन्नी, अशोक पर बुरा प्रभाव डालता है। उनमें असंतोष तथा विद्रोह की भावना भरी हुई है।

❖ प्रमुख उद्धरण

पूर्वार्द्ध

- " आदमी जो जवाब दे, उसके चेहरे से भी झलकना चाहिये।"

-पुरुष एक, बड़ी लड़की से

- "कि दो आदमी जितना ज़्यादा साथ रहें, एक हवा में साँस लें, उतना ही ज़्यादा अपने को एक-दूसरे से अजनबी महसूस करें?"

-बड़ी लड़की, स्त्री से

- "पर कौन-सी अड़चन? उसके हाथ से छलक गई चाय की प्याली, या उसके दफ्तर से लौटने में आधे घंटे की देरी- ये छोटी-छोटी बातें अड़चन नहीं होतीं, मगर अड़चन बन जाती हैं। एक गुबार-सा है जो हर वक्त मेरे अंदर भरा रहता है और मैं इंतजार में रहती हूँ जैसे कि कब कोई बहाना मिले जिससे उसे बाहर निकाल लूँ। और आखिर..."

-बड़ी लड़की, स्त्री से

- "कि मैं इस घर से ही अपने अंदर कुछ ऐसी चीज लेकर गई हूँ जो किसी भी स्थिति में मुझे स्वाभाविक नहीं रहने देती । "

-बड़ी लड़की, स्त्री से

- "क्योंकि मुझे कहीं लगता है कि कैसे बताऊँ, क्या लगता है? वह जितने विश्वास के साथ यह बात कहता है, उससे उससे मुझे अपने से एक अजब-सी चिढ़ होने लगती है। मन करता है...मन करता है, आसपास की हर चीज को तोड़-फोड़ डालूँ। कुछ ऐसा कर डालूँ जिससे-जिससे उसके मन को कड़ी से कड़ी चोट पहुँचा सकूँ। उसे मेरे लम्बे बाल अच्छे लगते हैं। इसलिये सोचती हूँ, इन्हें जाकर कटा आऊँ। वह मेरे नौकरी करने के हक में नहीं है। इसलिये चाहती हूँ कहीं भी, कोई भी छोटी-मोटी नौकरी कर लूँ। कुछ भी ऐसी बात जिससे एक बार तो वह अंदर से तिलमिला उठे। पर कर मैं कुछ भी नहीं पाती और जब नहीं कर पाती, तो खीझकर।"

- बड़ी लड़की, स्त्री से

- " कई-कई दिनों के लिये अपने को उससे काट लेती हूँ। पर धीरे-धीरे हर चीज फिर उसी ढर्रे पर लौट आती है। सब-कुछ फिर उसी तरह होने लगता है जब तक कि हम जब तक कि हम नये सिरे से उसी खोह में नहीं पहुँच जाते। मैं यहाँ आती हूँ... यहाँ आती हूँ तो सिर्फ इसलिये कि...।"

- बड़ी लड़की, स्त्री से

- "मेरा अपना घर!... हाँ। और मैं आती हूँ कि एक बार फिर खोजने की कोशिश कर देखूँ कि क्या चीज है वह इस घर में जिसे लेकर बार-बार मुझे हीन किया जाता है! (लगभग टूटते स्वर में) तुम बता सकती हो ममा, कि क्या चीज है वह? और कहाँ है वह? इस घर के खिड़कियों-दरवाजों में? छत में? दीवारों में? तुममें? डैडी में? किन्नी में? अशोक में? कहाँ छिपी है वह मनहूस चीज जो वह कहता है मैं इस घर से अपने अंदर लेकर गई हूँ?"

- बड़ी लड़की, स्त्री से

- "किसे सुना सकता हूँ? कोई है जो सुन सकता है? जिन्हें सुनना चाहिये, वे सब तो एक रबड़-स्टैंप के सिवा कुछ समझते नहीं मुझे। सिर्फ जरूरत पड़ने पर इस स्टैंप का ठप्पा लगाकर ।"

- पुरुष एक, स्त्री से

- "अपनी जिंदगी चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। तुम्हारी जिन्दगी चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। इन सबकी जिन्दगियाँ चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। फिर भी मैं इस घर से चिपका हूँ क्योंकि अन्दर से मैं आरामतलब हूँ, घरघुसरा हूँ, मेरी हड्डियों में जंग लगा है।"

- पुरुष एक, स्त्री से

- "सचमुच महसूस करता हूँ। मुझे पता है मैं एक कीड़ा हूँ जिसने अन्दर - ही - अन्दर इस घर को खा लिया है (बाहर के दरवाजे की तरफ चलता) पर अब पेट भर गया है मेरा। हमेशा के लिये भर गया है (दरवाजे के पास रुककर) और बचा भी क्या है जिसे खाने के लिये रहता हूँ यहाँ?"

- पुरुष एक, स्त्री से

• "बुलाती क्यों हो ऐसे लोगों को घर पर कि जिनके आने से.....? जिनके आने से हम जितने छोटे हैं, उससे और छोटे हो जाते हैं अपनी नज़र में।

- लड़का, स्त्री से

• 'आज तक जिस किसी को बुलाया है तुमने, किस वजह से बुलाया है। उसकी किसी 'बड़ी' चीज़ की वजह से। एक को कि वह इंटेलेक्चुअल बहुत बड़ा है। दूसरे को कि उसकी तनखाह पांच हज़ार है, तीसरे को कि उसकी तख्ती चीफ कमिश्नर की है। जब भी बुलाया है, आदमी को नहीं- उसकी तनखाह को, नाम को, रुतबे को बुलाया है।"

- लड़का, स्त्री से

• महसूस करना ही महसूस नहीं होता था। और कुछ-कुछ महसूस होना शुरू हुआ जब, तो पहला मौका मिलते ही घर से चली गई। "

- लड़का, बड़ी लड़की से

• "ठीक है, ठीक है। उस चीज़ को जानकर भी न जानना ही बेहतर है शायद! पर दूसरे को धोखा दे भी ले आदमी, अपने आपको कैसे दे ?"

- लड़का, बड़ी लड़की से

❖ उत्तरार्द्ध

• " इतने साधारण ढंग से उड़ा देने की बात नहीं है अंकल ! मैं यहाँ थी, तो मुझे कई बार लगता था कि मैं एक घर में नहीं चिड़ियाघर के एक पिंजरे में रहती हूँ यहाँ आप शायद सोच भी नहीं सकते कि क्या-क्या होता रहा है यहाँ । डैडी का चीखते हुए ममा के कपड़े तार-तार कर देना ... उनके मुँह पर पट्टी बाँधकर उन्हें बंद कमरे में पीटना... खींचते हुए गुसलखाने में कमोड पर ले जाकर ... (सिहरकर) मैं तो बयान भी नहीं कर सकती कि कितने-कितने भयानक दृश्य देखे हैं इस घर में मैंने। कोई भी बाहर का आदमी उस सबको देखता-जानता, तो यही कहता कि क्यों नहीं बहुत पहले ही ये लोग ... । "

- बड़ी लड़की, पुरुष चार से

• "बिल्कुल मानता हूँ, इसलिये कहता हूँ कि अपनी आज की हालत के लिये जिम्मेदार महेन्द्रनाथ खुद है। अगर ऐसा न होता, तो आज सुबह से ही रिरियाकर मुझसे न कह रहा होता कि जैसे भी हो मैं इससे बात करके इसे समझाऊँ। मैं इस वक्त यहाँ न आया होता, तो पता है क्या होता?"

- पुरुष चार, बड़ी लड़की से

" यूँ तो जो कोई भी एक आदमी की तरह चलता-फिरता, बात करता है वह आदमी ही होता है... पर असल में आदमी होने के लिये क्या जरूरी नहीं कि उसमें अपना एक माद्दा, अपनी एक शख्सियत हो?"

- स्त्री, पुरुष चार से



JSSC CGL 2024





मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)



हिन्दी-ई-बुक



सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित
QUICK रिवीजन
खुद ASO अधिकारी एवं
विवेक सर के मार्गदर्शन
में तैयार



विवेक सर

6

हिन्दी साहित्य का इतिहास

▶ आचार्य रामचंद्र शुक्ल

❖ आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'

➤ काल- विभाजन

- आचार्य शुक्ल ने अपने से पहले लिखे गए साहित्येतिहास-ग्रंथों को 'कवि - वृत्त-संग्रह' कहा है-
- 'शिवसिंह सरोज' - कवि - वृत्त-संग्रह
- 'मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान'-बड़ा कवि - वृत्त-संग्रह |
- 'मिश्रबंधु विनोद' - बड़ा भारी / प्रकांड कवि - वृत्त - संग्रह ।

➤ नामकरण दो आधारों पर किया -

- काल- विभाग के भीतर प्राप्त होने वाली विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता व उनके स्वरूप के अनुसार ।
- ग्रंथों की प्रसिद्धि के आधार पर क्योंकि 'प्रसिद्धि भी किसी काल की लोकप्रवृत्ति की प्रतिध्वनि हैं । '
- "किसी काल विस्तार को लेकर यों ही पूर्व और उत्तर नाम देकर दो हिस्से कर डालना ऐतिहासिक विभाग नहीं कहला सकता।"
- "किसी काल के कवियों की साहित्यिक विशेषताओं के संबंध में मैंने जो संक्षिप्त चार प्रकट किये हैं, वे दिग्दर्शन मात्र के लिये ।
- इतिहास की पुस्तक में किसी कवि की पूरी क्या अधूरी आलोचना भी नहीं हो सकती । "
- 'आधुनिक काल में गद्य का आविर्भाव सबसे प्रधान साहित्यिक घटना है।'
- " वर्तमान लेखकों और कवियों के संबंध में कुछ लिखना अपने सिर एक बाल मोल लेना ही समझ पड़ता था ।"
- (रीतिकाल के) कवियों के परिचयात्मक विवरण मैंने प्रायः 'मिश्रबंधु विनोद' से ही लिये हैं। '
- 'मिश्रबंधु विनोद' के अतिरिक्त सामग्री सहयोग के लिये इन ग्रंथों के नाम शुक्ल जी ने दिये हैं-
- 'हिन्दी कोविद रत्नमाला' (बाबू श्यामसुन्दर दास)
- 'कविता - कौमुदी' (रामनरेश त्रिपाठी)
- 'ब्रजमाधुरी सार' (वियोगी हरिजी) ।
- "मेरा उद्देश्य अपने साहित्य के इतिहास का एक पक्का और व्यवस्थित ढाँचा खड़ा करना था, न कि कवि कीर्तन करना ।"

➤ शुक्ल जी का काल विभाजन एवं नामकरण इस प्रकार है -

- आदिकाल (वीरगाथाकाल, संवत् 1050-1375)
- पूर्व - मध्यकाल (भक्तिकाल संवत् 1375-1700)
- उत्तर- मध्यकाल (रीतिकाल, संवत् 1700-1900)
- आधुनिक काल (गद्यकाल, संवत् 1900-1984)
- आधुनिक हिन्दी का आदिकाल (1973) - नारायण चतुर्वेदा
- हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास (1985) - विश्वनाथ त्रिपाठी ।
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास (1996)- बच्चन सिंह

आदिकाल

- आचार्य शुक्ल ने अपने ग्रंथ के 'वक्तव्य' में आदिकाल के नामकरण पर विचार किया है-
- आदिकाल में (भाषा के आधार पर मुख्यतः) दो प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं: अपभ्रंश की और देशभाषा (बोलचाल) की। इसी आधार पर शुक्ल जी ने आदिकाल का विभाजन किया है: अपभ्रंश काव्य और देशभाषा काव्य। इनके अंतर्गत केवल बारह ग्रंथों को ही साहित्यिक मानते हुए इस प्रकार वर्गीकृत किया है:
- **अपभ्रंश काव्य** : विजयपालरासो, हम्मीररासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका।
- **देशभाषा काव्य** : खुमानरासो, बीसलदेवरासो, पृथ्वीराजरासो, जयचंद्रप्रकाश, जयमयंक जस चंद्रिका, परमालरासो (आल्हा का मूल रूप), खुसरो की पहेलियाँ आदि और विद्यापति पदावली।

➤ शुक्ल जी ने आदिकाल को चार प्रकरणों (अध्यायों) के अंतर्गत विवेचित किया है-

- प्रकरण 1 (सामान्य परिचय)
- प्रकरण 2 (अपभ्रंश काव्य)
- प्रकरण 3 (देशभाषा काव्य)
- प्रकरण 4 (फुटकल रचनाएँ)

➤ प्रकरण 1 (सामान्य परिचय)

- प्राकृत भाषा की तीन अवस्थाएँ मानी जाती हैं। प्रथम अवस्था को पालि, दूसरी को प्राकृत और अंतिम अवस्था को अपभ्रंश कहा जाता है।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार, "प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है। उस समय जैसे 'गाथा' कहने से प्राकृत का बोध होता था वैसे ही 'दोहा' या 'दूहा' कहने से अपभ्रंश या प्रचलित काव्यभाषा का पद्य समझा जाता था।"
- आचार्य शुक्ल ने अपभ्रंश के लिये 'प्राकृताभास हिन्दी', 'प्राकृत की अंतिम अवस्था' और 'पुरानी हिन्दी' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

➤ प्रकरण 2 (अपभ्रंश काव्य)

- अपभ्रंश के नाम का इतिहास इस प्रकार है-
- भरतमुनि ने अपभ्रंश नाम न देकर 'देशभाषा' ही कहा है।
- वररूचि के 'प्राकृतप्रकाश' में उल्लेख नहीं है।
- "अपभ्रंश नाम पहले पहल बलभी के राजा धारसेन द्वितीय के शिलालेख में मिलता है, जिसमें उसने अपने पिता गुहसेन (वि.सं. 650 के पहले) को संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों का कवि कहा है।"
- भामह ने तीनों भाषाओं का उल्लेख किया।
- बाण ने 'हर्षचरित' में संस्कृत कवियों के साथ भाषाकवियों का भी उल्लेख किया।

➤ प्रकरण 3 (देशभाषा काव्य / वीरगाथाकाल)

- इस प्रकरण में देशभाषा, उसमें रचित 'रासो' काव्य और सात ग्रंथों का विवेचन किया गया है। ये सात ग्रंथ इस प्रकार हैं- खुमानरासो (दलपत विजय), बीसलदेवरासो (नरपति नाल्ह), पृथ्वीराजरासो (चंदबरदाई), जयचंद्रप्रकाश (भट्टकेदार), जयमयंक जस चंद्रिका (मधुकर कवि), परमालरासो (जगनिक) और रणमल्ल छंद (श्रीधर)। शुक्ल जी द्वारा अपने ग्रंथ के आरंभ में दी गई बारह पुस्तकों की सूची में से आठ को 'देशभाषा काव्य' में रखा गया था,।

**आदिकाल संबंधी प्रमुख तथ्य**

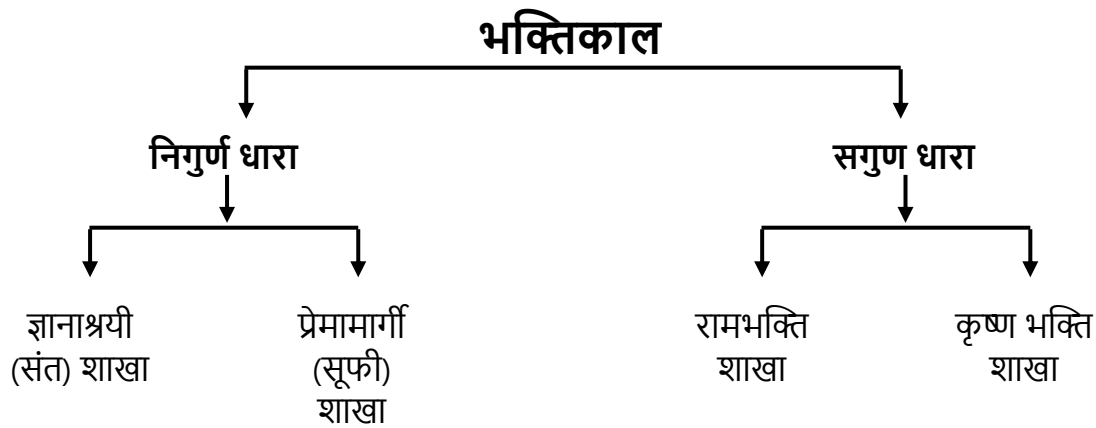
आदिकाल का नामकरण	प्रस्तोता
चारण काल	जॉर्ज ग्रियर्सन, एफ. ई. के
प्रारंभिक काल	मिश्रबंधु गणपतिचन्द्र गुप्त
बीजवपन काल	महावीरप्रसाद द्विवेदी
वीरगाथाकाल	रामचन्द्र शुक्ल
सिद्ध-सामंत काल	राहुल सांकृत्यायन
वीरकाल	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
संधिकाल एवं चारण काल	रामकुमार वर्मा
आदिकाल	हजारीप्रसाद द्विवेदी
जयकाल	रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
आधार काल	सुमन राजे, मोहन अवस्थी
अपभ्रंश काल	धीरेंद्र वर्मा, बच्चन सिंह
उद्भव काल	वासुदेव सिंह
संक्रमण	राम खेलावन पाण्डे

हिन्दी का प्रथम कवि**प्रस्तोता**

पुष्पदंत/पुंड	विशसिंह सेंगर
शालिभद्र सूरि	गणपतिचन्द्र गुप्त
स्वयंभू	रामकुमार वर्मा
सरहपा अब्दुल	राहुल सांकृत्यायन
रहमान विद्यापति	हजारीप्रसाद द्विवेदी
मुंज	डॉ. बच्चन सिंह

भक्तिकाल

- शुक्ल जी ने भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल) का समय संवत् 1375 से 1700 (सन् 1318 ई. से 1643 ई.) तक माना
- भक्तिकाल का विभाजन इस प्रकार किया है। यही विभाजन सर्वमान्य है-



इस काल को छः प्रकरणों में इस प्रकार बांटा गया है-

प्रकरण - 1: सामान्य परिचय

प्रकरण - 2 : निगुर्ण धारा - रामभक्ति शाखा

प्रकरण - 3 : निगुर्ण धारा - प्रेममार्गी (सूफी) शाखा

प्रकरण - 4 : सगुण धारा - रामभक्ति शाखा

प्रकरण - 5 : सगुण धारा - कृष्णभक्ति शाखा

प्रकरण - 6 : सगुण धारा भक्तिकाल की फुटकल रचनाएं

➤ प्रकरण 1 सामान्य परिचय

- इस प्रकरण में शुक्ल जी ने भक्ति काल के उदय की व्याख्या करते हुए उसकी सामान्य प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय दिया है।

➤ प्रकरण 2 (निगुर्ण धारा ज्ञानाश्रयी शाखा)

- इस प्रकरण में ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवियों का वर्णन किया गया है। कवियों इस क्रम में रखा गया है- कबीर, रैदास (रविदास), धर्मदास, गुरू नानक, दादूदयाल, सुंदरदास, मलूकदास, अक्षर अनन्य ।
- शुक्ल जी ने एक बात स्पष्ट की है - ' निगुर्णपंथ के संतों के संबंध में यह अच्छी तरह समझ रखनी चाहिये की उनमें कोई दार्शनिक व्यवस्था दिखाने का प्रयत्न व्यर्थ है। उन पर द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि का आरोप करके वर्गीकरण करना दार्शनिक पद्धति की अनभिज्ञता प्रकट करेगा। उनमें जो थोड़ा-बहुत भेद दिखाई पड़ेगा, वह उन अवयवों की न्यूनता या अधिकता के कारण जिनका मेल करके निगुर्ण पंथ चला है। '

➤ प्रकरण 3 (निगुर्ण धारा प्रेममार्गी (सूफी) शाखा

- 'इस काल के निर्गुणोपासक भक्तों की दूसरी शाखा उन सूफी कवियों की है जिन्होंने प्रेमगाथाओं के रूप में प्रेमतत्व का वर्णन किया है जो ईश्वर को मिलानेवाला है तथा जिसका आभास लौकिक प्रेम के रूप में मिलता है।'
- आचार्य शुक्ल ने प्रेममार्गी (सूफी) शाखा के कवियों का इस क्रम में वर्णन किया है- कुतबन, मंझन मलिक मुहम्मद जायसी, उसमान, शेख नवी, कासिम शाह, नूर मोहम्मद।

➤ प्रकरण 4: (सगुणधारा: रामभक्ति शाखा)

- शुक्ल जी ने रामभक्त कवियों का इस क्रम में वर्णन किया है- गोस्वामी तुलसीदासजी, स्वामी अग्रदास, नाभादास जी, प्राणचंद चौहान व हृदयराम।

➤ प्रकरण - 5 : (सगुणधारा : कृष्णभक्ति शाखा)

- इस प्रकरण में शुक्ल जी ने शंकर व श्री वल्लभाचार्य के माध्यम से कृष्ण भक्ति शाखा का दार्शनिक आधार व इतिहास समझाया है। इसके बाद अष्टछाप के कवियों व अन्य कृष्णभक्त कवियों के विषय में चर्चा की गई है।
- 'विक्रम की 15वीं और 16वीं शताब्दी में वैष्णव धर्म का जो आंदोलन देश के एक छोर से दूसरे छोर तक रहा उसके श्री वल्लभाचार्यजी प्रधान प्रवर्तकों में से थे।'
- 'रामानुज से लेकर वल्लभाचार्य तक जितने भक्त दार्शनिक या आचार्य हुए हैं, सबका लक्ष्य शंकराचार्य के मायावाद और विवर्तवाद से पीछा छुड़ाना था जिसके अनुसार भक्ति अविद्या या भ्रांति ही ठहरती थी। '
- शुक्ल जी ने कृष्णभक्ति शाखा के साहित्यकारों की चर्चा इस क्रम में की है- श्रीवल्लभाचार्यजी, सूरदासजी, ननंदास, कृष्णदास, परमानंददास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, हितहरिवंश, गदाधार भट्ट, मीराबाई, स्वामी हरिदास, सूरदास मनमोहन, श्री भट्ट, व्यास जी, रसखान व ध्रुवदास ।
- सूरदास, ननंदास, कृष्णदास, परमानंददास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी व गोविंदस्वामी, 'अष्टछाप के कवि हैं।
- 'पश्चिमी हिंदी बोलनेवाले सारे प्रदेशों में गीतों की भाषा ब्रज ही थी। दिल्ली के आसपास भी गीत ब्रज भाषा में ही गाए जाते थे, यह हम खुसरो (संवत् 1340) के गीतों में दिखा आए हैं। कबीर (संवत् 1560) के प्रसंग में कहा जा चुका है कि उनकी 'साखी' की भाषा तो 'सधुक्कड़ी' है, पर पदों की भाषा काव्य में प्रचलित ब्रजभाषा है। '

➤ प्रकरण - 6 (सगुणधारा : भक्तिकाल की फुटकल रचनाएं) -

- इस प्रकरण में देश की तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन करते हुए भक्ति - साहित्य से उसके संबंधों की विवेचना की गई है। साथ ही, कुछ अन्य कवियों की चर्चा भी की गई है जिनका काव्य क्षेत्र मुख्यतः वीर, श्रृंगार व नीति था ।

- फुटकल खंड में कवियों की चर्चा इस क्रम में की गई है- छीहल, लालचदास, कृपाराम, महापात्र नरहरि बंदीजन नरोत्तमदास, आलम, महाराज टोडरमल, महाराज बीरबल, गंग, मनोहर कवि, बलभद्र मिश्र, जमाल, केशवदास, होलराय, रहीम (अब्दुरहीम खानखाना), कादिर, मुबारक, बनारसीदास, सेनापति, पुहकर कवि, सुंदर, लालचंद या लक्षोदय।

➤ भक्तिकाल संबंधी प्रमुख तथ्य

- . भक्ति शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वेतर उपनिषद में मिलता है।
- . मोनियर विलियम्स के अनुसार 'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई।
- . भक्ति का उदय दक्षिण भारत से हुआ।

➤ भक्ति काल संबंधी संज्ञाएं

➤ भक्तिकाल : हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग - जार्ज ग्रियर्सन / डॉ. श्यामसुंदर दास

➤ लोक जागरण - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

➤ लोक जागरण काल - डॉ. रामविलास शर्मा

सूफी काव्य	
रचनाएं	रचनाकार
हंसावली	असाइत
चन्दायन या लोरकहा	मुल्ला दाउद
मधुमालती	मंझन
मृगावती	कुतबन (कुतुबन)
चित्रावती	उसमान
पद्मावत	जायसी (मलिका मुहम्मद)
अखरावट	मलिक मुहम्मद जायसी
आखिरी कलाम	मलिक मुहम्मद जायसी
कन्हावत	मलिक मुहम्मद जायसी
ज्ञान दीपक	शेखर नबी
रस रतन	पुहकर
लखन सेन पद्मावती कथा	दामोदरकवि
रूप मंजरी	ईश्वर दास
सत्यवती कथा	नूर मुहम्मद
अनुराग बांसुरी	नूर मुहम्मद



कृष्ण भक्ति काव्य	
रचनाएं	रचनाकार
सूरसागर	सूरदास
सूरसारावली	सूरदास
साहित्य लहरी	सूरदास
भ्रमर गीत (सूरसागर से संकलित)	सूरदास
फुटकल पद	कुंभनदास
परमानन्द सागर	परमानंद दास
जुगलमान चरित्र	कृष्ण दास
फुटकल पद	छीत स्वामी
फुटकल पद	गोविंद स्वामी
द्वादश यश	चतुर्भुजदास
भक्ति प्रताप	चतुर्भुजदास
हितजू को मंगल	चतुर्भुजदास
रास पंचाध्यायी	नन्ददास
भंवर गीत (प्रबंध काव्य)	नन्ददास
युगल शतक	श्री भट्ट
हित चौरासी	हित हरिवंश
हरिदास जी के पद	स्वामी हरिदास
भक्त नामावली	ध्रुवदास
रस लावनी	ध्रुवदास
नरसीजी का मायरा	मीराबाई
गीत गोविन्द टीका	मीराबाई
गोविन्द	मीराबाई

कृष्ण भक्ति काव्य	
रचनाएं	रचनाकार
राग सोरठ के पद	मीराबाई
प्रेम वाटिका	रसखान
सुजान रसखान	रसखान
दानलीला	रसखान
सुदामा चरित	नरोत्तम दास

➤ अष्टछाप के कवि

1. वल्लभाचार्य के शिष्य:

1. सूरदास, 2. कुंभन दास, 3. परमानन्द दास, 4. कृष्णदास

2. बिट्टलनाथ के शिष्य :

1. छीत स्वामी,
2. गोविन्द स्वामी,
3. चतुर्भुज दास,
4. नन्ददास

राम भक्ति काव्य		राम भक्ति काव्य
रचनाएं	रचनाकार	
राम आरती	रामानन्द	
रामाष्टयाम	अग्रदास	
रामभजन मंजरी	अग्रदास	
भरत मिलाप	ईश्वर दास	
अंगद पैज	ईश्वर दास	
रामचरित मानस	तुलसीदास	
गीतावली	तुलसीदास	
कवितावली	तुलसीदास	
विनय पत्रिका	तुलसीदास	
दोहावली	तुलसीदास	
कृष्ण गीतावली	तुलसीदास	
पार्वती मंगल	तुलसीदास	
जानकी मंगल	तुलसीदास	
बरवैर रामायण	तुलसीदास	
रामाज्ञा प्रश्नावली	तुलसीदास	
वैराग्य संदीपनी	तुलसीदास	
राम लला नहछू	तुलसीदास	
भक्त माल	नाभादास	
रामचन्द्रिका (प्रबंध काव्य)	केशव दास	
पौरुषेय रामायण	नरहरिदास	

अन्य रचनाएं और रचनाकार	
रचनाएं	रचनाकार
पंचसहेली	छीहल
कवित्त संग्रह	महापात्र नरहरि बंदीजन
माधवानल कामकंदला	आलम
कविप्रिया	केशव दास
रसिक प्रिया	केशवदास
रचनावली	केशवदास
सुंदर श्रृंगार	सुन्दर
पद्मिनीचरित्र	लालचंद

रीतिकाल

- रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल का समय संवत् 1700 (1643 ई.) से संवत् 1900 (1843 ई.) तक माना है।

➤ इस काल को तीन प्रकरणों में इस प्रकार बांटा गया है-

- प्रकरण -1 : सामान्य परिचय
- प्रकरण 2 : रीति ग्रंथकार कवि
- प्रकरण 3: रीतिकाल के अन्य कवि

➤ प्रकरण 1: सामान्य परिचय

- इस प्रकरण में आचार्य शुक्ल ने हिंदी कविता के विकास, लक्षण ग्रंथ परिपाटी तथा रीतिकाल के प्रवर्तन की समस्या का विश्लेषण करते हुए, केशवदास एवं इस काल की सामान्य प्रवृत्तियों पर विचार किया है।
- आचार्य शुक्ल ने हिंदी कविता के विकास पर टिप्पणी करते हुए कहा, 'हिंदी काव्य अब पूर्ण प्रौढ़ता को पहुंच गया था।'
- आचार्य शुक्ल ने रीतिकाल के आरंभ के बारे में कहा, 'इसमें। संदेह नहीं कि काव्य रीति का सम्यक् समावेश पहले पहल! आचार्य केशव ने ही किया किंतु हिंदी रीतिग्रंथों की अखंड परंपरा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं से मानना चाहिये।'

➤ प्रकरण - 2 : रीति ग्रंथकार कवि

- इस प्रकरण में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल के मुख्य-मुख्य। कवियों का विवरण दिया है, जिनका क्रम निम्न है-

- | | |
|---------------------|-------------|
| • चिंतामणि त्रिपाठी | • बेनी |
| • महाराज जसवंत सिंह | • बिहारीलाल |
| • मंडल | • मतिराम |
| • भूषण | • कुलपति |



- सुखदेव मिश्र
- राम
- देव
- सूरति मिश्र
- श्रीपति
- कृष्ण कवि
- गंजन
- दास (भिखारीदास)
- तोषनिधि
- सोमनाथ
- रघुनाथ
- कुमारमणि भट्ट
- शिवसहाय दास
- ऋषिनाथ
- दत्त
- नाथ (हरिनाथ)
- चंदन
- बेनी प्रवीन
- यशोदानंद
- गुरदीन पांडे
- पद्माकर भट्ट
- प्रताप साहि
- कालिदास त्रिवेदी
- नेवाज
- श्रीधर या मुरलीधर
- कवींद्र (उदयनाथ)
- बीर
- रसिक सुमति
- अली मुहिब खां (प्रीतम)
- भूपति (राजा गुरूदत्त सिंह)
- दलपति राय और बंशीधर
- रसलीन
- दूलह
- शंभुनाथ मिश्र
- रूप साहि
- बैरिसाल
- रतनकवि
- मनीराम मिश्र
- देवकीनंदन
- जसवंत सिंह द्वितीय
- करन कवि
- ब्रह्मदत्त
- ग्वाल कवि
- रसिक गोविंद

➤ **प्रकरण - 3 : रीतिकाल के अन्य कवि इस प्रकरण के कवियों का क्रम निम्न है-**

- बनवारी
- वृंद
- बैताल
- गुरू गोबिंद सिंह जी
- लाल कवि
- रसनिधि
- भक्तवार नागरीदासजी
- बख्शी हंसराज
- अलबेली अलि
- गिरधर कविराय
- श्री हठीजी
- सबलसिंह चौहान
- छत्रसिंह कायस्थ
- आलम
- श्रीधर या मुरलीधर
- घनआनंद
- महाराज विश्वनाथ सिंह
- जोधराज
- जनकराज किशोरीशरण
- चाचा हित वृंदावन दास
- भगवत रसिक
- गुमान मिश्र

- सरजूराम पंडित
- सूरदन
- ब्रजवासीदास
- गोपीनाथ और मणिदेव
- रामचंद्र
- मधुसूदनदास
- कृष्णदास
- सम्मन
- ललकदास
- नवलसिंह कायस्थ
- चंद्रशेखर
- पजनेस
- द्विजदेव (महाराज मानसिंह)
- भगवंतराय खीची
- हरनारायण
- गोकुलनाथ
- बोध
- मंचित
- मनियार सिंह
- गणेश
- ठाकुर
- खुमान
- रामसहाय दास
- बाबा दीनदयाल गिरि
- गिरिधरदास

➤ **डॉ. नगेन्द्र के अनुसार-** 'हिन्दी में रीति का प्रयोग साधारणतः लक्षण ग्रंथों के लिए होता है.. जिस ग्रंथ में रचना संबंधी नियमों का विवेचन हो वह रीतिग्रंथ और जिस काव्य की रचना इन नियमों से आबद्ध हो वह रीति काव्य है । "

➤ **आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार -** "हिन्दी रीति ग्रंथों की अखंड परम्परा चिंतामणि त्रिपाठी से चली अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं से मानना चाहिये।

रीतिकाल का नामकरण और उसके प्रस्तोता	
नाम	प्रस्तोता
अंधकार काल	त्रिलोचन
कला काल	डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
रीतिकाल	भागीरथ श्रिम, रामकुमार वर्मा
अलंकृत काल	डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
श्रृंगार काल	मिश्र बंधु

आधुनिक काल

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक कहे जाते हैं।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक को गद्य काल कहा है।

➤ **आधुनिक काल को दो भागों में बांटा जा सकता है -**

1. आधुनिक काल काव्य खंड
2. आधुनिक काल गद्य खंड
- रामचंद्र शुक्ल आधुनिक हिंदी कविता का आरंभ संवत् 1900 (1843 ई.) से मानते हैं।

➤ प्रकरण -1 : पुरानी धारा (संवत् 1900-1925)

- इस प्रकरण में रामचंद्र शुक्ल ने पुरानी परिपाटी में लिख रहे । आधुनिककालीन कवियों का उल्लेख किया है।
- पुरानी परिपाटी की कविता से आशय ब्रजभाषा काव्य परंपरा से है ।
- पुरानी परिपाटी में दो प्रकार के कवियों का उल्लेख मिलता है ।
- वे कवि जो केवल पुरानी परिपाटी की कविताएं लिखते थे।
- वे जिन्होंने एक ओर तो हिंदी साहित्य की नवीन गति के प्रवर्तन में योगदान दिया, दूसरी ओर पुरानी परिपाटी की कविता के साथ भी अपना पूरा संबंध बनाए रखा।
- पुरानी धारा के अंतर्गत पहले प्रकार (वर्ग) के कवियों में निम्न कवियों का वर्णन किया गया है ।
- सेवक, महाराज रघुराज सिंह रीवां नरेश, सरदार, बाबा रघुनाथदास ,रामसनेही, ललित किशोरी (शाह कुंदनलाल), राजा लक्ष्मण सिंह, लछिराम (ब्रह्मभट्ट), गोविंद गिल्लाभाई और नवनीत चौबे दूसरे प्रकार (वर्ग) के कवियों में निम्न कवियों का वर्णन हुआ है-
- भारतेंदु हरिश्चंद्र, पंडित प्रतापनारायण मिश्र, उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी (घ), ठाकुर जगमोहन सिंह, पंडित अबिकादत ! व्यास, बाबू रामकृष्ण वर्मा (बलवीर), पंडित नकछेदी तिवारी (अजान), पंडित विजयानंद त्रिपाठी, लाल सीताराम, पंडित आयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकार', राय देवीप्रसाद 'पूर्ण', श्री वियोगी हरि, श्री दुलारेलाल जी भार्गव और पंडित रामना ज्योतिषी ।

➤ प्रकरण - 2 : नई धारा प्रथम उत्थान (संवत् 1925-1950)

- 'नवीनधारा के प्रथम उत्थान के भीतर हम हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, अबिकादत व्यास, राधाकृष्णदास, उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि को ले सकते हैं। '
- इस प्रकरण में भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं उनके मंडल के सहयोगी लेखकों के काव्य लेखन तथा कविता में उनके योगदान की चर्चा की गई है।

➤ प्रकरण 3 (नई धारा: द्वितीय उत्थान (संवत् 1950-1975)

- द्विवेदी मंडल के कवि 'जिन्होंने द्विवेदीजी (महावीरप्रसाद द्विवेदी) के प्रोत्साहन से अथवा उनके आदर्श के अनुकूल रचनाएँ कीं' जिनमें शामिल कवि हैं- पं अयोध्यासिंह उपाध्याय (हरिऔध), पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, पं. रामचरित उपाध्याय, पं. गिरधर शर्मा 'नवरत्न' और लोचन।
- द्विवेदीमंडल के बाहर के कवि के संबंध में शुक्ल जी लिखते हैं, "द्विवेदी जी के प्रभाव से हिन्दी काव्य ने जो स्वरूप प्राप्त किया उसके अतिरिक्त और अनेक रूपों में भी भिन्न-भिन्न कवियों की काव्यधारा चलती रही। कई एक बहुत अच्छे कवि अपने-अपने ढंग पर सरस और प्रभापूर्ण कविता करते रहे जिनमें मुख्य हैं- राय देवीप्रसाद पूर्ण, पं. नाथूराम शंकर शर्मा, पं. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', पं. रामनरेश त्रिपाठी, स्वर्गीय लाला भगवानदीन, पं. रूपनारायण पांडेय और पं. सत्यनारायण 'कविरत्न' ।"

➤ प्रकरण 4 (नई धारा: तृतीय उत्थान: वर्तमान काव्यधाराएँ) (संवत् 1975 से शुक्ल जी के समय तक)

- इस प्रकरण में पाँच प्रकार के कवियों का वर्णन हुआ है, जो इस प्रकार हैं-

- वे कवि जो खड़ी बोली कविता जिस रूप में चल रही थी उससे असंतुष्ट होकर द्वितीय उत्थान के समाप्त होने से पहले ही खड़ी बोली काव्य को कल्पना का नया रूपरंग देने और उसे अधिक अंतर्भाव व्यंजक बनाने में प्रवृत्त हुए, जिनमें मुख्य थे- मैथिलीशरण गुप्त, मुकुटधर पांडेय और बदरीनाथ भट्ट । इस कड़ी में श्री पदुमलाल पुत्रालाल बख्शी का उल्लेख भर हुआ है।
- पूर्व से चली आती ब्रजभाषा काव्यपरंपरा के कवि जगन्नाथदास 'रत्नाकार', श्री वियोगी हरि और दुलारेलाल भार्गव का उल्लेख इस कड़ी हुआ है।
- द्विवेदीकाल में प्रवर्तित खड़ी बोली की काव्यधारा के कवि, जिसके अंतर्गत ठाकुर गोपालशरण सिंह, अनूप शर्मा, 'जगदंबाप्रसाद 'हितैषी', श्री श्यामनारायण पांडेय, पुरोहित प्रतापनारायण श्री और तुलसीराम शर्मा 'दिनेश' का उल्लेख हुआ है।
- 'छायावाद' काव्यधारा के कवि, जिनमें प्रमुख हैं- जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा। इसके अतिरिक्त इस वर्ग के कवियों में मोहनलाल महतो 'वियोगी', 'भगवतीचरण वर्मा', 'रामकुमार वर्मा', 'नरेन्द्र शर्मा' और रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' का उल्लेख भर किया गया है।
- स्वच्छंद धारा के कवि, इस धारा के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' सुभद्रा कुमारी चौहान, हरिवंशराय बच्चन, रामधारी सिंह 'दिनकर', ठाकुर गुरुभक्त सिंह और उदयशंकर भट्ट का उल्लेख किया है।
- इसके इतर इस प्रकरण में भारतेन्दुयुग और द्विवेदीयुग व साहित्यिक योगदान का विश्लेषण किया गया है, साथ ही खड़ी बोली में शिल्प और शैलीगत बदलावों को भी रेखांकित किया गया है। छायावाद की चर्चा के क्रम में 'कलावाद' 'अभिव्यंजनावाद' आदि के प्रभावों की भी चर्चा की गई है।

➤ आधुनिक पद्य (कविता) काल को निम्नांकित सात खण्डों में बांटा जा सकता है-

1. भारतेन्दु युग (1850 ई. - 1900 ई.)
2. द्विवेदी (आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी) युग (1900 ई. - 1918 ई.)
3. छायावादी युग (1918 ई. - 1936)
4. प्रगतिवादी युग (1936 ई. - 1943 ई.)
5. प्रयोगवादी युग (1943 ई. - 1953 ई.)
6. नयी कविता काल (1953 ई. - 1965 ई.)
7. नवगीत काल (1965 ई. से अब तक के उपरांत) एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा ।

भारतेन्दु युग

भारतेन्दु युग का काल विभाजन एवं नामकरण

प्रस्तुतकर्ता	समय (ई. में)	नामकरण
रामचंद्र शुक्ल	1868-1893	नई धारा : प्रथम उत्थान ।
रामविलास शर्मा	1868-1900	नवजागरण

मिश्र बंधु	1869-1888	वर्तमान काल
राम कुमार वर्मा	1870-1900	आधुनिक काल
डॉ. त्रिभुवन सिंह	1857-1947	जागरण काल
डॉ. बच्चन सिंह	1857-1900	पुनर्जागरण काल

- आधुनिक हिंदी कविता के प्रथम चरण को भारतेन्दु हरिश्चंद्र के । नाम पर 'भारतेन्दु युग' का नाम दिया गया है। नामकरण का आध र भारतेन्दु हरिश्चंद्र का युग प्रवर्तक व्यक्तित्व रहा। चूंकि भारतेन्दु का जन्म 9 सितंबर, 1850 ई. को हुआ, इसलिये कई विद्वान आधुनिक काल का आरंभ 1850 ई. से स्वीकार करते हैं।
- भारतेन्दु युग का समय 1850 ई. 1900 ई. ('सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के पूर्व तक) तक मान सकते हैं।

भारतेन्दुयुगीन रचनाकार एवं उनकी रचनाएं	
कवि का नाम (ई. में)	कृतियां
• भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850-1885)	• आगे दी गई हैं
• बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855-1922)	• जीर्ण जनपद, अलौकिक लीला, आनंद अरूणोदय, वर्षा बिंदु, हार्दिक हर्षादर्श, लालित्य लहरी, मयंक महिमा, बृजचंद पंचक
• प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894)	• प्रेम पुष्पांजलि, तृप्यताम मन की लहर, श्रृंगार विलास, लोकोक्ति शतक, हरगंगा
• ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-1899)	• ऋतु संहार (अनुदित - 1876 ई.) प्रेमसंपतिलता (1885 ई.) श्यामलता (1885 ई.) श्यामा सरोजिनी (1886 ई.) देवयानी (1886 ई.) मेघदूत (अनूदित 1883 ई.)

**भारतेंदुयुगीन रचनाकार एवं उनकी रचनाएं**

कवि का नाम (ई. में)	कृतियां
• भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885)	• आगे दी गई हैं
• बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855-1922)	• जीर्ण जनपद, अलौकिक लीला, आनंद अरूणोदय, वर्षा बिंदु, हार्दिक हर्षादर्श, लालित्य लहरी, मयंक महिमा, बृजचंद पंचक
• प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894)	• प्रेम पुष्पांजलि, तृप्यताम मन की लहर, श्रृंगार विलास, लोकोक्ति शतक, हरगंगा
• ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-1899)	• ऋतु संहार (अनुदित - 1876 ई.) प्रेमसंपतिलता (1885 ई.) श्यामलता (1885 ई.) श्यामा सरोजिनी (1886 ई.) देवयानी (1886 ई.) मेघदूत (अनूदित 1883 ई.)

कवि का नाम (ई. में)	कृतियां
अबकादत व्यास (1858 1900)	पावस पचासा (1886 ई.) सुकवि सतसई (1887 ई.) हो हो होरी (1891 ई.) बिहारी बिहार (1898 ई.)
राधाचरण गोस्वामी (1859-1925)	नवभक्तमाल
राधाकृष्णदास (1865-1907)	भारत- बारहमासा, देश-दशा

➤ द्विवेदी युग (1900-1918 ई.)

- द्विवेदी युग का नामकरण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर हुआ है।
- द्विवेदी युग की समयावधि सामान्यतः 1900 से 1918 ई. तक मानी गई है।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने द्विवेदी युग का काल निर्धारण सन् 1893 से 1918 ई. तक करते हुए उसे 'नई धारा : द्वितीय उत्थान' के अंतर्गत रखा है।
- डॉ. नगेंद्र ने द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' नाम दिया है।
- 1893 ई. में श्यामसुंदर दास, रामनारायण मिश्र और शिवकुमार सिंह के संयुक्त प्रयासों से काशी में 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई। सन् 1899 में 'इंडियन प्रेस' की स्थापना की गई।
- सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन वर्ष में द्विवेदी युग का आरंभ स्वीकार किया जाता है।
- नागरी प्रचारिणी सभा की प्रेरणा से इंडियन प्रेस प्रयास द्वारा सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन 1900 ई. में आरंभ हुआ। इसके प्रथम संपादक 'बाबू श्यामसुंदर दास' थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी 1903 ई. में इसके संपादक बने।
- सरस्वती पत्रिका के महत्व को रेखांकित करते हुए इसे 'बीसवीं शताब्दी के आरंभिक चरण का श्विकोश' कहा गया है।

➤ द्विवेदी युग के प्रमुख कवि -

श्रीधर पाठक, नाथूराम शर्मा 'शंकर', महावीरप्रसाद द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय, लाला भगवानदीन, रामचरित उपाध्याय, राय देवीप्रसाद 'पूर्ण', कामताप्रसाद गुरू, गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', रूपनारायण गुप्त, लोचनप्रसाद पांडेय, रामनरेश त्रिपाठी।

➤ छायावाद (1918-1936 ई.)

- हिन्दी साहित्य में 'छायावाद' शब्द का प्रथम लिखित प्रयोग मुकुटधर मांडेय ने किया।
- सन् 1920 ई. में जबलपुर में प्रकाशित पत्रिका 'श्रीशारदा' में 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से लेख चार चरणों में लिखकर छायावाद की आरंभिक विवेचना की।
- मुकुटधर पांडेय ने अपने लेखों में छायावाद की पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया जो इस प्रकार हैं- 1. वैयक्तिकता, 2. स्वातंत्र्य चेतना, 3. रहस्यवादिता, 4. शैलीगत वैशिष्ट्य, 5. अस्पष्टता।
- सरस्वती पत्रिका, जुलाई 1920 ई. अंक में प्रकाशित मुकुटधर पांडेय की कविता 'कुररी के प्रति' छायावाद की प्रथम कविता मानी जाती है।
- रामचन्द्र शुक्ल ने मुकुटधर पांडेय को 'छायावाद' का प्रवर्तक स्वीकार किया है।

- मुकुटधर पांडेय ने 'आँसू', 'उद्गार', 'प्रेमबंधन', 'पूजाफूल', 'कानन कुसुम' आदि रचनाएँ लिखी हैं।
- मुकुटधर पांडे, लोचनप्रसाद पांडेय के छोटे भाई थे। दोनों भाइयों को पांडे बंधु भी कहा जाता है।
- लोचनप्रसाद पांडेय ने ही 'गीतिकाव्य' शब्द का हिन्दी में सर्वप्रथम प्रयोग किया था।

छायावाद के प्रवर्तक और प्रस्तोता	
प्रवर्तक	प्रस्तोता
मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पांडेय	रामचन्द्र शुक्ल
सुत्रानन्दन पंत	नन्ददुलारे वाजपेयी
जयशंकर प्रसाद	इलाचन्द्र जोशी
माखनलाल चतुर्वेदी	प्रभाकर माचवे

➤ छायावाद के महत्त्वपूर्ण कवि एवं उनकी रचनाएँ

- **जयशंकर प्रसाद** - उर्वशी, वन मिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, शोकोच्छ्वास, वभ्रुवाहन, कानन कुसुम, प्रेमपथिक, महाराणा का महत्त्व, चित्राधार, झरना, आँसू लहर, कामायनी ।

- पहली कविता - सावन-पंचक
- पहली पुस्तक - उर्वशी
- खड़ी बोली में पहला काव्य - कानन कुसुम
- छायावाद का प्रथम काव्य संग्रह - झरना
- पहल छायावादी कविता - प्रथम प्रभात
- हिन्दी का पहला गीतिनाट्य - करुणालय
- कामायनी जयशंकर प्रसाद की महाकाव्यात्मक रचना है।
- कामायनी में कुल पन्द्रह सर्ग हैं।

- **सूर्यकांत त्रिपाठी** - अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुरुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अपरा, अर्चना, आराधना, गीतगुंज, सांध्यकाली ।

- प्रथम काव्य संग्रह अनामिका एवं जूही की कली पहली कविता है।

- **सुमित्रानन्द पंत** - उच्छ्वास, ग्रंथि, वीणा, पल्लव, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्य, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, युगांतर, युगपथ, उत्तरा, रजतशिखर, शिल्पी, अतिमा, सौवर्ण, वाणी, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, पुरुषोत्तमराम, चिदंबरा, सत्यकाम ।

- **महावेदी वर्मा** - नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा, सप्तपर्णा, प्रथम आयाम, अग्निरेखा ।

➤ उत्तर छायावाद

• डॉ. नगेन्द्र ने अपने इतिहास में ऐसे कवियों की काव्यधारा को 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा' तथा 'प्रेम और मस्ती का काव्य' का नाम दिया है।

➤ उत्तर छायावाद की काव्य धाराएँ -

- व्यक्तिवादी (स्वच्छन्दतावादी) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-धारा
- प्रमुख उत्तर छायावादी कवि हरिवंशराय बच्चन है।
- हरिवंशराय बच्चन को हालावादी कवि, शाला, मधुबाना तथा मधुकलश इनके प्रमुख रचनाये हैं।
- व्यक्तिवादी (स्वच्छन्दतावादी) के प्रमुख शर्मा, हृदयनारायण 'हृदयेश', हरिवंशराय बच्चन हरिकृष्ण प्रेमी, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल, अंचल, जानकी बल्लभ शास्त्री, विद्यावति 'कोकिल', सुमित्रा कुमारी सिन्हा।
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-धारा के प्रमुख चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, श्यामन प्रसाद मिलिंद, रामधारी सिंह दिनकर, महेश चन्द्र प्रसाद।

➤ प्रगतिवाद

- प्रगतिवाद के आदि प्रवर्तक कार्ल मार्क्स हैं।
- विश्व का पहला लेखक संगठन, 'यूनिजन ऑफ़ सोवियत' राइटर्स सन् 1934 से गोर्की के नेतृत्व में रूस में प्रभावी हुआ।
- ई. एम. फोर्स्टर ने 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एवं सन् 1935 में हेनरी बारबूस की पहल पर पेरिस में की थी।
- सन 1936-1934 तक हिन्दी कविता के आंदोलन चला जिसे 'प्रगतिवाद' के नाम से जाना जाता है।
- **प्रगतिवाद के महत्त्वपूर्ण कवि** - केदा (वैद्यनाथ मिश्र), शिवमंगल सिंह 'सुम सिंह', रांगेय राघव (त्र्यंबक वीर राधावाचार्य)।

➤ प्रयोगवाद

- सन् 1943 में अज्ञेय ने 'तार सप्तक' संपादन किया। 'वाद' के रूप में प्रयोगवाद की शुरुआत यहीं से मानी जाती है।
- व्यक्तिवाद या वैयक्तिकता प्रयोगवा 'आधुनिकतावाद' का आरंभ प्रयोगवाद से ही होता है।
- 'प्रयोगवादी रचनाएँ' शीर्षक निबंध में आलोचक नन्दुदुलारे वाजपेयी ने पहली बार 'प्रयोगवाद' शब्द इन्होंने प्रयोगवाद को 'बैठे ठाले का अँधा' कहा है।

➤ प्रयोगवाद प्रयुक्त आधार 'तारसप्तक'

- 'तारसप्तक' की परिकल्पना प्रभाकर ने की थी।
- अज्ञेय के सम्पादकत्व में चार सप्तक भूमिका स्वयं अज्ञेय जी ने लिखा है। प्रत्येक सप्तक में भिन्न - भिन्न 7-7 कवियों की रचनाओं को संकलित किया है।
- चारों सप्तकों में महिला कवयित्रियाँ -

1. शकुन्त माथुर (शकुन्तला माथुर, जो हैं) द्वितीय सप्तक में
2. कीर्ति चौधरी (कीर्तिबाला सिन्हा)
3. सुमन राजे (चतुर्थ सप्तक में)

➤ 'तार सप्तक' के प्रमुख कवि - सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', रामविलास शर्मा, गजानन माधव, 'मुक्तिबोध', प्रभाकर माचवे, नेमिचन्द्र जैन, गिरिजकुमार माथुर, भारतभूषण ।

प्रपद्यवाद / नकेनवाद

- प्रपद्यवाद प्रयोगवाद के समानान्तर एक ऐसा काव्य आंदोलन है। जिसके कवियों का दावा है कि 'असली प्रयोगवादी' वे ही हैं। क्योंकि प्रयोगवादियों के लिये प्रयोग साधन है लेकिन इनके लिये प्रयोग साध्य है।
- सन् 1956 में प्रकाशित 'नकेन के प्रपद्य' काव्य संकलन से नलिन विलोचन शर्मा ने प्रपद्यवाद का प्रवर्तन किया था।
- प्रपद्यवाद मुख्य रूप से तीन कवियों (नलिन विलोचन शर्मा, केशरी कुमार और नरेश) द्वारा चलाया गया काव्य आंदोलन है।

➤ नई कविता

- छठे दशक का काव्य - आंदोलन 'नई कविता' के नाम से जाना है। जाता है। यह 'नई कविता' नाम अज्ञेय का दिया हुआ।
- सर्वप्रथम 1952 ई. में अपने एक रेडियो - संवाद में अज्ञेय ने 'नई कविता' शब्द का उपयोग किया था। सन् 1953 ई. से 'नेय पत्ते' के जनवरी-फरवरी अंक से यह संवाद 'नई कविता' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।
- सन् 1954 में जगदीश गुप्त द्वारा संपादित 'नई कविता' पत्रिका से नई कविता का आरंभ माना जाता है। भारतभूषण अग्रवाल और रामस्वरूप चतुर्वेदी भी 'नई कविता' पत्रिका से जुड़े रहे।
- नई कविता से संबंधित गोष्ठी परिमल में अज्ञेय, लक्ष्मीकांत वर्मा एवं हरदेव बाहरी शामिल हुए।

आधुनिक काल के प्रमुख प्रबंधकाव्य

कवि	प्रबंध-काव्य (ई. में)
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	प्रियप्रवास (1914) पारिजात (1940) वैदेही वनवास (1940)
जयशंकर प्रसाद	कामायनी (1935)
सुमित्रानंदन पंत	लोकायतन (1964) पुरुषोत्तमराम (1967) सत्यकाम (1975)
मैथिलीशरण गुप्त	जयभारत (1952) विष्णुप्रिया (1957) साकेत (1931)

यशोधरा (1932)



आधुनिक काल : गद्य खंड

➤ प्रकरण 1 (सामान्य परिचय : गद्य का विकास)

प्रकरण 1 में आधुनिक काल से पहले के गद्य पर शुक्ल जी मुख्यतः दो रूप द्वारा विचार किया गया है। पूर्वाधुनिक गद्य के मिलते थे - ब्रजभाषा गद्य एवं खड़ी बोली का गद्य। आधुनिक काल तक साहित्य की मुख्य भाषा ब्रजभाषा रही थी तो ऐसे में गद्य की पुरानी रचनाओं का ब्रजभाषा में होना स्वाभाविक ही था। गद्य की रचनाएँ संख्या में कम ही रही थीं।

- शुक्ल जी ने ब्रजभाषा गद्य का विवेचन रचनाकारों के माध्यम से इस क्रम में किया है- विठ्ठलनाथ, नाभादास जी, वैकुण्ठमणि शुक्ल और सूरति मिश्र।
- ब्रजभाषा गद्य का आरंभिक रूप नाथपंथ से संबंधित ग्रंथ में संवत् 1400 (1343 ई.) के आस-पास मिलता है। तत्पश्चात् मुख्य रूप से ब्रजभाषा गद्य का संबंध भक्तिकालीन कृष्णभक्ति शाखा से रहा।

➤ प्रकरण 2 (गद्य साहित्य का अविर्भाव)

- इस प्रकरण में हिन्दी-उर्दू की बहस को आगे बढ़ाते हुए हिन्दी के हितैषियों (राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मण सिंह, फ्रेडरिक पिंकाट, बाबू नवीनचंद्र राय, स्वामी दयानंद सरस्वती और श्रद्धाराम फिल्लौरी) पर विचार किया गया है। साथ ही सर सैयद और तासी के हिन्दी - विरोध का भी विवेचन किया है।

➤ आदिकालीन हिन्दी गद्य के नमूने देने वाले ग्रन्थ

- कुवलयमाला कथा - उद्योतन सूरि
- राउलवेल - रोड/ रोड कवि
- उक्तिव्यक्ति प्रकरण - दामोदर शर्मा
- वर्णरत्नाकार - ज्योतिरीश्वर ठाकुर
- कीर्तिलता - विद्यापति

➤ आधुनिक गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन

- प्रथम उत्थान (संवत् 1925-1950)

➤ प्रकरण 1 (सामान्य परिचय)

- इस प्रकरण में आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं उनके मंडल के लेखकों के योगदान की चर्चा की गई है। हिन्दी भाषा की आरंभिक पत्र-पत्रिकाओं की चर्चा भी इस प्रकरण में की गई है।

➤ प्रकरण 2 (गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन)

- इस प्रकरण में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा उनके समसामयिक रचनाकारों के साहित्यिक लेखन की विशिष्टता का वर्णन किया गया है। साथ ही हिन्दी भाषा तथा नागरी लिपि के प्रचार कार्यों की विवेचना करते हुए संलग्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं का वर्णन हुआ है।

- इस प्रकरण में रचनाकारों का वर्णन निम्न क्रम से किया गया है -

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', लाल श्रीनिवासदास, ठाकुर जगमोहन सिंह, बाबू तोताराम, पं. केशवराम भट्ट, पं. राध चरण गोस्वामी, पं. अंबिकादत्त व्यास, पं. मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, पं. भीमसेन शर्मा, काशीनाथ खत्री, राधाकृष्ण दास, कार्तिकप्रसाद खत्री, फ्रेडरिक पिकाट | द्वितीय उत्थान (संवत् 1950-1975)

➤ प्रकरण 3 (सामान्य परिचय)

- इस प्रकरण में अव्यवस्थित और बिगड़ती भाषा को महावीरप्रसाद द्विवेदी के व्यवस्था प्रदान करने वाले प्रयासों के साथ संवत् 1950 से 1975 तक की अवधि में विभिन्न गद्य-विधाओं पर सामान्य विचार किया गया है।

➤ प्रकरण 4 (गद्य साहित्य का प्रसार)

➤ बाबू देवकीनंदन खत्री

- "पहले मौलिक उपन्यास लेखक, जिनके उपन्यासों की सर्वसाधारण में धूम हुई, काशी के बाबू देवकीनंदन खत्री थे।"
- 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकाता संतति' नामक इनके ऐयारी के उपन्यासों की चर्चा।

➤ किशोरीलाल गोस्वामी

- " उपन्यासों का ढेर लगा देने वाले दूसरे मौलिक उपन्यासकार पंडित किशोरीलाल गोस्वामी (जन्म संवत् 1922-मुत्यु 1979) हैं, जिनकी रचनाएँ साहित्य कोटि में आती हैं। "

तृतीय उत्थान (संवत् 1975 / सन् 1918 ई. से ...)



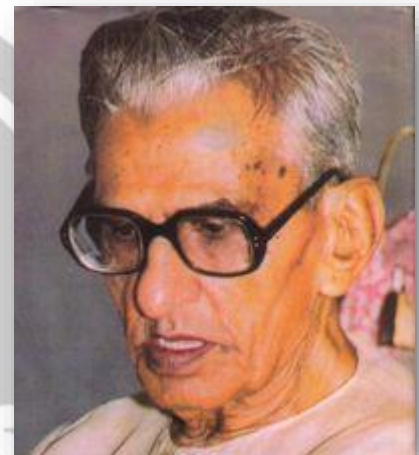
➤ प्रकरण 5 (गद्य साहित्य की वर्तमान गति)

- "हमारे गद्य साहित्य का यह काल अभी (शुक्ल जी का समय) हमारे सामने है। "
- शुक्ल जी का मानना है कि यह इतना दूर पीछे नहीं छूटा है इतिहास के भीतर आ सके। इसी से उन्होंने गद्य की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों को लक्षित करने के लिये उस समय के गद्य साहित्य के विभिन्न अंगों का संक्षिप्त विवरण ही दिया है।

▶ सं. डॉ. नागेन्द्र

✶ एक परिचय

डॉ. नगेन्द्र, जन्म 9 मार्च, 1915, (उत्तर प्रदेश) अलीगढ़ जिले में। अतरौली नामक कस्बे में हुआ था। मृत्यु- 27 अक्टूबर 1999 नई दिल्ली भारत के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार थे। आधुनिक हिन्दी की आलोचना को समृद्ध करने में डॉ. नगेन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। वे काव्य शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् माने जाते थे। उनके निबन्धों में वैचारिक औदात्य के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व भी अभिव्यक्ति पा गया है। उनके निबन्धों में एक सहृदय तथा भावुक निबन्धकार के गुण भली-भाँति लक्षित होते हैं। इसका कारण यह है कि नगेन्द्र जी का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में। प्रवेश एक कवि के रूप में हुआ था। उनकी प्रतिभा का विकास मूलतः। आलोचनात्मक निबन्धकार के रूप में ही हुआ। हिन्दी के पांक्तेय आलोचक के रूप में नगेन्द्र विशेषतः यशस्वी रहे हैं।



अपनी शिक्षा के अंतर्गत नगेन्द्र जी ने अंग्रेजी और हिन्दी विषयों में एम. ए. किया था। इसके बाद उन्होंने हिन्दी में डी. लिट की उपाधि भी प्राप्त की थी। नगेन्द्र जी 'दिल्ली विश्वविद्यालय' से प्रोफेसर तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर से सेवानिवृत्त होने के उपरान्त स्वतन्त्र रूप से साहित्य की साधना में संलग्न हो गये थे। उन्होंने 'एमरिट्स प्रोफेसर' के पद पर भी कार्य किया था। वह 'आगरा विश्वविद्यालय रीतिकाल के संदर्भ में देव का अध्ययन' शीर्षक शोध प्रबन्ध पर शोध आगरा से उपाधि से अलंकृत हुए थे। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में डॉ. नगेन्द्र को प्राध्यापक, रीडर एवं प्रोफेसर के पदों पर नियुक्ति के समय विशेषज्ञ नियुक्त किया जाता था।

✶ लेखन कार्य

नगेन्द्र जी ने अपनी प्रखर कलम के द्वारा हिन्दी निबन्ध साहित्य की गरिमा को अद्वितीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहित की। उनके द्वारा कृत 'मेरा व्यवसाय' और 'साहित्य सृजन' शीर्षक इस

निबन्ध लेखक | की आत्मपरक शैली का प्रतीक है। इस रचना नगेन्द्र जी ने अपने | आपको अपनी ही दृष्टि से देखा तथा परखा है। यह निबन्ध अध्यापकों-अध्यापिकाओं के लिये विशेषतः उपादेय है। डॉ. नगेन्द्र का यह मानना था कि 'अध्यापक वृत्ति: व्याख्याता और विवेकशील होता है। ऊँची श्रेणी के विद्यार्थियों और अनुसन्धाताओं को काव्य का मर्म समझाना उसका व्यावसायिक कर्तव्य व कर्भ है।' उन्होंने यह भी लिखा है कि 'अध्यापन का, विशेषकर उच्च स्तर के अध्यापन का, साहित्य के अन्य अंगों के सृजन से सहज सम्बन्ध न हो, परन्तु आलोचना से उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।' कक्षा के मंत्र पर अध्यापक किसी साहित्यिक समस्या को लेकर स्वयं निर्णय ले सके तथा शिक्षार्थी वर्ग की निर्णय शक्ति का विकास कर सके। यह निश्चय ही अध्यापक के धर्म की परिधि कहलाती है। इन्होंने 1948 ईस्वी में रीतिकाव्य की भूमिका और महाकवि देव विषय पर शोध उपाधि प्राप्त की थी।

डॉ. नगेन्द्र का साहित्य निबंध / आलोचना

- 1938 सुमित्रानंदन पंत (पहली आलोचनात्मक पुस्तक)
- 1939 साकेत: एक अध्ययन
- 1944 विचार और विवेचन (निबंध)
- 1949 आधुनिक हिंदी नाटक
- 1949-विचार और अनुभूति (निबंध)
- 1949 रीति काव्य की भूमिका

हिंदी साहित्य का इतिहास

- 1951 आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ
- 1955 विचार और विश्लेषण (निबंध)
- 1957 अरस्तू का काव्यशास्त्र
- 1961 अनुसंधान और आलोचना
- 1962 कामायनी के अध्ययन की समस्याएं
- 1964 रस-सिद्धांत
- 1966 आलोचक की आस्था (निबंध)
- 1969 आस्था के चरण (निबंध संग्रह)
- 1970 नयी समीक्षा: नये संदर्भ
- 1971 समस्या और समाधान
- 1973 हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (दस भाग)



• काव्य कला
• भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा
• पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा
• चेतना के बिंब (निबंध)
• वीणापाणि के कम्पाउण्ड में (निबंध)
• हिंदी उपन्यास (निबंध)
• अर्द्धकथा 1988 (आत्मकथा)
• 1979 मिथक और साहित्य
• 1982 साहित्य का समाज शास्त्र
• 1985 भारतीय समीक्षा और आचार्य शुक्ल की काव्य दृष्टि
• 1987 मैथलीशरण गुप्त : पुनर्मूल्यांकन
• 1990 प्रसाद और कामायिनी
• 1993 राम की शक्तिपूजा
• अभिनव भारती
• नाट्य दर्पण
• काव्य में उदात्त तत्व

► डॉ. नगेन्द्र का काल विभाजन :

इनके द्वारा भी सम्पूर्ण हिंदी साहित्योतिहास को चार प्रधान कालखंडों में बांटा गया है आधुनिक काल को भी चार उप भागों में बांटा गया है :-

1. आदिकाल- सातवीं शताब्दी के मध्य से 14वीं शताब्दी के मध्य तक
2. भक्तिकाल - 14 वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के मध्य तक
3. रीतिकाल - 17वीं शताब्दी के मध्य से 19वीं शताब्दी के मध्य तक
4. आधुनिक काल- 19 वीं शताब्दी के मध्य से अब तक

► पुनर्जागरण काल (भारतेंदु काल) - 1857 ई. से 1900 ई. तक

- (1) जागरणसुधार काल (द्विवेदी काल) - 1900 - 1918 ई. तक
- (2) छायावाद काल 1918-1938 ई. तक

► छायावादोत्तर काल :-

- (क) प्रगति - प्रयोग काल- 1938-1953 ई. तक
- (ख) नवलेखन काल- 1953 ई. से अब तक



विशेष तथ्य

- ये रसवादी आलोचक माने जाते हैं।
- इनका साहित्यिक जीवन कवि के रूप में आरंभ होता है। सन 1937 ई. में उनका पहला काव्य संग्रह 'वनबाला' प्रकाशित हुआ।
- इन्होंने फ्रायड के मनोविश्लेषण शास्त्र के आधार पर नाटक और नाटककारों की आलोचनाएँ लिखीं।
- डॉ. नगेन्द्र के निबन्धों की भाषा शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, व्याकरण सम्मत तथा साहित्यिक खड़ी बोली है।
- नगेन्द्र जी 'दिल्ली विश्वविद्यालय' से प्रोफेसर तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर से सेवानिवृत्त होने के उपरान्त स्वतन्त्र रूप से साहित्य की साधना में संलग्न हो गये थे।
- ये 'आगरा विश्वविद्यालय', आगरा से "रीतिकाल के संदर्भ में देव का अध्ययन" शीर्षक शोध प्रबन्ध पर शोध उपाधि से अलंकृत हुए थे।
- डॉ. नगेन्द्र का यह मानना था कि "अध्यापक वृत्ति: व्याख्याता और विवेकशील होता है। ऊँची श्रेणी के विद्यार्थियों और अनुसन्धताओं को काव्य का मर्म समझाना उसका व्यावसायिक कर्तव्य व कर्म है।" उन्होंने यह भी लिखा है कि "अध्यापन का, विशेषकर उच्च स्तर के अध्यापन का साहित्य के अन्य अंगों के सृजन से सहज सम्बन्ध न हो, परन्तु आलोचना से उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।"



★ शैली

'डॉ. नगेन्द्र की निबन्ध लेखन की शैली में भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने की अद्भुत क्षमता लक्षित होती है। उनकी लेखन शैली अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित रही है। इसका कारण यह है कि वह अंग्रेजी साहित्य से सम्पूर्णतः प्रभावित और प्रेरित होकर हिन्दी साहित्य की साधना के मार्ग पर चले थे। उनके 'निबन्ध साहित्य' में निम्नलिखित शैलियों का व्यवहार सम्यक रूपेण लक्षित होता है

★ विवेचनात्मक शैली

नगेन्द्र जी मूलतः आलोचनात्मक एवं विचारात्मक निबन्धकार के रूप में समादृत रहे थे। इस शैली में लेखक तर्कों द्वारा युक्तियों को सुलझाता हुआ चलता है। वह अत्यन्त गम्भीर एवं बौद्धिक विषय को अपनी कुशल विवेचना पद्धति के द्वारा सरल रूप में स्पष्ट कर देता है तथा विवादास्पद विषयों को अत्यन्त बोधगम्य रीति से समझाने की चेष्टा करता है। उनका 'आस्था के चरण' शीर्षक निबन्ध संकलन इस शैली का अच्छा उदाहरण है।

★ प्रसादात्मक शैली

इस शैली का प्रयोग डॉ. नगेन्द्र के निबन्ध साहित्य में सर्वत्र देखा जा सकता है। इस शैली के द्वारा लेखक ने विषय को सरल तथा बोधगम्य रीति से प्रस्तुत करने का कार्य किया है। यह भी एक तथ्य है कि डॉ. नगेन्द्र का मन सम्पूर्णतः प्राध्यापन व्यवसाय में ही रमण करता रहा। इसीलिए लिखते समय वह इस बात का ध्यान रखते थे कि जो बात वह कह रहे हैं, उसमें कहीं किसी प्रकार की अस्पष्टता न रह जाए।

★ गोष्ठी शैली

'हिन्दी उपन्यास' नामक निबन्ध में नगेन्द्र जी ने "गोष्ठी शैली" का व्यवहार किया है। सही अर्थों में वे अपनी प्रतिभा के बल पर ही निबन्ध साहित्य में 'गोष्ठी शैली' की सृष्टि करने में सफल रहे थे।

★ सम्वादात्मक शैली

'हिन्दी साहित्य में हास्य की कमी' शीर्षक रचना में इस शैली का प्रयोग देखा जा सकता है। इस शैली में जागरुक अध्येताओं को स्पष्टता एवं विवेचना दोनों ही बातें लक्षित हो जाएंगी।

★ पत्रात्मक शैली

'केशव का आचार्यत्व' नामक रचना में डॉ. नगेन्द्र ने पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। उल्लेखनीय बात तो यह है कि डॉ. विजयेन्द्र स्नातक कृत 'अनुभूति के क्षण' नामक रचना भी सम्पूर्णतः पत्रात्मक शैली की ही निबन्ध रचना है।

★ प्रश्नोत्तर शैली

डॉ. नगेन्द्र के लेखन में 'प्रश्नोत्तर शैली' का सौन्दर्य भी लक्षित हो जाता है। इस शैली में निबन्धकार स्वयं ही प्रश्न करता है तथा उसका उत्तर भी स्वयं ही देता है। डॉ. नगेन्द्र कृत 'साहित्य की समीक्षा' शीर्षक निबन्ध को इस शैली का अन्यतम उदाहरण माना जा सकता है।

★ संस्मरणात्मक शैली

'अप्रवासी की यात्राएं' नामक कृति 'यात्रावृत्त' की विधा की एक प्रमुख कृति है। यह रचना डॉ. नगेन्द्र की संस्मरणात्मक शैली के सौन्दर्य का उदाहरण प्रस्तुत करती है। 'दद्या- एक महान व्यक्तित्व' शीर्षक संस्मरणात्मक निबन्ध में इस शैली का व्यवहार लक्षित होता है।

★ आत्मसाक्षात्कार की शैली

'आलोचक का आत्म विश्लेषण' नामक रचना में डॉ. नगेन्द्र का लेख इस शैली का प्रयोग करता हुआ लक्षित होता है। वस्तुतः निबन्ध की विधा में वे ऐसे शैलीकार के रूप में सामने आते हैं, जो रचना में आद्योपान्त अपनी रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए चलता है।

❖ हिन्दी साहित्य का इतिहास

चार युग-

1. आदिकाल,
2. भक्तिकाल,
3. रीतिकाल,
4. आधुनिक काल

साहित्य के मूल में परिवर्तित सामूहिक चित्तवृत्तियों को आधार बनाकर साहित्य की परंपरा का व्यवस्थित अनुशीलन ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, 'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संक्षिप्त प्रतिबिंब होता है।' जनवरी 1929 में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ लिखा हिंदी का यह पहला ग्रंथ है।

► हिंदी साहित्य के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया गया है-

आदिकाल - सातवीं शताब्दी के मध्य से 14वीं शताब्दी के मध्य तक

भक्तिकाल - 14 वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के मध्य तक

रीतिकाल - 17वीं शताब्दी के मध्य से 19वीं शताब्दी के मध्य तक

आधुनिक काल - 19 वीं शताब्दी के मध्य से अब तक

❖ आदिकाल

► आदिकाल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. वीर रस की प्रधानता
2. युद्ध का सजीव चित्रण
3. ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण
4. श्रृंगार एवं अन्य रसों का समावेश
5. प्राकृत, अपभ्रंश, डिंग

आदिकाल के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्न लिखित हैं-

1. चंदवरदायी- पृथ्वीराज रासो
2. नरपति नाल्ह वीसलदेव रासो
3. जगनिक परमाल रासो श्आल्हाखण्डर
4. शारंगधर- हम्मीर रासो
5. दलपतिविजय - खुमान रासो

❖ भक्तिकाल

भक्तिकाल हिंदी साहित्य का स्वर्णिम काल माना जाता है। भक्ति काल को दो भागों में बाँटा जा सकता है-

1. सगुण धारा
2. निर्गुण धारा

1. सगुण धारा - भक्तिकाल की इस काव्य धारा के कवियों ने ईश्वर के साकार रूप की लीलाओं का वर्णन किया है। इसे दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

• रामभक्ति शाखा -

इस शाखा में राम के जीवन चरित्र को आधार बनाया गया तथा इनके माध्यम से समाज को आदर्श मूल्यों, स्वस्थ गुणों, सामाजिक, पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा देने का प्रयत्न किया गया।

इस शाखा के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

- तुलसीदास - रामचरित मानस
अग्रदास - अष्टयाम
नाभादास - भक्तमाल

केशवदास - रामचंद्रिका

• कृष्णभक्ति शाखा -

कृष्णभक्ति शाखा में कृष्ण के चरित्र को आधार बनाकर काव्य रचना की गई। इस शाखा के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

सूरदास - सूरसागर

मीराबाई - मीराबाई की पदावली

रसखान - प्रेम वाटिका

इस शाखा में अष्टछाप के कवि थे

2. निर्गुण धारा - जिन कवियों ने ईश्वर को निराकार रूप में अपने काव्य में स्थान दिया, उन्हें निर्गुण धारा के कवि के रूप में जाना जाता है। इसे दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

• **ज्ञानमार्गी शाखा** - ज्ञान को ही ईश्वर तक जाने का मार्ग मानकर जिन्होंने काव्य साधना की, वे ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं इस शाखा के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

कबीर दास- बीजक

रैदास - गुरु ग्रंथ साहब

• **प्रेममार्गी शाखा** - जिन्होंने प्रेम के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग खोलना चाहा, ये सभी प्रेमाश्रयी शाखा के अंतर्गत परिगणित होते हैं।

इस शाखा के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

मलिक मोहम्मद जायसी - पद्मावत, शेख रहीम, नसीर

भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. साकार एवं निराकार ब्रह्म की उपासना
2. रहस्यवादी कविता का प्रारंभ
3. आध्यात्मिकता और सदाचार प्रेरणा
4. लोक कल्याण के पद पर काव्य का चरमोत्कर्ष
5. समस्त काव्य शैलियों का प्रयोग
6. प्रकृति सापेक्ष वर्णन ।

❖ रीतिकाल

रीतिकालीन काव्य को तीन धाराओं में विभाजित किया जा सकता है –

- रीतिबद्ध काव्य,
- रीतिमुक्त काव्य,
- रीतिसिद्ध काव्य

रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण
2. ब्रज मिश्रित अवधी भाषा का प्रयोग
3. वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता
4. नीति और भक्ति संबंधी काव्य रचनाएँ
5. मुक्तक काव्य रचनाएँ

इस काल के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. बनानंद- सुजान सागर
2. केशवदास - कविप्रिया, रामचंद्रिका
3. पद्माकर - पद्माभरण
4. भूषण - शिवराज भूषण
5. बिहारी - बिहारी सतसई
6. रतनिधि - विष्णुपद कोर्तन

❖ आधुनिक काल

आधुनिक हिंदी कविता का प्रारंभ संवत् 1900 से माना जाता है। यह काल अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस काल में हिंदी साहित्य का चहुँमुखी विकास हुआ। यह काल हिंदी साहित्य की अनेक प्रवृत्तियों एवं परिवर्तनों को लेकर उपस्थित हुआ। इस काल में धर्म, दर्शन, कला एवं साहित्य सभी के प्रति नए दृष्टिकोण का आविर्भाव हुआ।

हिंदी साहित्य के विकासक्रम को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है-

1. भारतेंदु युग - सन् 1850 से 1900 तक
2. द्विवेदी युग - सन् 1900 से 1920 तक
3. छायावादी युग - सन् 1920 से 1936 तक
4. प्रगतिवादी युग - सन् 1936 से 1943 तक

5. प्रयोगवादी युग - 1943 से 1950 तक
6. नई कविता - सन् 1950 से आज तक

► **भारतेन्दु युग -**

भारतेन्दु युग को आधुनिक हिंदी साहित्य का प्रवेश द्वार माना जाता है। इस युग के कवियों में नवीन के प्रति मोह, साथ ही प्राचीन के प्रति आग्रह भी था। भारतेन्दु युग नव जागरण का युग है। इसमें नई सामाजिक चेतना उभरकर आई। भारतेन्दु युग में देशभक्ति और राजभक्ति तत्कालीन राजनीति का अभिन्न अंग थी, जिसका स्पष्ट प्रभाव इस युग के कवियों में देखा जा सकता है।

► **भारतेन्दु युगीन काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-**

1. **राष्ट्रीयता की भावना** - इस युग के कवियों ने देश-प्रेम की 'रचनाओं के माध्यम से जन-मानस में राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण किया।
2. **सामाजिक चेतना का विकास** - इस काल का काव्य सामाजिक चेतना का काव्य है। इस युग के कवियों ने समाज में व्याप्त अंध विश्वास एवं सामाजिक रुढ़ियों को दूर करने हेतु कविताएँ लिखीं।
3. **हास्य व्यंग्य** - हास्य व्यंग्य शैली को माध्यम बनाकर पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन तथा सामाजिक अंधविश्वासों पर करारे प्रहार किए गए।
4. **अंग्रेजी शिक्षा का विरोध** - भारतेन्दु युगीन कवियों ने अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के प्रति अपना विरोध कविताओं में प्रगट किया है।
5. **विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग** - इस काल में काव्य के विविध रूप दिखाई देते हैं। जैसे मुक्तक काव्य, प्रबंध काव्य आदि।

► **भारतेन्दु युगीन प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -**

1. भारतेन्दु हरिश्चंद्र - प्रेम सरोवर, प्रेम फुलवारी
2. प्रताप नारायण मिश्र - प्रेम पुष्पावली
3. जगमोहन सिंह - देवयानी
4. राधाचरण गोस्वामी - नवभक्त माल
5. अंबिका दत्त व्यास - भारत धर्म

► **द्विवेदी युग -**

यह युग कविता में खड़ी बोली के प्रतिष्ठित होने का युग है। इस युग के प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। इन्होंने 'सरस्वती पत्रिका' का संपादन किया। इस काल में प्रबंध काव्य भी पर्याप्त संख्या में लिखे गए। अनेक कवियों ने ब्रजभाषा छोड़कर खड़ी बोली को अपनाया। इस काल में

खड़ी बोली को ब्रजभाषा के समक्ष काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया, साथ ही विकसित चेतना के कारण कविता नई भूमि पर प्रतिष्ठित हुई।

► द्विवेदी युगीन काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. **देशभक्ति** - द्विवेदी युग में देशभक्ति को व्यापक आधार मिला। इस काल में देशभक्ति विषयक लघु एवं दीर्घ कविताएँ लिखी गईं।
2. **अंधविश्वास तथा रुढ़ियों का विरोध** - इस काल की कविताओं में सामाजिक अंधविश्वासों और रुढ़ियों पर तीखे प्रहार किए गए।
3. **वर्णन प्रधान कविताएँ** - 'वर्णन' प्रधानता इस युग की कविताओं की विशेषता है।
4. **मानव प्रेम** - द्विवेदी युगीन कविताओं में मानव मात्र के प्रति प्रेम की भावना विशेष रूप से मिलती है।
5. **प्रकृति-चित्रण** - इस युग के कवियों ने प्रकृति के अत्यंत रमणीय चित्र खींचे हैं। प्रकृति का स्वतंत्र रूप में मनोहारी चित्रण मिलता है।

द्विवेदी युगीन प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. मैथिलीशरण गुप्त - पंचवटी, जयद्रथ - वध, साकेत
2. रामनरेश त्रिपाठी - स्वप्न, पथिक, मिलन
3. माखनलाल चतुर्वेदी - समर्पण, युगचरण
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी - काव्य मंजूषा, सुमन
5. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' - प्रिय प्रवास, रसकलश

► छायावाद

हिंदी साहित्य के आधुनिक चरण में द्विवेदी युग के पश्चात् हिंदी काव्य की जो धारा विषय वस्तु की दृष्टि से स्वच्छंद प्रेमभावना, प्रकृति में मानवीय क्रिया-कलापों तथा भाव - व्यापारों के आरोपण और कला की दृष्टि से लाक्षणिकता प्रधान नवीन अभिव्यंजना पद्धति को लेकर चली, उसे 'छायावाद' कहा गया।

डॉक्टर नगेंद्र के अनुसार, 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म के विद्रोह' को छायावाद माना जाना है। प्रकृति पर चेतना के आरोप को भी छायावाद कहा गया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'प्रस्तुत' के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में 'अप्रस्तुत कथन' को छायावाद माना है।

जयशंकर प्रसाद के अनुसार, 'छायावादी कविता वाणी का यह लावण्य है जो स्वयं में मोती के पानी जैसी छाया, तरलता और युवती के लज्जा भूषण जैसी श्री से संयुक्त होता है। यह तरल छाया और लज्जा श्री ही छायावादी कवि की वाणी का सौंदर्य है।'

► छायावादी काव्य की विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- 1. व्यक्तिवाद की प्रधानता** - छायावाद में व्यक्तिगत भावनाओं की प्रधानता है। यहाँ कवि अपने सुख-दुख एवं हर्ष-शोक को ही वाणी प्रदान करते हुए खुद को अभिव्यक्त करता है।
- 2. श्रृंगार भावना** - छायावादी काव्य मुख्यतया श्रृंगारी काव्य है किंतु उसका श्रृंगार अतींद्रिय सूक्ष्म श्रृंगार है। छायावाद का श्रृंगार उपभोग की वस्तु नहीं, अपितु कौतूहल और विस्मय का विषय है। उसकी अभिव्यंजना में कल्पना और सूक्ष्मता है।
- 3. प्रकृति का मानवीकरण** - प्रकृति पर मानव व्यक्तित्व का आरोप छायावाद की एक प्रमुख विशेषता है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को अनेक रूपों में देखा है। कहीं प्रकृति को नारी के रूप में देखकर उसके सूक्ष्म सौंदर्य का चित्रण किया है।
- 4. अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम** - अज्ञात सत्ता के प्रति कवि में हृदयगत प्रेम की अभिव्यक्ति पायी जाती है। इस अज्ञात सत्ता को कवि कभी प्रेयसी के रूप में तो कभी चेतन प्रकृति के रूप में देखता है। छायावाद की यह अज्ञात सत्ता ब्रह्म से भिन्न है।
- 5. नारी के प्रति नवीन भावना** - छायावाद में श्रृंगार और सौंदर्य का संबंध में नारी से है। रीतिकालीन नारी की तरह छायावादी नारी प्रेम की पूर्ति का साधन मात्र नहीं है। वह इस पार्थिव जगत की स्थूल नारी न होकर भाव जगत की सुकुमार देवी है।

तथ्य

1. 'जयशंकर प्रसाद' छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं।
2. छायावाद की त्रयी- प्रसाद, पंत और निराला हैं।

► छायावाद के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. जयशंकर प्रसाद - कामायनी, आँसू, लहर
2. महादेवी वर्मा - नीरजा, निहार, रश्मि, सांध्यगीत
3. सुमित्रानंदन पंत - पल्लव, गुंजन, ग्रंथि, वीणा
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' - अनामिका, गीतिका, परिमल
5. रामकुमार वर्मा - आकाशगंगा, निशीथ, चित्ररेखा

► रहस्यवाद

- हिंदी कविता में रहस्यवाद का काल निर्धारण करना कठिनाई है क्योंकि रहस्यवाद सृष्टि के आरंभ से ही कवियों को प्रिय रह वेदों में ऊषा, मेघ, सरिता आदि के वर्णन में अव्यक्त परमात्मा के स्वरूप को लक्षित किया गया है। यह प्रकृति और जगत ही रहस्यमय है। कण-कण में परमात्मा के होने का आभास ही रहस्यवाद है।

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, 'चिंतन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।' जहाँ कवि इस अनंत परमतत्व और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से अभिव्यंजना करता है, वहाँ रहस्यवाद है। रामचंद्र शुक्ल ने रहस्यवाद को भारतीय साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि माना है।
- बाबू गुलाबराय ने 'प्रकृति में मानवीय भावों का आरोप कर जड़ । चेतन के एकीकरण की प्रवृत्ति के लाक्षणिक प्रयोगों को रहस्यवाद ! कहा है।'
- मुकुटधर पांडेय के अनुसार, 'प्रकृति में सूक्ष्म सत्ता का दर्शन ही रहस्यवाद है।

► रहस्यवादी काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. **अलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम** - इस युग की कविताओं में अलौकिक सत्ता के प्रति जिज्ञासा, प्रेम व आकर्षण के भाव व्यक्त हुए हैं।
2. **परमात्मा से विरह-मिलन का भाव** - आत्मा को परमात्मा की ॥ विरहिणी मानते हुए उससे विरह व मिलन के भाव व्यक्त किए गए हैं।
3. **जिज्ञासा की भावना** - सृष्टि के समस्त क्रिया कलाओं तथा अदृश्य ईश्वरीय सत्ता के प्रति जिज्ञासा के भाव प्रकट किए गए हैं।
4. **प्रतीकों का प्रयोग** - प्रतीकों के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की गई।

► प्रमुख छायावादी कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. सुमित्रानंदन पंत - स्वर्णधूलि, वीणा
2. महादेवी वर्मा - यामा
3. जयशंकर प्रसाद - आँसू
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' - परिमल, नए पत्ते, अणिमा

► छायावाद एवं रहस्यवाद में अंतर निम्नलिखित है-

1. छायावाद में कल्पना की प्रधानता है, जबकि रहस्यवाद में चिंतन की प्रधानता है।
2. छायावाद में भावना की प्रधानता है, जबकि रहस्यवाद में ज्ञान व बुद्धितत्व की प्रधानता है।
3. छायावाद के मूल में प्रकृति है, जबकि रहस्यवाद की प्रकृति दार्शनिक है।
4. छायावाद नारी की सुंदरता का अंकन है, जबकि रहस्यवाद में परमात्मा के सौंदर्य का चित्रण है।
5. छायावाद में स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है, जबकि रहस्यवाद में परमात्मा के प्रति प्रेम की भावना की अभिव्यक्ति है।
6. छायावाद में नियम बद्धता तथा मर्यादा का उल्लंघन है, जबकि रहस्यवाद में यथासंभव मर्यादा, पवित्रता तथा स्वच्छता का समावेश है।

► प्रगतिवाद

प्रगतिवाद भौतिक जीवन से उदासीन, आत्मनिर्भर, सूक्ष्म, अंतर्मुखी प्रवृत्ति के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में, लोक के विरुद्ध स्थूल जगत की तार्किक प्रतिक्रिया है। यह काव्यधारा कला की अपेक्षा 'जीवन' को, व्यक्ति की अपेक्षा समाज को और स्वाद उन्नति के अपेक्षा सर्वानुभूति को प्रधानता देती है।

► प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. **शोषकों के प्रति विद्रोह और शोषितों के प्रति सहानुभूति** - प्रगतिवादी कवियों ने किसानों, मजदूरों पर किए जाने वाले पूँजीपतियों के अत्याचार के प्रति अपना विरोध व्यक्त किया है।
2. **आर्थिक व सामाजिक समानता पर बल** - इस युग के कवियों ने आर्थिक एवं सामाजिक समानता पर बल देते हुए निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के अंतर को समाप्त करने पर बल दिया।
3. **नारी शोषण के विरुद्ध मुक्ति का स्वर** - प्रगतिवादी कवियों ने नारी को उपभोग की वस्तु नहीं समझा। वरन् उसे सम्मानजनक स्थान दिया है। नारी को शोषण से मुक्त कराने हेतु भी इन्होंने प्रयास किए हैं।
4. **ईश्वर के प्रति अनास्था** - इस काल के कवियों ने ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव व्यक्त किया है। वे ईश्वरीय शक्ति की तुलना में मानवीय शक्ति को अधिक महत्व देते हैं।
5. **प्रतीकों का प्रयोग** - अपनी भावनाओं को स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए इस काल के कवियों ने प्रतीकों का सहारा लिया है।

► प्रयोगवाद -

अज्ञेय ने लिखा है- 'ये कवि नवीन राहों के अन्वेषी हैं।' स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अज्ञेय के संपादन में 'प्रतीक' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। उसमें प्रयोगवाद का स्वरूप स्पष्ट हुआ। सबसे पहले प्रथम तार सप्तक का संपादन हुआ। सन् 1951 में दूसरा तार सप्तक प्रकाशित हुआ और तत्पश्चात् तीसरा तार सप्तक।

जीवन और जगत के प्रति अनास्था प्रयोगवाद का एक आवश्यक तत्व है। साम्यवाद के प्रति भी अनास्था उत्पन्न कर देना उसका लक्ष्य है। वह कला को केवल कला के लिए, अपने अहं की अभिव्यक्ति के लिए की मानता है। अहं का विसर्जन तथा साहित्य का सामाजिकरण इसका महत्वपूर्ण लक्षण था। इन कवियों की अनुभूति का केंद्र इनका अहं है। इनकी वाणी में 'मैं' का तीव्र विस्फोट है।

► प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. **प्रेम भावनाओं का खुला चित्रण** - इन्होंने प्रेम भावनाओं का अत्यंत खुला चित्रण कर उसमें अश्लीलता का समावेश कर दिया है।

2. **निराशावाद की प्रधानता** - इस काल के कवियों ने मानव मन की निराशा, कुंठा व हताशा का यथातथ्य रूप में वर्णन किया है।
3. **अहं की प्रधानता** - फ्रायड के मनोविश्लेषण से प्रभावित ये कवि अपने अहं को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।
4. **रुढ़ियों के प्रति विद्रोह** - इस काल की कविताओं में रुढ़ियों के प्रति विद्रोह का स्वर मुखर हुआ है। इन कवियों ने रुढ़ि मुक्त नवीन समाज की स्थापना पर बल दिया है।
5. **व्यंग्य की प्रधानता** - इस काल के कवियों ने व्यक्ति व समाज दोनों पर अपनी व्यंग्यात्मक लेखनी चलाई है।

► प्रमुख प्रयोगवादी कवि एवं उनकी रचनाएँ -

1. अज्ञेय - हरी घास पर क्षण भर
2. धर्मवीर भारती - अंधायुग, ठंडा लोहा
3. गिरिजा कुमार माथुर - धूप के धान, नाश और निर्माण
4. भारत भूषण अग्रवाल - ओ अप्रस्तुत मन
5. नरेश मेहता - बन पाँखी

► प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद में अंतर -

1. प्रगतिवाद में मध्यवर्गीय हताशा, कुंठा तथा मनःस्थिति की। ऊहापोह का अंकन है, जबकि प्रयोगवाद में शोषितों, दलितों! तथा गरीबों की दशा का वास्तविक चित्रण है।
2. प्रगतिवाद में सरल भाषा-शैली अपनाकर अपनी बात को जन-सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है, जबकि प्रयोगवाद में अनपढ़ शब्दावली, असम्बद्ध उपमाओं तथा। रूपकों का प्रयोग किया गया है।
3. प्रगतिवाद में जिंदगी का यथार्थ चित्रण है, जबकि प्रयोगवाद में बौद्धिकता की प्रधानता है।
4. प्रगतिवादी जनसाधारण से सहानुभूति रखते हैं, जबकि प्रयोगवाद में वैयक्तिकता की प्रधानता है।

► प्रगतिवाद के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

- | | | |
|--------------------------------|---|-------------|
| 1. नागार्जुन | - | युगधारा |
| 2. केदारनाथ अग्रवाल | - | युग की गंगा |
| 3. त्रिलोचन | - | धरती |
| 4. रांगेय राघव | - | पांचाली |
| 5. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' | - | कुकुरमुत्ता |

► नई कविता

प्रयोगवादी कविता का ही आगे का दौर नई कविता के रूप में उभरा है। वस्तुतः नई कविता की विषय वस्तु मात्र चमत्कार न होकर एक भोगा हुआ जीवन यथार्थ है। नई कविता परिस्थितियों की उपज है। नई कविता स्वतंत्रता के बाद लिखी गई वह कविता है जिसमें नवीन भावबोध, नए मूल्य तथा नया शिल्प विधान है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पहली बार मनुष्य की विवशता, असहायता तथा निरुपाया सामने आई और उसने अस्तित्व का संकट अनुभव किया। घुटन, आक्रोश और नैराश्य में व्यंग्य का जन्म लेना स्वाभाविक था। इसलिए नई कविता में व्यंग्य की भी प्रधानता रही है।

► नई कविता की प्रमुख विशेषताएँ -

1. लघु मानववाद की प्रतिष्ठा - मानव जीवन को महत्वपूर्ण मानकर उसे अर्थपूर्ण दृष्टि प्रदान की गई।
2. प्रयोगों में नवीनता - नए-2 भावों को नए -2 शिल्प विधानों में प्रस्तुत किया गया है।
3. अनुभूतियों का वास्तविक चित्रण - मानव व समाज दोनों की अनुभूतियों का सच्चाई के साथ चित्रण किया गया है।
4. बिंब - प्रयोगवादी कवियों ने नूतन बिंबों की खोज की है।
5. व्यंग्य की प्रधानता - इस काल में मानव जीवन की विसंगतियों, विकृतियों एवं अनैतिकतायादी मान्यताओं पर व्यंग्य रचनाएँ लिखी गई हैं।

► नई कविता के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ -

1. भवानी प्रसाद मिश्र - सत्राट गीत फरोश
2. कुंवर नारायण - चक्रव्यूह, आमने-सामने
3. जगदीश गुप्त - नाव के पाँव, बोधि वृक्ष
4. दुष्यंत कुमार - सूर्य का स्वागत, साये में धूप
5. श्रीकांत वर्मा - माया दर्पण, मगध

► नवगीत

नई कविता ने जब गेयता को नकारना प्रारंभ किया तब नवगीत का जन्म हुआ।

► नवगीतों की प्रमुख विशेषताएँ -

1. अपने युग के परिवेश को प्रस्तुत करना।
2. अभिव्यक्ति में सर्वत्र मौलिकता दिखाई देती है।

► प्रमुख नवगीतकार एवं उनकी रचनाएँ -

1. वीरेंद्र मिश्र - झुलसा है छाया नट धूप में, गीतम

2. शंभूनाथ सिंह - दर्द जहाँ नीला है, नवगीत दशक
3. रामनाथ अवस्थी - बंद न करना द्वार
4. सोम ठाकुर - एक ऋचा पाटल की

► **लोकगीतों की प्रमुख विशेषताएँ -**

1. लोकगीतों में सामान्य जन-जीवन का सजीव चित्रण होता है।
2. लोकगीतों में संगीतात्मकता का सहज प्रवाह होता है जो श्रोता को आकर्षित कर लेता है।

7

व्याकरण

► **संज्ञा**

संज्ञा
(शाब्दिक अर्थ – नाम)

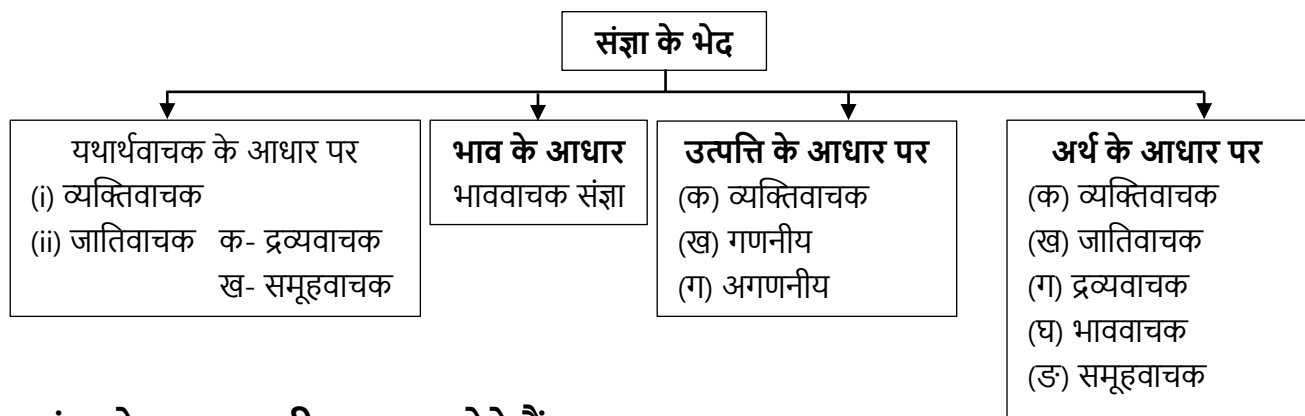
“इस पृथ्वी पर जो कुछ भी है उसका कुछ ना कुछ नाम है दुनिया के सब नाम संज्ञा है।”
समस्त पृथ्वी पर नाम केवल चार अवस्थाओं में पाया जाता है।

व्यक्ति वस्तु स्थान भाव
 "किसी व्यक्ति वस्तु स्थान भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।"

❖ संज्ञा के प्रकार

संज्ञा के मूल दो रूप है।

- ★ **यथार्थवाचक :-** "यदि आकार दिमाग में आ जाए"
- ★ वास्तविक, दृश्य, मूर्त।
- ★ **भाववाचक :-** "यदि आकार दिमाग में न आए"
- ★ अदृश्य, अमूर्त, अवास्तविक



संज्ञा के मुख्यतः तीन प्रकार होते हैं।

- ★ व्यक्तिवाचक संज्ञा

- ★ जातिवाचक संज्ञा
- ★ भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के निश्चित नाम को संज्ञा कहते हैं।

ट्रिक – दृश्य + सदैव एकवचन

Note: जिसको पहले से जानते हो और उसके गुण के आधार पर जानते है और केवल एक हो।

2. जातिवाचक संज्ञा

किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के जाति वर्ग, समूह को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

ट्रिक – दृश्य + बहुवचन (वे एकवचक जिनका बहुवचन बनाया जा सकता है)

Note: जिसको पहले से ना जानते हो उसके गुण के आधार से जानना।

3. भाववाचक संज्ञा

जो किसी भाव, दशा, धर्म, गुण या कार्य का बोध कराए भाववाचक संज्ञा कहलाती है।

ट्रिक – अदृश्य / अवास्तविक / मेला

4. समूह वाचक

जिस संज्ञा से अनेक वस्तुओं या प्राणी के समूह का बोध हो।

- ★ व्यक्तियों का समूह – परिवार, संघ, सेना, झुण्ड, पुलिस
- ★ वस्तुओं का समूह – गुच्छा, पुंज, ढेर, शृंखला

5. द्रव्यवाचक (ठोस, द्रव, गैस)

- ★ द्रव्यवाचक संज्ञा से उस द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है। जिसे हम माप या तौल सकते हैं गिन नहीं सकते।

(क) धातुओं तथा खनिजों के नाम – लोहा, सोना, चाँदी

(ख) खाने-पीने की वस्तुओं के नाम – दूध, पानी, घी, तेल।

- ★ जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय में ये प्रत्यय लगाकर आप भाववाचक संज्ञा बनाते हैं।

ई	त्व	ता	पन	आहट	वट	पा	क	व	स	न्त
लड़ाई	ममत्व	मनुष्यता	अपनापन	घबराहट	सजावट	बुढ़ापा	ठंडक	बहाव		

- ★ भाववाचक संज्ञा चार प्रकार के शब्दों से बनती है।

(क) जातिवाचक से भाववाचक संज्ञा

आदि	आदमियत
पशु	पशुता
बालक	बालपन

(ख) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

अपना	अपनापन
------	--------

★ संज्ञा से सम्बन्धित उदाहरण

1. मेरा परिवार (समूहवाचक) सबसे अच्छा है।

2. लखनऊ के सभी परिवार (जातिवाचक) को राशन मिलेगा।

3. भारत देश की आजादी में मंगतसिंह (व्यक्तिवाचक)

पराया	परायापन
सर्व	सर्वस्व
मम	ममत्व
(ग) विशेषण से भाववाचक संज्ञा	
मीठा	मिठास
मधुर	माधुर्य
निर्बल	निर्बलता
(घ) क्रिया से भाववाचक संज्ञा	

▶ सर्वनाम

सर्वनाम

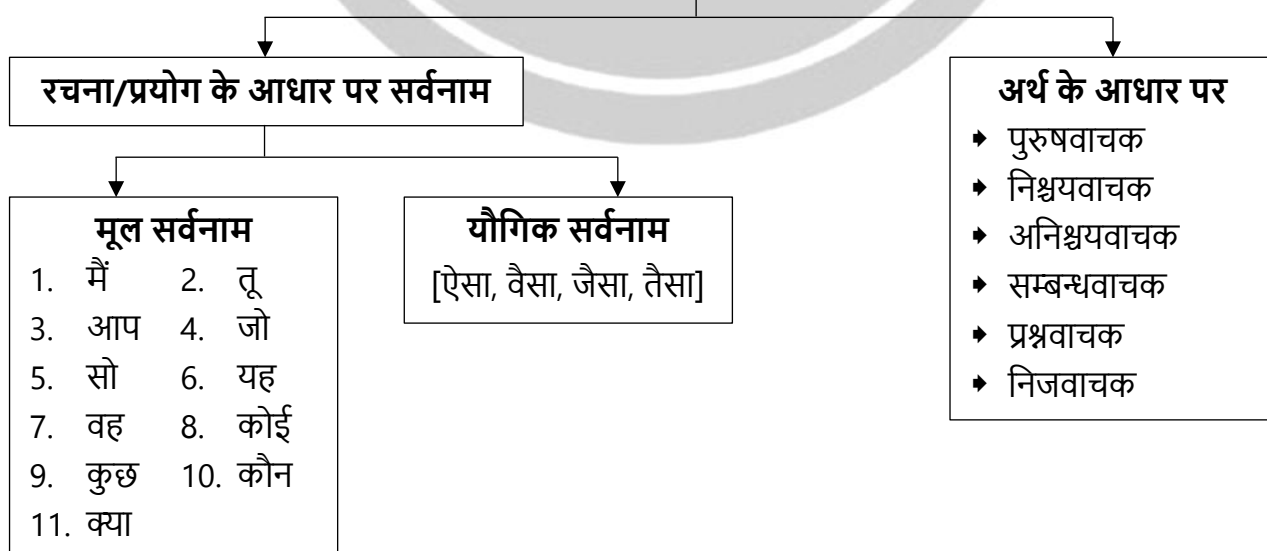
सर्व (सबका) + नाम (नाम)

“वे विकारी शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं सर्वनाम कहलाते हैं।”

उदाहरण - **राम अध्यापक है, वह ईमानदार है, वह सच्चा है, वह परिश्रमी है।**

- संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
- सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कोई प्रभाव नहीं।
- सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- सर्वनाम वाक्य की रचना को संकुचित कर देता है।
- श्री कामता प्रसाद गुरु में सर्वनाम की संख्या 11 बतायी है।

सर्वनाम के मूलतः वर्गीकरण -2



Note: यदि प्रश्न पूछा जाए सर्वनाम के भेद कितने हैं तो उत्तर – 6 होगा।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

- | | | |
|--|--|---|
| <p>1. उत्तम पुरुष
 "कहने वाल" (वक्ता)
 (मैं, हम)
 <u>उदाहरण</u> -</p> | <p>2. मध्यम पुरुष
 "सुनने वाला" (श्रोता)
 (तु, तुम, आप (आदर))
 वह ईमानदार है।</p> | <p>3. अन्य पुरुष
 "जिसके बारे में कहा जाए"
 (यह, वह, ये, वे, वो)</p> |
|--|--|---|

वह = पुरुषवाचक, अन्य पुरुष

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

नोट - जब किसी व्यक्ति के बारे में चर्चा हो तो – यह, वह, ये, वे, वो का प्रयोग हो तो **पुरुषवाचक सर्वनाम** का **अन्य पुरुष** होगा।

- ★ जब किसी वस्तु अथवा स्थान की चर्चा हो तो = यह, वह, ये, वे, वो का प्रयोग **निश्चयवाचक सर्वनाम** में होता है।

उदाहरण - यह मेरा घर है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)

- ★ जब किसी (यह, वह, ये, वे, वो) सर्वनाम के तुरंत बाद उस संज्ञा शब्द का प्रयोग हो जाए तो जिसके लिए उस संज्ञा शब्द का प्रयोग किया गया है उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

उदाहरण - यह घर मेरा है। (सार्वनामिक विशेषण)

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ)

"अनिश्चितता का बोध कराता है।"

- | | |
|----------------|----------------|
| 1. कोई आया है। | 2. कुछ चमक है। |
|----------------|----------------|

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

- (a) उत्तम - मेरी/ मेरा/ मेरे/ हमारा/ हमारी/ हमारे।
 (b) मध्यम - तेरा/ तेरी/ तेरे/ तुम्हारा/ तुम्हारी/ तुम्हारे।
 (c) अन्य - इसका/ इसकी/ इसके/ उसका/ उसकी/ उसके/ जिसका/ जिसकी/ जिसके/ इनकी/ इनके/ इनका

"सम्बन्ध का बोध कराने वाले सर्वनाम शब्दों को सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहते हैं।"

उदाहरण - वह मेरी पुस्तक है। (वह – निश्चयवाचक, मेरी – सम्बन्धवाचक सर्वनाम)

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

"प्रश्न पूछे जाने का बोध कराने वाले शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।"

(कब, क्यों, क्या, कैसे, कौन, कहाँ)

उदाहरण - आपका नाम क्या है?

6. निजवाचक सर्वनाम (आप, स्वयं, खुद)

- उदाहरण -
- सर आप मत पढ़ाओ मैं अपने आप पढ़ लूँगा।
 - गाँधी जी का जन्म गुजराम राज्य में हुआ आप राष्ट्रपिता के नाम से जाने जाते हैं।



▶ क्रिया

“मूल भाषा (संस्कृत) में क्रिया को धातु के नाम से जानते हैं। मूल धातु में ना प्रत्यय लगाने से क्रिया प्राप्त होती है।”

चल	खा	पी	कर	सो	जा
चलना	खाना	पीना	करना	सोना	जाना

“ऐसे शब्द जिससे कार्य के होने या करने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।”

क्रिया के भेद

1. **अकर्मक क्रिया** - [अ + कर्म] कर्म रहित

कर्त्ता + क्रिया

✶ अकर्मक क्रिया में कर्म प्रयुक्त नहीं होता है।

उदाहरण - 1. मोहन चलना है। 2. मोहन पढ़ता है।

उदाहरण - चलना, सोना, उड़ना आदि।

2. **सकर्मक क्रिया** - (स + कर्म) कर्म सहित

कर्त्ता + कर्म + क्रिया

✶ कर्म प्रयुक्त होता है। उदाहरण - लिखना, पढ़ना, खाना, पीना, देखना।

उदाहरण - मोहन अखबार पढ़ता है।

सकर्मक के दो भेद -

1. **एककर्मक**

“एक कर्म होगा”

2. **द्विकर्मक**

“दो कर्म होंगे”

उदाहरण - अध्यापक ने छात्रों को पढ़ाया। उदाहरण - अध्यापक ने छात्रों को हिन्दी पढ़ायी।

1. **प्रेरणार्थक क्रियायें** : जब कर्त्ता किसी कार्य को स्वयं न करके किसी दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा दे, तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

उदाहरण - गोविन्द ने राम को जगाया।

कर - करवाया, हट - हटवाया, पढ़ से पढ़वाया आदि।

2. **संयुक्त क्रियायें** : जो क्रिया किसी क्रिया अथवा संज्ञादि शब्द के साथ दूसरे क्रिया का योग करने से बनती है। उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

संयुक्त क्रिया के 13 भेद किए जा सकते हैं।

- | | |
|--|--|
| 1. आरम्भ बोधक $\Rightarrow$ धातु + ने + लगना $\Rightarrow$ वह पढ़ने लगा। | |
| 2. समाप्ति सूचक $\Rightarrow$ वह पढ़ चुका है। | |
| 3. निरन्तरता बोधक $\Rightarrow$ वह पढ़ रहा है। | 8. आवश्यकता बोधक $\Rightarrow$ उसे पढ़ना चाहिए |
| 4. अभ्यास बोधक $\Rightarrow$ वह पढ़ा करता है | 9. शक्यता बोधक |

- | | |
|--|--------------------|
| 5. अवकाश बोधक $\Rightarrow$ वह पढ़ने न पाया | 10. अनिष्टता बोधक |
| 6. इच्छा बोधक $\Rightarrow$ वह जाना चाहती है। | 11. अतिशयता बोधक |
| 7. अनुमति बोधक $\Rightarrow$ उसे पढ़ने दो | 12. आकस्मिकता बोधक |
| 13. संज्ञादि के साथ संयुक्त क्रिया में संज्ञा आदिक का अर्थ प्रधान रहता है। | |

3. अनुकरणात्मक क्रियाएँ

“किसी वास्तविक या कल्पित ध्वनि के अनुकरण में हम क्रियाएँ बना लेते हैं।”

उदाहरण -	खटखट	-	खटखटाना	भनभन	-	भनभनाना
	थरथर	-	थरथराना	सनसन	-	सनसनाना
	थपथप	-	थपथपाना			

4. नाम धातु क्रियाएँ

“जो धातु संज्ञा, सर्वनाम, या विशेषण से बनती है, उसे नामधातु क्रियाएँ कहते हैं।”

उदाहरण -	हाथ से हथियार	बात से बतियाना
	आप से अपनाना	गरम से गरमाना
	गुस्सा से गुस्साना	

**Teachers
Express**

▶ विशेषण

“वह विकारी शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बतलाते है। विशेषण कहलाते हैं।”

उदाहरण - बहुत चालाक बालक (बहुत = प्रविशेषण, चालाक = विशेषण/विशेषक,
बालक = विशेष्य [संज्ञा/सर्वनाम])

विशेषण के प्रकार :- मुख्यतः विशेषण के चार प्रकार होते है।

- | | |
|--|----------------------------|
| (क) गुणवाचक विशेषण | (ख) संख्यावाचक |
| (ग) परिमाणवाचक विशेषण | (घ) संकेतवाचक / सार्वनामिक |
| (ङ) व्यक्तिवाचक विशेषण (संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाना) | |

(क) गुणवाचक विशेषण

“जिस संज्ञा और सर्वनाम से गुण, दोष, रंग, रूप, आकार, दशा, स्थान का बोध हो।”
ट्रिक: वाक्य में कैसा/कैसी लगाकर देखना चाहिए।

(ख) संख्यावाचक विशेषण

“संख्या का बोध कराने वाले”

(a) निश्चित संख्यावाचक

1. गणनावाचक : गिनती (एक, दो, तीन....)।
2. आवृत्तिवाचक : गुना (दो गुना, तीन गुना)।
3. क्रमवाचक : पहला, दूसरा, तीसरा।
4. समूहवाचक/ समुदायवाचक : दोनों, तीनों।

(b) अनिश्चित संख्यावाची – कुछ लड़के, कोई।

(ग) परिमाणवाचक (मात्रा/ माप/ तौल)

(a) निश्चित परिमाणवाचक	(b) अनिश्चित परिमाणवाचक
“वस्तु की निश्चित मात्रा का ज्ञान हो” उदाहरण – दो किलो गेहूँ, एक लीटर दूध, नौ मीटर कपड़ा।	बहुत सारा धन, बहुत पानी, थोड़ा कपड़ा, कुछ चीनी।

(घ) संकेतवाचक/ सार्वनामिक विशेषण

(यह, वह, इस, उस, कोई, किसी, कुछ)

“जब किसी सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है, उसके तुरंत बाद उस संज्ञा का प्रयोग किया जाता है जिसके लिए सर्वनाम का प्रयोग किया गया है। उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।”

उदाहरण - 1. यह पुस्तक मेरी है। 2. वह लैपटाप मेरा है।

(ड) व्यक्तिवाचक विशेषण (संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाना)

“जयपुरी, कानपुरिया, लखनऊआ”

“संज्ञा शब्द में प्रत्यय लगाने पर जो अन्य भाव में परिवर्तित हो जाए।”

विशेषण की अवस्था

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
* संज्ञा/ सर्वनाम की तुलना नहीं की जाती है।	दो लोगों में तुलना की जाती है।	सबसे तुलना की जाती है।
* विशेषण शब्द मूलरूप में होता है।	से + विशेषण + तर	सबसे + विशेषण + तम
* निम्न	से निम्न/ निम्नतर	निम्नतम/ सबसे
* लघु	लघुतर	निम्न/ लघुतम
* अच्छा	से श्रेष्ठ/ श्रेष्ठतर	सबसे अच्छा/
* श्रेष्ठ		सबसे श्रेष्ठ/ श्रेष्ठतम

विशेष्य/ उद्देश्य विशेषण विधेय विशेषण

1. उद्देश्य विशेषण
2. विधेय विशेषण

उदाहरण - बुद्धिमान बाल धार्मिक पुस्तक पढ़ता है।

उद्देश्य वि. विधेय विशेषण

विशेष्य - से पहले विशेषण = उद्देश्य विशेषण

विशेष्य - के बाद विशेषण का प्रयोग = विधेय विशेषण

कारक

कारक

शाब्दिक अर्थ (जोड़ने का कार्य करने वाला शब्द)

- **विभक्ति** – कारकों की पहचान कराने वाले पद।
- **विभक्ति के उपनाम** – परसर्ग/ कारक चिह्न/ विभक्ति चिह्न

कारक का प्रकार	विभक्ति
• कर्ता	ने (जिस रूप से कार्य करने वाले का बोध हो)
• कर्म	को (वाक्य में प्रयुक्त क्रिया जिस पर प्रभाव डाले)
• करण	से माध्यम/ के द्वारा/ के साथ/ के बिना (कर्ता जिस माध्यम से कार्य करता है)
• सम्प्रदान	को, के लिए (कर्ता जिसके लिए कुछ करता है)
• अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
• सम्बन्धकारक	को, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
• अधिकरण	में, पर, ऊपर, उत्तमावस्था
• सम्बोधन	अरे, रे, आ (रे विभक्ति गद्य में प्रयुक्त नहीं होती है। पद्य में प्रयुक्त होती है)

“संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप में उसका सीधा सम्बन्ध क्रिया के साथ पता लगे वह कारक कहलाता है।”

उदाहरण - काजल कहानी लिखती है।

विशेष तथ्य

- **करण कारक:** विकलांगता, विवशता, व्याकुलता के साथ, के बिना को शब्द पर क्रिया का फल पड़े।

उदाहरण - पत्नी को सताओ नहीं।

- **सम्प्रदान कारक:** रुचि, पसन्द, ईर्ष्या, नम्र, अलम्, स्वाहा, किसी को कुछ दिया गया है।

उदाहरण - कारीगर को पैसे दो।

- **अपादान कारक:** संज्ञा के किस रूप में एक वस्तु को दूसरे वस्तु से अलग होता अथवा तुलना करना पाया जाए।

घृणा, निषेधता, भय, उत्पन्न, अध्ययन के संदर्भ में अपादान कारक का प्रयोग होता है।

- **सम्बन्ध कारक:** संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो।

- **अधिकरण कारक:** संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार पता चलता है। उसे अधिकरण कारक कहते हैं।



- ♦ **सम्बोधन कारक:** जिससे किसी को बुलाने अथवा सचेत करने का बोध होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं।

नियम :-

- ✓ प्रत्येक कारक की अपनी निश्चित विभक्ति होती है और यदि दो कारकों की विभक्ति समान हो जाए तो वाक्य में उनका व्यवहार अलग-अलग होगा.
- ✓ एक वाक्य में एक से अधिक कारक प्रयुक्त किए जा सकते परन्तु एक स्थान पर दो कभी नहीं सकते हैं।

कारक की पहचान:-

उदाहरण - राम ने धर्म के लिए बाण से रावण को मारा।

ने = कर्ता, के लिए = सम्प्रदान, से = करण, को = कर्म

- ♦ कर्ता से लेकर अधिकरण कारक तक जहाँ इनकी विभक्ति लिखी होती है, उससे ठीक पहले सम्बन्धित विभक्ति का कारक शब्द होता है।

उदाहरण - श्री राम ने रावण का वध किया।

- ♦ सम्बोधन कारक में विभक्ति पहले व कारक शब्द बाद में लिखा जाता है।

उदाहरण - बंधु इस बुढ़िया पर कृपा करो।

**Teachers
Express**

► समास

समास

शाब्दिक अर्थ = संक्षेप

सम (अच्छी तरह परस्पर) + आस (बैठाना)

- लेखन की दो शैली 1. समास शैली 2. व्यास शैली

समास शैली : अधिक बातों को कम में कहने और लिखने की शैली (संश्लेषण)

व्यास शैली : कम बातों को अधिक में बोलने (विश्लेषण) की शैली

"दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन और सार्थक शब्द को समास कहते हैं।"

समास के भेद

समास के मुख्यतः 4 भेद हैं, समास के भेद 6 हैं।

(क) अव्ययीभाव समास

(ख) तत्पुरुष समास –

1. द्विगु समास

2. कर्मधारय समास

(ग) द्वन्द्व समास

(घ) बहुब्रीहि समास

नोट – यदि कभी समास के भेद पूछा जाए तो 6 ही उत्तर लगाना है जब तक मुख्यतः न लिखा हुआ हो।

(क) अव्ययीभाव समास :-

"जिस समास का पहला पद प्रधान और समस्त और सामासिक पद अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।"

पहचान - अनु, आ, अ, यशा, भर, निर, अनप्रति

अनु - अनुकूल, अनुरूप

आ - जागरण, आजीवन

यथा - यथाशक्ति

भर - भरपेट, भरसक, भरपूर

प्रति - प्रतिदिन, प्रत्येक

भर - भरपेट

निर - निर्विवाद, निर्भय

- कई बार एक शब्द को दो बार आवृत्ति से भी अव्यय बनता है।

- द्विरुवत शब्द – रातोंरात, दिनोदिन, हाथोहाथ, बातोंबात, कानोकान

(ख) तत्पुरुष समास :-

"जिस समास का उत्तर पद प्रधान था दूसरा पद प्रधान होता अर्थात् पहला पद गौण (अप्रधान/द्वितीयक) उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।"

- तत्पुरुष समास कारक पर आधारित होते हैं।

कर्म तत्पुरुष से अधिकरण तत्पुष तक छः तत्पुरुष समास कहलाते हैं।

- **कर्म तत्पुरुष :-** [को] स्वर्गप्राप्त, गगनचुम्बी, मोक्षप्राप्त, चिड़ीमार, सर्वप्रिय, यशप्राप्त।
- **करण तत्पुरुष :-** [से/के द्वारा] हस्तलिखित, रोगग्रस्त, आँखोंदेखी, बन्धनमुक्त, विहारीचरित, सूरचरित, तुलसीकृत, रसभरा, मनचाहा
- **सम्प्रदान तत्पुरुष :-** [के लिए] रसोईघर, हथकड़ी, सत्याग्रह, गुरुदक्षिणा, प्रयोगशाला, मालगाड़ी, विद्यालय, देशभक्ति।
- **अपादान तत्पुरुष :-** [से अलग होने के अर्थ में] ऋणमुक्त, देशनिकाला, घरनिकाला, देशद्रोह।
- **सम्बन्ध तत्पुरुष :-** [का, की, के] दीनानाथ, समयानुसार, बैलगाड़ी।
- **अधिकरण तत्पुरुष :-** [में, पर] आनन्दमग्न, आपबीति, शिलालेख

(ग) कर्मधारय :- (है जो/ के समान)

जिस समास का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद एवं उत्तर पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान, उपमेय का संबन्ध हो तो कर्मधारय समास कहते हैं।

विशेष्य (संज्ञा/सर्वनाम) :- जिसकी विशेषता बताई जाती है।

उपमेय :- जिसकी तुलना की जाए।

उपमान :- जिससे की जाए।

“इस समास का विग्रह करने पर है जो/ के समान जैसे शब्द आते हैं।”

उदाहरण :- कालीमिर्च, चन्द्रमुख, महाकवि, महात्मा, पीतांबर, परमानंद, नीलकमल, घनश्याम, दीर्घायु महाराज, अंधविश्वास, नराधम, देशांतर, भवसागर, स्त्रीरत्न, करकिसलय, पुरुषसिंह, क्रोधगति, बदनसुधाकर, कनकलता, नरोत्तम, देहलता, नरसिंह।

(घ) द्विगु समास :- (संख्यावाची)

जिस समास का पहला पद संख्यावाची हो समस्त पद या सामासिक पद एक समूह का बोध कराता हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं।

उदाहरण :-

सप्ताह – सात दिनों का समूह

अठन्नी – आठ आनों का समूह

शताब्दी – शत (सौ) अब्दी (वर्षों) का समूह

चवन्नी – चार आनों का समूह

त्रिभुवन – तीन लोकों का समूह

त्रिफला – तीन फलों का समूह

तिराहा – तीन राहों का समाहार

चतुष्पथ – चार पथों का समूह

चौमास – चार (मास) महीनों का समूह

इकतार, इकहरा, दुगना, दोपहर, दुधारा, दुपट्टा, पंचवटी

(ड) द्वन्द्व समास :- (और, तथा, एवं, या, अथवा)

जिस समास का दोनों पद प्रधान होता है तथा विग्रह करने पर इनके बीच में 'और, तथा, एवं, या, अथवा' जैसे शब्द आ जाते हैं द्वन्द्व समास कहलाते हैं।

- द्वन्द्व समास के दोनों शब्द के बीच योजक निह्न होता है।
 - द्वन्द्व समास प्रायः स्त्रीलिंग पद पूर्वपद होता है।
- गौरीशंकर, राधाकृष्ण, सीताराम, स्त्रीपुरुष।

द्वन्द्व समास के तीन भेद

1. **समाहार/सहचर द्वन्द्व समास – (साथ-साथ चलने वाला)** चाय-वाय, पानी-वानी, मार-धाड़, रोना-धोना, धक्का-मुक्की, खाना-पानी, दाल-रोटी।
 2. **इतरेतर/पूरक द्वन्द्व समास –** पतंग-डोर, सुई-धागा, दाल-भात, कलम-दवात, कुर्ता-पयजामा, माता-पिता, राधाकृष्ण, सीता-राम
- ट्रिक –** समास विग्रह करने पर 'और' पद आता है।
3. **विलोम/वैकल्पिक द्वन्द्व –** धर्म-अधर्म, लाभ-हानी, चर-अचर, पाप-पुण्य, न्याय-अन्याय।
- ट्रिक –** या/ अथवा

(च) बहुब्रीहि समास :- (वाला/वाली)/ है जिसका/ है जिसकी/ है जिसके

जिस समास का कोई पद या शब्द प्रधान नहीं होता बल्कि दोनों शब्द मिलकर एक विशेष अर्थ पद की ओर संकेत करते हैं।

उदाहरण :- दशानन – दस है सिर जिसके

- ★ पंकज – कमल
- ★ पंचानन/त्रिनेत्र/त्रिलोचन/चन्द्रशेखर/चन्द्रमौलि/शूलपाणी = शंकर/मृत्युंजय/नीलकंठ/शिव
- ★ गजानन/लम्बोदर/एकदन्त = गणेश
- ★ पंचमुखी/पंचानन = हनुमान/महावीर
- ★ चतुरानन = ब्रह्मा
- ★ चतुर्भुज = विष्णु
- ★ गिरिधर/पीताम्बर = कृष्ण/विष्णु
- ★ अष्टभुज = दुर्गा
- ★ बड़बोला = बड़ चढ़कर बोलने वाला
- ★ नीलकंठ = शंकर
- ★ निशाचर = राक्षस
- ★ श्वेताम्बर = सरस्वती

नञ तत्पुरुष :- जहाँ निषेध के अर्थ में अ अथवा अन का प्रयोग हो नञ तत्पुरुष कहलाता है।

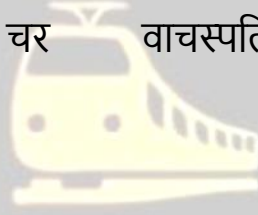
उदाहरण :-

अनादि	-	न आदि	असम्भव	-	न सम्भव	
अपूर्ण	-	न पूर्ण	अधर्म	-	न धर्म	
अनागत	-	न आगत	अनभाव	-	न अभाव	
अनन्त	-		न अन्त	अहित	-	न हित
अस्थिर	-	न स्थिर				

अलुक तत्पुरुष :- जिस सामासिक शब्द के प्रथम पद की विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक तत्पुरुष कहते हैं।

उदाहरण :-

युधिष्ठिर	-	युधि (युद्ध में) स्थिर	सरसिज	-	सरसि (सरोवर में) पैदा
खेचर	-	खे (गगन में) चर	वाचस्पति	-	वाचस् (वाणी का) पति



**Teachers
Express**

► मुहावरे

मुहावरा : अर्थ और परिभाषा

मुहावरा शब्द मूलतः अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है-अभ्यास करना। मुहावरा शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि अरबी का 'मुहावरा' शब्द उर्दू में 'मुहाविरा' और हिन्दी में 'मुहावरा' बनकर प्रयुक्त होता है। हिन्दी के कुछ विद्वान् मुहावरा को 'वाग्धारा' अथवा 'रोज़मर्रा' भी कहते हैं किन्तु प्रचलित भाषा में 'मुहावरा' ही है। मुहावरा का शब्दार्थ 'बोलचाल', 'बातचीत' या 'अभ्यास' है। हिन्दी में यह 'विलक्षण' अर्थ देनेवाले वाक्यांश के रूप में ही लिया जाता है।

लक्षणा अथवा व्यञ्जना-द्वारा सिद्ध वाक्य अथवा जो किसी एक ही बोली जानेवाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो, **मुहावरा** कहलाता है।

किसी भाषा में पायी जानेवाली असाधारण शब्द-योजना अथवा विलक्षण प्रयोग को 'मुहावरा' की संज्ञा दी गयी है।

उदाहरण के लिए- 'लाठी खाना' शब्द मुहावरा है क्योंकि खाना शब्द अपने वास्तविक अर्थ में नहीं, 'लाक्षणिक' अर्थ में आया है।

उद्देश्य

वास्तव में, मुहावरों के लाक्षणिक और अभिधेयार्थ में कुछ-न-कुछ सम्बन्ध अवश्य होता है। मुहावरों का सम्बन्ध सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कारणों से अवश्य होता है। कुछ वाक्यांश संस्कारों के आधार पर भी निर्माण किये जाते हैं। मुहावरे अनजाने में निरन्तर बनते रहते हैं; निरन्तर प्रयोग में आते रहते हैं और शनैः-शनैः लोकप्रियता प्राप्त कर लेते हैं।

मानव के बौद्धिक विकास के साथ-साथ भाषा की अभिव्यञ्जना-शक्ति में वृद्धि होती जा रही है। आज लोगों की दृष्टि अभिधेयार्थ तक सीमित नहीं है, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ प्रधान होते जा रहे हैं। लाक्षणिक प्रयोग रूढ़ और लोकप्रिय होकर मुहावरों का रूप लेते जा रहे हैं। मुहावरे जन-साधारण की भाषा, संस्कृति के प्रभाव और विदेशी मुहावरों के प्रभाव से स्वयं विकसित होते हैं। मुहावरों के अर्थ-द्योतन की क्षमता पीढ़ियों के निरन्तर प्रयोग से आती है।

निर्माण की पृष्ठभूमि

- कुछ मुहावरे गणित के अंकों, व्यापारिक शब्दों और घर-गृहस्थी की वस्तुओं से सम्बन्धित होते हैं।
- कुछ मुहावरों के विकास की पृष्ठभूमि सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक सांस्कृतिक और साहित्यिक होती है।
- कुछ मुहावरे शारीरिक क्रियाओं पर निर्भर करते हैं।
- कुछ मुहावरे अनुभूति पर आधृत होते हैं।
- कुछ मुहावरे अन्तर्कथाओं पर आधृत होते हैं।

'मुहावरा' और 'कहावत' में अन्तर

मुहावरा	कहावत
• मुहावरा वाक्यांश है।	• कहावत वाक्य है।
• मुहावरे का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता।	• कहावत का स्वतन्त्र प्रयोग होता है।
• मुहावरे में उद्देश्य, विधेय का पूर्ण विधान नहीं होता अतः अर्थ की स्पष्टता के लिए वाक्य-प्रयोग किया जाता है।	• कहावत में उद्देश्य और विधेय का पूर्ण विधान होता है इसलिए इनके अर्थ स्वतः पूर्णरूपेण स्पष्ट हो जाते हैं।
• मुहावरा फल से सम्बन्धित नहीं होता।	• कहावत फल से सम्बन्धित होती है।
• मुहावरे को अर्थ की दृष्टि से माध्यम की तलाश रहती है।	• कहावत में ऐसा नहीं होता।
• मुहावरे का कार्य चमत्कार उत्पन्न कर, भाषा-सौन्दर्य को स्थापित करना है।	• कहावत का कार्य कथन के खण्डन - मण्डन अथवा विरोध को रेखांकित करने का होता है।
• मुहावरा बात को कहने की एक रीति अथवा पद्धति है।	• कहावत, कथन में व्यक्त अनुभव अथवा विचार का सारगर्भित और स्थायी निचोड़ है।
• मुहावरे में काल, वचन और पुरुष के अनुरूप परिवर्तन हो जाता है।	• कहावत का स्वरूप पूर्ण अपरिवर्तित रहता है।
• मुहावरे लाक्षणिक अर्थ देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।	• कहावत का प्रयोग प्रायः अन्योक्ति अथवा अप्रस्तुत व्यञ्जन के लिए होता है।
• मुहावरों के अन्त में बहुधा 'ना' आता है; जैसे-खाक छानना, आँख फड़कना गाल बजना, खिचड़ी पकाना, साँप लोटना आदि।	• कहावत में प्रायः ऐसा कहीं कुछ नहीं होता है।

दोनों के प्रयोग के नियम

- मुहावरों और कहावतों का प्रयोग प्रसंग अथवा प्रकरण को समझकर करना चाहिए।
- मुहावरों और कहावतों का शब्दार्थ ग्रहण करने के स्थान पर, उनका अर्थ ग्रहण करना चाहिए।
- मुहावरों और कहावतों का प्रयोग उनके अर्थ को सम्यक् रूपेण समझकर करना चाहिए।
- प्रत्येक मुहावरे अथवा कहावत का प्रयोग उसकी भाषा की प्रकृति से सम्बद्ध रहता है अतः उसका प्रयोग उस भाषा के अन्तर्गत ही उपयुक्त रहता है। दूसरी भाषा में उसका अविकल अनुवाद अर्थ का अनर्थ कर सकता है।
- मुहावरों और कहावतों का रूप के अनुसार ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण मुहावरे : अर्थ और उनके प्रयोग

1. अँगूठे पर मारना

अर्थ : परवाह न करना

प्रयोग : शेखी बघारने वाले को मैं अँगूठे पर मारता हूँ।

2. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना

अर्थ : विफल मनोरथ रह जाना

प्रयोग : जब मैंने उसको झूठा सिद्ध कर दिया तब वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

3. अन्त बिगाड़ना

अर्थ : परिणाम खराब करना

प्रयोग : आतंकवादियों का साथ देकर सीधे-सीधे श्याम ने अपना अन्त बिगाड़ लिया।

4. अगर-मगर करना

अर्थ : टालमटोल करना

प्रयोग : मैं रोज़ तकादा करने आता हूँ और तुम अगर-मगर करके टाल देते हो।

5. अन्धों में काना राजा

अर्थ : अयोग्य व्यक्तियों के मध्य कम योग्य भी ज्यादा योग्य बनता है

प्रयोग : इन भोले-भाले अनपढ़-गँवारों के बीच विद्वत्ता प्रदर्शित कर अन्धों में काना राजा बन रहे हो,

विद्वानों के बीच तो ज़रा आकर देखो।

6. आँख की किरकिरी होना

अर्थ : आँखों में चुभनेवाला, अच्छा न लगना

प्रयोग : अंगरेज़ शासकों के लिए वीर क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद आँख की किरकिरी बन गये थे।

7. आँख खुलना

अर्थ : सावधान हो जाना

प्रयोग : इतनी बार असफल होने के बाद तो तुम्हारी आँखें खुल जानी चाहिए।

8. आकाश टूट पड़ना

अर्थ : अकस्मात् विपत्तियों का आना

प्रयोग : एक दुर्घटना में पति की मृत्यु के पश्चात् शीला पर आकाश टूट पड़ा।

9. आग लगाकर पानी को दौड़ना

अर्थ : पहले झगड़ा करवाना फिर शान्ति का प्रयास करना

प्रयोग : संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेशनीति आग लगाकर पानी को दौड़ना-जैसी ही रहती है।

10. इधर-उधर करना

अर्थ : अस्त-व्यस्त करना

प्रयोग : वह अपने कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से न करके, पूरे सामान को इधर-उधर कर देता है।

11. इधर का न उधर का

अर्थ : बे-आबरू होना, स्थिति समाप्त कर लेना

प्रयोग : राजेश परिवार से अलग होकर न इधर का रहा न उधर का।

12. इलायची बाँटना

अर्थ : दावत देना

प्रयोग : परीक्षा में उत्तीर्ण होने की खुशी में ब्राह्मणों में आज उसने इलायची बाँटी है।

13. ईंट का जवाब पत्थर से देना

अर्थ : क्रिया के जवाब में कड़ी प्रतिक्रिया / दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना / बराबर कर देना

प्रयोग : भारत को चाहिए कि अब धैर्य छोड़कर पाकिस्तान को ईंट का जवाब पत्थर से दे।

14. ईंट से ईंट बजाना

अर्थ : बरबाद कर देना / कड़ा मुकाबला करना / नष्ट भ्रष्ट कर देना

प्रयोग : आतंकवादी कितने भी संघटित क्यों न हों, चुस्त-दुरुस्त प्रशासन उनकी ईंट से ईंट बजाने में समर्थ रहता है।

15. उलटी माला फेरना

अर्थ : अनिष्ट की कामना करना

प्रयोग : अकसर देखने में आया है कि लोग पड़ोसी की उन्नति नहीं देखते और उनके नाम की उलटी माला फेरते हैं, जो कि बुरी बात है।

16. उलटे उस्तरे से मूँड़ना

अर्थ : मूर्ख बनाकर स्वार्थ सिद्ध करना

प्रयोग : प्रयाग में गंगाकिनारे पण्डों ने तीर्थ-यात्रियों को उलटे उस्तरे मूँड़ लिया।

17. उड़ती चिड़िया पहचानना

अर्थ : मन की बात जानना

प्रयोग : उसे धोखा देना आसान नहीं है क्योंकि वह उड़ती चिड़िया पहचान लेती है।

18. ऊँट के मुँह में जीरा

अर्थ : अपर्याप्त वस्तु

प्रयोग : उसका डील-डौल देखकर ही भोजन की व्यवस्था करो क्योंकि तुम्हारी वर्तमान व्यवस्था तो उसके लिए "ऊँट के मुँह में जीरा" के समान है।

19. ऊँची दुकान फीके पकवान

अर्थ : आडम्बर-ही- आडम्बर

प्रयोग : वर्तमान युग में सन्तों के क्रियाकलाप "ऊँची दुकान फीके पकवान" ही सिद्ध हो रहे हैं।

20. ऋद्धि-सिद्धि पाना

अर्थ : समृद्धि और सफलता पाना

प्रयोग : पोखरण में हुए परमाणु बम के परीक्षण से भारत को ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति हुई है।

21. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना

अर्थ : सबका एक समान होना

प्रयोग : तुम्हें अपने ईमानदार होने की सफ़ाई देने की कोई ज़रूरत नहीं है; मैं जानता हूँ, तुम दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो।

22. एक अनार सौ बीमार

अर्थ : आवश्यकता से अधिक माँग

प्रयोग : क्षेत्र में अधिक इमारतों का निर्माण होने के कारण राजगीरों की स्थिति "एक अनार सौ बीमार" जैसी हो गयी है।

23. ऐंठ निकालना

अर्थ : घमण्ड चूर होना

प्रयोग : करगिल-युद्ध में परास्त होने के बाद पाकिस्तान की ऐंठ निकल गयी है

24. ऐंचातानी करना

अर्थ : खींचातानी करना

प्रयोग : स्वार्थवश नेता लोग किसी भी बात को लेकर ऐंचातानी करने में तनिक नहीं झिझकते हैं।

25. ओखली में सिर देना

अर्थ : जानबूझ कर संकट मोल लेना

प्रयोग : पाकिस्तान ने भारत में अपरोक्ष रूप में आतंकवाद को बढ़ावा देकर ओखली में सिर दे दिया है।

26. ओठ चबाना

अर्थ : क्रोध में आ जाना

प्रयोग : रामू करेला से चिढ़ता है। उसके सामने जब भी कोई करेला कहता है, वह ओठ चबाने लगता है।

27. औंधी खोपड़ी होना

अर्थ : निरा मूर्ख

प्रयोग : उसकी औंधी खोपड़ी में तुम्हारी तर्कपूर्ण बात नहीं समायेगी।

28. औंधे मुँह गिरना

अर्थ : पराजित होना

प्रयोग : आज अखाड़े में पहलवान ने ऐसा दाँव मारा कि उसका प्रतिद्वन्द्वी फ़ौरन औंधे मुँह गिर पड़ा।

29. कलेजे पर साँप लोटना

अर्थ : ईर्ष्या से हृदय जलना

प्रयोग : भारत की सद्भावना और शान्ति को देखकर पाकिस्तान के कलेजे पर साँप लोट जाता है।

30. कच्ची गोटी खेलना

अर्थ : असफल प्रयास करना, अनुभवहीन होना

प्रयोग : लक्ष्मी प्रसाद कच्ची गोटी नहीं खेलता है इसलिए तो वह अपने मक़सद में हर बार कामयाब हो जाता है।

31. क़दम चूमना

अर्थ : चापलूसी करना, विनय करना

प्रयोग : प्रवेश को लेकर बहुत दिनों तक वह प्रधानाचार्य का क़दम चूमता रहा।

32. कमर सीधी करना

अर्थ : थकान मिटाना

प्रयोग : 10 कि.मी. पैदल चलकर आया हूँ, जरा कमर तो सीधी करने दो।

33. खरी-खोटी सुनाना

अर्थ : भला-बुरा कहना

प्रयोग : पुस्तक खो जाने के कारण आज उसने मुझे खूब खरी-खोटी सुनायी।

34. खाक छानना

अर्थ : भटकते फिरना

प्रयोग : बेटी अनामिका की तलाश में मैं तीन दिनों से इस शहर की खाक छान रहा हूँ।

35. खटाई में पड़ना

अर्थ : कुछ निर्णय न हो सकना

प्रयोग : रुपये की कमी के कारण ग्रामसुधार की योजना खटाई में पड़ गयी है

36. गढ़े मुर्दे उखाड़ना

अर्थ : पुरानी बातों पर प्रकाश डालना

प्रयोग : देख भाई! जो बात हो गयी सो हो गयी, अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ?

37. गुल खिलाना

अर्थ : कुछ नया और निन्दनीय कार्य करना

प्रयोग : जानकीदास का बड़ा लड़का नित्य कोई-न-कोई नया गुल खिलाता रहता है।

38. घड़ों पानी पड़ना

अर्थ : अत्यन्त लज्जित होना

प्रयोग : चोरी करते रँग-हाथ पकड़े जाने पर उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

39. घाट-घाट का पानी पीना

अर्थ : संसार का अनुभव प्राप्त करना

प्रयोग: मुझे किसी मामले में कम मत आँको, मैंने भी घाट-घाट का पानी पिया है।

40. घाव पर नमक छिड़कना

अर्थ : सताये को और सताना

प्रयोग: कम दहेज लाने के ताने सुनकर बहू पहले से ही बहुत ही दुखी है, अब उसे और उलाहने



JSSC CGL 2024





मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)



हिन्दी-ई-बुक



सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

खुद ASO अधिकारी एवं
विवेक सर के मार्गदर्शन
में तैयार



विवेक सर

देकर क्यों उसके घाव पर नमक छिड़कती हो?



परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण तथ्य

Quick Revision

कहानियाँ

मधुआ

मधुआ कहानी के लेखक जयशंकर प्रसाद जी का जन्म 1889 में एवं निधन 1937 में हुआ। मधुआ कहानी का प्रकाशन 1931 में हुआ था। जयशंकर प्रसाद जी के पिताजी का नाम देवी प्रसाद था। मधुआ कहानी में मुख्य पात्र मधुआ, शराबी, ठाकुर सरदार सिंह, कुंवर साहब, लालू जमादार और शराबी का मित्र राम जी था ठाकुर साहब सरदार सिंह का लड़का लखनऊ में पढ़ाई करता था। ठाकुर सरदार सिंह ने शराबी को ₹1 कहानी सुनने के लिए दिया था शराबी पहले शान धरने का कार्य करता था। शराबी के मित्र राम जी के यहां कल धरने वाली मशीन उसकी रखी थी। शराबी गोमती नदी के तट पर मुंह धोने के लिए बैठा था जब राम जी ने आवाज लगाई थी।

ठाकुर का कुआं

ठाकुर का कुआं कहानी मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा लिखी गई। मुंशी प्रेमचंद का जन्म काशी के लमही नामक गांव में 1880 में हुआ एवं इनका निधन 1936 में काशी में हुआ ठाकुर का कुआं के मुख्य पात्र जोखू एवं गंगी दो दलित युगल थे जिसमें जो जोखू बीमार था और गंगी अपने गांव के ठाकुर के कुएं से पानी लेने गई इसका पूरा वृत्तान्त जातीय प्रथा पर है। जिसको कहानी के माध्यम से समझाने का प्रयास मुंशी प्रेमचंद जी ने किया अंत में जोखू ने जो की गंगी एक दिन पहले पानी लाई थी वही बदबूदार पानी पिया उस पानी में जानवर मरे की बदबू आ रही थी गांव में तीन कुआं थे।

नीलम देश की राजकन्या

इसके लेखक जैनेंद्र कुमार जी हैं जिनका जन्म सन 1905 में अलीगढ़ स्थित कौड़ियागंज नामक मोहल्ले में हुआ। उनके पिता का नाम प्यारेलाल और माता का नाम श्रीमती रामदेवी था तथा इनका निधन 1988 में हुआ था। यह कहानी सात समुंदर पार नीलम का द्वीप है वहां की कहानी है इस कहानी में तीन महलों का वर्णन किया गया है पुखराज, पन्ना और हीरा का। इस कहानी का प्रकाशन सन् 1933 में हुआ।

परिंदे

परिंदे कहानी के लेखक निर्मल वर्मा जी हैं जिनका जन्म 1929 में तथा निधन 2005 में हुआ। इन्होंने स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में एमए किया लेकिन रूचि साहित्य सृजन की थी परिंदे कहानी सन 1960 में प्रकाशित हुई परिंदे कहानी की मुख्य पात्र लतिका है एवं गिरीश नेगी लतिका का हॉस्टल वार्डन थी। गिरीश नेगी कुमाऊं रेजीमेंट में मेजर थे।





दिल्ली में एक मौत

इसके लेखक कमलेश्वर चंद्र सक्सेना थे इनका जन्म 1932 में तथा निधन 2006 में हुआ था। दिल्ली में एक मौत शीत ऋतु का वर्णन किया गया है जिसमें करोल बाग के सेट दीवान चंद की निधन पर उनकी सब यात्रा में कहानीकार के जाने और न जाने की कशमकश का वर्णन किया गया है। मुख्य पात्र कमलेश्वर मतलब स्वयं कहानीकार हैं तथा कमलेश्वर को कितने पाकिस्तान के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

वापसी

इसके लेखक उषा प्रियवंदा जी हैं जिनका जन्म 24 दिसंबर 1931 को कानपुर में हुआ था। अंग्रेजी में एमए. एवं पीएचडी करने के बाद इनकी शादी पियर निक्रो से हो गई और यह अमेरिका में विस्कांसिन विश्वविद्यालय में भाषा संस्कृति का अध्यापन करने लगी वापसी कहानी के मुख्य पात्र रेलवे के कर्मचारी जिन्होंने अपनी रेलवे में सेवा 35 वर्ष दी गजाधर बाबू तथा उनके परिवार का वर्णन किया गया है जिसमें उनके परिवार में उनके पुत्र नरेंद्र और अमर पुत्री कांति और बसंती और बहू और पत्नी के द्वारा आपसी नोकझोंक वर्णन का किया गया है इसका प्रकाशन वर्ष 1960 है।

अभिषप्त

अभिषप्त कहानी के लेखक यशपाल जी हैं इनका जन्म 3 दिसंबर 1903 को पंजाब स्थित फिरोजपुर में हुआ था। इनका निधन 1976 में हुआ इन्होंने अभिषप्त कहानी लिखी जिसमें ज्वाला अहीर और ज्वाला अहिरन के पुत्र जो की 5 वर्ष का बालक था। उसने अपने ही नवजात शिशु भाई की गर्दन दबाकर हत्या कर दी थी कारण था इतना की ज्वाला अहिरान आटे का घोल नवजात शिशु को पिला देती थी दूध के अभाव में लेकिन उस 5 वर्ष के बालक को इतना भी नहीं मिलता था। इससे कुपित होकर के उस बालक ने अपने ही भाई का गला घोट दिया इसकी सूचना ज्वाला अहीर और अहिरान की तीन वर्षी पुत्री ने अपने माता-पिता को दी इसमें कहानीकार श्री शुक्ला जी के यहाँ जाया करता था और उनसे बात करता था वही का वर्णन किया गया है। श्रीमती शुक्ला और शुक्ला जी के साथ बातचीत अभिषप्त का कहानी का प्रकाशन वर्ष 1944 है।

मिसपाल

मोहन राकेश जी द्वारा रचित कहानी है इनका जन्म 1925 में हुआ तथा निधन 1972 में हुआ। इनकी पहली कहानी संग्रह "इंसान भी के खंडहर" सन 1950 में प्रकाशित हुई तथा इनको 1968 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला मिसपाल दिल्ली में सूचना विभाग में कर्मचारी होती है। अपने सहकार सहकर्मियों की दुर्व्यवहार के कारण नौकरी छोड़ देती है और कुल्लू में जा बस्ती है कुल्लू में प्रसिद्ध मछली ट्राउट मिलती है जो कि अपने मित्र रणजीत सिंह को खिलाना चाहती है रणजीत इनको रायसन में मिलते हैं मिसपाल की तन्खा सूचना विभाग में ₹500 थी।

नाटक

भारत दुर्दशा

इस नाटक के लेखक भारतेन्दु हरिश्चंद्र की हैं जिनका जन्म सन 1850 में हुआ। वाराणसी में उनकी मृत्यु 1885 में हुई। भारत दुर्दशा की रचना वर्ष 1875 में हुई इसमें पात्रों की संख्या 18 है। इसमें अंकों की संख्या 6 है इसमें प्रथम अंक में योगी गीत गाता है।

आधे - अधूरे

मोहन राकेश जी द्वारा रचित यह नाटक जिसमें मोहन राकेश जी का जन्म सन 1925 में निधन 1972 में हुआ। इस नाटक का प्रकाशन 1969 में हुआ। यह पूर्णता की तलाश का नाटक है इसमें पुरुष पात्र 6 है। महेंद्र नाथ सावित्री का पति, सिंघानिया सावित्री का बॉस, जगमोहन महेंद्र नाथ का मित्र, जुनेजा महेंद्र नाथ के बचपन का मित्र, मनोज बिन्नी का पति, अशोक सावित्री का बेटा इसमें स्त्री पात्र सावित्री है। महेंद्र नाथ की पत्नी, बिन्नी सावित्री की बड़ी बेटी, किन्नी सावित्री की छोटी बेटी बिन्नी का विवाह मनोज के साथ हुआ किन्नी की आयु 12-13 वर्ष की थी।

ध्रुवस्वामिनी

ध्रुवस्वामिनी नाटक जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित है, जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सन 1889 में काशी में हुआ। इस नाटक का प्रकाशन सन् 1933 में किया गया। यह जयशंकर प्रसाद जी का अंतिम नाटक है ध्रुवस्वामिनी एक नारी प्रधान नाटक है जिसमें ध्रुवस्वामिनी की वेदना का वर्णन किया गया है। इसमें पुरुष पात्र चंद्रगुप्त जो की सम्राट होते हैं गुप्त वंश के राम गुप्त जो की ध्रुवस्वामिनी का पति है षड्यंत्रकारी व्यक्ति है। शिखर स्वामी कुटिल महामंत्री है सकराज कोमा का प्रेमी है मिथ्या अहंकारी है और मिहिर देव आचार्य हैं इसमें नारी पात्र ध्रुवस्वामिनी नाटक की प्रमुख पात्र है। राम गुप्त की पत्नी है कोमा आचार्य मिहिर देव की प्रतिपालित कन्या सकराज की प्रेमिका है अन्याय का विरोध करने वाली है मंदाकिनी ध्रुवस्वामिनी की सहचरी चंद्रगुप्त और राम गुप्त की बहन है।



JSSC CGL 2024





मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)

हिन्दी-ई-बुक

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

खुद ASO अधिकारी एवं विवेक सर के मार्गदर्शन में तैयार



विवेक सर

उपन्यास

गोदान

इसके लेखक प्रेमचंद जी हैं इनका जन्म 31 जुलाई 1980 को वाराणसी जिले के लमही गांव में हुआ। उनकी मृत्यु 8 अक्टूबर 1936 को हुई। गोदान के मुख्य पात्र होरी एक गांव का किसान है और गाय के दान की लालसा पूरे जीवन भर उसकी रहती है उसी के इर्द-गिर्द उपन्यास में वर्णन किया गया है। इसमें धनिया, गोबर, सोना, रूपा, दातादिन, मातादिन, गोविंदी, मिस्टर खन्ना, झुनिया, हीरा, भोला, पुनिया, राय साहब, अमरपाल मेहता, मालती, सिलिया, झिंगुरीसिंह, ओंकार नाथ यह सभी मुख्य पात्र के रूप में हैं।

मैला आंचल

इसके लेखक फणीश्वर नाथ रेणु जी हैं इनका जन्म 4 मार्च 1921 अररिया जिले बिहार में हुआ था। इनको पद्मश्री सम्मान मैला आंचल के लिए मिला मैला आंचल का प्रकाशन वर्ष 1954 में किया गया। मैला आंचल में मेरीगंज गांव पूर्णिया जिला बिहार की कहानी है इसके मुख्य पात्र डॉ प्रशांत बनर्जी, तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद, महंत सेवादास, ठाकुर रामकृपाल सिंह, महंत रामदास, महंत सेवादास, कालीचरण, बालदेव, लक्ष्मी कोठारीन और कमली हैं कमली के पुत्र का नाम कुमार नीलोत्पल रखा गया था। डॉक्टर प्रशांत और कमली का विवाह हुआ था डॉक्टर प्रशांत और लक्ष्मी दोनों अनाथ थे।

राग दरबारी

श्रीलाल शुक्ल इसके लेखक हैं इनका जन्म 31 दिसंबर 1925 को अतरौली गांव लखनऊ उत्तर प्रदेश में हुआ था। श्रीलाल शुक्ल एक व्यंग्यात्मक उपन्यासकार थे। राग दरबारी वर्ष 1960 में प्रकाशित उपन्यास है इसके मुख्य पात्र वैद्य जी हैं जो कि गांव की राजनीति के पीछे का मास्टरमाइंड थे तथा स्थानीय कॉलेज के प्रबंधक हैं। इनके दो पुत्र हैं रूपन बाबू और बद्री पहलवान इनका एक भांजा जिसका नाम रंगनाथ है जो अपने मां के यहां शिवपाल गंज की एक कहानी है। वहां 5-6 महीने के लिए छुट्टी पर आया था। छोटन पहलवान गांव का सक्रिय राजनीतिक पार्टनर है प्रिंसिपल साहब छंगामल विद्यालय इंटर हैं शनिचर जिसका मंगलदास है गांव का प्रधान है।

कॉलेज के प्राचार्य वास्तविक नाम कठपुतली रूपी



JSSC CGL 2024



हिन्दी-ई-बुक

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK रिवीजन

खुद ASO अधिकारी एवं विवेक सर के मार्गदर्शन में तैयार



मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर
अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजेंसियां निकालने का अनुभव)



विवेक सर

हमारा **Application** डाउनलोड करने के लिए दिये गए चित्र पर क्लिक करें

JSSC CGL 2024



TEST सीरीज

TEST सीरीज

FULL LENGTH PAPER-3

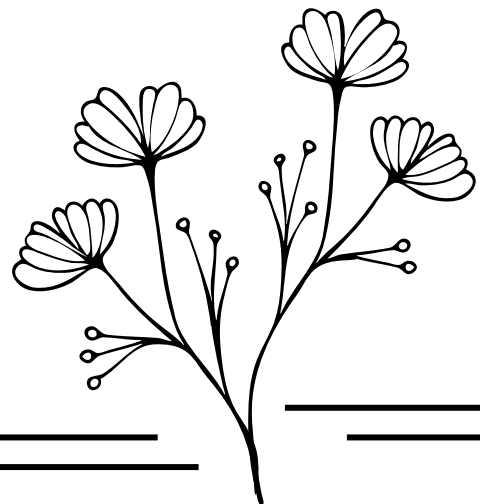
सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पे आधारित

FEATURES

- ★ TEST PDF ★ RANK
- ★ CORRECT ANSWER
- ★ INCORRECT ANSWER

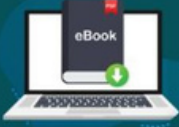


विवेक सर के मार्गदर्शन में





JSSC CGL 2024



हिन्दी-ई-बुक



सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित

QUICK



रिवीजन



मार्गदर्शन शान्ति भूषण सर

अनुभाग अधिकारी सचिवालय
(16+ एजाम निकालने का अनुभव)

खुद **ASO अधिकारी**
एवं विवेक सर के
मार्गदर्शन में तैयार



विवेक सर